आखर बेल

शिक्षा विभाग राजस्थान के सृजनशील रचनाकारो
की राजस्थानी रचनाओं का संकलन

आखर बेल

शिक्षा विभाग
राजस्थान के लिए



दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152 चौड़ा रास्ता जयपुर
द्वारा प्रकाशित

आखर बेल



सपादक ओंकार श्री

आखर वेल

✧ प्रकाशक
शिक्षा विभाग राजस्थान के लिए
दी स्टूडेण्ट्स बुक कम्पनी
152 चौड़ा रास्ता जयपुर 302 003
दूरभाष 72455/74087

✧ मूल्य
37 35

✧ संस्करण
शिक्षक दिवस 1992

✧ आवरण
पारस भसाली

✧ लेजर कम्पोजिंग
अमरज्योति कम्प्यूटर्स
त्रिपोलिया बाजार, जयपुर

✧ मुद्रक एस एन प्रिंटर्स
नवीन शाहदरा दिल्ली 32

आमुख

रचना का जगत वास्तविक जगत का अग होते हुए भी इससे पृथक, निराला और समानान्तर होता है । रचना म अनुभव का एक नया ससार सामने आता है और उन क्षणो को अद्वितीय बना देता है जिनम रचना हो रही होती है । शब्दो की इस काया मे रक्त, रस, माँस और अस्थियाँ सब शब्दो मे ही समाई रहती है । शब्द से इतर कुछ न होकर भी बहुत कुछ होता है इनमे यानी परिवेश, परिस्थितियो और समय के बदलाव के साथ अर्थ की गहरी, अनसोची और नई से नई परते खुलने की सभावना बराबर बनी रहती ह । जब लेखक की रचनात्मक सवेदना पाठक को भी उसी स्तर पर झकझोरने लगे और सवेदना के स्तर पर दोना एकमेक हो जाएँ तो समझा जाना चाहिए कि रचना अपनी अर्थवत्ता को सिद्ध कर रही है ।

रचना के नाम पर लिखी जाने वाली सेकड़ो हजारो 'रचनाओं मे से विरली ही समय की कसोटी पर खरी उतरती है । शेप या तो शब्दो की कसरत भर बनी रहती है या किसी अमर कृति के लिए उर्वरा जमीन तैयार करने मे खाद बनकर रह जाती ह । अमर होने के लिए किसी कृति को समर्थ रचनाकार की साधना, उसकी अनुभूति की गहराई और प्रामाणिकता, प्रस्तुति का कौशल और सवेदनात्मक आवेगो की पकड़ से जुड़ा होना आवश्यक है । इसीलिए कहते है कि रचना के क्षण विरले भी होते है और निराले भी ।

राजस्थान के सृजनशील शिक्षक साहित्यकार इन विरले और निराले क्षणा की पकड़ करने का प्रयास करते रहे है । इनमे से कुछेक शब्द शिल्पी एवम् कृतिकार ऐसे है जिन्हे देशव्यापी प्रतिष्ठा मिली है । इन लोगो ने शिक्षा विभाग के भी गौरव को बढ़ाया है । हमारे लिए रचना का यह ससार एक परम्परा है – आज से नही, सन् 1967 से, जब हमने इस परिक्रमा को शुरू किया था ।

पूरे पचीस वर्षों की यानी एक चौथाई शताब्दी की साधना हमारे साथ है । इसे रजत-जयन्ती की सज्ञा से विभूषित कर न करे – यह बेमानी है लेकिन इतना सत्य अवश्य है कि पूरे देश के शिक्षा विभागो म केवल राजस्थान का शिक्षा विभाग ही इस प्रकार के अनुष्ठान को चला रहा है । देश भर के चर्चित साहित्यकारो समीक्षका और राजनेताओं ने इस तथ्य को स्वीकार किया है – उनकी यह मान्यता ही हमारी असली ताकत है ।

रचना की इस अविरल श्रृखला मे अब तक कुल 123 पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है और इस वर्ष की 6 पुस्तका को मिलाकर यह सख्या 129 तक पहुच

जाएगी । सख्या के गौरव से कही अधिक महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि इन पुस्तका का सम्पादन देश के सुप्रसिद्ध, चर्चित और सर्वमान्य साहित्यकार करत रहे है । शिक्षा विभाग उन सबके प्रति आभारी है । इस वर्ष प्रकाशित होने वाली पुस्तका के नाम इस प्रकार है

1 रेतघड़ी (कविता सकलन)	स मगलेश डबराल
2 रातो जगी कथाएँ (कहानी सकलन)	स पद्मा सचदेव
3 प्रतिभा के पख (हिन्दी विविधा)	स क्षेमचद्र सुमन
4 आखर बेल (राजस्थानी विविधा)	स ओंकार श्री
5 शिक्षा समस्याएँ तथा सभावनाएं (शिक्षा साहित्य)	स राजेन्द्र पाल सिह
6 बादल ओर पतग (बाल साहित्य)	स राजेन्द्र उपाध्याय

इस वर्ष हमने एक नया निर्णय लिया है । शिक्षक हो अथवा कर्मचारी – शिक्षा विभाग की कार्मिक सरचना म दोनो का हाथ है अत इस वर्ष के सकलनो मे आपको सृजनशील शिक्षको ओर कर्मचारियो दोनो की रचनाओं का लाभ मिलेगा ।

मुझ एक बात अपने रचनाकारो से कहनी है । यह सही है कि लब्ध प्रतिष्ठ सम्पादको ने कुछ रचनाओं अथवा रचना अशो की सराहना की है तो कई जगह कमियॉ भी बताई हे । सराहना जहाँ हम सुख देती है वहॉ कमियाँ सुधार के अवसर प्रदान करती हें । साहित्य की रचना करना भी एक शिक्षा कर्म है । साहित्य और शिक्षा को अलग थलग नही किया जा सकता । दोनो का काम लोकमानस को परिष्कृत ओर सस्कारित करना है । दानो सत्य पथ के सहभागी हें । दोना एक ऐसा इसान गढ़ना चाहते हें जो इन्सानियत की सही और सार्थक पहचान दे सके ।

जिन लोगो की रचनाओं का इन सकलना मे समावेश है मे उन्हे बधाई देता हू । जिनकी रचनाऐं नही छप पाई है उनसे मेरा आग्रह है कि रचनाधारा से लगातार जुड़े रहे लेखनी के पैनेपन को बनाये रखे और आगामी वर्ष के सकलनो के लिए अपनी श्रेष्ठतम ओर नवीनतम रचनाएँ दे । मै इस वर्ष के सम्पादका और प्रकाशक बधुओं का हृदय से आभारी हू जिन्हाने कम समय मे उत्कृष्ट सम्पादन एवम् प्रकाशन द्वारा विभाग के इस अनुष्ठान को सफल बनाने मे सहयोग दिया है ।

शिक्षक दिवस 1992

निदेशक,
प्राथमिक एव माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान बीकानेर

बानगी

तीखै तेवर री तपास......

लिजलिजै अर चिपचिपै लेखण रा दिन लदग्या । भासा है एक औजार । औजार मांगै सुधार । देस-दुनिया री जूनी लोक भासावां रै कड़ूमै मं नुवै पलटाव री वेग अणथम है । सांस्कृतिक अर भावात्मक सरूप सू जन भासा राजस्थानी री पैठ जठै कदीमी है बठै ही इणरै रचनालोक मे नुवी फुरणा, चेतना अर धारदार सोच री जातरा रा पग सधियोड़ा तो है पण गति धीमी है ।

इण धीमी गति रौ लखाव मनै राजस्थान री प्राथमिक-माध्यमिक शाळावां रै पूर्व-अपूर्व शिक्षक लेखकां री चार सौ नैड़ी रचनावां री कपड़छाण करतै हुयौ । आ गति बेगवान नी हुया 'लेखण सारू लेखण' री रागौपीटी तो सरतौ जासी पण उपलब्धि रचनात्मक धरातल पर की हाथ नी लागैला ।

रचनाधरमी गति उत्तै ताई वेगवती नी हुय सकसी जित्तै ताई रचनाकार आपरै अधपढ़ पण सू मुक्त नी होसी । अनपढ़ सू अधपढ़ भूंडौ । लागै है शिक्षक रचनाकार इतिहास, संस्कृति, विज्ञान कला, पुरातत्व अर पर्यावरण-मूलक ग्रंथां अर संस्थानां रै अध्ययन अर विश्लेषण सारू माय सू सजग नी है । माय रौ चेतौ हुवै तो किणी दूरातरी ढाणी री स्कूल मे भणावा वाळौ शिक्षक कठै रौ कठैई पूग जावै । शिक्षकां री हयूकी रचनावां भण्या गुण्या मै 'शैक्षिक अधपढ़ पण री जिकी बात उठाई है उण बाबत बहस री गुंजाइस है ।

भासा सू आपा रो बरताव किसीक है ? फूहड़ के शालीन ? राजस्थानी री विविध विधावां पूठी जिकी रचनावां म्हारी भणत मे आई है उण सू औ सखरौ सवाल उभर ने सामै आयो । उत्तरी पश्चिमी राजस्थान रा मारवाड़ी लेखकां री हरैक रचना भापायी सरचना, मूळभूत व्याकरणगत सहिता अर शुद्धता सू परवार लागी शिक्षक लेखकां रै दायरै मे । उदाहरण माथै उतरया बेजा विस्तार बधसी । सपादन रै दौर मे रचनावां रौ ‌असतुलित सस्कार ही रचनाकारां अर पाठकां सामै आवै आ ही बात ओपती रैसी । म्हूँ राजस्थानी री एकरूपता री गपड़चौथ मे नी पड़बौ चावू । जरूरत है समरूपता री । जिकी भासा मे आप रचाव करौ उणारी मूळ प्रकृति सू तो रूबरू होणी ही पड़सी । बोल' कई अर लिखा कई ? आ बात तो चालण री कोनी। बोला 'काळ अर लिखा काल , बोला जीवण अर लिखा जीवन पण

क्यू ? वाजै नै 'वाजे' अर कुत्ती नी कुतो' क्यू लिखा ? 'औकारान्त' प्रयोगप्रकृति है राजस्थानी क्रियावा रै अत म ।

आ दो च्यार मूळाऊ वाता नै ध्यान मे राख्या सू भासा साफ सुथरी मजी-तपी सातरी लागसी । 'ऊँ कै' वू कै' कूई' ईया , 'ज्यावसी' आद सवदा सू निजात पाया ही सरसी ।

भासा बा ही सवखी वजै जिकी आम आदमी रै समझ म आ जावै मगज मे वैठे । रचनाकार जद मरजकीय सरूप मे किणी सवद री व्यवहार करै तो वो 'भदेस' सू बचे शालीनता नै आदर ।

शिक्षक लेखक भाया ! लिखणी तो अतिम प्रक्रिया मे आवै । दिनरात चालै चिन्तन । सलग रचीजती रेवै रचना दिमाग मे । एक वग, एक धक्को एक दुद वधतो सधतो रेवै मायामाय । इण भाव भोमका पूठे जिकी रचना ऊसर वा रचना नुई जमीन तोड़ै नुवै जमीर रा पग सजारा करै । सुख सुविधा भोगी ड्राइग रूम कल्चर री जिन्दगी आप जीजो नी । आ जिन्दगी सुपगी कठै ? आज तो आप लोगा सू समाज आ अपेक्षा करै कै आम इसी रचना रचौ कै जिण बूतै आम आदमी आपरी सस्कृति रै स्वस्थ सरूप सू जुड़ने ज्ञान विग्यान री वळ पड़ती सरजाम नै तकनालाजी री लाभ उठावै नै अगेजे ।

जिसौ बौ सौ विसौ ही ऊगसी । नुवी पीढी रै निरमाण री बागडौर आपरै हाथ है । इकीसवी सदी तो दड़ूकती सामी निजरै आय रयी है । सवारसी सस्कृति नै तारसी आपानै विग्यान । सस्कृति अर विग्यान री तालमल साधण री काम कलमकारा अर कलाकारा रा है ।

मारवाड़ी ढूढाड़ी हाड़ोती मेवाड़ी वागड़ी नै मेवाती – राजस्थानी भासा रा अै सागापाग सरूप । राजस्थानी ग्रथा अर पत्रिकावा रै सपादन रै लम्बै अनुभव रै आधार पर म्हू एक नतीज पर पूग्या हूँ कै जिकै क्षेत्र मे उणरी खास बोल वतळाव हुवै उणरै भापायी ढाचै सू छेड़ छाड़ करयै विना भी सपादन करया जा सकै है । नीतर भावनावा आहत हुवै । राजस्थानी भासा रै सैग सरूपा म जिकी आतरिक एकठ है जिकी भावात्मक स्थिति है उणरी रिछपाळ होणी जरूरी है । ओ ही सूत्र सामनै राख नै मैं इये सकलन म पूरी सावचेती वरती है ।

सवदकोस अर व्याकरण रा पोथा सामनै राखर कोई रचना का रचीजै नी । भासा तो वणै लोक रै पाण । लोक परवार रचनाकार कठै ? रचनाकार सवद द्रष्टा भी हुवै अर स्रष्टा भी । सास्कृतिक अर लौकिक व्यवहार म जिका सवद सरवालै चाल उणा रा प्रवलन लेखण मे होणी लाजमी है । 'तत्सम सवदा नै तोड़मरोड़ र आपा राजस्थानी भासा री मान वधा नी सका सस्कृति नै 'सँसकिरती प्रकृति ने पिरकरती सस्कार नै सैंमकार - लिखणी गैर वाजवी है ।

भाया पूठै जिकी अबखाया इण सकलन रै सपादन मे आई उण सू एक बात और पुख्ता हुई कै बाकी भोयरी भासा रै कारणै आछी सू आछी रचना री मिट्टी पलीद हुय जावै ।

समूचै राजस्थान री समूची राजस्थानी आ बात व्यापक दायरै री है । डूँगरपुर सू डूँगरगढ़ अर झुझुनू सू झालरापाटण ताई रै भू भाग री विविध रूप रूपा राजस्थानी री जनाधार भी सतेज हुसी तो धारदार लेखण सू । जनमन मे, आमजन री भलाई सारू चेतना भी बपरासी तो नुवै सोच सू जुड्या रचनाकार ही । बदळाव तो आया ही सरै । सैंसू लूठी अर बड़ी महताऊ बात है – दीठ रै दायरै री । दायरौ वड़ौ तौ दीठ जरूर फळै ।

निबन्ध नाटक, कहाणी, रेखाचित्र, लघुकथा व्यग्य, यात्रा, सस्मरण जीवनी अर काव्यगत विधावा री बहुआयामी छिन अर छटा सूधी 84 रचनाकारा री पगत मे वयोवृद्ध महोपाध्याय नानूराम सस्कर्ता सु लेर राम सुगम ताई रै पीढी-रचना-मेळ इयै सकलन मे है ।

'कटेन्ट रै काटै राजस्थानी रचनावा री सरूप अर स्तर इण सकलन मे अत भारतीय भासावा री कटजोड़ मे कमजोर नी है आ वात मै नेचापाण केय सकू हू ।

सवेदना अर सचेतना दोना पखा पूठै लेख'- सीगै मे- 'ओ धरती मा म तारा दीक्षित री पीड़, 'राजस्थान री लुप्त हावती सास्कृतिक परम्परा रचना मे जेठनाथ गोस्वामी री चिन्ता अर चिन्तन री भावभूमि 'बुराया नै थूरौ' म मूळदान देपावत री सामाजिक जागरण री हूँस, 'धीरा री देवळी मे रूपसिह राठौड़ री धरती सोच रामनिवास सोनी री लोकचावौ गीत मुरली' मे उणारै हियै रै हुलास रा सातरा रग ! रग है नानूराम सस्कर्ता अर दशरथ कुमार शर्मा रै अरोगै आहार अर योग वरगा सातरा लेखा नै । राजस्थानी निवन्धा रै दायरै मे तीखै तेवर री तपास है जिको तो है ही ।

नाटक विधा राजस्थानी मे घणी वेगवान कोनी पण इण सकलन मे जयत निर्वाण रै वलिदान, कु राजकुमारी रै 'आख्या खुलगी' अर जगदीश नागर रै 'घोड़लौ' एकाकिया मे सवाद सरल, भाव सधीरा भासा मध्यम सुर सरवरा नै कथ्यगत सरूप धारदार तो कोनी पण नाट्यधर्मिता नै आग वधावण म जरूर प्रभावी सिद्ध हुसी ।

कथा क्षत्र राजस्थानी रा इण सकलन म विचार चिन्तन और वाध सवदन पूठै सिरैकार है । काव्य विधा सू आगै । रामस्वरूप परेश री 'जिनगाणी रौ जूझार, जितेन्द्र शकर वजाड़ री 'अकार्डियन, करणीदान वारहठ री 'औलाद, जानकीनारायण श्रीमाली री 'विज्जू', रामपाल सिह पुरोहित री मुळक' अर माधव

नागदा री 'उजास री उडीक' कथावा इण विधा-खड री प्रतिनिधि रचनावा मे गिणी-जण जोग है। कथा बा असरदार अर दमदार हुवै जिकी घर-आगण री बात नै देस-दुनियागत विचार व्यवहार री वेदना, चेतना अर उमावकारी प्रेरणा सू जोड़ै। ढाणी री पीड़ अर महानगर री भीड़ सू पाठक सवेदित हुवै बिना रेवै इण सकलन री कहाणिया भण्या गुण्या बाद।

राजू कवाड़ी (भ ला व्यास), त्याग मूरती (ओमदत्त जोशी) चादा भुवा (ओमप्रकाश तवर) रा रेखाचित्रा रौ भावलोक मरमीली अर चुटीली लागसी, पाठका नै एक ताजगी देसी।

अरुणा पटेल री (मा) छाजूलाल जागिड़ (जीवणदान) भरतसिह ओला 'भरत' (वखत रौ मोल), मीठालाल खत्री (सपनौ) अर पृथ्वीराज गुप्ता (एक हीज बिरादरी रा) - लघुकथावा रौ रचना ससार भी सोचणौ लागै सैठो पण नही।

त्रिलोक गोयल (माचा रा मजनू) अर श्रीमाली श्रीवल्लभ घोस (खीर रौ सबड़कौ), श्याम सुन्दर भारती (किम् आश्चर्यम्) री व्यग्य रचनावा हास्य रौ लास्य अर सवेग सम्प्रेषण सूधी भाषा री आतरिक लय सू पूरी जची।

यात्रा सस्मरण मे रामकुमार ओझा रौ सफरनामौ चडीगढ रौ अर चन्द्रदान चारण री जीवनी विधा री भारत रा अमर शहीद श्री रामप्रसाद बिस्मिल रचनावा सू सकलन नै विविध विधायी व्यक्तित्व मिल्यौ है अर आ विधावा रै लेखन री मथर गति माथै सोचवा रौ सोच भी साथै साथै जाग्यौ है।

काव्य खड मे अनुभूति अर अभिव्यक्ति वेदना अर चेतना भाव अर अभाव शब्द अर लय, सघर्ष अर सतुलन समान फुरणा अर मूळ सास्कृतिक धकेल आद री न्यारी न्यारी स्थितिया अर परिस्थितिया रा चितराम उकेरण वाळी सखरी सावठी कवितावा रै चाळीसै मे बुलाकीदास बावरा (हिवड़ै रा देवळ) री जन पीड़ा, मो सदीक रै गीत जाग सकै तो जाग अखिलेश्वर रै गीत 'ओळू महावीर जोशी अर कुन्दन सिंह सजल समेत दयाराम महरिया रा दूहा सोरठा री सास्कृतिक ऊरमा अर वासुदेव चतुर्वेदी री 'अणजाणी कविता रचनावा नै प्रतिनिधि मानण रौ मन करै।

जोत बठै जगाओ जठै अधारौ है। शिक्षक लिखारा री पगत राजस्थानी लेखन म सैंसू लूठी है इण पगत नै जगाया ही जन भासा रौ गौरव जागसी।

ठीक है नित तो जामै ही कोनी नुवा लेखक। शिक्षा विभागीय राजस्थानी सकलना म मानी कै सागी ठावका नाम हर वार हाजर रेवै। पण नुवै लेखका री निछतरी तो है ही कोनी। इणी सकलन म कैयी वाया अर भाया रा नाव साव नुवा अर रचना पूठै ताजा-तरीन है।

राजस्थानी रा शिक्षक लेखका नै शिक्षा निदेशालय प्रकाशन री मच दय नै एक सुगनरी परल करी है। अवै जिको घणी तपसी वा ही आगै वधसी।

समे आपरी भासा रो है । बदळाव सारू रचनाकार बद्धमूळ परपरावा सू बारै आवै ।

सबद री जातरा जगत बधावै उणमे नुवै सू नुवौ अरथ भरै । ताजौ, धारदार खुरदरौ ही सही पण प्रयोगाऊ सबद सस्कार अगीकारै राजस्थान रौ शिक्षक लेखक तो सीखै तेवर री तपास पूरी होवै । सळदार अर सीली गीली भासा सू काम चालबा को कोनी ।

'आखर बेल' बधै । दिन दिन सवायी । राजस्थानी सकलन 92 रै सपादन रौ औ काम किया सध्यौ ? निर्णायक पाठक । आत्मीय भाव सू शिक्षा विभाग रै प्रति आभार । नीतर शिक्षक लेखका सू किया सधतौ ओ साक्षात्कार ?

-बागीनाडा रोड,
सुखानी कुज के सामने, बीकानेर

— ओंकार श्री

"राजस्थानी राजस्थान की भाषा है। समूचे राजपूताने, मध्य भारत के पश्चिमी भागो मध्यप्रदेश, सिंध और पजाब के आस-पास के टुकड़ो मे यह बोली जाती है।"

—डा जार्ज ए ग्रियर्सन

"राजस्थानी भाषा इण्डोआर्यन उपभाषाओं का ग्रुप है जो कि एक ओर पश्चिमी हिन्दी मे मिल जाती है व दूसरी ओर गुजराती व सिन्धी से और लगभग समूचे राजस्थान और उससे लगे हुए मध्य भारत के भाग मे प्रचलित है।"

—एनसाइक्लोपीडिया ब्रिटेनिका

विगत

लेख

नाटक

कहाणी

रेखाचित्र

लघुकथा

व्यंग्य

यात्रा-सस्मरण

जीवनी

काव्य

आखर बेल



लेख

ओ धरती मां !

तारा दीक्षित

धरती समान सैणगत री सगती किण मे है ? आखी सृष्टि नै सारा रस, धातुवा, रत्न, खान खदान, अन्न, रूख बेलाँ, जगळ, बाग, तड़ाग, बावड़िया, पाणी बायरौ, पछिया नै जिनावरा रौ सग वगसवा वाळी आ ही धरती है । आ जियाजूण री मावड़ी ! इण जामण कई नी दियौ आपरा टाबरिया नै ? सकळ दीन दुनिया मे आ जो काई है, ओ सो काई इणी रो दियौ थको है । इण वसुधाराणी-जग धिरियाणी किणी सू कई मागियौ ? सो कई निछावर करियौ इयै धरती आपरी चराचर सन्ताना सारू । इयै सरीखी दातार मा औरू कुण हुसी ?

घण री चोटा सैयी तो इण धरती । कुदाळा री मार खायी तो इण हीज । बारूदा रा वार सैया तो इण हीज । इयै बदळ म कई दियौ आपानै - सजळ निरमळ नीर ! सोनै-चादी रा खजाना । हीरा-जवाराता रा भडार इणीज अरपिया आपा नै ।

ओ दयामणी दातार धरती मा ! थारा पूत थारी दोहन करता कद थमसी ? आपरी काळजो फाड़नै फसला फळावणी मानखै री पालणहार – धीरज थारौ धन थारौ धरम । तू सता शहीदा, सुभटवीरा धीरा गभीरा रिसिया, मुनिया राज राजेसरया भगता कविया, आगम निगम पूरा सिद्धा आचार्यां, परमहसा री मा–तनै सौ सौ बार नमन ।

तू उगळै तेल, ढिग्ग लगावै कोयला रा । आरै पाण ससार रा कळ कारखाना, हवा पाणी रा जहाजा अर रेला मोटरा तेज वाहना - टेक -ट्रक ट्रेक्टरा ताई पूगै थारी ऊर्जा !

थारा रूप अनेक । चरित्र चितराम अनेक । तू दुरगा - सुरसत - पद्मवारी मा है तो तू । थारी गोद म समायी ही नी थारी धीवड़ी – जानकी – हजारू हजार वरस पैला । अगनमाखी माव साची सिद्ध हुयनै तनै चेतै है नी हजारू हजार वीरागनावा

जळती धधकती चितावा मे कूदी ही – उणानै थामी है धरती मा थ ही तो। पाचाली री पीड़ तू कदी विसरा सकै ? आज पूछ तू थारा पूता नै कै वै थारी धीवड़िया ने दायजै री लाय मे क्यू भस्मावै ? क्यू भोगै आज भी थारी वेट्या देरदासिया री जूण ?

जिणा री मा सवला सुजला सुफला - थारी वैन-वेट्या अवला क्यू पण क्यू ?

धरती मा तू थारी मातृ शक्ति जगा। तू गरजणा करनै कैय दै– पति परमेसर हुवै पतित परमेसर नी हुवै।

वीरभोग्या वसुधरा तू वरज थारा डीकरा नै क वै रूखा रा माथा नी वाढै। नदी नाळा नै नरकवासी नी वणावै। नी खोदै थारी नींव। मा – ऐ स्वार्थी मानवी थनै खो देगा तो खुद नै खो देगा सदा सदा रै वासतै।

अमर अखी रेवै थारौ तप
थारौ धीरज
थारौ सैणगत
तू इला – तू उर्मिला गगा
गोदावरी कावेरी पचनद धात्री
अमर अखी रेवै थारी वनराय
थारा डूँगर
थारा धोरा – जीव जिनावर

थारा पूता नै एकठ री माळणी कठै करा – जाग जग धिरियाणी।

भापा रग जात जमात न्यात पात री
अकैकारी जजीरा नै एकैई झटके भाग
मात भवानी
कल्याणी
भद्राणी
इन्द्राणी
ओ
धरती मा।



राजस्थान री लुप्त होवती सांस्कृतिक परंपरा

जेठनाथ गोस्वामी

संस्कृति किणी परपरा रै निर्वाह रौ लूठौ नाम, जिणमे पुरखा री याद री सोरम आवै । सभ्यता सद्‌भाव रौ नाम है – सस्कृति । एक धरोहर । कलियुग री काळमण मे कर-युग तो बीसारीजग्यौ अर रैयग्यो कळयुग । मशीना री खड़वड़ाहट अर रोटी री दौड़ म मिनखपणौ रेलै सी धकाधूम मे कठैई चिगदीजग्यौ दीसै है । पेट री खाड म हाड रा रिश्ता पतराइजग्या । जनम सू लेय नै मरण ताई रा सस्कार अबै किणनै याद रैयग्या हे ? अपणायत री आस्था अणविश्वास री आधी सागै उड़नै अदीठ होयगी दीसै । नी तो रैयी गवरा अर नी रैयौ पिणघट रौ झूलरौ जठै घर विगत री सगळी हळगळ री ठा पड़ जावती । ऊठ री सवारी चढ्या गाव गोरवै नी नीसरता । अबै तो स्कूटर पे बैठ नै सरणाट करता नीकल जावै । कड़ूमै री भेळप री मिठास अबै कठै देखण नै ? एक विधवा भाभी कै वहन रा टावर घणै ध्यान पाळीज जावता । अबै तो म्ह अर म्हारौ पूनियो दूजो आवै तो फोड़ू दूनियौ । नी तो गाव री सभा रयी अर नी अमला रौ हेलो । गाव ग्वाड़ी री एक इज्जत गिणीजती । आज रै किणी शहर रै उण अल्ट्रा मार्डन वगलै री पोळ जाय ऊभौ जठै ब्याव रा नेगचार निभाईज रया है – कॉलम मे डिस्को गीता री गूज तो सुणीजसी पण ब्याव रा गीत कुण जाणै ? सीख रौ मोरियो उगेरै ई कुण । बाई वनड़ी नै नी तो रोवणौ आवै अर नी माईता रो आगणो छोडण रौ कळाप । कठै गयी रात गया कावड़िया री रमत अर पाबू री पड़ जिणमे वीर गाथावा गाईजती ? जाणे किण चतूळियै री वेग चढ्ग्या भायला फाग अर साईनी साथणिया री आधी रात ताई धमकीजती लूरा ! मिड्या पड़ी नी पड़ी के वीनणी रै कमरा रौ दरवाजौ बन्द । घर री चाद ई इण भात वेगो लुक छिप जावै ! पैली अधरात ताई रौ सोपा पड्या पैली जोड़ायत रा कठै होवणा रया भेटका अर सामी निजरा ! वड़ा वृढा रै बैठ्या टावर सामी जोवणो ई मरजाद सू नीचै री वात मानीजती । अबै परभात रै पी र मे नी तो सुणीजै घरटी री मुधरी आवाज अर नी चड़स रा लैरका । शरद पूनम पे कुण ता

मतीरा चीरै अर उण पुळ री चानणी मे कुण अमी भरवावै । इणी शरद पूनम री चानणी रात म किणनै याद रैयगी है सूई पिरोवण री होड ! सालिया री आडिया नी तो छोरया जाणै, अर नी अग्रेजी पढ्या वीद राजा उथळी ई देय सकै। सासू रा गीत गवावण रा कोड ऊभा होयग्या । पैलै हळोतियै जद चार ऊमरा गऊ अर नेम धरम रा छोड़णा नी चावै तो साखा ई नीवत जैड़ी बरकत पाकण मे आवै । आखातीज रै औड़ै-जोड़ै कठै सुणीजै टाबरा री घूघरा बाध ऊमरा काढ़ती टोळ्या !

टी वी रै बद डिब्बै मिनखा नै घर किवाड़ा मे बन्द कर दिया तो पछै पाड़ोसी पाड़ोसी री खैर ठा पड़ै तो पूछै ! नी रया जम्मा अर नी रया जागण । रात सारी फिल्मा री वी सी आर ' लाग जासी पण प्रभू री पिछाण बतावणिया रागी भजनिया नै कुण बुलावै ? किणनै मतलब है के गरुड़ पुराण काई है अर रतजोगो क्यू दिरीजै ? किणनै याद रयी बच्छ बारसा – गऊ महातम री गिनरत कुण करै । उपवास छोड़ो – खाली पेट रया भमळ बधै, डाक्टर री सलाह सू बेसी मादा पड़ै । क्यू तो काती-बैसाख न्हावणा अर क्यू एक टेम खावणा ! उघाड़ै माथै सासरै नी जावणा री तो अबै फकत बाता ई रैयगी है ।

बावड़्या गाव री कचरौ नाख-नाख नै बूराय दीनी । पुरखा रै पुरषारथ नै राखण री काई काम ! नारायण तो नर री लीला देख न्हाय छूटो, पछै क्यू बड़ पीपळ रा पूजण पाळणा ! रूखा री जड़ा तकात खोद नै बेचण सू जद रोटी मिळ जावै तो दिन पूरै री मजूरी क्यू करणी ! बच्चा जद अस्पताल मे हुवै तो जच्चा रा गीत क्यू उगेरणा अर सीखणा ! अबै कोई नुवी मा हालरियौ नी जाणै । समदर हिलोळण री वडेरा री रीत आयै बरस गाव - तळाब री माटी खोद नै समाज सेवा नै समझण री बात ही भाई कानी सू बैन रा लाड कोड तो इण मौकै नै महताऊ बणावण सारू राखीजिया । नारी रूपाळी दीसणी चाईजै – मोट्यार टारडा रौ काई ? फिलम वाळा ई नायिका नै तो बोर चूनडी पैराय देसी पण नायक पेट बुशर्ट मे राजस्थ री गीत गासी । वीरा रौ हेज अर राखड़ी री कोड सावण रा हीडा अर तीजणिया रा गीत नी तो कोई सीखण री हूस राखै अर नी गळगळै कण्ठा सू गाईजता सुणीजै – आयौ म्हारौ जामण जायौ वीर चूनर लायौ रेसमी जी ।

कवडाळै गोरवदा सू लड़ाझूम ऊँठा पे जाना री तो बात ई गयी पण बिसराइजग्या कमाचै अर ढोल थाप ग जाझा गीत – किणी मोट्यार रै मूडै झेडर के रायचद रा लोकगीत सुणण मे नी आसी । गोगा नम री दूध टाळ खीर खावणी अबै वम री बात नी रयी – कारण सुमट है – अग्रेजी तारीखा तो हियै रची-बसी पण तिथ अर तीज तिवार री कनखळ याद राखणी दोरी । जे पछै गोगा नम री खीर ~णायली तो डेरी पे दूध पुगावण री नागा हो जासी । आपा आपणा तीज तिवार ई आगे छोड नाख्या – वाह रे बदलाव !

गाव रै गोरवै के नाडी री पाळ वीर जूझारा री छतरिया धुड़ण लागे ई वा री कीरत री याद रा ऐलाण माटी मिलण लाग्ग्या है – याद राखण सारू देखण मे आवै पूपाड़ करती मोटरा रै बिचाळै नुवा ऊभा किया सर्कल।

राजस्थान री सास्कृतिक ओळखाण री ऐ सीरा बिसारया आपणी अस्मिता अर पिछाण नै मटियामेट करण जिसी बात हुवैला। कोई गावठी आदमी पढ़ लिख नै शहर मे नौकरी पाय जद हाऊसिग बोर्ड मे मकान वणाय आपरी भावी पीढ़ी नै मम्मी डैडी सू ई वतळावणी पसन्द कर तो लेसी पण कोई तो धरती सू हेत अर ओळखाण राखणियै जे पूछ लियौ "ठे'टू कठैरा!" तो पछै सस्कृति री सोरम बताया बिना थारी जड़ हरी रैय जासी काई ? बात विचारण जोग है।



बुरायां नै बूरौ

मूळदान देपावत

मिनख एक सामाजिक प्राणी है। उण आपरी बुद्धि रे पाण कुटुम्ब अर समाज बणाय मानव सम्बन्धा रै मुजब रीति रिवाज बणाया। समाज री मानताया, रूढिया अर परम्परावा रै पालण सारू जात-पात कुटुम्ब-कबीला, व्यवस्था अर जरूरत माफिक रीतपात चालू हुई अर बखत रै साथै उणमे बदळाव भी आवण ढूको। कोरी लकीर री फकीर बण्या नी सरै। गाव करै ज्यू गैली नै भी करणी पड़ै। चोखी बाता रै साथै कुरीता "ी घर कर लीनौ। सैकडू बरसा सू चालती परिपाटी दोरी छूटै तौ ई बुराया सू तो टाळौ लेणी ही समझदारी है। बाल विवाह, पर्दा प्रथा, विधवा दुर्दशा औसर प्रथा, नाती, छुआछूत जैड़ी घणी ही कुरीतिया री उदेवण समाज रै लाग री है।

इणरै मूळ मे वर्ण व्यवस्था पर जातिप्रथा रौ प्रभाव सापरतेक लखावै। न्यारी न्यारी जातिया रा कर्म धर्म अर रीत रिवाज न्यारा-न्यारा थरपीज्या। छुआछूत भारतीय समाज व्यवस्था माथै कलक है। मिनख मिनख मे इतरो भेदभाव। एकै कानी तौ उपदेश दिरीजै कै काम री काई हळको, काम री काई शरम ? अर दूजै कानी हळका काम करणवाळी जातिया नीची बाजै, बारी बस्ती अलायदी बसै। बारै हाथ रो खाणौपीणौ तो घणी अळगी बात, बानै पाणी भी ऊपर सू पाईजै। भेळौ हुया गगाजळ रा छाटा लिरीजै। वै भगवान रा दरसण नी कर सकै। आ प्रथा कुण चलाई ? मिनख ही तो। नीतर राम तो शबरी रै ऐंठोड़ा बोरिया खाधा भाव रै भूखै सावरियै केळा रा छूतका खा लीना अर जगत रै भलै सारू महादेव हळाहळ पी लीनी। पछै औ भेदभाव क्यू ? सबा रौ खून एक सरीखौ, सब उण परमाला री सतान, मिनख मिनख सब एक है। कोई नै जलम रै सजोग सू आछौ वातावरण मिळग्यौ वौ सोरो सुखी कोई नै जलम सू आखी ऊमर पचणो पाती आयौ। पण इणसू काई ? बडौ तो बड़ा काम किया होसी। देख लो वाल्मीकि, कबीर, रैदास, नामदेव रा लोग गुण गावै अर रावण कस हिरणाकुश घणाई राजा हा नी, बानै कोई पूछै ? इण वास्तै पापी सू नही पाप सू घृणा करौ। भेदभाव मत राखौ

छुआछूत घोर अपराध है । राज अर समाज दोनू इण बात नै समझेला शिक्षा री जोत जगैला, ज्ञान रौ चानणो फैलेला जद ही औ अंधारो भागैला अर भेदभाव छुआछूत जड़ामूळ सू मिटैला ।

शिक्षा रे प्रसार सू भेदभाव तो की मिटतौ दीसै पण दहेज प्रथा जैड़ी कुरीति रा पग पसरता लागै । मुद्दौ, टीकौ, दहेज मागता औळज ही नी आवै । इण डाकी दायजै सू किया पार पावा । कन्यावा री भणाई पढ़ाई सू की आकस जरूर लागौ है। जे शिक्षा अर समाज रै प्रभाव सू कियाई अन्तर्जातीय ब्याव सरू होवै तो स्यात पापी कटै । जाग्रति री जरूरत है, कोई अवढ़ौ काम नी है । देख लौ आज सतीप्रथा अर बहु विवाह प्रथा उठगी क नी, पर्दा प्रथा भी मौळी पड़ी है, पछै आ दूजी बीमारया रो लपचेड़ौ क्यू ?

आजकालै नशौ करणौ फैशन बणग्यौ है । नशै सू सी कोस अळगी रैवण वाळी जाता भी दारू दरवेड़ा, नशा पता करण लागी । शराब री चलण तो पूरै देश मे फैलग्यौ । अरे भाई नशा करै ज्यारा घर देख लौ की तो नसीहत लौ, नशौ किसी चोखी बात है ।

नशा काढ़ लीनी नशा नशा किया सब नास ।
नशा नाखिया नरक मे (तौ ई) अड़ी नशा मे आस ।।

आपणै आथूणै राजस्थान मे अमल तमाखू री अणूतौ चलण । मरणै परणै किलोबध अमल लागै । थोड़ा दिना पैली छापै मे पढी कै सीमाई इलाका मे चुनावी उम्मीदवारा री मनवारा मनवारा मे कोई कूटळ अमल उपड़ जासी । बतावौ, अबै उणनै कुण रोकै ? दारू री माण-मनवार मळै न्यारी, खास-खास मेहमाना नै । नशौ तो च्यारूमेर फिरग्यौ । यूनिवर्सिटी री युवा पीढ़ी हैरोइन, चरस, गाजा, मादक द्रव्य, मैंड्रेक्स अर दूजी गोळ्या खा गैळीज्योड़ी रै । बीयर पीवणौ अर फटफटिया माथै फिरणौ पईसा वाळा रो शगल । जनाना सिगरेटा भळै बापरगी बतावै । अबै कठै जावा ? किसै खाडै मे बड़ा ? देखादेखी साजै शौक, छीजै काया, बधै रोग । मरै बापड़ौ गरीब । गरीब नै कठैई गत नी है ।

गावा मे अजै एक खोटी कुप्रथा चालै है – औसर, मौसर, नुक्तौ । टाबरा रो मूडौ ऊजळौ करण मे घर धो र धोळौ कर नाखै । चीणी तो गाळी हीज, नीतर भैणी लागैला । हरिद्वार जाय गगाड़ा तो करणा ही है । माईत खेजड़ी माथै कितराक दिन बैठा रै । भेळी ही जीवत खर्च कर भूड उतारौ । कठैई कठैई पेड़ी चाढ़ खलक मुलक नै जीमाइजै, सातू मिठाइया अर बध बध'र जीमण करीजै । जीवता भलाई भरपेट रावड़ी मत पावौ पण मरया अरळ परळ करनी जरूरी, नोग काई कैवै ? इण तरै एक दिन रौ माल आखी ऊमर री कचूमर काढ़ नाखै ।

एक भळै मोटी कुप्रथा बाळविवाह भारतवर्ष रा घणकरा प्राता मे कमोवेश रूप मे निगै आवै पण राजस्थान मे इणरी चलण की ज्यादा ही है । टाबरा रा बेगा पीळा

हाथ करण री चिंता माईता रै लागी रै । बेटी परायी धन, बेटी अकूरड़ी धन - धोरो वधै ज्यू वधै । वेगी धोरियै चाढ़ आपरै धणिया नै सूप निरवाळा हुवी । इया बेटी रा वाप बेटावाळा नै सोरा नी वेठण दै, रोजीना यळ्या भागै । भाईसैण भी कैवण लागै कै जावै जैड़ा दिन आवै नही । चोखा गिनायत, टावर देखभाळ झट सनमन कर लेणी । दादा-दादी भी खयावळ करै – सासा रा किसा विसवासा, पाका पानड़ा हा, अवै झाझरकी है पोतै री वीनणी देखला तो मरया मुगतर पावा । वैन भाणजा सव कोड करै । कारू-करमी जलमै जद सू आस करण नै ढूकै । टावरिया रै भी कोड लागी रै – ब्याव वीनणी विलखृ म्है तो कद परणासी वावलियाँ, सगळा साथी परण्या म्है तो रैयी कवारी टावरियी ।' इण तरै ब्याव री याता घालती रै, पडळी मोलाइजै अर गठजोड़ा री गाठा घुळती रै । गीत गाईजवो करै — कोयलड़ी सिध घाली, अर केसरिया लाडी जीवती रै । सालासाल हजारू घवरया मडै, वीन वीनणी रा रमतिया रमीजै । आखातीज रै अणवूझ सावै गाव गाव ढाणी-ढाणी औ खेल खेलीजै । करसण कम्णवाळी अर शिक्षा म पिछड़ी जाता मे इणरो चलण की ज्यादा ही है । दूजी जाता मे भी है अवस ।

इणरा केई कारण है । धार्मिक मानतावावाळे रूढ़ीवादी परिवारा मे कन्यादान रो वडी महातम मानीजै । कन्या रै रजस्वला हुया सू पैली परणावणी माईत रौ धरम, पछै पाप री भागी । इण धरम भीरू लोगा रे कारण वालविवाह प्रथा चालू है । केई जाता मे औसर माथै ब्याव करणौ भी पुन्न मानै, वारै दिना माथै ब्याव मडै । नैना मोटा टावरा नै परणावौ अर सोग खतम । गाव गावतरी, आणौ टाणौ, काम काज करण मे खुला । खरच माथै जात विरादरी भेळी होवै सो एकै पाणी मीठा कर नाखौ ।

वाळ विवाह रा आर्थिक कारण भी है । आपणो देश कृषिप्रधान देश है, कडूमै रै भेळप री परपरा है । खेती करणवाळी अर खेती रै काम सू जुड़ी जातिया रै काम मे हाय वटावणवाळा जित्ता ज्यादा लोग हुसी वित्तोई ज्यादा लाभ । इण वास्तै ब्याव वेगी कर देवै, टावर आपरौ घर साभ लेवै । सामाजिक रूप सू पिछड़ी जातिया मे रीत अर अट्टी सट्टी चालै वाँरै टावरा नै थाळी मे वैठाय फेरा दिरावै ।

वाळ विवाह रा सामाजिक कारण भी कम नी है । मा वाप नै टावरा नै वेगा परणावर्ण रो कोड लाग्यौ रै । वूढ़ा वडेरा नै पड़पोतै रौ मूडो देख सोनै री सीढ़ी सुरग चढण रो चाव लाग्यो रै । वीनणी आया सासू रै काम मे सारौ लागै । वीकानेर मे च्यार वरसा सू सामूहिक सावौ आवै ब्यावरी तजवीज कर ली नी जणा पछै गई च्यार वरसा री । इण भात भी छोटा टावरा नै अळूझाय नाखै । पण अवै वा वात नी है फरक आवण लागौ है ।

समाज मे वाळ विवाह री चलण है पण अवै इणनै चोखी वात नी मानै । लाग अवै ध्यान देवण लाग्या है । जिका टावर जाणै ही नी कै ब्याव काई है वै

खिलौणा खातर लड़ण लागै । नीद मे ऊंघता टावर रोवै – अवार नी खाऊ फेरा, वाटकियै मे मेल दौ, दिनगै खा लेसू । वतावौ औ काई व्याव ! अर कैड़ो व्याव ? आगै इणरो काई रूप वणैला ! की ठा पड़ै ! पूरी ऊमर आगै पड़ी है । काल नै ना करै नारायण, की हुय जावै तो का मे वड़ौ ! पछै औ काचा सूत क्यू पळेटो ? वाळपणै मे जो रामजी रूसज्या तो आखी उमर रडापौ भुगतौ । का नातौ का नारगी। आगै कूवौ अर लारै खाड ।

आज रै इण भौतिकवादी युग मे वेवा जीवण री हालत कितरी दयनीय अर दर्दनाक है । चूड़ी फूटग्यौ उणरा तो भाग ही फूटग्या । इण कुटळ जमाने रै विषाक्त वातावरण म वाळ वेवा रौ तो जीणौ अर मरणौ मुसकल । आ तो अवै कल्पना ही कूड़ी है कै रामनाम रै आसरै चरखौ कात जमारौ काट लेसी । अरे ! उणरै भी की आशावा, अभिलाषावा, उमगा हैती हैला ? वानै मार समाज रा मोसा उठती आगळ्या अर खोटी मीट नै माथौ नीचो कर कीकर झेलती हैला ? वात अनुभूति री है । वावाजी तापै हो वद्या जी जाणै है । इणारी दुर्दशा अर इणारै पग वारै गया समाज री दुर्दशा सू वचावण रो जायतौ करणौ जरूरी है । शिक्षित समाज नै वाळ विधवावा रै पुनर्विवाह रै वारै मे विचार करणौ अर कदम उठावणौ ही पड़ैला। समाज री एड़ी नाजोगी मर्यादावा तो तूटणी ही चाहीजै । आधुनिक विचारवाळा युवक युवतियाँ नै इण समस्या सू पार पावण री चेष्टा करनी है । विचला अर निचलै वर्ग रा लोगा मे थेटू नाताप्रथा घालै । पति मरिया देवर री चूड़ी पैहरणी, फाट्योड़ै माथै कारी लगावणी कोई अजोगी वात नी मानै । नियोग प्रथा भी पैला चालती । अरे वड़ा आदम्या, थे लुगाई चल्या पछै वारै दिन नीठ ऊडीको झट व्याव कर लेवौ तो था मर्‌या लुगाई व्याव करै तो इतरी दोराई क्यू ? धीगाणै समाज री विसगतिया दोषा रा भागी क्यू वणौ ? रोग री जड़ तो वाळ विवाह है ।

वाळ विवाह रै कारण केई वेमेळ व्याव भी रचीजै । लड़का लड़की रै ऊमर मे 15 20 वरसा रो फरक मिळै । एक रै माझळरात अर एक रै पीळौ वादळ, वळध ऊठ वाळी गाथी कीकर निभै ! इण वेमेळ व्यावा रै कारण समाज मे कुकरम फैलै, मानसिक विगाड़ पैदा हुवै । फेरू रूढ़िवादिता अधविश्वास रै कारण भूत पलीत, डाकणसारी, झाड़ा जतर, डोराडाडा रे नाम धूर्त पाखण्डी लोगा रै चक्कर मे रोग अर रगड़ौ वधै । सताजोग साइणा टावरा रे व्याव री जोड़ो भी वणै तो पछै समझ पड़ता ही पेट मे टावर पड़ै, लारै कोकळ ऊछरै । वानै पाळै किया अर छोड'र जावै कठै ! जवानी मे वूढ़ापौ वताय दै । तदुरुस्ती गमावौ अर तगी भुगतौ । पण अवै वात लोगा रै समझ आवण ढूकी है अर दिनोंदिन वाळविवाह रो चलण कम हुवण लाग्यौ है ।

इण कुप्रथावा माथै आकस लगावण मे सवसू सजोरो उपाय है - शिक्षा । जद लोग शिक्षित हो समझण लागसी तो कुरीता मतै ही मिट जासी । देख लौ जिकी

जाता म कुरीता बाळविवाह आम य
प्रथा बद है। ये जाणै कै आपरै पगा
प्रचार करै, समझावै कै बाळ विवाह,
आना आगै रैवे। आ बात रेडि
समझाइजै। सरकारी कानून बणियोड़
राखी है। 18 बरसा सू पैली लड़
अपराध है दण्डनीय है। पण जरूर
पृष्ठभूमि नै समझण री है अर बाळ वि
आ बात गिण र गाठ बाध लैणी
बाळविवाह नी कर बानै अच्छी शि
अर ब्याव री औस्था आया लाडाको
अपराध है अर इण सू व्यक्ति परिवा
करौ छोटो परिवार राखौ, सुखी रौ

ात है, उणरा पढिया लिखिया परिवारा म आ
माथै खड़ी हुया ही ब्याव करणौ। राज घणीई
अशिक्षा, कुप्रथाचा, घणी औलाद सू ही दो दम
ो टेलीविजन, नाटका रे मार्फत लागा नै
है। लड़का लड़की रै ब्याव री ऊमर बाध
ी री शादी नी कर सकौ। इणरो उल्लघन
तो इण कानून नै जाणण री अर कानून री
वाह रे नुकसाण सू वाकिफ हुवण री है। सो
कै बाळविवाह बुरी प्रथा है। टाबरा रा
ा दिरावौ पालण पोषण करो आगै वधावौ
ब्याव करौ। ध्यान राखणो कै बाळविवाह
अर समाज नुकसाण भुगतै। बाळविवाह बद
र देश रो निर्माण करो।

□

धीरां री देवळी

रूपसिंघ राठौड़

थोथा चणा बाजे घणा । ओछी पोटी रा मिनख घणी उछळ-कूद करै । सैर मे सवा सेर नी मावै । वारै हिवड़ै माय आवै "म्हानै घड़गी जिकी वाड़ मे वड़गी।" वानै आखौ आभौ टोपसी ज्यू निजर आवै । वै की आगो पीछो नी सोचै । वै खुदो-खुद नै ई घणा तीसमारखा समझै । वारी सोचण समझण री खिमता घणी माड़ी होवै। वानै तिरती डूबती नी लखावै । दूजा नैं कम अकल रा भोदू समझै । खुद नै घणा स्याणा नै पूचवान जतावै ।

दूजोड़ा सीक्यू जाणता-बूझता समय-थायरियै री ओट होयनै वारी हा मे हा मिलावै नै कूड़ा हूकारा भरै । भायला नै इत्ता ऊचा चढ़ाय दे कै पाछा उतरणा ओखा होज्या । पैल्या वार्नै कोई नी हटकारै, नी कोई चोखी सल्ला सूत दे । वैया दे भी काई ओगणगारा कीणी री सुणै जद नी ।

आजकाल घणो कसूतो टैम । पाटड़ै सू पड़ता देर नी लागै कै लोग अचूभो करता दीसै कै कद राड हुयगी । पण फेरू भी आख नी खुलै । चेतो नी साभळै । दूजा रा खाधा माथै बन्दूक मेलनै सिकार करणिया मोत । हळदी लागै नैं फिटकड़ी कै रग आवै चोखो । करै कोई, भरै कोई, अर मरै तो कोई । आरो घालणिया घणा। लाय-अलीतै माय बाडियै कुतियै री काई दाझै ? भलै मिनखा री स्यान री गारौ हो जावै । वै पूठ फेरनै चमगूगा आपरो गेलो नापै । वानै कोई दूजी वैठ्यो करणियो नी दीसै । मन मार र रै जावणो पड़ै ।

टैम-टैम री मैर । आजकालै इण भात भतीली दुनिया माय अै कुचमादूया रा कोयळा घणा दळै । आठ घाल्या साठ मिळै कै काट्या कूची मरै । जे कठै, कदे-कदास कोई भलै काम धाम री साजत वैठती दीसै तो अे कुपेड़ी वीच माय आय कूद'र टाग अड़ाय, घाव मे घोचो कर नाखै । आछो तो कीकर करै । आरो जळम ही कुघड़ी हुवै । आरो काम तो वास गुवाड़ी नै गाव सैर माय पटमेळी करण को ई हुवै। पूत रा पग तो पालणै सूता ई दीसै । इणरो अणूतो

दरसण ई लड़ाई भिड़ाई कराणो रै आग लगावणो हुवै । अे लोगा री लासा माथै आपरी रोटी सेकता निजर आवै । आरी मट मुरदाई रो काई कैवणो । अै हद दरजै रा ओछा मिनख हुवै ।

आरा भात भात रा काम नै भात भात रा नाम । मैणत-मजूरी रै नाम पर अै फळी नै फोड़ै । आखै दिन रात फैताळ मचावै । नित नूवो साग भरै । आरो ओ काई ब्योपार ? एक नै बसावै दूजे नै उजाड़ै । इणरी आळ पताळ री काई नाको। साप रा पगल्या अळाय ईज जाणै । लेज-देज रै नाम पर अे माथै ओक माडै । रीता भरीज जावै पण नीचै सू लीक करणिया रो काई भरीजै । अै दूजा नै बारा मूठी तीन लप समझै नै खुदनै घणा चतर सुजाण जाणै । आनै ओ बैरो नी कै जे आभो फाट्यो तो कारी नी लागैला । ओज़ोन पड़त रो क्लेक होल आपू-आप अयाई घोड़ो होर्‌यो है ।

ओळमा रै भोळावण रा दिन लदग्या-मगरै ढलग्या । माच कैवता माय मारै । लोगा री जीभ नै पाळो मारग्यो। साप सूघग्यो । लोगा रू'रखी री नीति अपणाय ली। माथो देख र टीको काढ़ण लागा । कोई भी पाछो नी झाकै कै ओ काई सागी है ? 'हूँ काई करू, म्हारै वस री बात नी आ भावना डोल डुबाती दीसै । धोळै दोपारा कत्री काट्या कित्ता दिन सरैलो । चू ई नी करण रो ओ पुन परताप है कै आज चौफेर हत्या, बाळण-जाळण धक्का मुकी, दगा फसाद रै आगजणी रो ताडव हा ता दीसै । बदळै री भावना भड़कै अर जोड़ तोड़ सू नित नूवो माग रचौ जावै ।

सोचण री बात आ इज है, कै सैंग लोग बाग इण स्थिति सू निजात पावण सारू मिल र भरसक कोसिस करै जिण सू साप इज मर जावै अर लाठी भी नी टूटै । पूरो फळक सवरै सामनै । किंणीनै मरण नै फुरसत नी पण टेम काढ़ र सोचणो पड़ैला समझणो पड़ैला । ओ बखत सोवण खोवण रो नी, जागण-जगावण रो है। निजर आसमान सू हटाय र धरती पर लगावणी पड़ैला, नी तो आ पगा तळळी लाय कुवै मे जाता जेज नी लागै । मारग - भूलिया भटकणिया नै समझावणा पड़ैला कै धीरा चालो रै– ''धीरा री देवळी ताता रा घाव ।''



लोकचावौ गीत 'मुरलौ'

रामनिवास सोनी

विश्व साहित्य मे राजस्थानी लोकगीत आपरी निकेवळी ओप, उजास अर समवेदणसीलता सू परखीजै । समै समै पर अठैरा साहितकारा नै कवीसरा री बाणी समाज री अबखाया, हरख-उमाव अर सुख-दुख री परतख तसवीर उकेरी, जकी जुगा ताई धुधळी कोनी हुय सकै । यूतो करीब-करीब सारा ई रसा मे चारण जुग रा कविया बाणी रा अणमोळा चितराम माड्या पण सिणगार-वीरता भगती अर वैराग को पख सदीव सू घणो सरावण जोग रैयौ ।

यू तो राजस्थानी लोकगीता माय 'पणिहारी 'केसरिया बालम 'घूमर लहरियो , काजळियो, 'गणगौर , 'लूर' आद आपरी खासियत राखै । कुरजा रो गीत तो इण धरती रो प्रतिनिधि गीत बजै । गुरुदेव रवीन्द्र इण धरती रा गीता ने घणा सराया अर आपणी सस्कृति रा अणमोल खजाना बताया । आपणै परिवार तिवार रा गीत घणी मान-मरजाद री थरपणा करै । 'भवर म्हानै खेलण दो गणगौर'' गीत शिव पारवती सू अखड सुहाग री कामना करै । कुरजा मे परदेसी प्रीतम सू मिलणे री तड़प विजोग री स्थायी भाव बण जावै । इण गीत री कल्पना कालीदास रा मेघदूत सू करी जाय सकै । ''पाखा पर लिखदू ओळमा चाचा पर सात सिलाम, सनेसो म्हारै पिव नै पुगा दीज्यौ ए –कुरजा म्हारी धरम री बैण म्हारो भवर मिला दीजो ए ।'' साहित रा महारथी करुण रस नै ई रसा री सरताज मानै । विरहण री आपरै पीव सू मिलणे री अनूठी तड़पन इण आस भरया गीत नै घणी ऊचाई ताई पुगायो ।

राजस्थानी लोकगीता मे घणी जगा नणद भौजाई रा रूसणा मनावणा अर चुभता सरावता बोल निजरा आवै । भौजाई री ओ केवणो कितरो ऊडो अरथ देवै के नणद पाड़ोसण मत राखजै । आपरी सासरै जावती बेटी ने इण भोळावण रे लारै बदळै री तो भावना कदेई कोनी रेई पण आपरै पीहर री याद री ईसको अर घर री माळकण सू दव र चालण रा औपता भाव सरावण जोग बण्या । आपणै इण साहित म मुरलो गीत आपरी न्यारी निकेवळी ठसक अर ओपमा राखै । इण गीत री कथा

मुजब नणद-भौजाया तालाव सू पाणी लेवा जावतै उणानै मुरलो (मोरियो) चपार्ी अेक डाळी पर बैठो निजर आयौ । इण मोरिये रै सरूप री तुलना नणद आपरै वीरा सू करै अर मोरिये री सुदरता वैसी बतावती भावज री सुदरता कम आकै । पूरो गीत इण तरै है-

चादा थारी चानणिया सी रात जी तारा छाई रातजी
कोई नणद भौजाया पाणी ने नीसरी ।
धुगल्यो मेल्यो सरवरिये री पाळ जी कोई नणद भौजाया
फिर फिर भावज देख्यो छ बागजी
कोई दातण तोड्यो जी काची केळ रो ।
रगड़ मसल धण धोया छ पावजी
कोई रगड़ बत्तीसी काढ़ी ऊजळी ।।
मुरलो बैठ्यो चपेळी री डाळजी
कोई गौरी रे मुखड़े पर मुरलो रीझग्यो
देखोजी बाईसा इण मुरले रो रूपजी
कोई थाका तो वीराजी सू दोय तिल आगला
जाओ ए भावज इण मुरला रै लारजी
कोई म्हाका तो वीराजी ने दोय परणायद्या
ल्यावोजी बाईसा दोय अर च्यारजी
कोई म्हाके तो सरीसी कुल मे कोई ना
देखो जी वीराजी इण भावज री बातजी
कोई थासू तो सरायो बन रो मोरियो
मारूजी दीनी मा बेना री गाळजी
कोई गोरी के मुखड़े पर मारी थापकी ।।

नणद भाभी रा बोल इण गीत मे घणा सरावण जोग । मोरिये रै फूटरापी मिनख सू वेसी बतावणी अर उणरी पाछो तोड़ देणी अठै घणो ओपती लागै । आप-आप री जग्या सारा ई सुदर हुवै पण राजस्थानी रो मोरियो आज राष्ट्रीय पाखी है उणरो महत्व मिनख री सुदरता सू सदीव वैसी । ओ गीत राजस्थानी साहित रो घणो सरावण जोग गीत है ।

□

भारत रौ अरोगौ आहार : केवळ फळ

नानूराम सस्कर्ता

आखा वैद्य डॉक्टर अर विज्ञानी शीर्ष विद्वान एक राय सू अलापै कवै कै चोखै शरीर री चावना राखणै वाळा नै सही आहार सेवन करणौ चावै। आहार प्राण पाळक, बळदायक, डील डौल रौ धणी तथा मौज-मजै, सुहणी शोभ-ओप, धीरज अर पाचन आग रौ प्रबळ रुखाळौ है। आहार ही जिनगाणी धारै, जिकी बात सुश्रुत बतावै–

आहार प्रीणन सद्यो बल कृद्देह धारक ।
आयुस्तेज समुत्साहस्मृत्योजोऽग्नि विवर्धन ॥

'आहार (भोजन) तिरपत करणै वाळो, तत्काळ ताकत देवाळ, डीलधारक, आरबळ ओज, उछाव, याददाश्त अर जठराग्नि नै बढोतरी करणै वाळो होवै।'' भाव मिश्र भळे लिखै कै –"आहार सू काया पोखीजै, चेतणा, ऊमर, बळ सुरंगो डील, अडूडी उमग धीरज अर अचळ अनोखो विकसाव होवै।''

भूख लागै आहार नी करणै सू डील टूटै, थकेली आवै अर भूख मिट तो जावै, पण आळस बेवारी वधै, आँख्या जळै अर आदमी ताकतहीण तथा धातुक्षीण ज्यू आपनै जाणणै लागै। वै री भोजन पचाणै वाळी कळा कमजोर हो ज्यावै। हिड़दो उकळ उठै, आतड़्या अै री-वैरी हो जावै, कब्ज रा कड़ी-कूटा जड़ीजै अर आदमी आकळ व्याकळ होय'र ऊँघणै लागै। पण हिवड़ो तातो तपै, काठो पड़ै जद फळ सजळ दवा री काम काढै। इसड़ै समै-अवसर सारू फकत फळा रो फायदो बत्तो लेवणो जाणीजै। आ बात छाती ठोक'र बताणी पड़ै कै – जदी खाणै साथै सदीव फळा रो थोड़ो बौवार करतो रैवै तो वो आदमी कदमकाळ ही बेमार नी वणै। अर मादो हो ही जावै ता जावक थोड़ी सी अड़चल भुगतणै रै लारोलार तुरत निरोगी हो ज्यावै। कारण–फळ प्राणी नै कुदरती औखद अरपै। जे फळा रै मेळ दूध अर माखण गटका लियो जावै तो भळै मोतेरौ लाभ मिल सकै। शरीर वणै, तेज तणै अर भूख डील रै वधेपै खातर घेरा घालवो करै। फळ रै खरूदै मिनख माथै बूढापौ वेगो सो हाथ नी घालै।

मालिक री महती महर सू ई मिनखा वास्तै फळ फूल साग पात अर धान चून जिसड़ा वधका आहार वण्या है, जका म फळ फूल तो आखा पदारथा मे सिरै सुख स्वस्थ मानीजै । फळ री लूठी बात आ है कै वै सगळा जीव जतवा नै मोफत मिलणै जोग जिनम हुवै । पछी गिगणा चढ उडे -- पण फळ-फूल खाणै रा पूरा हकदार है । पशु जगळ मे चरै फिरै तो फळ खावणै मे सैसू आगै सफळता पा ही जावै । आ बात सही तौर सू मानणी पड़ै कै फळ रै समान जीव मात्र री सायरी आहार ससार मे दूजो नही । साच माच फळ जीव धारणिया सारू एक सजीवण अचूकी आहार है। मितव्ययी मिनख नै दवा-औखदा री ठौड़ फळा नै लेणा-अपणाणा आछा ही नी - घणा आछा रैवै ! खास-खास गुणी फळा रा नावा बोलू ।

आम -- बेजोड़ वधको मीठो, सुख वळ दाता स्वादीलो गीलो मनभावण-मनरजण होवै । इयै रा आम्र, रसाळ पिक प्यारो, फळश्रेष्ठ, आमो, वसतदूत, नृपचावो इत्याद मोकळा नावा है । कावो आम कैरी वाजै पण पाका आम कलमी, लगड़ा, मालदह सरोली सिरसा दसहरी सैनाणा माण ओळखीजै । इणा सू घणी भात रा व्यजन वणै ।

कटहळ -- कटहळ री रस ताकतवर पण फळ लूठो मोटो हुवै । यो गूलर री तरा पेड़ री पेड़ी फोड़ नै नीकळै । फळ हरियै रग री अर ऊपर कवळा काँटा ! पण तोल मे वीस कीलो अर पौण मीटर ताई लावो हो सकै ।

केळो -- कैळो स्वर्ग री फळ कहीजै । यो मीठो सुवाद, नरम अर वळ प्रभावी अर खून विकार दाह, घाव, क्षय अर वाय-वादी नै नसावै । पण आँख्या रै रोग अर प्रमेह नै परिपा राखै । दिन मे एक-दो वार खा लेणो चावै ।

नारेळ -- काचै नारेळ री जळ सत्वगुणी ठडी, मनरजण वीर्य वधाणौ, हळकौ मधुर तिस अर पित नै मिटावै । नारेळ मगळ काजा म काम लेइजै । चिटकी घदै घिरत घुळै ।

अनास -- थूर रै थूनै जिसड़ो दरस, पण उवै री रस सव रसा सू अगवा ।

दाख अगूर अर किशमिस -- वळ वीर्य वधावै पित-कफ रा रोग काटै अर पकवान व्यजना म रळाई जावै ।

खजूर छुआरा बादाम -- क्षय रोग, कोठै री वादी उळटी-दम्न साथ भूख तिस खासी दमादि रोग काटै ।

मध -- पचामृत -- हळकी मीठी ताकत दयाऊ त्रिदोष नासण हावै ।

तरबूज पाणी री फळ नदी-दरियावा री कछारा म हुवै पण ईंरी जाड़ मतीरी [illegible] [illegible] [illegible] पाणी री फळ [illegible] [illegible] क्षत्र रै [illegible] [illegible] तिसा

धोराळा गावा कनकर खजै, उपजै-निपजै। अठै खरबूजा, काचर-काकड़िया ही होवै। पण खीरा री जात दूजी दिपै।

देश मे भळे ही नारगी, जामुन, बोर, टमाटर, सिघोड़ा, फालसा, सहतूत, अनार, मूगफली, अखरोट, विजौरा, नीम्बू, इमली इत्याद अनेकू फळ होवै, पण मूगफळी तो बूटै (पौधे) रै जड़ा मे लागै।

फळा मे इन्द्रिय जलाव री जोड़ गुण वळ हुवै जिको आदमी रै गुरदा री गदो मैलो निसार नाखै। मिनख रै गुरदा री बेमारी वास्तै यथा जोग फळ खाणै सू घणी जीसोरी होवै। तरबूज, सतरी अर मतीरौ ही इयै दोरप खातर आछा फळ कहीजै। फळा रा रस गुरदा री खाली सफाई नही करै – दूख-पाच रौ सारो रिणकौ टसकौ मेट'र रोगी नै खुश कर देवै। सेव, सतरा, वनासपति, अनार, सैतूत, केळा आदमी नै अजीर्ण सू उबारै। पण सैसू वत्ता गुण अजीर, अगूर, खजूर, किशमिश अर खुमाणी खाणै सू लाभै मिलै। केळै अर मळाई रो मेळ मिनख री पौरूष तत्त पाळै।

जदी कोई आदमी रै हिड़दै मै गरमी उपड़ खड़ै अर वै रा काम धीमा पड़ जावै तो हिड़दै रै कार सचालण नै तेज करणै वेग दिन मे दो वार फळ देवणा घणा जरूरी जाण चोखा हुवै। फळा मे जको लूण अर खाटी हुवै वो हिवड़ै रै कामा नै एक तरा सू चालू करै। हिड़दौ फळा री चीणी नै ऊपरी चीणी री वजाय वेगी हजम कर लेवै। वेमार रै डील मे किणी कारण सू जे लोही री काठ आ ज्यावै तो वा फळा रै खाणै सू जावक अळगी न्हाठ ज्यावै अर नित नूवो लोही थापरतो रैवै। केळै मे यो लाभ वत्तेरो लाधै। वाळका रै डील मे जे लोही री काठ पड़ ज्यावै तो वाँ रौ खास औखद फळा री वौवार करणी जाणीजै। डील री पाछी आव-ओप फळ खाणै सू अर सतरै मौसमी रै चाव-वताव आछी हावै। इया सू लोही रो जैरीलोपणौ जातो रै अर खरूदा री रग रूप चिलकण लाग ज्यावै। मूढै माथै फुणस्या झुर्र्याँ जावक नी ऊपड़ै, पाणी पळकै पसरै।

मिनख रै डील मे वात वादी सू एक प्रकार री ओपरी लूठापी आवड़ै। यो या मिनखा मे इधको उपजै कै वै अळसा मळसा करता वेकार बैठा पेटल जिनगाणी वितावै। उदर वधै, हाथ-पग फूलै अर रोगी वणै। इसड़ा लोगा नै नूवो बळ उपजावण खातर रोटी री जागा फळ खाणा वताणा पड़ै। रोजीना वानै नारगी अर नीम्बू रै रस रा दो एक गिलास पी लेवणा चहीजै, जिकै सू मोटापो वाठा पग देतो जातो रै। कमजोरी रै कारण सू उवारण सारू पाका ताजा अगूर, सेव वनासपति, केळा अर अजीर भेळा माखण मळाई चोखा वताइजै। पण अणामींत रा सैंग सागै नही।

पेटूगी-अतिसार रै रोग्या नै ही फळ माड़ा नी फळापै। खैण धाँसी आळा रोग्या रै फेफड़ै मे फळा रो आहार अचूक रामवाण रो काम करै।

विया तो फळ आखा पाका ही गुणकारी हुवै, पण वील (वेल) काचो ही घणो गुणदायी बतायीजै । वील हरड़ै अर दाख सूका फळ परम लागसार, पण दूसरा सैग रसदार थका वतै गुण गिणीजै । फळ अर वारा गोटा मे एक जिसड़ा गुण गळ्या-रळ्या मिलै । पण मैलै कचरै री कोझी अकूरड़ी ऊपर विकस'र ऊगै-लागै तथा जैरीला कीड़ा रो गमायोड़ो अर गळ्योड़ो हुवै अथवा कुरुत रै ठडौ-तातौ कर परो र छोड्योड़ो बेमेळो फळ कदे नी खाणो चायै । आ वात भावप्रकाश रै पावदै प्रकरण मे इण भात वतायोड़ी है –

अकालज कुभूमिज पाकातीत न भक्षयेत । ॥ १३७ ॥

छेकड़ चाणक्य नीति री एक सूक्ति सारू लेख री समापन करू कै –"भुक्त वृथा नो रुचि न पथ्य । अर्थात जको आहार न आछो लागै अर न पथ्यकारी हुवै वो खाणो जावक फिजूल जाणो । फळाहार हितकारी वीवार कहीजै–

सजीवण बूटी जड़ी पियूष पान अथाह ।
ईमी रस रजण मधुर फळाहार वा ! वाह ॥



योग

दशरथकुमार शर्मा

तंदुरुस्ती अर सुन्दरता रै वास्तै करियौ गयो इकजाई उपाय नै ही योग कहवै है। कसरत मे सारी ध्यान मास पेश्या पै रहवै है। जदकै योग मे घणै आसतै आसतै लयात्मक तरीका सू अगा मे विना हलचल कै योग री क्रिया पूरी होवै। मिनख वित्तो ही जवान है जित्तौ वीकौ रीढ़खम्ब लचकदार है। योग काया, मस्तक अर आतमा सबनै फायदौ पुगावै। योग सू अत श्रावी-तंत्र अर परिवहन तंत्र सबनै लाभ पूगै।

सादौ भोजन आपा नै जीवन री ताकत देवै जदकै गरिष्ठ भोजन आपारी देह सू ताकत खीच लेवै। ई वास्ते आपा जित्तो थोड़ी भोजन कराला, उत्ती ही फुरती रैवैली। माथा सूणी पग उपर कर लेया सू, आसण मे जिको भाग हिरदा रै उपरा होवै है वो भाग हिरदा रै नीचे आ जाया करै है, ई कारण सू शीर्षासन सू सारा शरीर पै अचम्भो पैदा करणवाळी प्रभाव पड़ै।

जोड़ा री दरद दूर करण रै वास्तै योग सबसू बढ़िया उपाय है। बीड़ी तम्बाखू री शरीर न कोई जरूरत कोनी। धूम्रपान री आदत री सम्बन्ध तन्त्रिका-तंत्र सू होवै। योग सू तन्त्रिका-तंत्र मजबूत बणै। ई वास्ते बीड़ी तम्बाकू री जरूरत कोनी पड़ै। सार री बात आ है कै योग सू जीवन सगती बधिया करै है अर नुकसाण देवावाळी आदता कम हुवै है। ई कारण सू योग हर मिनख नै चाहे वो किणी ऊमर या धधा वाळो अथवा वींरो स्वास्थ्य कस्यो भी होवै सगळा खातर योग फायदैमद होवै।



नाटक

बळिदान

जयन्त निर्वाण

[ठौड़– घनघोर जगळ । दो मोटियार आजादी रा दीवाना आपस मे बातीचीती कर रैया है ।]

विजय — क्यू भी समझ मे नी आवै । महात्मा गाधी कैवै है– सत्य, अहिंसा रै मन्तर सू अग्रेजा नै हरा देस्या । आनै भारत छोड़ र जाणी ई पड़ली। पण म्हारै आ बात समझ मे नी आवै । काल ई पूरै जुलूस नै गोळिया सू भूण दीयी। लुगाई टावर कित्ता मरग्या । किम्या अग्रेजा री दिल बदळीजसी । बै तो आपानै कायर समझ राख्या है। लोग भारत माता री जै बोलै । जुलूस काढै अर गोळिया सू भुणीज'र मर ज्यावै ।

अजीत — तरा कैणो बिल्कुल ठीक है । भला आ कोई बात हुई । कीड़ै-मकौड़ै री जिया भारत मा रा बेटा गाधी रै इसारै पर मरता जा रैया है । म्हारी समझ मे ईट री जवाब पत्थर सू दिया बिना आ बादर-मुखा री अक्ल ठिकाणै कानी आवै ।

विजय — म्हारी भी आ ई राय है । आनै सबक सिखाणी वास्तै आपानै भी बरावरी मे माड़ धाड़ मचाणी चाइजे । जद आरी मैम टावर अर अफसर मरसी जद ई ठा पड़सी कै मरण री मजी कै है ।

अजीत — तू ठीक कैवै है । मनै गाधी जी री रास्तो बिलकुल आछो कोनी लागै । अरे भाया साप सिर पर अर बूटी पहाड़ पर । कद अग्रेजा री दिल बदळसी ? वै के इत्ता भोळा है कै मेवै रै रूख नै मतै ई छोड'र भाग जास्यी । राजगुरू भगतसिंह चन्द्रशेखर आजाद वाळी रास्तो ई ठीक लागै। आनै मारो । अशाति पैदा करो । अग्रेजी राज री पायी हिला द्यो। चाहै काळा हो चाहै गोरा जका आपानै गुलाम बणाया राखणी चावै बानै मौत रै घाट उतार द्यो ।

विजय अरे बात तो ठीक है। म्हारौ भी ओ ई विचार है। पण ई देस म एक बीमारी हुवै तो इलाज हुवै, अठै तो के पत्तौ किती बीमारिया है।

अजीत अरे इत्ती ई कोनी। अै नाव रा राजा, टके सेर भाजी टके सेर खाजा। अग्रेजा रै पगा री रेत चाट र -भोग विलास री जीवण अपणा राख्यौ है। कैवै है– म्है क्षत्री हा – राजा हा। सै सू ऊँचा हा। अै आपा कनै सू तो खम्मा अन्नदाता कहावै अर आप अग्रेजा नै मुजरो करणै मे उणा री जूत्या उठाणै मे आपरौ गौरव समझै। जिकौ रियासता मे देस भगती री बात करै, बीरी इस्यी दुरदसा करै कै जम का दूत भी काप ज्यावै। आनै बिलकुल भी होस कोनी।

विजय कोनी भाया, तू साची कैवै है। ई देस रौ दुरभाग सदा ई रैयौ है। हिन्दू-मुसलमान सिख-जैन पारसी आरी आपस मे सिर फोड़ी कराय र, लोगा नै न्यारा-न्यारा बाट राख्या है। पत्ता कोनी किस्यौ धरम किस्यौ सम्प्रदाय मोक्ष मे ले ज्यासी।

अजीत देख बात अठै तक कोनी। आपा भी जात पात अर छूआछूत रै पजै नीचै सिसक रैया हा। चाहै आपानै कोई मार देवै। बैन-बेट्या री लाज लूट लेवै, पण म्है ऊँचा – थै नीचा कैय र आपस मे सिर फोड़ी करता रैवा।

विजय आ बात तेरी सोळह आना सही है। पण सगळी समस्यावा सू एकै सागै तो बायेड़ी करीजै कोनी। अै तो आपणी घरेलू समस्याया है। आ सू आपा पछै सलटस्या पैली आ भूता नै भगाणा जरूरी है।

अजीत। चन्द्रमोहन ओज्यू ताई कोनी आयौ। आज वो दुसटी अफसर रौ दफ्तर उड़ाणै री बात ही। बड़ो बेईमान है। बेकसूर लोगा री सभा ऊपर घोड़ा दौड़ा दिया। मेरै मन मे बदळो लेणै रौ भाव जोर पकड़ रैयौ है।

(चन्द्रमोहन आवै)

चन्द्रमोहन सारी योजना तैयार है। अबै आपणै अड्डै चालो। बठै कैई साथी उडीक रैया है। हा चालौ। (सगळा बठै सू चल्या जावै।)

दूजो दरसाव

(जगा पहाड़ री गुफा मे आपरै अड्डै मे कैई देस भगत बातचीत कर रैया है।)

विजय मात बढ़िया रैयौ। पूरो को पूरो दफ्तर साफ हुग्यौ। इत्ता दुस्ट तो पापे पुनै लाग्या। अबै काल लाट साब रौ दौरो कलकत्ते कानी हुसी।

अजीत हा, हुसी पण गाड्या च्यार छूटसी। वो दुस्ट किसी गाड़ी अर डिब्बै म हुसी ? ई री भी तो खुर खोज हुणी चाइजै।

विजय तू चिन्ता मत कर । आ वात दामोदर मालूम करणै वास्तै गयोड़ो है । यो काळवेलियै रै मेस मे टेसण पर ई चकर लगा रैयो है । साप रौ खेल दिखाय'र लोगा नै रिझाय रैयो है ।

अजीत हूँ दामोदर वड़ो हुसियार है । आपणी मडळी ठीक है ।

विजय अरे के वात है ? देखी, उतराद कानी आ धूड़ किया उड़ै है ? तैरै कनै दूरबीण है नी ? निगै कर ।

अजीत करली माया निगै, वै वादर मुखा आपानै दृढता आवै । लागै है कै किणी मा रै कपूत बेटै भेद खोल्यो है । (थोड़ी देर रुक'र) अरे इस्या कुल कलकी कपूत वेटा मावा रै नी जामता तो आ दसा क्यू हुती । अठै तो घणा ई गद्दार पळै है । थोड़े सै लालच मे आय'र देस रै वास्तै लगाणै वास्तै (सारू) त्यार वैठ्या है ।

विजय अवै चुप हुज्याओ । घोड़ा अठीनै ई आ रैया है ।

अजीत सावधान ! वदूका उठाल्यो । वारूद भरल्यो । मार्चा रै ओलै हुज्याओ । (खड़खड़ाहट वदूका री आवाज सुणाई पड़ै । ईनै सू सगळा गोळ्या चलावै । दोनू कानी गोळ्या री गाज हुवै । एक गोरो घायल हुय'र नीचै गिरै ।)

एक गोरौ ओह ! कैसा आदमी है । मार डाला रै अरे भागो वो आया ।

दूजो गोरौ ठहरो थोमस घवराओ मत । एक एक को भून देगे । ओह पुअर इडियन्स ।

विजय चलाओ गाळी मारो साळा नै । (अचाणचूकै एक गोळी वीरै सीनै पर लागै ।) जै भारत माता ! (कैंवतो थकौ म' ज्यावै । शष साथी अग्रेजा पर वरस पड़ै ।)

अजीत भागो वड़ो खतरो है । (सगळा भाग ज्यावै)

चन्द्रमोहन विजय देस री आजादी रै खातर वलिदान हुग्यो । वा गोळी उण रै नीं लागी है । आपा सगळा रै काळजै पर लागी है ।

दामोदर हाय साथी ! विजय तू चल्यो गयो । तू तेरो फरज पूरो करग्यो पण म्हैं तनै ओ पतियारो दिरावा हा कै तेरो वदळो म्हा लेस्या । आ दुस्टा नै सात समदरा पार भेज'र ई दम लेस्या ।

सगळा साथी धरती रै बेटै नै धरती नै सूप द्यो । आगै री योजना वणाओ । अवै अठै रहणौ ठीक कोनी । क्यू कै आ जगा अब खतरै सू खाली नी है । चालो अठै सू ।

(सगळा चल्या जावै ।)



आंख्या खुलगी

राजकुमारी

पात्र परिचय – किसनाराम – एक निरक्षर किसान
दद्दा – किसनाराम री पिता
मोडकी – किसनाराम री बेटी (उम्र लगभग 11 वर्ष)
किसनाराम री घरवाळी, मास्टरजी अर कमली ।

दद्दा (खासते थकै) किसना ओ किसना

किसनाराम (तेजी सू मौंय वड़तो) कै को बापू ? हूँ आग्यो, किसनो ।

दद्दा म्हारा हाण थाकग्या बेटा । ना जाणे कद ऊपरलौ बुलावौ आ जावै । पण मन माय बस एक मशा है ।

किसनाराम बापू ! थे बेखटके आपणी बात केवौ । माइत री आज्ञा मानणी तो टाबरा रो करतब है । केवो काई ईछ्या है ?

दद्दा बेटा ! आख्या बद करणै सू पैला मोडकी रा हाथ पीळा करणै रो पुन बटोरणो चाऊँ हूँ ।

किसना ल्यो बापू । थे तो म्हारे मन री बात कर दीवी । मै तो छोरो ठावो कर राख्यो हूँ । केवो जद ब्याव माड देवा ।

दद्दा तो फेर शुभ काम मे देरी किण बात री ? बात पक्की कर लेवो ।

किसना (पुकारते हुए) मोडकी री माँ सुणे है । हूँ सेठा कनै की रिपिया उधार लेवण ने जाऊँ हूँ, थारी सोने री हसली गिरवी राखणी पड़ैगी । झट सू ल्या दे (की याद करती थकी) अरे, मोडकी इनै आ फिरती आछी कोनी लागै, घर री काम-काज सिखावी । जा हेलो मार । (किसनो रूपयो लेयनै बयीर हुवै)

किसना लेवो दद्दा सेठ सू पूरा पाच सौ रिपिया लायो हूँ । सेठ बडो ही दयालु है, बोल्यी, छोरी रै ब्याव रो मामलो है, मूजी पणौ ना करी,

जम्मत व्है तो फेर ले ज्यायी । ऊपर वाळे री किरपा है । (मोडकी माय वड़ै ।)

मोडकी अरे बापू !! इत्ता रिपिया कठै स्यू ल्याया ? ल्याओ मैं गिणूं । (झपट्टा मारती गिणै) सौ दो सौ चार सौ । पूरा चार सौ रिपिया है । बापू ई रिपिया स्यू म्हनै एक सलेट ल्या दो मैं स्कूल ज्याणो चाऊ हूं।

किसना (गुस्से से) कै बोली, फेर बोली तो !! चल परीया हट !! ई छोरी री जुबान तो कतरणी ज्या चालण लागगी है । स्कूल ज्यासी ? घर सैं बार पग धर्‌यो तो तोड़ र राख दयूँ ला । चोखी तरीया समझ लेयी । (थोड़ी देर रुक कर) अर, तनै कै ठा, रिपिया चार सौ है के पाँच सौ ? तने गिणना किया आवे ?

मोडकी मैं मैं वा कमली स्यू गिणती सीखी । वा स्कूल जावै है । मैं ठीक कैवू बापू, ए रिपिया चार सौ ही है ।

किसना आ छोरी तो म्हारो माथो खराब कर देसी । सेठ बापड़ो काई झूठ बोलै । मुनीम जी खनै चोखी तर्‌या गिणा अर राकड़ा दिया है । पूरा पाच सौ है । अर, आ बित्ती सी छोरड़ी कैवे, रिपिया च्यार सो ही है। अबके जबान खोली तो (बाप दिखावै, मास्टर आवै)

मास्टर क्या बात है किसनाराम जी ? क्यो गरम हो रया हो बच्ची माथै, कोई नुकसान कर दियो कई ?

किसना कोई बात कोनी मास्टर जी । मोडकी री ब्याव कर रह्‌यो हूं । इबके मिगसर मे ।

मास्टर इत्ती जल्दी ब्याव ? बाळ विवाह करणो तो कानूनन अपराध है ।

किसना कानून धानून म्है काई जाणा हा ? कुळ री रीत निभाणो ही सारा सै वड़ो कानून है ।

पत्नी (घूघट टेढ़ो करती) मास्टरजी न पूछ तो ल्यो, रिपिया कित्ता है ?

किसना (रीसा बळती घरवाली सू) थारो भी माथो फिरग्यो दीखै । (फेर मास्टर सें) बताओ मास्टरजी ए रिपिया किता है ?

मास्टर सौ तीन सौ चार सौ । चार सौ रूपया हैं । कठै सू लाया हो ? फसल बेची है ?

किसना (उतावळे पण सें) चोखी तर्‌या गिणौ मास्टर जी ।

मास्टर अरे भाई औ तो चार सौ ही है ।

किसना (दु खी होतो हुओ) पण मास्टरजी, सेठ जी तो केयो पूरा पाच सौ रिपिया है । अगूठो तो पाच सौ माथे ही लगवायो । (सिर पकड़ लेवै) अरे ऊपर वाळा, ओ काई हो रह्यो है ? इतो बड़ो धोखो ? नही, मानणी कोनी आवै ।

मास्टरजी ठीक है, मानण मे साचाई आ वात नी आवै । ठोठी लोगा नै सैही लोग ठगै । कमली रुपिया नी गिणती तो ? धोखो खावणो ही पड़तो। कित्ती वार थे जिन्दगी मे इयान ठगीज्या हो ? अब मोडकी नै पाठशाला भेजस्यौ क नी ?

किसना जरूर भेजस्यू मोडकी नै स्कूल मास्टरजी । ब्याव भी दो साल ठहरनै करसू । अबै म्हारी आख्या खुलगी मास्टरजी ।



घोड़लो

जगदीश चन्द्र नागर

जागा तेजाजी रो भाव आणे रो थान । थान माये भाटा री दो छोटी सिलावा, एक रे माये तेजाजी रो चेरो खुदियोड़ो है, दूजी सिला माये जीभ लपलपातो एक काळमदार स्यौंप मडियोड़ो है । तेजाजी री सूरत माये माळीपानो लागीयोड़ो है । मूरत रे साव सामी एक-दो धूपेड़ा, भाड़ो देणे ताई थोड़ाक मोरपख, नारेळ गुळ अर एक वजनदार चीपियो पड़ियो है । भाव लेणे सारू घोड़लो गोड़ियाँ-ढाळ नै तेजाजी री सूरत रे पागती एक फाटियोड़ो बिछावणो बिछाय नै बैठ्यो है । पाच सात जात्री जिण माय दो चार लुगाया भी है आप रै दुख दरद रै न्याव सारू थान माथे ई बैठा है । घणा री निजरा घोड़ला सामी जमियोड़ी है । सब जात्री भाव आणे री बाट देख रह्या है । भाव ळेणे सारू घोड़लो खुद ही तेजाजी रे सामी ज्योत लेय रह्यो है । ज्योत रे पागती घी रो दीवौ जूप रह्यो है । कौंसी री थाळी अर् ढोळ बाज रह्यो है । ज्योत आवताँ ई घोड़ळो तेजाजी री मूरत रे सामी पड़ियो चीमटो उठायने आपरे मारणी सरू करै भाव आयो देख ने सब जात्री चुप चाप होय जावै । घोडळो थोड़ी देर ताई हाका हूक करै अर् जोर-जोर री गरदन हिळावै ।

एक जात्री पधारो म्हारा जामी आओ अन्दाता थाँकी ही बाट देख रह्या हा ।

दूजो जात्री (आदमी) माथा ऊपर सू आपरो पोतियो उतार ने घोड़ळा रै धोक देवतो थको जै हो माराज घणीं खम्मा कँवरा आप पधारियाँ सारी सोभा होसी ।

घोड़ळो (चुप होवतो थको) हाँ भाई जातरू लागा म्हूँ थाँकी सब बाता सुण मेळी हूँ क थे इण दुनियाँ माये घणो अन्याय कर रह्या हो। म्हूँ आज थाने ठिकाणे लगाय ने रेस्यूँ।

पेलो जात्री (आदमी) अन्दाता इतरो कोप मती करो म्हे आपरी हाजरी माये हाजर हाँ अर् हाजर रेस्याँ आप हुकम फरमाओ।

घोड़ळो अब बूझ थने काँई बूझणो है ?

पेलो जात्री थे तो अन्तरजामी हो अन्दाता घट घट री जाणो हो म्हूँ आपने काँई बताऊँ ?

घोड़ळो तो सुण ! थारा बेटा री बहू घासतेल नाक ने बळगी अर बणरी हाळत घणी खराब है जीण्सू तूँ आयो है।

पेलो जात्री हाँ, म्हारा जामी। आपरो केवणो वाजब है।

घोड़ळो (जात्री माये रीस करतो थको अर् चीमटो दिखावतो थको) थारे तूळी ळगाऊँ लोभीड़ा तूँ थारे बेटा री बहू नै रोज डायज्या सारू तग करै ओ किया घर रो न्याव रे। चाल भाग अठेसूँ म्हूँ थारो न्याव नी करूँ।

पेलो जात्री (डर ने हाथ जोड़तो थको) आपरो केवणो ठीक है, म्हारा जामी पण इण वार तो आप ने म्हारी लाज राखणी ई पड़सी म्हूँ आसा लेय ने आयो हूँ। अबके ठीक हूया पछै म्हूँ बणने डायज्या सारू कदेइ तग नी करूँ।

घोड़ळो (जात्री ने समझावतो थको) देख भाई तूँ ब्याय स्यादी जेड़ा सुभ कामा ने सौदो समझे है। डायज्या री आ रीत एक सामाजिक बुराई है। उणसूँ तूँ बरबाद हो जासी। डायज्यो लेणो अर देणो दोई गुना है। इण वार तो म्हूँ थारा बेटा री बहू ने बचाय लेस्यूँ ने थारी लाज राख लेस्यूँ पण इण रे बाद तूँ बणने डायज्या सारू तग करी है तो म्हूँ थारा कुटम ने झटको बताय देस्यूँ।

पेलो जात्री इण वार तो हुवता ने बचाओ अन्दाता पछै म्हूँ डायज्या रा नाम भी नी लेऊँ।

घोड़ळो (फेरूँ हूक हूक कर ने चीमटा री खावतो थको) हाँ भाई, दूजा जात्री आवो।

दूजो जात्री माराज म्हूँ म्हारा घर री लुगाई रो ने म्हारो जीवताँई नुकतो करणी चाँऊ हूँ म्हने हुकम फरमावो।

घोड़ळो (रीस मॉँये गरजतो थको)कुँण है रे तूँ आयो है जीवतॉँई नुकतो करण वाळो उतर म्हारी थान ऊपर सूँ । नही तो म्हारी रीस खराब है । दुनियाँ मॉँये केई मिनखा रे पागती तो ओढणे पेरणे सारू कपड़ा ने दो टेम खाण सारू धान कोनी न आ बापड़ो धणी लुगाया रो जीवताई नुकतो कर ने सुरग जासी तूँ कदेई सुरग देखियो रे केड़ो कू है ले चाल म्हने भी सुरग दिखा ।

दूजो जात्री अन्दाता आपणा समाज रा केई रीति रेवाज ऐड़ा है जिणाँने आपा टाळ नी मर्कॉ ।

घोड़ळो (फेरूँ गरजतो थको) समाज पड़ियो छूला मॉँये ने तूँ भी वणरे साथ पड़ज्या पण म्हूँ तो थने जीवता थका ने मरिया पछै भी नुकतो करणै रो हुकम नी देऊँ । आज टेम घणो वदळियो है इण सारू आपरी परिस्थितियाँ ने देखे न चाळणो जरूरी है। म्हारो लोगा ने आ ई हुकम है के जीवता ने मरिया पछै वाळो नुकतो या मिरतुभोज रे नॉव खरच करणो एक सामाजिक बुराई है । थाने इणने मिटावणी चावै - – घर घर जाय ने उणरे विपरीत जागरण री ज्योत जगावणी चावै नी तो थे कदेई ऊँचा नी आवोला ओ म्हारो सराप है ।

दूजो जात्री आछो वापजी घणी खम्मा अन्दाता आपरो हुकम सिर माथे ।

घोड़ळो (तीजा जात्री ने बूझतो थको) हाँ भाई थारे काँई दूक पाच है ।

तीजो जात्री वापजी म्हूँ पर जातरो हूँ इण गॉँव रा लोग म्हारे सागे घणो दुरभाव राखे म्हने अकेळो देख ने सतावणो चावै । म्हू काँई उपाव करूँ ?

घोड़ळो (आँखियाँ फाड़ न जोर सूँ हूँ हूँ करतो थको) काँई कियो रे म्हारा भाई थारे साथ घणो दुरभाव राखे ?

तीजो जात्री हाँ, हुकम ।

घोड़ळो (पास पड़िया चीमटा सू आपरे सरीर माथे लगातार जोरदार मारतो थको ने रीस खावतो थको) थे क्यूँ म्हनें कायो करो हो आजरी इण पढ़ियोड़ी दुनियाँ मॉँये कुण हिन्दु अर कुण मुसळमान । आपा सब एक भगवान री औलाद हाँ । राम भी वोई ने रेमान भी वोई है । फेरूँ थे क्यूँ भेदभाव राखो क्यूँ थारा दूजी जाता हाळा भाया सूँ

दुरभाव करो हो इण-लड़ाई मॉंये थाने केड़ी मोज मिळै है वा भी वतायदो ।

चौथो जात्री नही म्हारा जामी । हरेक आदमी चाहे वो कोई भी जात सूँ मेळ खातौ हुवै आपणो भाई है आपणी तरे वो भी इण देस रो नागरिक है ।

घोड़ळो तो जावो आज सू ई थे ओ नेम लेवो के थे झगड़ो नी करोला भाई चारा सूँ रेवोला ने जो नी रह्या तो म्हारे पागती दूजो उपाव भी है जिणसूँ थे तुरता-तुरत लाईण माथे आ जास्यो (पाँचवो जात्री ने बतळावतो थको) हाँ भाई, थारे काँई न्याव कराणो है ? जळ्दी बोळ ।

पाँचवो जात्री वापजी इण गाँव रा ऊँची जाता हाळा म्हन कुआ माथे पाणी नी भरवा देव ने नी भगवान रा मिन्दरा मॉंय जावण देवै गाँव री गळियाँ मॉंये सूँ निकळूँ जणे कोई तो केवे इणसू दूर'रैवो ने कोई केवे इणने गॉंव सूँ वारै काडो ।

घोड़लो (फेर रीस करतो थको) अठै री जनता तो जानवरा सूँ गई बीती है दुनियाँ आकासा माथे घर वणाण री सोच री है ने अे धरती माथे भी लड़ना मरता नी धापे । थै ओ छुआछून रो भेदभाव कणे छोड़स्यो रे ।

एक जात्री हाँ अन्दाता आपरो केवणो सॉंचो हे ।

घोड़ळो तो जाओ यॉन थ आदमी समझाला ता थाणे गॉंव मॉंये सुख सान्ति रेसी खूब वरसात होरसी घणा धान होसी पण थाने पूरो मान देवणा पड़सी । (दूजा जात्री कानि देखतो थको) तूँ ता इण थान माथे आज नुँवोई निजर आवै थारे काँई बूझणो है ?

जात्री अन्दाता, म्हूँ गरीवी सूँ घणो तग आयग्यो म्हारे पागती जमी जायदाद काँई कोनि पिरवार रो गुजर वसर करणे ताई कोई उपाव वतावो ?

घोड़ळो तूँ ता साव भोळो ई दीखे रे सरकार री तरफ सूँ गरीव लागा ने इतरी जमीं-जायदाद मिळे क कॉई वताऊँ आज इणी गाँव मॉंये एस डी ओ सा'व पधारेला तूँ एक दरकास लिख ने थारी गरीवी री गाथा वणा न सुणाइजे थन जरुर जमी मिळसी पण झूँठ मत बोळजे नही तो दुख पावेला ।

जात्री आछो अन्तरजामी आप कवो ज्यूँ ईं करस्यूँ।

घोड़ळो (सब जात्रियाँ कानि देखतो थको) थे सब न्याव करवाय लियो के और कोई बाकी रह्यो है ? (सब चुप रैवै) ओ म्हारो मूँडो काँई देखो काँई तो केवी ?

एक जात्री सब जात्री आपरा मन री वाता केय दी अन्दाता।

घोड़ळो तो म्हूँ म्हारे ठिकाणे जावै रह्यो हूँ एक बगत फेर्लूँ केय दयूँ म्हारा हुकम री पूरी पाळणा होणी चावै नीं तो थे बरबाद हो जास्यो ओ म्हारो सराप है ।

(धीरे धीरे घोड़ळा रो भाव उतर जावे काँसी री थाळी नै ढोल भी बाजतो-बाजतो धीमो पड जावै भाव बन्द हुवतो जाण न सब जात्री आप-आप रे घरा जावे।

(पड़दौ गिरै)



कहाणी

जिनगाणी री जूझार

रामस्वरूप परेश

नाना नाना वादळा रै आभा माय पसरवा सू सुरजी की मादो पड़ग्यो हो। मैं तावड़ा री तिड़की सू डरपीजेड़ो भेळपूड़ी हाळा री दुकान रा पाटिया माथै बैठ्यो। दूर ताणी पसरेड़ा अणथाग समदर माय उठती ल्हैरा नै जोय रैयो, छिया होवण सू मन हुयो'क चोपाटी री बाळू माटी माथे आवती नै जावती झाला नै नेड़ा सू जोवू। मैं उठनै आली माटी री सीळाई रो आणद लेवतो कुरसी माथै जाय बैठू।

महानगर री भीड भाड़ हाळी जिनगाणी माय एक दीतवार इज इस्यी मिळै जिण माय मसीनी जिनगाणी सु चिन्योक टळ'र की सोचवा विचारवा री मोकौ मिळै। मैं ल्हैरा सू आली हुयेडी माटी माथै काठळ काठळ आगै बधू। ऊठ घोड़ा माथै सैळ करवाळा सैलानी रैड्या माथै सख'र सीप्यारा ज्याल खिलारा री दुकाना, कठै ई डोलर हीडा माये हीडता टावर टोळी भात भात रा दरसावा री एक दिखावणी लाग मैली।

एक मिनख ऊठ री मूरी पकड्या म्हारै कनोकर नीसरयो। उण माथै बैठ्या सैलान्यारा हाव भाव सू लखावै'क वै पैली पोत ऊठ माथै चढ्या है। म्हारी निजर उण माथे सू सरक नै ऊठ री मूरी पकड़वाळा रै माथे तिसळ्यावै। मनै लागै मैं उण मिनख नै सूळ पिछाणू। वो आली माटी माय कच कच करतो आगै बध ज्यावै। मैं भी उणरै लारै लारै बधू। मैं आ भी जाणू हू क ऊठ री सैळ करवा वाळो काठळ छोड'र कठे जासी ? पाछो अठीकर इज तो आसी पण मन नी मानै। मैं उणनै पाछो वावड़ती जेज कैवू - मैं तनै यार कठे पैली भी देख्यो है।

वो एकर म्हारै कानी उड़ती-सी निजर राळ नै कैवै-देख्यो व्हैलो सैल करणी है तो पाच रिपिया लागसी अर दोय चक्कर लगवास्यू अर वो खातावळी सू आगै बध जावै। मनै लागै स्यात मैं इण नै पैली कदै नी देख्यो व्हैलो। उणिगारा सू देस मरयो

है मै एक कुरसी माथै बैठनै माथा पर जोर राळू। सोचता सोचता दोय साल पैली री बाता आख्या सामी रील सी चालवा लाग ज्यावै। मन कैवै ओ रुघवीर इज तो है पण रुघवीर रा पग तो सफा खारज हुयेडा हा। उण सू फिरयो इज दोरो जातो अर ओ मिनख तो खातावळी सू चालै। इयाकला विचार म्हारा पतियारा नै पोचो कर नाख्यो। रुघवीर रै होवण अर नी होवण री दोगा। चौथी माय मैं लारला दोय साल पैली रा पगोतिया उतरवा लाग ज्यावू।

रुघवीर जदै अस्पताळ माय भरती हुयो तदै उणरै पगा माथै सोई आ मेली ही। मनै सूल याद है वो आतो इज आपरा कुड़ता पजामा नै सामट'र मेल दीना अर अस्पताळ रा गाभा पैर लीना। आखो दिन विना बोल्या चाल्या एक डायरी माय मूडो दिया की भणतो रैतो। आखा नोकरा नै नाव लेले र बुलातो। म्हारै कनै एक पडतजी री खाट ही। एक दिन मै उणानै रुघवीर सारू पूछयो। वै कैयो –ओ गठिया वाव री मादगी सू दुखी हे। ओ लारली साल भी आ दिना अठै इज भरती हो। ओ अठे सैसू सैदो है।

दूजै दिन भाग फाट्या पैली इज एक नर्स उणनै जगाय नै कैयो–लै काडो पीलै। वो कैयो– मेल दे ले लेस्यू अर चिनीक ताळ माय काडा रो गिलास मोरी रै बारै ऊधो कर दीनो। मै कई बर उणनै काडो ढोळता देख्यो। मै सोचतो– ओ दुवाई नी लैवै, सूळ किया होसी ? एक दिन पडतजी नै भी सैन करनै रुघवीर री करतूत दिखाई, बै कैयो–ओ पैली भी इयाई दवाया बगा देतो अर रोट्या बाट वाळा सू घणी रोट्या लेवण सारू राड़ करतो। जदा इज तो इणा नै अस्पताळ सू काड इज दियौ हो।

एक दिन मै रुघवीर री खाट कनै जाय नै कैयो–रुघवीर तू आखौ दिन आधी रात ताणी काई भणतो रैवै ? वो मने खाट माथै बैठाय नै वा डायरी मनै पकड़ा दी। उण माय गजला लिखेडी ही। अै गजला तू लिखै है के ? मै बूझ्यू। वो इणरा उथळा माय कैयो–कसीक लागी ? उण दिन पछै रोजीना रात नै वो म्हारी खाट माथै बैठनै गजला सुणातो। मोरी रै नीचै कर आखो दिन ट्रेन आती जाती रैती। तरड़ तरड़ मेह बरसतो रैवतो पण वो डायरी माय मूडो लुकोया सूतो रैवतो।

मै विचारा रा विमाण सू नीचै उतरू। कुरसी छोड नै रुघवीर री हेर - ढूढ माय च्यारूयू मेर आख्या फाड़ू। दुवाई नी लेवाळा रुघवीर रा पग सूल क्यासू हुया अर हू भी गया तो वो गजला लिख वाळो रुघवीर ओ ऊठ हाकवाळो रुघवीर किंया वण्यो ? अै कई तीखा सवाल म्हारा पगा नै आगै नी बधवा देवै पण दोय म्हीना री पिछाण कम थोड़ी इज हुवै। मन कैवै–ओईज तो रुघवीर है। मै फेर उणने हेरबा नै निसरू।

वो दाय ग्रायका सू पीसा ले'र गोज्या माय घाल रियो हो । मै उणरा काधा माथै हाथ मेल नै केयू –रुघवीर, तू मनै पिछाणै नी ? वो मनै ऊपर सू नीचे ताणी जोय नै कैवे–पण तू म्हारो नाव किया जाणै ? नाव ? मै केयू– नाम इज काई मै थारी गजला भी जाणू । चरणी रोड हाळा अस्पताळ माय दाय म्हीना रो साथ भी भूलग्यो । वो ऊठ नै ऊभे करनै म्हारो हाथ पकड़नै एकानी लेग्यौ । दुकाना लारै एक मोरी रै ऊठ नै बाध'र मनै एक कुरसी माथै बैठावतो कैवे –तू आ सोचतो व्हैलो'क म्हारी टागा किया सूल हुई ?

हा ! मै केयू ।

पण म्हारै गठिया वाव ही इज कद ?

म्हारै मूडा सू 'है?' निसर्‌यो । इजरज सू चोड़ा हुयेड़ा भैणा सू वो म्हारा भाव समझ ज्यावै । कैवे– इण माय की इजरज नी, मिनख रो धरम है जिनगाणी रा जुध नै जीतणो । मछली जतरी इमानदारी सू मछली वणी रैवै वतरै लूठी मछल्या उणानै खावती रैवै, पण जद वा इज छिपकली रो खोळियो पैर ले तो कोई उणारै हाथ नी लगावै ।

मनै लागै हालात उणाने जिनगाणी रा जुध नै जीतवा सारू कई हथियार दे'र जूझार बणा दियौ । पण रुघवीर, मै केयू–गठिया सु खारज हुयेड़ा पग, कवि अर अठै आ ऊठवाळी की समझ नी आवै ।

वो चिन्योक मुळक नै कैवे–ओ महानगर भी ई समदर दाई डूगौ है । तू काई जाणै ऊठ वाळी म्हारो असली धधो है ? ऊठ रो मालिक नौकरी करै । सौ रिपिया रोजीना माथै मै ऊठवाळी करू सो रिपिया किरायो, बाकी म्हारी कमाई ।

बम्बई री विरखा माय म्हारो धधो चोपट हो ज्यावै । उण जेज सैलानी भोत थोड़ा आवै अर जका आवै उणसू म्हारो ऊठ री भाडो इज नी थावडै । रोट्या री समस्या नाव पूछवा लाग ज्यावै । उण जेज म्हारै स्वामी गठिया रो रोगी वणर अस्पताळ माय भरती रै अलावा कोई चारो नी रैवै । विरखा रा दोय तीन म्हीना मैं अस्पताळ माय इज काढू । तू जाणै वठे रोटी पाणी नौकर चाकर सै मुफत मिळै । रोग रो वेरौ किणी नै पड़ै ईज नी । विरखा री रुत बीती र मै अस्पताळ छोड्यो । इण रै पछै मुफत मे खायेड़ी रोट्या रौ प्राश्चित ईमानदार बण'र करू । मै तीन म्हीना जिनगाणी रा जुध नै खारिज टागा सू लडू अर नौ म्हीना ऊटवाळ बण'र । अर एक मै इज कई अठै सगळा न्यारा न्यारा हथियारा सू न्यारा न्यारा रुपा माय इण जुध नै लड़ै ।

मनै लागै रुघवीर आज रै आखै मिनखा रो साचळो रूप है जको जिनगाणी सै घबरा र भाजै नी, धोखा सू वैईमानी सू मिणत मजूरी अर इमानदारी जिस्या दोगला रूप धारनै लड़ै । अठे सै जूझार है, कोई हार नी मानै । काळी काया नै

धोळा कपड़ा पैरा र लड़ै तो कोई मछली छिपकळी बण र कोई रुघवीर दाई गठिया रो रोगी बण'र जिनगाणी सू जूझै तो कोई ऊठवाळ बण र मैणत रा हथियारा सू लड़ै ।

स्यात आज रुघवीर आपरै दोगला जीवन री कई पडता उघाड़ देवणो चावै हो। मैं उणरा चैरा नै जोवू । उण माथै कोई खास भाव नी हो । न उण माथै मैणत मजूरी सू पेट भरवा रो हरख हो । अस्पताळ माय झूठो रोगी बण र रैवण रो उणनै पछतावो नी हो । अै सगळी बाता उण सारू इयाकली ही जिया नित की समदर री झाल माटी आली कर दे अर चिनीक ताळ माय फेर सूक ज्यावै । बो दुकाना कानी जोयो, उण रो ऊठ मूरी लुडा र आगानै वधतो दीस्यो । बो खातावळी सू वठीनै भाज्यो । मैं उणरी टागा री खातावळी र दमखम नै फाटी फाटी आख्या सू जोवतो रैवू ।



अकार्डियन

जितेन्द्र शकर बजाड़

वो आपरी जूनी पुराणी, टूट्यौ, फूट्यौ सगळोई सामान लेय'र पाछी आपणा दूढा हूया थका घर मे आयग्यी । महीनै पन्द्रह दिन सू सूनै पड्या घर मे धूळ धमासो जमग्यौ हौ । सामान नै बारणै ई मेल र टूट्यौड़ी बुवारी सू घर नै झाड़वा लागग्यी । कोई पन्दह-बीस दिन पैली ई तो बड़को आपरी लडवण रे सागै उण रै कने आय'र आधे दिन तॉई हाया-जोड़ी करी ही जद पछै वो वॉ रै सागै अपणै हाथा बणायी नुवा घर मा बारै भेळै रहवी मजूर करयी ही । उण नै उण टेम बारै भेळे रेवण री हामी भरती बेळा जतरी फिकर आपणी नी ही उण सू दूणी सोच छोटक्या री हौ, जिण नै बीरी मायड़ छ महीनै री छोड़'र रामजी रै घरै चल दी ही । छोटक्या नै आज ताई पाळता पोसता उणनै याद कोनी आवै कै वो कदैई छोटक्यारी सामै थप्पड़ ई वायी होवै, पण जद सू बड़का री लडवण आवा-जावा लागी ही बी छोटक्या नै नित पातरै ई आसूडा ढळकावती अर डूसक्या लेवती ई आपरी आख्या सू देखती रैवै है । अर इणीज छोटक्यारी खातर ईज वो आपरै जमारै भर री कमाई सू बण्यो आपरी घर घर काई नुवै फेशन रो फ्लेट बड़का नै सौप र छ महीनै पैली ईणीज दूढै घर मे आयी ही । अबार पन्द्रह बीस दिन पैली ई एक परभातै वो उठ'र चाय वणावती ही अर छोटक्यी बारी बुवारी काढ़ै हो कै बड़की अर उणरी लाडी आय'र बारै सागै ई रहवण री खुशामद कीधी ही । पैला तो वो वा दोन्यू री बात माथै ध्यान कोनी दियो हो, पण जद बड़की अर लाडी दिन रै ग्यारै बज्या तॉई पाछै ई लाग्या रह्या अर मौहल्ला रा दो चार ओळखाण वाळा ई आयग्या तो उण नै इण दूढा रै पाछो ताळौ लगावणौ पड्यौ हौ ।

आज पाछौ आय'र पाछी बुवारी चलावणी पड़सी इण बात री उण नै पन्द्रह-बीस दिन पैली ठा कोनी लागै ही ।

बी डाडे-बळिडै जम्या धूळ धुमासा नै झाटक्यो, भीता न झाटकी चूल्हा चौका नै ऊजळा करनै वो बारणै सू सामान लाय र घर मे जमावण लाग्यी । सैं सू पैली उण नै याद आई सुरसती माता री तस्वीर एक हाथ माय वीणा अर धोळा हस माथै

विराजी थकी । कदैई इण तस्वीर रै आगै बैठनै वो आपणी अकार्डियन बजावती ही। अकार्डियन बजावा को उणरी शौक अस्यो रग लायो कै ओळ्यू-दाळ्यू री किणी ई आर्केस्ट्रा मडली मे उण जस्यो कोई अकार्डियन बजावणियौ कोनी हो। अर जद कदी जिण आर्केस्ट्रा मण्डली रै सागै उण रै अकार्डियन बजावण रो सौदो हुव जावतौ, वा मण्डळी ई आपणा विज्ञापन, परचार पर्चा मे उण री नाव खास अकार्डियन बजावण वाळा री ठौड़ छपावणै सू कोनी चूकती ।

जद कदै ई उण रौ मन होवतौ तो वौ आपणा इण बाजा नै आपणै इण जूनै घर रै बारै ऊभौ होय'र बजावती । बजावतो काई, अकार्डियन री धूकणी रै सागै वो ई ईया झोला खावतो हो जाणै कोई मतवाळो हाथी आपरी सूण्ड अर कान हिलावती थकौ झूमै है । इम टेम वो अकार्डियन रै लार सुध-बुध भलाई बिसर जातौ पण सुर तो उणरी आगळया माय ई बण्या थका हा । गळियारै रा आता-जाता मिनख गम जावै हा उण रा सुरा री गळिया रै बीच । गमता तो एड़ा गमता कै वो ई जद आपरौ बाजी ढाब'र हॉक लगावती किणी रै नॉवरी, जद ठा पड़ती लोगा नै क हीरा भाई रो अकार्डियन बन्द हुयग्यो है । नाव तो उणरो हीरालाल हो पण गावणै-बजावणै रै शौक म जमता रमता वो आपरै नाव री लार "गधर्व" लगावण लाग्यी हो । हीरा भाई ने गळियारै वाळा तो हीरो गधरप केवता अर रोळा करता क इण नै तो गाया भेस्या रै चौपड़ीजै है ओ वोई गधरप है । पण साचाई वो तो उणरै इलाके री एक अलबेलो गधर्व ई हो ।

तसवीरा टाकता टाकता उणरै हाथ आई एक बीजी तसवीर । तसवीर काई एक जमानै री ओळ्यू, याद उघाड़तो फोटू हो वो । उणरी जोड़ायत रूपल अर वो, वॉ दोना री गोद माय बेठ्यी थकौ बड़की अर छोटक्यी । उणरी घरवाळी अर उणरी निजरा रा सूरज, चाद उणरा गादी सम्हाळवा वाळा राम लिछमण उणरी बश बेल रा फूलड़ा देख र उण नै रूपल ई याद आयगी । पण आज नी तो रूपल है अर नी उण रा देख्या सुपना रा राम लिछमणा मे राम री रूप । राम री पिछाण हुगी है अर लछमण नै परखवा की टेम हाल कोनी आई है । सुपना कदै साचा हुवै कदै ई नी हुवै पण सुपने रै राजकुॅवरा री नॉव ई वो वॉ दिना राम लछमण राख दियी ही अर आज तॉई ई वैई नाव चालै है ।

'दद्दा, बाहर कोई आपको पूछ रहा है '– मोरा माळै स्कूल रा बस्ता नै गूणती जिया लाद्या घर मे बड़तौ थको लछमण बोल्यी । वो पाछी फिरियो लछमण स्कूल सू आयग्यौ हौ । चश्मे ने ऊँचो करता थका वो बोल्यौ– ' कौन हो सकता है ?" कोई अनजान है । मैं नही जानता आप ही देख लो । – बस्ता नै उतारता थका लछमण बोल्यौ अर घर मैं गयो परौ । वो बारै आय र देख्यो ।

आआ साहब, आओ । दो अणजाण भोट्यारा नै घर रै सामै ऊभा देख र वो आवकार दियो । वै दोन्यू उण नै हाथ जोड़ र मुळकता थका पूछ्यो– "हमे

हीरालाल जी गधर्व से " "हाजिर हुकम, मुझ गरीब को ही हीरा कहते है" वो वा दोना नै गुवाड़ी माय बुला'र वारै खाट पसारतो थकौ जवाब दियो ।

"हम लोग बेगूँ मे आये है वहा हमारी एक सगीत समिति है '

"जी हुकम" वो गग्दन हिलावण लाग्यौ ।

"हम लोग आपका नाम सुन कर आये है' वै बोल्या ।

"यह आपकी जर्रा नवाजी है हुजूर मेरे लायक सेवा ?" वो वारी बात सुण र नमतो थको बोली माय मुळकतो सकुचावतो पड़ूत्तर दियो ।

"आपको हमारे एक समारोह मे अकार्डियन बजाना है ।" वाँ रै मून्डै सू अकार्डियन बजावणै री निमत्रण सुण'र वीरै मन री बात हाठा ताँई आवण री बजाय उणरा पौर पौर सू उबकणे लागगी । वाँरी बात उणने अचाणचक एक'र फेरूँ वोई मदगाळो, मदमातो, अकार्डियन सू कामण जगावती हीरालाल गधर्व बणा दियो ।

"अरे लक्ष्मण चल इधर कन्हैये की थड़ी से दो गोल्डन लेके आ, चल जल्दी, और सुन" वो फुर्ती सू बोल्यो– "देख बगल वाले बल्लू से भर नाइन्टी किमाम वाला मीठा पत्ता लाना मत भूलना साथ मे ।' वाँरै कानी झाकता थका ई उण नै आ पूछणै री याद कोनी आई कै वे दोनू चाय भी पीवै है कै कोनी पीवै । उण ने तो बस ओहीज याद रह्यो क कोई उणनै अकार्डियन बजावण नै ले जावैला ।

उणनै अकार्डियन बजावणै रो मौको घणा दिना पाछै आज कोई देवण आयो हो । वो अकार्डियन, जिण रे सुरा माय बधी थकी आई ही रूपल कदैई उणरै जमारै माय जवानी रा सुर भरया नै । रूपल रै आया पाछै वो अकार्डियन बजावती अर रूपल गावै ही उण री लार ।

रूपल रौ गावणो अर उणरो अकार्डियन बजावणो उणरी निजरा रै सामै जीवतो हुग्यौ । एक'र वाने याद आयी कै उणरा हाथा सू बणाया नुवा घर रो नाव ई "अकार्डियन" मण्डायो है उण रै फाटक माथै । उणरो बड़को तो घर रौ नाव ई अकार्डियन अर ओ नाव राखणै वाळो ई बड़की, पण उण नै इण अकार्डियन माय म्हीने पन्द्रह दिन सू बेसी रहणै रौ कदैई मौको कोनी मिल्यौ स्यात उणरा भाग मे कोनी लिख्यौ हौ अवै अकार्डियन ।

लछमण चाय ल्यायौ हौ । चाय री चुस्किया रै सागै वारी बात आगै घाली अर सौदो-सवा दो सौ रुपया माथै जायर तै हुयग्यो । अगाऊ रकम इक्यावन ई वो हाथ माय झेल'र कुर्तै री बगळ वाळी जेब माय घाल लिया ।

"अरे साहब ! ठहरिये भी मै अभी तैयार होकर आपके साथ ही चलता हूँ।" वै दोनू चालवा लाग्या तो वानै बिठावता थका वो काधै रा तौलिया ने हाथ माय लेय र पाणी भर्यौड़ी बाल्टी कनै जाय र हाथ पाव रगड़बा लागग्यो । ये दोनू बैठा-बैठा उणनै देखै हा ।

"बेटा लिछमण, जरा छनू के यहाँ से मेरे कुर्ते पायजामे के इस्त्री तो करवा ला" हाथ पग धोयाँ पाछै मूडो धोवती वो बोल्यौ । दो तीन कुल्ला फेक्या अर एक जूनी पुराणी ब्रुश लेयर टूटी चप्पला नै रगड़वो शुरू हुयग्यो । उणरी उड़ती नजर कदैई वा दोना रै कानी तो कदैई आपणा बड़का रा प्लेट री कानी न्हाखती रह्यो । वै दोनू स्यात नुवा आयोजक हा अर वारी इण तरह री बातचीत करवा रो पैला इज मौको हौ सो वे उणरी तैयारी अर फुर्ती ने निरखण लागग्या हा ।

लछमण इस्तरी करवा र कुर्ता पायजामा नै लायौ अर उणरै सामनै तार माथै टाग दिया । वोई कपड़ा रै हेटै पोलिश करी थकी चप्पला रख दीनी अर एक चप्पल माथै धर दियो कागद माय लपेट्योडो नाइन्टी किमाम वाळी मीठौ पत्तो ।

'बाबू जी कित्ती बजी है ? वो त्यार हुवतै थकै पूछ्यौ ।

"साढे पाच ।' एक जणौ घड़ी देख'र बतायो ।

' अरे लछमण ! जरा देख तो बड़का आया कि नही –वो थोड़ी ऊँची हाक दीनी ।

' क्यो ? क्या अभी बड़के के धक्के से जी नही भरा है क्या ? या बड़ी दुल्हन की गालियो से ही भूख बुझती है तुम्हारी ? ' उणरी बात सुण'र गळी मे जावतो थको हसन चाचो दब र बोल्यौ । वा दोना कानी देख र वो ओरू काई पूछतौ इण सू पैली हीरा भाई बोल्या– बाबूजी एक प्रोग्राम मे मुझे अकार्डियन बजाने ले जा रहे हैं मगर , हीरा भाई थोड़ी नमळी पड़गी आगे बोलतो-बोलतो, वो वा दोना कानी टेढी देख्यो अर हसन खा चाचा सू केवण लाग्यौ– "मगर अब मैं तो अकार्डियन बजा सकता नही मेरी जगह सोच रहा हूँ कि बड़का ही चला जाए क्यो !'

"ऐसी क्या जरूरत है उसे भिजाने की ? जब तू नहीं जा सकता तो न सही" हसन खा थोड़ी नाराजगी अर तेजी बतावती गवाड़ी माय ओरग्यो हौ ।

' मगर सौदा तय हो चुका है चाचा तो अब उसे , हीरा भाई अपराधी रै जिया निजरा नीची कर लीनी ।

' क्यो किया तूने सौदा पक्का ? हसन चाचो नमळो नी पड़यो । वो बेसी ताण खायग्यो ।

' ये लोग मेरे नाम से आये हैं उम्मीद लगाकर हीरा भाई गिड़ गिड़ातो निगै आयो इण वार । वै दोनू अतरी देर ताँई वारी बात सुणता-सुणता सगळी बात समझग्या हा । वे दोन्यू ऊभा हुयग्या । हीरा भाई वाने देखताई वारी नाराजगी नै भाप लीनी । हसन चाचा एक र वा दोन्यू कानी देख्यो अर फेर हीरा भाई कानी देख र बोल्यो– हूँ ! ये तेरा नाम सुन कर उम्मीद से आये हैं और वह तेरे नाम से नफरत करता है मगर तू है कि उसके लिए '

"आप नही चल सकते तो हमे विठाया क्यो ?" हसन चाचा री वात पूरी होवणै सू पैली वा दोना मे से एक वोल्यौ । उणरी आवाज गरम ही । हीरा भाई ने खेलौ विगड़तो लाग्यो ।

"हुकम, वो मेरा वेटा है, मुझसे अच्छा वजाता है ।" वो हाथ जोड़तो थको वोल्यो ।

"और वही तुझे धक्के भी मारता है अपनी वीवी के साथ मिलकर ।" हसन चाचा फेर वोल्यो । हसन चाची आगै केवण लाग्यौ ।

' वो वाप को वाप और भाई को भाई समझने को तैयार नही ।"

वै दोनू उण री वात सुण'र तैश मे आयग्या ।

'आपने हम से धोखा क्यो किया ? हम आपका विश्वास लेकर आये थे ।' एक वोल्यौ । दूसरो उठ र वारै आयग्यौ ।

' वावूजी वह मुझे वाप और लिछमण को भाई समझे न समझे, मुझे तो उसे अपना वेटा कहना ही पड़ेगा न ।" इण वार हीरा भाई री आवाज रोवणी-सी हुगी ही । उण री वूढ़ी आख्या माय तळाव भरगी ही । वा वा दोना नै हाथ जोड़'र पगा माय झरग्या । अकार्डियन रा सुर उण टेम उदास धुन वजावै हा ।



नौकरी

पुष्पलता कश्यप

अविनाश नै आपरै वेली सुरेश रो कागद मिळ्यौ । नेकचारी पछै वीं लिख्यो है–

अबार नियोजन कार्यालय सू थारौ जिकौ 'इन्टरव्यू कार्ड आयो म्है उण नै उणी दिन थनै रिडॉयरेक्ट कर दियो हो मिळ्यो हुवैला । अेक्सचेज ऑफिस मे 13 तारीख नै सवैरै साढ़ी दस वज्या बुलाया है । थू आय रैयो है नी ? किस्मत आजमाइस री अेक मौको भळै मिळैला, आस करू कै इण बार थू अवस कामयाब हुवैला

थारो भायलो

– सुरेश

सुरेश ठीक ई लिख्यौ हो योग्यता नै कुण ई नी बुझै किस्मत आजमाइस हुवै - वी सोच्यो ।

वो अर सुरेश आठवी सू अेम अेससी ताई भेळै पढ्या । अग्र भाग री अयखाई ई तो है कै सदा उणरी नकल करणियो सुरेश आज दोय साल सू सहायक वाणिज्य कर अधिकारी लाग्योड़ो है, अर इण ओहदै माथै पक्की हुयगो है । जद के वो ओजू बेरोजगार है ।

भणाई पूरी हुवता ई सुरेश नौकरी खातर जैपुर आयग्यौ । उणरा मामोसा सचिवालय मे किणी विभाग रा सेक्शन अफसर है । वै उणनै लिख्यौ हौ–अठै आयजा की न की जुगाड़ हुय जावैला अर अेक-दोय छोटी-मोटी नौकरिया पछै वर्तमान नौकरी माथै चयन ।

अठीनै अविनाश ई लगोलग कोसिस मे रैयौ, पण की सिलसिलो नी बैठाय सक्यौ ।

वठै जम्या पछै सुरेश अविनाश नै लिख्यो हो–भई अठै आयनै म्हारै पतै पर नाम पजीकरण कराय लै । मोटो शहर है । राजधानी है । अठै अलवत्तै की ज्यात्ती , मोकौ है ।

अविनाश रै जचगी । सुरेश री बात मे दम ही । वठै पूगिया, सुरेश आपरै स्कूटर माथै उणनै लेयनै वी रो पजीकरण कराण खातर सागै घाल्यौ ।

नियोजन अधिकारी सुरेश नै पिछाणतो हो । अविनाश रो परिचय कराड्ग्यौ । वठै सामी बैठ्या ई चटपट काम हुयग्यौ । चाय री भी सरभरा हुई ।

बुलावै मे तो वगत लागैला ।

अविनाश फलौदी आयग्यौ । अठै वी री पत्नी, अध्यापिका ।

ब्याव री बात चाली जदै वी घरवाळा नै समझावणी घायी–पैला पढ़ाई खत्म करनै की काम धधै तो लागू । आछै परिवार री पढ़ी लिखी लड़की री मामणी ही । वहू लावण री मा री जिद सामी वी री अेक नी चाली ।–इती पढ़ाई करी है, तो काई नौकरी नी लागैला ? आज पत्नी थी रो सहारो वणी है ।

नौकरी रै बुलावै री कागद आयो, तो सुरेश अविनाश नै भेज दियो ।

अविनाश इण दफै अेकलो ई नियोजन अधिकारी सू मिळिया । लारली पिछाणी याद दिलाया पछै ई अेक वेरोजगार सरीखौ व्यौहार ई उणनै मिळियो ।

–परिणाम आवण मे तो वगत लागैला ।

इण पछै तो अेक सिलसिलो ई चालगो । 'कॉल-लैटर' आवणी अर सुरेश री वी नै अविनाश नै पूगती करणी, वीरो साक्षात्कार देवणी, पछै उडीक अर उडीक। कदै-कदास कठैई सू जवाब ई मिळ जावतो ।

सुरेश री आखी दौड़ धूप पछै ई वो वेकार ई रैयो । ऊटपटाग नौकरिया खातर 'कॉल' आवण सू अेक दफै तो वो विफरग्यौ–आपरी दिलचस्पी खाली आ आकड़ा मे है कै साल मे किती काल' पूगी ।

नियोजन अधिकारी ताव खायग्यौ–आप सू वूझू, आप टाइप अर शार्टहैड जाणो ? पडूत्तर मिळैला नी ' मतलब आप क्लर्क नी लाग सको । आप बी अेड हो नी, तो टीचर नीं लाग सको । आप कोई धधाऊ कोरस ई नी कियौ । जाहिर है, आप किणी तकनीकी पद माथै काम नी कर सको । अबै मै आपनै कठै किण पोस्ट खातर भेजू ?

–पण मनै प्राइवेट स्कूला री टीचरी वास्तै क्यू बुलाओ ? अे लोग शिक्षा री खुळो व्यौपार करै । वेतन रै नाम माथै कैवै लिखै की है पण सामी दूजी वाता ई आवै । दोवड़ा मानदड वरतीजै । कोरी धाधळ पट्टी है ।

–अे वाता सैग जाणै । पण हुवणो-जावणो की नी है । म्है काई करा ? म्हारो काम तो 'माग मुजब पूरती करणो है ।

वी रै सामी अेक चितराम मडै–

वो जिला शिक्षा अधिकारी सू भेट खातर गयौ हो । वठै यूनियन रा की आदमी ई बैठ्या हा । वाता चाल रैयी ही । वात सरकारी अनुदान भोगी निजी

स्कूला री आई तो कीं सदस्य अधिकारी जी री इण मुद्दे माथै ई ध्यान खींच्यौ। जदै अधिकारी जी कैयो,–गुपचुप शिकायता मिळै। पण चौड़े धाड़े सामी आवण खातर कोई तैयार नी है। जाच वास्तै ई जावा, वठै कोई चुकारो ई नीं सारै। कागजी कार्यवाही पूरी मिळै। अबै बताओ, काई कर्‌यो जाय सकै है ?

–सैंग नै आप-आप रै टाबरा री फिकर है साहब ! अर वै हसण लागग्या। अधिकारी जी ई उणारो सागो कियो।

–पण म्हैं सरकारी नोकरीं चावू ! अविनाश लगैटगै चीख पड़यौ।

अेक दफै गळत दिसा पासी मुड़या पछै आखी ऊमर भटकण वण जावैला– साचनै इण तरै री नौकरिया री बजाय अविनाश पली कनै रैवणो ई बेहतर समझयो।

नियोजन अधिकारी अेक दिन सुरेश सू बीं री शिकायत लगावता थका कैयो ही–लागै कै आपरै दोस्त नै नौकरी री अगैई दरकार नी है।

पण हकीकत तो आ ही कै बो पगापाण हुवण नै ताफड़ा तोड़ रैयौ हो। कदै-कदास उण माथै जुनून सो छाय जावतो। इणी झोक मे अेक दफै बो कलेक्टर सामै जाय पूग्यो।

अविनाश जदै आखी बात माडनै बताई तो हमदरदी दिखावतौ बीं जिलाधिकारी कैयौ–बो तो ठीक है। पण, नौकरी म्हारी जेब मे तो पड़ी नी है। अरजी देय दो ध्यान राखाला। हा आगै पढ़णो चावो, पीअेच डी आद करणै रो विचार हुवै, जणा'र फेलोशिप खातर मैं सिफारिश कर देवूला।

पीअेच डी करनै ई काई हुवैला ? ओ तो निरो पलायन है। मतलब, सघर्ष नै की बरसा ताई टाळणी। ओ कैड़ो सुराज है, जठै काम मागणै रो अधिकार नी!

आज 12 तारीख है। साक्षात्कार सारू जावणो है तो आज ई निकळणौ पड़सी।

आ दिना बी मे अेक उधेड़बुन चाल रैयी है–बो जावै या नी। किता इन्टरव्यू अयार ताई देय दिया है। काई हुयो ? खाली परेशानी है। खरचौ हुवै सो अलग।

लारलै इन्टरव्यू री घटना सामी उणरी दिमाग घूमै–अेकसावज पूगिया ठा पड़ी कै फेम्स सरकारी अनुदान माथे चालणियै अेक स्कूल मे छोटे मास्टर री खाली जगा खातर उणनै बुलाईज्यो है।

बो अेकरळै तो झल्लायगो। सोच्यौ इन्टरव्यू नी, देय देवू। पछै फेर विचार आयौ–अयै बुलावौ आयग्यो है, तो इन्टरव्यू देय ई देवू। अेक तजरबौ पळै सही।

पण जदै वेतन री बात आई, उण साफ कैय दियो,–म्हे जित्ता उठाउला, उत्ता माथै ई सही करूला, अर हस्ताक्षर तारीख सागै स्याही मे करूला ।

इण माथै प्रबधक महाशय की भोत ई अपमानजनक बोल कैया । वो जब्व नी कर सक्यो । उण उठ'र गिरेबान झाल लियौ हो ।

हाकौ - दड़बौ सुणनै सै प्रत्याशी माय आयग्या । बठै रा कर्मचारी ई भेळा हुयग्या ।

बात री ठा पड़या की दूजा प्रत्याशी ई इण तरै रै शोषण रै बरखिलाफ हामळ भरी ।

बठै रा कर्मचारी ई उणरै इण साहस री, दबी जुबान सू ही सही, पण सरावणा करी कै– आप चोखी करियौ ।

कमेटी रा सदस्या मे सू कोई कैवै हो,–पागल लागै ! दूजो–कोई नेता दीखै । तीजो–किणी अखबार सू सबद्ध हुय सकै !

पली कैवै–धाली, परची काढ़ लेवा । 'जावणो जोइजै, की नी जावणो जोइजै ऐड़ी परचिया डालै । बी ऐक उठावै, लिख्योड़ो है–जावणो चाहिजै ।

बो जावण खातर तैयार हुवै–जावणो ई पड़ैला । नियोजन कार्यालय पूगिया ठा पड़ी कै सरकारी नौकरी है । पोस्ट, रिसर्च असिस्टैंट री । ग्यारह बज्या सू इन्टरव्यू है । जिका उम्मीदवार आया, बा मे सू 'इच्छुक' रा नाम भेज दिया जावै ।

घणा ई उम्मीदवार है ।

वो ऑफिस मे पूगियौ । सोचै–कित्ती शानदार बिल्डिग है । सलेक्शन हुया म्हनै ई ऐक आछै ऑफिस मे ऐक आछै ओहदे माथै काम करणै रो औसर मिळ सकै । बो मन मे अणूतो ई आस्थावान हुय जावै ।

भात भात री बाता चाल रैयी है । ऐक लड़के रै बारै मे कैइजै–सलेक्शन इणरो ई ज हुवैला, अठै रै ऐक ऊचे अधिकारी री सबधी है । अठै, सै सू इणरी जाण पिचाण है ।

ओ पैला सू अठै काम करै । इणनै 'रेगुलराइज' करणै खातर ई ओ सैंग ड्रामी है ।

वो लड़को घणो हरखीजतो अठी-ऊठी, कदै इणरै सागै तो कदैई उणरै सागै, घूमतौ फिरतौ निगै आवै हो ।

जदैई कहलवायो जावै–'इन्टरव्यू' अबार नी हुवैला, सै चार बज्या आवो ।

वो नै घणी निराशा हुवै । सोचै–अबै इत्तो बगत कठै गुजारू ? जठै ठैरियोड़ौ हो बा जगै बोळी आतरै ही ।

इत्ती दूर जायनै पाछौ आवण मे ता की तुक नी ।

खाणी वो दिनूगैई खायनै वहीर हुयो हो । चाय री तलब हुयगी । वा अेक सस्तै से चायघर मे वड़ै ।

वठै सू निकळ नै सड़का माथै अकैकारो फिरतो रैवै । सोचै-कीं हुवणो तो आय कोनी । वावड़ जाऊ ?   पण पाछो वुवो नी जावै ।

पाछो वठै पूगै जणै साढ़ै चार रै लगैटगै हुय रैयी ही । ठा पड़ै-इन्टरव्यू सरू हुवण वाळो है । की वतावै हा-मायनै फला फला है ।

पैले प्रत्याशी रौ नाम वोलीजै । पाछो आया भौत सा लड़का ओला दोळा हुयनै पूछण लागै -कैड़ो रैयो ?   काई-काई वूझै है ?

वीं लड़को वतावै-म्हनै तो की खास नी वूझ्यो । तीन जणा है । अेक नाम वगैरह वूझै । दूजो, प्रमाणपत्र देखै । अे जिको लावा-दुवळो सो है वो ई विषय रै वावत वूझै है ।

हा, हा, वै खन्ना साहव है-अेक जणो आपरी जाणकारी री ओळखाण दवै ।

अेक-अेक करनै उम्मीदवार मायनै जावै, अर लगैटगै पाच-सात मिनटा पछै वारै आय जावै ।

यी रो भी नम्वर आवै । वो आ सोचनै मायनै जावै-सलेक्शन तो आपणो हुवणो नी । पछै घवरीजू क्यू ? खूव खुल नै, तवीयत सू जवाव देवणा है ।

की ताळ पैली वी रै दिल मे जिकी अेक घवराहट भी ही, वी री ठौड़ अेक नैचापणै लेयली ।

वीं वड़ता ई सै नै 'गुड मार्निंग करी ।

–आओ ।

–वैठ जाओ ।

–'थैंक यू - कैयनै वो कुरसी खीचै ।

सामी वैठयो अधिकारी वीं री नाम वूझै दूजोड़ो प्रमाणपत्र चैक करै ।

पछै लावो-दुवळो अधिकारी वूझै-

–थै अठै रा ई'ज हो ।

–नी सा, म्है जोधपुर सू हू ।

–अथार आप काई करो ?

–की नी सा ।

–आ तो नी हुय सकै ? आप पढ्या लिख्या नौजवान हो ।

–पण साच वात आई ज है ।

–पछै गुजारो कीकर चालै ।

–म्हारी पत्नी अध्यापिका है सा ।

–कठै ?

–फळौदी मे ।

–ठीक है   आपरी पोस्टिंग जोधपुर ई हुय सकै है ।

पछै अविनाश सू बो जिक अर कॉपर रै धातु विज्ञान री वात पूछी । अविनाश नै जिको की थोड़ो-घणी याद हो, बो बतावतो गयो । पछै बो बोल्यो–सर ! साच तो या है कै म्है अेक अरसे सू बिल्कुल 'आउट ऑफ टच हू ।

पछै बो अविनाश सू छुटपुट बाता अर की मूळाधारी मुद्दा बुझतौ रैयौ । अविनाश बेखटकै धड़ाधड़ जवाब देवतौ गयौ ।

बी रै इन्टरव्यू मे दस पन्द्रह मिनट लागै–जिको कै अबार ताई रो सै सू बेसी वगत हो ।

बो बारै आयो तो सै अचूमै सू जोय रैया हा । की फुसफुसाटा हुवण लागी कै इण रो चयन हुय जावैला ।

बीनै ई लखावै हो कै चयन म्हारो ई हुवैला ।

दोय महिना पछै सुरेश री चिट्ठी आई । लिख्यौ हो था रो नाम मैरिट मे पैलै नम्बर माथै है । दूजो नाम बी लड़कै रो है जिको कै पैला अठै काम करतो हो । ऑर्डर्स इस्यू हुवण वाळा है । थू अठै आयनै बैठ ई जा, जिणसू किणी भात गड़बड़ी री गुंजाइश-आशंका ई नी रैवै । बो लड़को माय रै माय मिळनै स्यात खुद रो नाम 'फर्स्ट प्रायोरिटी' माथै करवाणै री वणती कोसिस मै है–मनै अेक पुख्ताउ बात मालूम पड़ी है । बीया मै पूरी निजर राख्या हू । पछै ई थारो आवणो ठीक रैवैला । थनै अठै वेगौ ई 'जॉयन' करणौ पड़ैला   भाभी नै म्हारी नमस्ते अर याद करणा वाचजो ।

बधाई अर सैग शुभ कामनावा सागै–

थारो मायलो
सुरेश

बो बठै पूगनै उण ऑफिस मे सुभै दस सू सिंझ्या रा पाच ताई लगोलग बैठण लाग्यौ । पतो करनै, आर्डर्स खातर ताकीद करण लाग्यौ । छेवट चौथे दिन जावता सिंझ्या रा पाच बज्या पछै ई बी नै आदेश मिळियौ ।

बी रो 'सलेक्शन हुयग्यौ हो । दूजै ई दिन वो नौकरी माथै चढ़ग्यौ ।



औलाद

करणीदान बारहठ

सीरू नै जाणै आज सुरग री राज मिलग्यौ होवै। गोपी तो कठैई नावड़ै ही कोनी हो। वींरै छोरै बलदेव रो टीको होयौ ही। आज पूरा इकत्तीस हजार रिपिया वींनै टीकै मे मिल्या अेक सोनै री नारैळ, भाया नै अेक अेक कामळा, अर इकावन इकावन रिपिया। अेड़ी टीको तो आज ताई वींरी बिरादरी मे कीनै ही कोनी मिल्यौ। छोरै नै पढ़ावणै रौ मजो आग्यो। पण आपरै छोटियै छोरै राजियै नै कैयो औ डफोळ, तू जे पढ़ लेवतो तो इत्तो ही टिको तेरै आवतो।

बलदेव अबार जे ई अेन री नौकरी लागोड़ी हो। टीकै रै पाछै वो तो आपरी नौकरी पर चल्यो गयौ, पण जावता जावता वो मा-बाप नै आपरौ फैसलो देग्यौ-आ पीसा नै फालतू कोनी खोवणा। अेक तो बैठक बणा लीज्यो बारै, अर अेक माळियौ ऊपर।

बलदेव री बात ठीक ही। आज ताई हो काई घर मे। कच्चा दूढ़िया हा बोदा जूना, पुराणा, दादै रा बणायोड़ा। गोपी तो कर ही काई सकै हो। छोरा री पढ़ाई रो खरचौ वींनै आडौ गैर लियौ। ऊचीनै उकसण ही कोनी दियो। दूढा काई घालतौ, जमीन भी अडाणै मेलणी पड़ी। दुकाना रौ करजौ भी मोकळौ चढ़ग्यौ। आवै जकै नै आ ही कैवै-अरै भाया, छोरौ पढ़ै है रै। छोरौ नौकरी तो लागसी ही। तेरी पाई पाई ब्याज समेत चुका देसूँ, तू फिकर मत कर।

पण आज तो इकत्तीस हजार रिपिया नगदा नगदी पड़्या है।

मोट्यार लुगाई दोनू मिलनै रिपिया री योजना बणार्‌या है-अेक माळियो ऊपर घालणो है। वीनणी है भणीयकी है। पूरी चौदह क्लास। आछै घराणै री है। वीनणी रै पीरै मे तो सातरी कोठी है। आपणै दूढ़िये नै देखर काई कैसी वा। छोरी छोरै नै दी है। आपानै कुण पूछै हो। गोपी तो पीसा देयनै परणीज्यौ हो।

टीको तो आपणै बाप दादा सुण्यो ही कोनी।

'फेर अेक वैठक भी वणावणी पड़सी । आया-गया कठै वैठै । मायनै तो आपानै ही वैठण री जगा कोनी', गोपी केयौ ।

जद वलदेव री मा सीरू बोली-बैठक तो पैली वणावणी पड़सी । कित्ताक पीसा लाग जासी । पक्की ही वणास्या, कच्चा रो तो ठोक ही बिगड़ेड़ौ होवै, वलदेव रा वापू । इत्तै मे तो सर जासी ।

–इकत्तीस हजार रिपिया भोत होवै है, वलदेव री माँ, नैवैपाण वोली ।

–हाँ, हाँ, पूरी अटैची भरी पड़ी है, मोटैड़ै सन्दूक मे मेल राखी है, मोटोड़ी ताळौ लगा राख्यौ है ।

–कूची तो सभाळ राखी है ?

–म्हारै नाड़ियै रै बाध राखी है । सीरू कूची दिखाई ।

–तो बस,

पूरो अेक दिन आ सपना मे बीतग्यो । दूजो दिन मसा उग्यौ ही हो कै गाव रो नामी सेठ हुकमचद घरै आ धमक्यौ । सेठ नै देखता ही गोपी रै चाय री प्यालो हाथ मे ही रैग्यौ, बो दूजी घूट कोनी ले सक्यौ । बो हक्कौ-वक्कौ रैग्यौ ।

सेठ हाथ मे कागज रो टुकड़ो ले राख्यौ हो । सरू वीनै देखनै मन मे सोची –मरज्याणो अेक दिन मसा निसरण दियो ।

सेठ वोल्यो–गोपी, पाच हजार अेक सौ वत्तीस रिपिया वणै है रै, भाया ।

गोपी काई कैवै ? तीन साल आज तड़कै करता काढ़ दिया–छोरा नौकरी लागरी रै सेठ । पाई पाई देस्यूं व्याज समेत । आही तो कैवतो गोपी । आज तो पीसा तैयार है । आखै गाव मे हाको फूटग्यो । सेठ इण मौकै क्यू चूकै ? पूरा इकत्तीस हजार घर मे तैयार पड़्या है । गोपी नै लुकण नै जगा कोनी ही ।

गोपी की औरी वैरो होयनै वोल्यौ–म्हैं तो की और सुवाज कर राख्यो हो रे सेठ ।

सेठ नै तो अड़णी ही । बो मौकै नै चूकणी आपरी वेवकूफी मानै । वो ग्राहक नै इणी तरिया तोलै ।

सेठ केयौ–तू तो सुवाज वदळ राख्यौ है । पण सुवाज म्है भी वदळ राख्यौ है। म्हूं कित्ता दिन काढ्या है तनै वेरो है ? म्हूं तेरै छोरै री पढ़ाई कानी देख्यौ । टीको नी आवतो तो ।

सेठ की जोर चढ़्यो अर गोपी रै चरड़की लाग्यौ । विना पीसा मिजाज और होवै अर थका पीसा मिजाज और । गोपी फटाक सू पूरा रिपिया सेठ रै सामी नाख दिया । सेठ पीसा गिण्या अर गोपी कानी पीठ करली । वणा वावड़ती राम रमी भी कोनी करी । गोपी री लुगाई लारै सू घणी गाळ काढ़ी । वारै सुवाज मे की फीकास आग्यौ ।

पत्तो नी किंया खबर लागी कै दूजी सेठ रामसरुप जिकी गोपी नै कपड़ा दिया करती, गोपी रै बारणै आ धमक्यौ ।

–अरे गोपी ! बधाई है रै भाई, आज तो धन बारणै ताई पसरग्यो । धन है रै गोपी तनै । लखदाद है तेरै मात पिता नै । अेड़ो मान तान तो तेरी बिरादरी मे कीनै मिल्यौ ही कोनी ।

सेठ हुकमचद करड़ो होयनै बोल्यौ तो सेठ रामसरुप खाड जेड़ौ मीठो रयौ, मकसद दोना रो अेक ही । रामसरूप पूरा पीसा भी लेग्यौ अर बधाई रा दो लाडू भी खाग्यौ ।

गोपी अर गोपी री बहू जका काल सपना रा मीठा गुटका लेवै हा वा आज बिरायोड़ा सा भुवळी खावता फिरै हा पण ओजूं तो थोळी कसर ही ।

दिन छिपता ही मालो चौधरी आ पूग्यौ । सीरू गोपी रै सुवाज मे मालू और मिचौक घालग्यो । गोपी री जमीन मालू रै अडाणै ही ।

वो बाल्यो–गोपी, जमीन तो तनै छुडावणी पड़सी । जे बेचणै री सुवाज है तो वा बोल । म्हनै तो जमीन मोल लेवणी है । देख गोपी वो समझावण लाग्यौ–बावळिया, की सुवाज करनै चाल, तू की काचा, पाका दग्गड़ गिरावैलो, बेजी चलावेलो । ओ सुवाज तो जद होवै जद पीसा बाफर होवै । भोळा, जमीन अडाणै पड़ी है अर तू पक्का घालै है । बटाऊ तो पड़ीस रै कमरै मे ही उतर जासी । छोरै रै ब्याव पाछै किसा पक्का किसा कच्चा । छोरी तो ब्याव पाछै छोरै साथै जासी, माळियै मे चिड़कल्या बोलैली की अकल सू काम ले ।

मालू धोळा आयेड़ी उस्ताद खिलाड़ी हो । आपरा बीस हजार रिपिया लेयनै जमीन छोड़ दी ।

लारली रात तो जाणै घाव रै जळेरी ही पण आज तो कोझी कुडाळो आग्यौ । आ रात तो मौत री सी रात लागै ही । लिछमी री ताकत रो अया अदाजो लागै । सन्तोष तो किया न किया करणो ही पड़ै । दोनू अपणै मन नै समझायौ–आछी रैयौ लैणो उतरग्यौ, नी तो मागणिया घर रै आगणै रो सगळो लेव ले लियो हो ।

दोना नै नीद तो आई पण उचटती रैयी । इणरो नाम ही ससार है । अेक दिन तो अैड़ो आवै जाणै सुरगा रा झोला आवै है । दूजो दिन जाणै नरक रो कुड ।

दोना मिलनै बलदेव नै कागद लिख्यौ कै बेटा फिकर नी करणी जमीन आपणै पगा तळै आगी अर मागतड़ा रो मूडो काळो कर दियो ।

पण सीरू बरड़ावती रैवती, जाणै वीरो काळजौ निकळग्यो होवै । पण गोपी आखर आदमी हो । बण दुनिया तो कोनी देखी, गाम तो देख्यौ हो । वो सीरू नै समझावण लाग्यौ– क्यूं फिकर करै है, बावळी ! तू मास्टर रामबक्स नै जाणै है ?

–म्हूं बीरो घर देख्यौ है ।

–सगळौ पक्को वणा दियौ बीरो छोरै । बीनै दो साल होया है नौकरी लाग्या नै ।

–वात तो ठीक है ।

–तू गोविन्द री घर देख्यौ है ! कोठी बणा दी वीरै छोरै । हो काई वठै ? बावण नै जमीन ही कोनी ही ।

अै वाता सुणनै सू सीरू रो जी जम्यौ । वै दोनू जीव फेरू सपना सजोवण लागग्या ।

अेक दिन वलदव रा ब्याव होयौ । बीनणी घरै आई । मोकळौ धन आयौ । दायजै सू घर भरीजग्यौ । मोट्यार लुगाया जकी चीज देखी काई सुणी कोनी ही, वा वारै आगणै मे आई । बीनणी रै सोनै री पाजेव, जकी कदैई रजवाड़ा मे घलीजती । बीनणी तो हजारा मे अेक । जाणै पोथी मे कोरेड़ी । गोपी अर सीरू रौ मूडो ओजू ऊँचौ नै होग्यौ ।

वण आपरै छोटियै बेटै ने ओजूँ केयौ–अरे, मूसळ, तू भणीजतो तो अेड़ी बीनणी आवती अर अेड़ौ ही धन-दायजौ ।

वलदेव अर वलदेव री बीनणी दो दिन घरै रैया । दो दिन तो घणी रैण-गैण रैयी ।

घर मे विजळी कोनी ही । पड़ीस सू तार लियौ । टी वी चलाई । रगीन फोटुआ नै दखनै घर आळा तो गदगद होया ही, अड़ौस पड़ौस रा लोग भी इण घर नै सरावण लागग्या ।

पण वीन-बीनणी जावता ही घर मे ओजूँ सूनवाड़ होगी । टी वी भी वारै ही साथै चल्यौ गयौ । सामान री अड़ामीड़ घर म रैगी ।

अवै तो वलदेव रै कागद री अडीक रैवण लागगी । वो आसी तो नोटा रा थव्वा रा थव्वा ल्यासी ।

अेक दिन वलदेव रौ कागद आयौ कै वीरी वदळी जोधपुर होगी, जठै वीरो सासरी है ।

कई दिना पाछै फेर अेक कागद आयौ कै वीरै सुसरै वीनै अेक प्लाट दे दियौ है । वो वठै मकान वणासी ।

फेर अेक दिन कागद आयौ । वलदेव आपरै मा - वाप नै बुलायौ । वो मकान री नागळ करसी ।

मोट्यार लुगाई कठै सू ई भाड़ो कवाड़्यौ । ब्याव आळा कपड़ा काढ्या अर चाल पड्या ।

दोना कोठी देखी । मोत जी सारो होयौ । कोठी अैड़ी जाणै मूडै वोलै । वेटै म्हारै आपरी कोठी जोधपुर मे घालली ।

अेक दिन दोना बेटै कनै बैठ्या, दुख सुख री बात करी । दोनू बोल्या– बेटा घर मे तो चूसा थड़ी करण लागग्या ।

बेटै उथळो दियो–काको सा, मा सा, काई बताऊ ? इण कोठी पर दो लाख लाग लिया । ओजूँ रग रोगन बाकी है । अळमार्‌या रै जोड़ी कोनी चढी । पचास हजार सुसरै सू लिया । की सरकार रो करजो है । प्लॉट सुसरै दे दियो, मोफत में आग्यौ । अठै रैवण नै मकान मिलै ही कोनी । आपणै रैवण नै मकान बणायौ ।

बेटै बाप नै सौ रिपिया दे दिया अर सासू नै बीनणी पगा लागणी दे दी । बेटै बाप नै सगळा कपड़ा करा दिया अर बीनणी सासू नै अेक तीवळ ।

दोनू सिसकारी मारता मारता घरै पूगग्या । वै लोगा रै सामै आपरै बेटै रै कोठी री चरचा करता तो लोग अेक ही बात कैवता–गोपी, अबै तू बेटै री आस मत कर, छोरो तो डाकणा ले लियो ।

पण सीरू ओजूँ ही काग उडावती–उडज्या रे कागला, मेरो बेटो बलदेवो घरै आवै तो ।

कागलौ बैठ्यो रैवतो काव काव करतो । जद वा कैवती–अरै मरज्याणा, कदी तो आवणै रो सदेसो दिया कर । जाणै कागलै कनै कोई वायरलैस होवै ।

गोपी रा वै कपड़ा भी फाटग्या । बीरी जूत्या ओजूँ खूसड़ा बणगी । लोग बीनै ओजूँ गोपियो कैवण लागग्या ।

पण गोपी अबै राजियै नै राजू कैवण लागग्यौ । मोट्यार लुगाई अबै काग उडावणो छोड दियो । वा नई राग सरू कर दी–अबै तो राजू रो ब्याव करस्या । राजू री बीनणी आसी । वाही आपणी सेवा करसी ।



कूख लजाड़ी

भोगीलाल पाटीदार

सूरज डूबवानी तैयारी मे अतो । आकाश लाल लाल थई ग्यू अतु । मोटर सापोटावन साली रई अती । रूखड़ दौडतै दौडतै वाहे जात अत । अटला मे एक बाबू जेवौ आदमी बुल्यो काका हीदा वेहो ।" हीदो वेही ने जुयु तो सदीप जेवोस लागतौ अतौ । मन मे करूद आवी ग्यौ । मूँडू फिरवी लीदु ।

हार लइ निकर्यो तो नाथू बुल्यौ 'मकना, आखी ऊमर काम कर्यु है, अवे ता सुइ । अजी धन नी हाय लागी हे ? एक तो बेटौ है । इयौ अफसर है केम कठ्ठाई थेठे ? खेती करवी ओय तो मजदूर राखी ने कराव । मारै तो सब खेती मातै है तोय सब वैवार राखु हूँ । मारै तो कुणी नौकरी करवु नथी । तोय अमारै नानियौ केहै "बापा अवे तमे आराम करौ । गणी मैनत करी । राम नु नाम लो।"

मकनो बुल्यो– ' भाई काम तो नौकर (अरी) करे है, भुतौ देख रेख राखु हूँ । तमे जाणो तो ही, धणी वगर धाड हुनू । नौकर नै भरूमै तो बुडी थे पानै थई जाय। बेटो शेर (शहर) मे नौकरी करहै ई कटला रूपिया आलै है । भुस जापु हूँ वेगरै हास डूँगरा रूपारा देखयँ । आणी मोगवारी मे शेर मे रेवू कटलु काढू है । जेटलु कमाय अटलु खरसौ थई जाय । शेर नी तनखा तो तवा मातै पाणिनु टपकु है। नाथू खरा जीवनो अतो । खरी वात करी देतो । एणै क्यु– 'गेडपण मे मा-बापनी सेवा करै इम सुरो हमजदार केवाय । भणिलौ बेटौ आणी वात ने भूली जाय एनै भणावी लु हूँ कामनु ? तू एम नै मानतो के मारी सुरो अफसर है अटळे खारै वरै है।" एम कई नै जतो थ्यो ।

नाथू भाई नी वात हामरी तो जमना ने मन म झार फूटी गई । मारै सुरो अफसर है अटले मनक खारै-वरै है । थोडाक दन एनै कनै रई आवु, पसे मनक हूँ कहे । मगन खेतरै हो । घेरै आव्यो तो केवा लागी । मै तो आखी जिन्दगी कमावु जाण्यु है । न तो ताजू पेर्यू न जातरा करी । बेटा नै भणाव्यो अटलुस देख्यु । मु तो एने कने जऊँ । आणी वात नी वै दन थकी लल पाडी अती ।

थाकी ने मकने क्यु–"अवडै सीमाहु है। खेती नै घर हुनू मेतीने नै जवाव। दिवारी माती जई आवह।' बइरा नै मुडै जे वात आवी जाय इ पासी नै पै। जमना बुली – "तारे तमे एखला जो, सुरा नी खवर लई आवीं।" घरवाली नी इ हामी मकना नी एक नै साली। वीजै दन हवार नी गाडी मे वैठो, मोटर में गामनो सुरो अतो। इयौं एणा शेर म जतो अतो। मोटर हो उतरी ने टेम्पो करी आल्यो। टेम्पावार ओफिस हामो उतारी दीदी। फाटक मातीं एक आदमी ऊवो अतो। एने क्यु–भाई मारे सुरो आणी ओफिस मे नौकरी करे है। मारे एने मलवु है। सपरासीय टरकावी नै क्यु–"जा जा डूहा! तारो सुरो मुटो आफिसर है? थायु तो खराव नै है?" पासा भगवन कठ मे वैही ग्या तो पुस्यु–"तमारे सुरानु हू नाम है। मकना वुल्यो–सदीप'। सपरासीये विश्यार कर्यो के अटला मुटा साव नो बाप आवो तो हूँ ओहे। पण मारे हूँ हादी तो लावु। एम करी ने ओफिस मे जई मुटा साव ने हादी लाव्यो।

सदीप वापाने देखीने खमकाई ग्यो। आवी हालत म आय केम आव्या? कपडू तो ताजू पेरी नै आवता। विश्यार करतो वापा कनै आवी नै वुल्यौ–"वापा आय हुदी केम आव्या। कये काम अतु तो कागद लखावी देता।' मकनो वुल्यौ–"अरे वेटा! तारी वा (मा) सन्ता करती अती। तारी खवर लेवा मुकल्यो। तारी थाये आवती अती पण वरसात देखीने ने आवी। सदीपे पाणी मगावी ने पायु। पसे क्यु–"अवडे मारे मिटीग है अटले तमे घेरे हिडो, मु आवु हूँ।" पाहे ऊभो सपरासी ने क्यु –' जाओ मेरे कमरे (मकान) पर रख आओ।" एम कई ने तरत पासो ओफिस हामो जवा लागो। मोरे जते एक आदमिये पुस्यु तो केवा लागो – ये तो मेरे घर गाँव मे नौकर है। आजकल मै घर नही गया हूँ इसलिए मेरे पिताजी न समाचार लेन भेजा है।'

मकनो गेयड़ो थयी ग्यो अतो पण कान तो अजीये हुरा अता। मकना न कान मे आ सवद पडी ग्या। वापने नौकर केहे। एकदम चक्कर आवी ग्या। विश्यार करवा लागो के–"वेटा ने जनम आली ने मुटो कर्यो। पेटै पाटा वाँदी नें भणाव्यो, सब वेकार ग्यु। दिल माते पसीने थई ग्यो। गणो करूद आण्यो। सपरासी ने क्यु माटर न्सन मने भारी दे। सपरासी टेसणे लई ग्यो। गाम जवावारी गाडी ऊवी, अती ऐणामे वेही ग्यो। गाडी मयहा उतरो ता अन्दारू पडी ग्यु अतु। उतरी ने तरत घोर हामो हिंड्यो।

वामणा मे जत मे अरी मल्यो। एनेंमे असम्वो थ्यो के काको पासा केम आवी ग्या? काकी ने हादी ने कमाइ खुलाव्यु। जमना, मकना ने देखीने घवरणी। पुस्यु-कैम पासा आव्या? ओफिस ने मळी? मकनो जाणतो अतो के बइरानो (औरत) जीव पातरो ओय। मा नु दिल है एने नैं दुडू एम करी झूठू वुल्यो–सदीप मजा मे है। लाडीये ठीक है। एणे तो रुकवा नु क्यु अतु पण मने तो शेर मे नैं

फावे अटले आवतो र्यो । वै जण तने खुब खुब याद करत अत । मकना ने केवा मे उदासी देखी ने केवा लागी–"तमे झुटू बुलो हो । कक दार मे कारू है । हासू बुलो हूँ वात यई ।

मकनानो कठ भराई आव्यो । धीरे हूँ क्यु–"तारी रकमे गिरवे मिलने बेटो भणाव्यो । मुटो ओफिसर बणाव्यो । पण ताजा सस्कार ने आव्या । आजे सदीप शेरनी विजरीना भवकारा मे सकराई ग्यो है ।" मनै ओफिसनी फाटक मयहोस एने कमरे मुकली दीदो । एक आदमियी पुस्यु तो एणे क्यु–"आतो मारे गाम मे पिताजी नी नौकर है ।" मु गामनो नौकर, मुटा साब नी कमरे हरते जतो । अटलै पासी आवी ग्यो ।

आ सब हामरी ने जमना ने मुडै हूँ निहरी ग्यु "हे भगवान ! मारू कूख लजाडी । पाहण बेठो नौकर बुल्यो–' काकी ! केम सन्ता करो ? आ कलयुग है, जेटलु ने थाय अटलु थुडू । सदीप भाई गमे जेटला मुटा बणी जय । बापनै येकणी तो मकनोस लखाहे । केम मन नानु करौ ? तमारै कनै खेती तो है । मु जीवु तार हुदी तमनै तो दु खी ने यवा दूँ ।" जमना वगर बुल्यै रसुड़ा मे खावानु बणाव्या जती रई ।



उमंग

छगनलाल व्यास

काळो कळूटो रग, लाम्बो मूडो– माथै माताजी रा वण अर आख्या धस्याड़ी अेक पसळी रै इण शरीर रो नाव वीणा । वीणा हाळ टावर, अर टाबर परमहस मानीजै । उणनै काई ठा कैड़ो हुवै रग रूप ? इण उपरा जिको मजूरी कर पेट पाळे वो शरीर रै फूका देवण लागै तो मानखो कैवण सू नी चूकै–पूरब री गधी अर पिच्छम री चाळ । इणनै तो कोयलै री दलाली मे मूडो काळो करणी ई है । जिकै सू वा स्कूल री छुट्टी हुया माथा माथै पगल्या लिया सीधी घरा दौड़ती अर पछै मोटर रै अडै खा नी तेतीसा ।

'भाई साहब ! काई आपरै ओ सामान उठावणो है ?' वीणा सामान वाळै जात्री नै देख र पूछती ।

–लगै टगै बारै बरस री छोरी अर मुट्ठी भरिया हाडका सू तो वा आठ-दस बरस री ई लागती, जिकै सू आगली दाता आगळी देवतो पूछती– काई ओ बेडिंग थारा सू गाधी चौराये ताई उचाइजैला !

–हा उण हुकारै साथै धाटकी हिलायी ।

–कित्ता रिपिया लेवैला ? मुसाफिर सावचेती सू पूछ्यौ ।

–दोय रिपिया । बेडिग खा नी देखती वीणा ऊथळो दियौ ।

–वाजिब मजूरी सुण र सफारी सूट वाळै खेचताण नी कर र बेडिग उपड़ायौ अर वीणा गेलो सभाल्यौ ।

ओ धधो उण रो रोजीना रो है । रोजीना बस रै अड्डै पूगणो । उतरण वाळी सवारिया मे सू सामान वाळी सवारिया नै सार-सार री भात सभाळणी । मजूरी री पूछणी मनावणी अर इण तरिया आठ-दस रिपिया कमाय र घरा जावणी ।

उणरी घर देख्या दया आवै । बिरखा मे ठौड़ ठौड़ सू पाणी टपकै ऊनाळा रा तितर छाया सू काई हुवै ! अर सियाळा रा मकान फकत ओटै

ी काम करै । पण आ गत अेक उणरै घर री ई तो नी है अेड़ा तो अलेखू घर है, बस ओ सोच दिन निकळ जावै ।

परभात री पौर वीणा वैगी उठ जावै । स्कूल रा गाभा पैर'र बस्तौ सभाळै । छुट्टी हुया दौड़ भाग करती घरा आय'र गाभा बदळै अर मोटर रै अड्डै पूगै, क्यू कै उठाताई मोटर रै आवण री वगत हुय जावै । मोटर माथै मजूरी री उड़ीक पछै दूजी तीजी अर आखरी मोटर सभाळ्या काठे अधारै घरा आव । रविवार रै दिन या सुवै री दोन्यू वसा माथै भी ऊभी मिळै जाणे किणी ने उड़ीकती हुवै ।

अबे वा आठवी मे पढ़ती । अेक दिन अखवार मे किणी महिला अधिकारी री इन्टरव्यू अर फोटू छप्यौ । वा उणने पढण लागी अर पढ़ती रही अणूती राजी हुयी । उणरै हिये मे उमग जागी । वा भी उणी तरिया बदरूप है घराणी गरीब है पढाई मे ठीक ठाक हे पण हिम्मत राख्या वा अधिकारी वण सकै तो म्है क्यू नी ? वस वा मुसीवता सूं लोहौ लेवण री औरू आदी हुयगी । दिन रात अेक करणौ तो उणनै मा रै दूध सू मिल्योड़ी जळम घूट । उणनै दीखण लागती उण महिला अधिकारी री फोटू उण रा अेक-अेक बोल– 'आखर मानखै रै जोर सू तो भाटी ई पाणी वण जावै तो पछै आ तो वापड़ी तरक्की मत्तेई पगा लागै चाहिजै लगन मैनत अर उमग ।'

पढ़ाई मे उण री अणूती मन लाग्यौ । किताबा री वस्तौ उणरै साथै जीव री भात रैवण लागौ जठाताई मोटर नी आवती वा किताबा रा पाना घाटती सोचती विचारती । सिझ्यारा घर रै काम सू निबट'र रोड़लाइट नीचै पढणौ, पाड़ौसी रै रेडियै सू कान लगाय'र समाचार सुणणा । उण सू खास-खास बिन्दुवा नै टीपणा, अखवार नै ढग सू वाचणौ आद-आद वा आपरी आदत वणाय ली ।

'घणी ई पढ़ी बेटी । अबे थारै स्कूल जावणौ चोखौ नी । घरा ई जिकी जब ज्वार की ऊकळै खा अर रैय । नी तर अेड़ी नी हुवै कै मिनख आपा माथै आगळी उठावै ।' अेक दिन वीणा रै बाप कैय दियौ ।

–वा यू बाकौ फाड़ण लागी जाणै किणी उणनै छात सू धक्की दे दियौ हुवै । पछै सभळ र बोळी–काई आठवी ताई री पढ़ाई ने आप 'खूब मानौ ? काई स्कूल जावता भी मानखो आपा माथै आख्या तरेर सकै । वीणा अचूमै सू पूछ्यौ ।

–हा बेटी । आपाणै समाज रो ओ ई रिवाज है । अठै छोरिया नै नी बोलण री हक है नी पूछण री अर पछै आदमी सू होड़ा होड़ करणी तो खुद रै पगा कुलाड़ी मारणी है ।

–पण मै तो म्हारी पोथी मे पढ्यी कै सविधान सू आपा सगळा ने अेक सा अधिकार मिल्या है चावै वौ आदमी हुवौ चावै लुगाई । वीणा दिवै बोलण री आगत सारी ।

–आ ई तो थारा मे कमी है । जिकी बाता पोथी मे है वै समाज म नी अर जिकी समाज मे है वै पोथी मे नी । इण खाई रै कारणै ई तो असतोष उपजै । हाथा मे चूड़ी खातर काच रौ कठै काम । देख । दोय आखर पढ्या थारी जुवान भी कतरनी री भात चालण लागी । पछै काई भला काम करसी ? सोचता ई म्हारी तो काळजी कापै । बाप बीड़ी लगावता केयौ।

पण इणमे म्है आपनै काई राणाजी नै काणाजी कैय दियौ । साची बात इ तो कही है । वीणा गिड़गिड़ावण लागी ।

तो घणी पढाय र आपानै किसी नौकरी करावणी है ? बाप धुऔ उडावता हियै री बात होठा लायी ।

पिताजी । पढाई री कारण फकत नौकरी ई तो नी है ज्ञान बढावणी भी तो इणरौ मकसद हुवै है । म्हारा गुरूजी तो अेक दिन केवता कै आजकाल री पढाइ तो नाव मात्र री है दसवी ग्यारहवी तो सामान्य गिणीजै । पैली री पाचवी पास भी अैड़ा-अैड़ा सवाल करे कै अेम अे वाळा नै भी हिचकिया आवै अर आपनै इण बावत पेट सू पाणी इ नी हिलावणी है लता अर रेखा भी तो पढै है । इण साथै ओ भी केवै कै नवी मे सिलाई सिखावै । जे सिलाई सीखगी तो ओ जमारो तो टळेला ।

'थारी मरजी । बाप रै मूडै सू दोय बोल नीठ निकल्या अर वीणा रै खातर अे बोल डूबतै री तिणकौ वण्या । वा मुळकी ।

पढाई बावत उण री मन उछळती । वा कड़ी मैनत सू पढ़ण लागी रटण लागी । सिलाई मे मन राख्या गुरुजी राजी हुय र उणनै रिसेस मे भी सिलाई करण री छूट दीनी अर वा इण तरिया मजूरी सू कमाई कर लेवती । इण साथै वा अलेखू हुनर सीखती ज्यूकै थैलिया वणावणी गुलदस्ता वणावणा अर स्वेटर बुणना । इण सू भी पिसौ कमाय र घर गिरस्थी मे मदद देवती ।

मैनत अर उमग सू वा सैकण्डरी परीक्षा मे पूरै प्रान्त मे चोथी ठौड़ वणायी तो स्कूल वाळा अणूता राजी हुया । गाव अर माइता री नाव चमक्यो अबै उणरी रग रूप री कोई परवाह नहीं करती गुणा रा बखाण करण सू नी चूकती । पण हीरै री परख तो झवरी इज कर सकै घरवाळा इण बावत काई जाँणै ? वै तो पढाई छुडावण री बात माथै ज्यू रा त्यू सोचण लागा अर इण सू वीणा री काळजी कापण लागी । पण वा कर काई सकती ? उणरी दिमाग मे उण महिला अधिकारी री फोटू आवती-आवती रैय जावती बोल आवण सू पैली ई जावण री कोशीश करता अर वा पाछी कापण लागती ।

इणी दिना घरवाळा बेटी रै ब्याव सू पैली सगपण खातर पगल्या घसण शुरू कर लीना । पनरै सोळे बरस रे टावर रा पीळा हाथ कर्‌या ई गंगाजी नहाया हुय सकै नीतर छाती माथै हाथ रैवै । बस इणी विचारा सू वै हैरान रेवता कै आखर सगपणियौ कठै कर्‌यौ जावै ? इण वगत मे सगपण करणौ भी हाथी नै बाधणै सू आ वखौ काम नी । जद इण वात रो ज्ञान वीणा ने हुयौ तो उण खुद री बात कही क 'इतरै चोखै नम्बरा सू पास हुयी हूँ तो म्हनै औरू पढण दौ अे सगपण तो मतैई हुय जावेला इण खातर आप क्यू ताफड़ा तोड़ो हो ?'

वाह वाह रेवण दे थारी हुसियारी आ जाणै म्है आछै नवरा सू पास हुयगी जिकौ मानखौ मारै लारै फिरेला म्हारौ घर पूछेला पण ओ भी ध्यान राखजै कै मानखै आगळ थू टकै री तीन सेर सू भी सस्ती है । वै धन माल देखै रंग रूप देखै, जिकै रो आपा खनै घोर टोटौ है ।

पण सगपणियौ नी हुवै उठा ताई पढण री छूट तो दिरावौ पछै री पछै देखी ज्यासी । वीणा दवता बोला सू केयो ।

अबै तो घरवाळा रै विचारा मे वळती मे पूळी पड़्यौ क्यू कै दुर्बल री गुस्सौ भारी मानीजै अेक तरफ ता सगपणियौ हुवै नी दूजी तरफ इण री तीन लोक री मथुरा ई न्यारी ऊंचै ओहदै रा सुपना देखै घर रा तो घट्टी चाटै अर पावणा नै आटौ भावै । कठै ई घणी पढ़ी तो मिनखा मे मूडौ दिखावण जोग नीं राखैला । कठैई घर री नाक नी जावै इण डर सू वीणा री पढ़ाई छुडवायै लीनी । उणरा सुपना काच री भात टूटण लागा, पण हिम्मत सू उण काम कर्‌यौ। प्राइवेट परीक्षा रौ फॉर्म भर'र चालू राखी । बारै महीना ताई सगपणियै खातर पगरख्या फाड़ी अर इण बिचै वीणा पढाई रै मील रो अेक भारौ औरू पार कर लियौ ।

'आज म्हू आखर सगपणियौ तैय कर ई आयौ दस तोळै सोनै माथै नीठा मनाया, पण पाणी रै घड़ै रै सुगन री इतरौ फर्क पड़ै, समझी ? नीतर कठै आस व्ही ?' वीणा रा पापा घरवाळी नै खुशी-खुशी कैय रह्या हा । जाणै मोटौ गढ जीत र आया हुवै

कांई करा काम री बात छोरी खुद नी जाणै कठै सू पल्लै पड़ी दिखती ई चोखी नी कोरी पढाई मे हुया कुण पूछै ? आजकाल तो मानखौ रंग रूप पैली देखै गुण बापड़ा पड़्या रैवै अेक खुणै मे । खैर आपाणै तो गळै सू फासी टळी । वीणा री मा यू बोली, जाणै माथै सू मण भर री भारी आयौ हुया गावड़ी नैहचै सू ऊंची हुवै ।

मम्मी ! आ थू भूलै है । जिकौ अबै सू ई दायजै सू म्हारौ मोल करै रंग रूप नै मान दैवै वै काई भली कर सकै ? उठायै कुत्ते सू

शिकार री काई आस । जिकौ रग-रूप चावै उण घरै म्हारी जीव रोनीना अधर रेवैळा उण भूखै भेडिया सू मनै वचाय ले । वीणा धूजती धूजती वोली ।

वा तो पछै म्हा धोळा यू ई लीना है ? कुण माइत औलाद ने कुए में धकेलै । इण ऊपरा भी वळद अर वेटी तो वाधै उठै ई जावै । नीठ तो जोड़-तोड़ कर्‌या वात वैठायी अर वाइसा मूडै आयै कवै ने पटकावणी चावै तो पछै मीरा वाई वणण रा दिन आवैला पछै मूडी मत वोळजै वोली।

वीणा काई वोलै ? पण मन ई मन तेवड़ लियी कै जठा ताई पगा नी हुवू ब्याव नी करणौ । मा रीसा वळती काळौ । अर दायजा अर रूप रग चावै उणा रै तो मूडौ ई मुळकी । जागती सू ताकती वती । वीणा आखर अेक उपाव सोच र निरमळ अर उण सगाजी ने पाडौसी री हैसियत सू कागज माड्यौ कै 'आप अवार जिकौ सगपणियौ तै कीनौ है उण छोरी रौ पग घर सू वारै है आछौ रेवैला कै सगपण तोड़ दियौ जावै हाळै काचा मूगा री काई नी विगड्यौ है पछै पछतावौला' ।

कागज पढ र मन मे विचारा रा वादळा उपड़्या काळा-काळा डरावणा । ओ ई कारण हो दायजै खातर घणी खेच-ताण नी करण री अर तुरत ब्याव खातर पगल्या पछाड़ण री । पण म्हारी तो लाज सावरियै राख लीनी उणरै घरा देर है अधेर नी । 'जुग-जुग भलौ हुवौ अेडै नेक सलाह देवणियै री कैवता उणा सगपण तोड़ण रो कागज माडियो । वीणा कागज पढ र अणूती राजी हुयी पण घरवाळा रै सूरजग्रहण मच्यी ।

वीणा री वदचलणी री वात पूरै समाज मे विजळी रै करण्ट री भात फैलगी अर पछै सगपण करणी जाणै फाट्या दूध ने आछौ करण सू भी अवखौ कारज वणग्यौ । रात रा ऊघ आवै नी अर दिन रा चैन नी पाडौसिया ने भूडा वोलै । इण विचै वीणा लगोलग पढ़ती रही अर वी अे रौ इम्तिहान ई पास कर लियौ । होड़ा होड़ परीक्षा मे वैठी अर अधिकारी रौ सुपनौ निजर हुयौ । पूरै समाज म यात फैली अर वदचलणी री वात यू दवी जाणै पाणी री दुड़वुड़ियौ । वा समाज री नाक वणगी । हर कोई उण सू फेरा खावणौ चावती पण अवै उण रा भाव भी राई रा भाव रातै वीता री भात घणा ऊचा पूग चुक्या हा ।

आखर पुद रै साथ ई अधिकारी वणण वाळै सू वीणा व्याव कर लियौ । यौं भी वीणा री भात दायजै रै नाव सू ई चिढतौ अर गुणा री पूजा करतौ । रग रूप काई भाव नी गिणतौ । दोना री जाड़ी सातरी लागती । वीणा रा

माइत आर्शीष दवण लागा तो खुशी रा आसू ढलकण सू नी चूका ओ सोच किती अनरथ हुय जावता जे माडाणी गिरस्थी रै गाड़ मे उण दिना जात दी जावती ता। ठीक कियो किणी उण वगत गलत वात उठाय र भी । जद ई तो केवे क भगवान कर जिका ई चाखो ।

गलत वात उठावण वाळी म खुद वाकी कुण म्हार सामी आगळी कर मकती । वीणा राज री वात खोली।

–ह । अचूभे सू माइता रौ बाकौ फाटौ रो फाटो ई रैयग्यां ।

–वाकी काई कर सकती आखर मरतौ काई नी करै । वा बात तो अधिकारी वणता ई केड़ी दवी ? अवे कुण केवै।

ठीक किया नी तर थारी मछावा धूड़ खावती अर घर रौ पोखाळो हुया भी वा वाड़ा अर मामूली नौकरी वाळौ ई मिलतौ अर रोजीने टट फूटता।

वीणा साचण लागी-कित्ता माइत इण भात खुद रै टावरा नै कुए मे नी धकलण रो केवता भी धकेलता रेवे । दायजै रै बीज नै खुद पनपावै । सोचता सेरका नाखे अर आवण लागै याद उणनै महिला अधिकारी रा बोल ।



वनवासी

फतहलाल गुर्जर "अनोखा"

तावड़ा री लाय सन सन वाजती लू । चारूँ मेर आभै मे उठता भतूळिया । साठ वरस री सूरती बीत्या वरसा री सुनहरी यादा मे खोयोड़ी आपरी फूस री झूपडी रै फळसै कनै ऊभी ही । बीरो ध्यान टूट्यो, मूडा सू अचवच रा सबद निकळग्या 'मरिया रे राम ! हेग डोबा टाला भरिग्या । दखता ही दखता वाड़ा रा वाड़ा खाली होइग्या । घर मे खावा रो दाणो नी अर कूड़ा वैरा मे पाणी रो छाटो नी । जाणै कदै ईंदर वावी पावणी वैला । वाळक्या री वाळ कोनी देखी जाय, मरता ढोरा री गत कोनी देखी जाय अवै जीया तो किया जीया ? अवै तो हैलो साभळो द्वारका रा नाथ !'

वारै चौरा माथै वैठो करमो आपणा करमा पै पछतावो करिर्‌यो । वली तम्बाखू ने गुड़-गुड़ रा विश्वास पै खेचतो, आता-जाता मिनखा ने टमक टमक देखिर्‌यो हो । आता-जाता मोट्यारा नै पूछतो रै 'तेजा ! पूछ र आवजै रै - कमठाणा रा मेट नै, कै मजूरा री जरूरत है ?'

करमा रै घर माय एक विना झोळी रो भगत चौकसी सारू बैठो रै । आज उण री गत देख्या ही वणै । कुत्ता मिनखा सू ज्यादा समझदार अर वफादार होया करै । मोती जद धाप्योड़ो होवै तो खूख्या करीनै आपणी खुसी बताय दे । पण आज तो करमा री टूट्योड़ी चारपाई रै नीचै चारूँ पग ऊँचा करी पड़ीयोड़ो चुकारो पण कोनी करै ।

करमा रै घरै एक जुवान टावरी रे सिवाय कोई काम माथे जावणियो कोनी। गया दो वरस सू करमा रा टाटीया मे लखवो मार जावा साठै ठाम रो राछ वणि गयों। सूरती रा डील म पाण पण कोनी री । नैना नैना दो टावर जिणमा एक तो साव गोदी रो गणेश हो अर दूजा री ऊमर पाँच वरस री । आख्या री तळाया भर आई । टुकुर-टुकुर करमो वेर-वेर आपरी घरवाळी रा मूडा आडी देख अर पाछो विचारा म ऊब ड्ब करै । कनै ऊभी गीगली आपरी

फाट्योड़ी लूगड़ी रा लवरका सू बेर-बेर डील ने ढाके पण बाजता वायरा री झपट अठी-उठी लाज नै उगाड़ी करदै।

भूख सू बारा मेलतौ थावरयो, सूरती री सूखी छाती सू चिप'र दूध पीवण मारू मचलै पण सूखा डील मे दूध कठै ? मायड़ रौ पेट पखाल वेईरयौ, दूध कठासू उतरै। उणरौ एक एक हाड गिणीज सकै। सूरती थावरिया नै नैनी चैलकी री ज्यान छाती सू चिपक्योड़ो देखे'र, हाथ री थपकी सू छानौ राखण री कोसीस करै पण भूखौ टाबर रोय रोय'र जामण रा काळजा नै किरच किरच कर जाय। थान मे दूध नी पण आखा सू आँसू री धार टपक'र बाळक्यों नै मायड़ री मजबूरी रौ भाव महसूस करावै। मोटक्यो टाबर कान्यो रमतौ फिरतौ आर करमा सू बेर-बेर पूछै "बापा, मनै भूख लागी री है, थे रोटलो आपौ नी।" डोकरियो बाळक्या री बाळ देख नी सकै पण करै तो काई। एक तो मादगी बरसा सू लेर लागी री अर दूजी अकाळ री मार। सीला सास री सिसकारी उणरा पापला मूण्डा सू सटट् निकलगी। मनमा मजबूरी री मार नै मारै'र आपणै काळजा री कोर नै लाड लड़ावतौ, ढाढस बधावतो पण भूख रै आगै बाळहठ ठाडी कोनी वी। काठी छाती कर नै बोल्यौ–

"मारा हीरा, रोटलौ कठा सू ल्याऊ। आपणा सू राम रूठयोडी है, सबर राख बेटा ! शहर जाऊँली, आईनाथ जुगाड़ जमायेलो।" सुरती बोली, "म्हे साम्भळी के बनवासी कल्याण आश्रम रा राम जीवा ने पाळवा रो प्रण करयोड़ो है। वठै अन्न री जुगाड़, ढोरा सारू चारौ अर खूखला री सम्भाळ करे है।" करमो बोल्यो 'अरे हाँ, हैमलो केवतौ हो क वठै मूडकै दीठ कुलकी भरीनै छाछ मोकळे है।' इतराक मे उण रो ध्यान सूखी भौम, भरता ढोर अर भूखा टाबरिया सू हट र बीत्योडी ऊमर कानी गया। थोड़ी देर री चुप्पी टूटी तो करमो मगरा माथै ऊभा थका छड़िया बिछड़िया रूखा कानी झाकनै सूरती सू बोल्यौ, "गीगली री मा, ओ हेग हरियोड़ा डूगर देखता-देखता टाटल्या होइग्या। कितरा डागरा पेट भरता कितरा मिनख पेट भरता, पण आज तो इणारी भी ककाळ सी देह ऊभी थकी है। इणारी बखौ काई कम है ? कितरी पाण इणा माँही है, जो ठूठ बणी नै भी आप री ठौड़ कोनी छाड़ी।'

कान्यो फेरू कुरळायो– 'बापा रोटलो आपौ नी, भूख घणी लागी री।' करमा रो भाटा जेड़ौ करड़ौ मन पाणी पाणी हुयनै झर झर आख्या सू बह निकळयौ।

गीगली बोली 'बा, कुलकियौ लेर छाछ लेवण मैं जावसू।' बेटी थू पण ध्यान राखजै गरीबी मे लाज ढावणी भारी पड़े। गाय कण्डी रा टाबर टोली अर लुगाया साथै सोलह बरस री गीगली फाट्योड़ा गाभा सम्भाळती कुलकियौ लैर दूजी परभात बनवासी आश्रम जाय पूगी। गीगली कई देखे है क, आश्रम रा टाबर अर सेवा दल रा बाटणिया हेग आयोड़ा। बनवासियो नै लेण लगार थेयाड़िया जिणारा कुपन बणाय'र अेक अेक मगी भरी छाछ उडेलिरिया है। टाबरी

'मनैई छाछ मोकळजी सा । म्हारा वापा मनै भी छाछ लेवा मोकळी है ।' नानो लिखणियो कालू आश्रम रो पढणियो टावर जो दिन भर सेवा म लाग्योड़ो रै हे । दो दिना सू लू री लपेट मे मादौ पडग्यो पण सेवा सू पाछै नी हट्यौ । कालू बोल्या थारो कूपन ?' गीगली कूपन थमा र लेण म ऊभी होईगी । चोपड़ी मे नाम लिख र कालू रै हडाली अेक मगो भर छाछ घाल दीवी । छाछ मिली तो काई घर मा अन्न री दाणी पण कोनी । टावरी दिन भर ई जुगाड मा आश्रम रा मास्टर जी रै साम गिड़गिड़ाती री । मण्डार मे आयोड़ी ज्वार पूट चुकी ही । मास्टर जी गीगली नै वेर वेर समझा'र कह्या पण पेट री भूख रै आगै हमझू वाता री अेक नी चाली । मामेर री भीखो अर नीचला थळा री वरदो घणी वेर कह्यो क अवार देवण सारू जवार री मण्डार कोनी । हवेर आवजे, पण गीगली उठीज नी । वनवासी आश्रम मैं आयोड़ी सवा दळ आपणा हीज जिला रा पढावणिया सात जणा री हो । दौपेर री दो वाजिया गीगली नै आश्रम रा वजरग जी दो किला जवार आश्रम खर्च सु काढीनै देई दी । टावरी रे मूण्डे हरख री लैर दौड़गी । परभात सू टस सू मस नी वेवण वाळी घीघीयाती गीगली लीर-लीर डेढ़ वेतरी लूगड़ी रै पल्ले जवार लेर वाधण लागी ता चररकर लूगडी सू हेग दाणा धरती री धूलमा विखरग्या । देखणिया करै तो काई करे । गामारी ही ज्यान इणा वनवासिया रा भाग भी तो फाट्योडा हा । सिसकती वाळकी री वाळ देखी नी गी । व्यवस्था मे लाग्याड़ा मास्टर जी फेरू वुलार किलोक जवार देय र कह्या वेटी, उठ ये ले । धरती मे मिलियौड़ा दाणा आज रुलग्या तो काई विरखा म पाछा उगैला । भाग म लिखियाड़ी ही मिनखा नै मिलै है । अे विखरयोड़ा ज्वार रा दाणा थोड़ा ही है, अेतो आपणा करमा रा वीज है, जो वगत री मार सू माटी मे रूळरिया है पण गमिया कोनी ।''

गीगली छाछरी कुलकियी माथै मेल र फाटी लूगडी रे वरकै वध्योड़ी जवार लेर तपते तावड़ै, उभाणा पगा यान जाय री ज्यान भूख रै भगवान सारू भोग लेर भगत भाव सू भाग जावती व्है ।

सूरती अर करमो दोन्यु राता टावरा ने भरौसे री राव पावता गीगली री गेल देखरिया हा ।

साझ वेता - गीगली जद घर आय पूगी तो छाछरा पाणी मे जवार रो आटो घोळनै सूरती पलेव वणाय टावरा ने पायी । आख्या मे उजाळो वियो । यू उनाळा री रात री गर्मी पलेव री ठडक सू सीलाती री अर वनवासी अकाळ री आफरी मार नै हिम्मत रे पाण सुकाळ रा सुरज री अगवाणी म जीवण री आस पाळती रैयो ।

□

छोटी माँ

हनुमान दीक्षित

दिसम्बर महीनै री दूजौ अदीतवार । सबेरे रा नौ बज्या है । आपरै घर आगै मेज कुरसी ढाळ्या बाबू बनवारी लाल सुहावती धूप रै साथै ई समाचारा री बानगी चाख रैया है । इतरै मे ई वीरी जोड़ायत सरला चाय री कप मेज माथै धरता ई बोली, 'ल्यौ चाय आरोगौ । औ सरकारी नौकर इयो ई काम री फळी कोनी फोड़ै । आनै ऊपर सू इतरी छुट्टी आर दे देवे सरकार, म्हारी छाती छालणनै । दिन उग्यौ कोनी, तीसरकै चाय वणी है ।'

'अरै बावळी, भागण लुगाई है जद थनै इतरी सेवा करणी रो मोकौ मिलै । बाबू गोपी किसन अर गोरधन दास हाळी घरवाळिया कानी देख, बापड़ी आपरै गावा मे पड़ी है । एक थू है कै मुक्की सू मतीरो फोडै । मुळकतो बनवारी बोल्यौ।

'घर घोस्या रा वळ ज्यावे पण सुख ऊन्दरा ई कोनी पावै । आरी जोड़ायत साथै कोनी तो अैई खाल्यो ताता-ताता चावता फलका । पड़्या ढावा रा सूगला साग अर काचा-पाका खाखरा चाये ।' हाथा री लहरको देवती सरला पडूतर दियौ ।

बाबू बनवारी की बोलै वी सू पैलाई वीरै काना मे बळतै तेल दायी आवाज पड़ी –'ई मोहल्लै मे बड़नै री थारी हिम्मत किया पड़गी । तनै कित्ती बार कैयो है कै गाव छोड़ ज्या । भळै गई तो ई बास म । तू कहणी कोनी मानै । तेरी टाग्या तोड़नी पड़सी । और कोई चारो कोनी । सूरजो हलवायी आज्या काढ़नै याल्या जावै हो जिकै सू वीरी तूद थुल थुल करती ऊपर नीचै होवै ही । बास गळी रा नान्हा मोटा टाबर लेर होयनै हसता ताळिया बजावै हा । ईं सू सूरजै नै और घणी रीस आयगी । वो झाळा भरतौ बोल्यौ– हसौ कै हौ ? आ थारी मा कैनेई खा ज्यासी ।

टाबर चुप नी रैया जद गमछै री फटकारी दवतो बोल्यो साळा' बेवक्त री औलाद मरणै जोगा ई है ।' कैंवतौ गयौ परौ ।

बनवारी आपरी कुर्सी सू उठ्यौ अर वीनै गयौ जठीनै राम रौळौ मचरयो हो। पण जा'र देख्यौ कै एक पैंसठ सत्तर साल री हाडा री ढावी वींरै घर रै कूणै सू लाग्योडी खड्यौ धूजै है। वण मन मे ई सोच्यौ कै आ लुगाई पाळै सू कांपै है या डर-भौ सू। वीरी आला सू पडूतर मिल्यौ कै दोना कारणा सू ई डोकरी धूजै है। वो पतो लगावण नै डोकरी कानी वहीर होयो तो दस-बारा साल री अेक छोरो बोल्यो, 'बाबूजी वींरै कनै मत ज्याजी, डाकण है, भक लेगी।'

अेक बार तो बाबू बनवारी लाल टावर री वात पर मुळक्यो पण जल्दी ही वीरो मन घणे पीड़ा सू भरग्यौ। वो डोकरी कनै जाय नै बोल्यौ, 'माजी डरपो मा। साची साची केवौ आप कुण हो ?''

बूढिया पैला सू ई घबराईज्योड़ी तो ही अर अचाणचक अणजाण मिनख नै देख उतावळी-सी क मुड़ी अर अफूटी वहीर हुगी।

बनवारी सैंतरो वैंतरो होय नै फेरू हेलौ पाड़यौ, 'माजी, जाओ ना। हवी, म्हैं थारै भलै री सोचू। म्है चाहूँ कै थारी विपदा दूर हो सकै एहड़ी बन्दोबस्त करणे री कोशीश करूली। ये म्हानै आप बीती तो सुणाओ।'

तावड़तोड़ चालती डाकरी रा पग थमग्या, पण वी लारै मुड़नै नी दख्यौ। आपरी जग्या खड़ी रैयगी। इतरै मे सरला भी बठै आगी। वीरा दोनू टाबर भी लारै-लारै आग्या।

बनवारी कनै जायनै देख्यौ तो सामणे दुरगत होयोड़ी नारी री भूडी तसवीर खड़ी है। मायनै बैठी आख्या सू झुरिया भरियोड़े गाला पर बैवता आसू सूक चुक्या हा। महीना सू बिन वाया बाळा री सिर पर लटा जमगी ही। गाभा जिग्या जिग्या सू छिछरभाळ होरया हा। जगत नै जलम देवण हाळी अर पालण करणै हाळी देवी सरखी नारी री इसी हालत देख वीनै घणी अणेसी हुयी। वीरा होठ सीमीजग्या, बोल नी फूट्य्या। छेवट सरला डोकरी री हाथ पकड़ र पूछ्यौ 'मा सा, म्हारै साथै आओ। काई ठा रामजी थानै आच्छा दिन फेरू दिखादे।'

पण की पडूतर कोनी दियौ। वा सरला रै लारै-लारै टावर जिया चाल पड़ी। जिका टावर कई ताळ सू तमासौ देखै हा वै भी आपस म कुचमाद करता चल्या गया।

घरा ले जाय नै सरला तातै पाणी सू डोकरी रौ मूडो धुवायौ अर फेर उणनै ताती ताती चाय प्याई। जिकै सू वींरै बूढ़ा हाडा मे की ज्यान सी बापरी। सरला अर बनवारी रै बार-बार पूछणै सू डोकरी आपरी व्यथा-कथा इण भात शुरू करी।

'म्हूँ तेरा साल री हुई ही कै म्हारी दादी री जिद्द रै कारणै म्हारै बायतियै थोड़ौ घर-बर देख र मनै परणा दी। म्हारौ बापजी री माली हालत घणी थोड़ी तो

कोनी ही पण समय सारू म्हारौ ब्याव आच्छौ ई कर्‌यौ । सासू सुसरा भी भला मिल्या। म्हारौ घर हाळो भी आच्छो कमाऊ हो । सासरै मे कोड हो तो पीहर मे म्हारौं घणो ई लाड । मा-बाप लाड कवरी कैवता तो सास सुसरा लाडेसर बीनणी । पण रामजी नैं म्हारौ सुख नी सुहायौ । दस साला मे ई मा-बा, सासू सुसरा सुरग सिधारग्या । लारै रहग्या भाई भावज अर जेठ जिठाणी । बापड़ी भावज तो इसी गये। बीतै घर घराणै री आई कै म्हानै कदै बार रै घररी देहळी भी नी दिखाई । जेठाणी इसी कठखाणी कै म्हारी सास लेवणौ दूभर कर दियौ । पण दोनू भाया मे सम्पत ही, दिन दोरा सोरा कटता रैया । तीन साल और चल्या गया । अचाणचक एक दिन म्हारै मोट्यार री जोर सू पेट दूख्यौ । देखता देखता दो तीन दिना मे बीरा प्राण पखेरू उडग्या । डाकटरा कह्यौ कैं आत पर आत चढ़ जाणै सू मौत होयी है । पण म्हारी जेठाणी बैठण आवण हाळी लुगाया मे झुठ मूठ चलती करदी कै मै बींनै खायगी । बापड़ी बो तो जीम जूठ नै आच्छी तरिया सोयो हो, पण इयै लुगाई कै कामण कर्‌या कै बो मर्‌यौ ई नीसर्‌यौ । आ लुगाई कोनी डाकण, स्यारी है । म्हारी नणदा भी जेठाणी री भीड़ चढती । पण जेठ भली हो । म्हारी जैठाणी री एक नी चाली । मै कई बार घर स्यू बारै निकाळी गइ पण जठ आ कैयनै रोक लेवतो, 'म्हारै कानी देखौ । घर री शान रैयै इस्यो काम करौ । जेठाणी घणी कळै करती जद बै केवता-म्हारै जीवता तो बहू अठै ई रैसी । जेठाणी रीसा बळती आ उडाई कै म्है कामणगारी हूँ । जिकी बी रै खसम नै मुट्‌ठी मे बन्द कर राख्या ह ।

पण म्हारी तकदीर मे सुख री लकीर तो जाणै काढ़ी कोनी बेमाता । अेक दिन म्हारै जेठ री बस एक्सीडेन्ट मे इन्तकाल हुयौ, अर मनै धक्का खावण नै सड़क मिलगी ।

'काई थारै टाबर टीकर कोनी हुया ?' सरला पूछ्यो ।

'हुया हा । दो छोरिया होयी । दोनू ई माता-ओरी मे मरगी । बारी कुण दखभाळ करतो ? मरगी तो सुख पायी ।' आख्या सू आसू पूछता डोकरी बोली ।

सरला नै लाग्यौ ओ सवाल पूछ नै बण ठीक कोनी करियौ ।

रमेश अर पिंकी दोनू टाबर भी सरला रै कनै खड़्या देखै हा । रमेश बोल्यो – मा, ईं बूढ़ी नै आपणे कनै राखलै । दादी मा नै मरिया दो म्हीना हाग्या। म्हानै आवडै कोनी ।' सरला आपरै आख रै इसारै सू बीनै चुप करियौ । पण बीनै भी सासू मा री कमी अखरी । सासू मा रौ कितरो सायरो हो । बै दोनू नचीता हा । टाबर भी दादी मा सू राजी रैंवता । घर री चिन्ता भी कोनी रैवती। बापू दफतर चल्यौ जावतो अर बा स्कूल । दोनू टाबर स्कूल चल्या जावता तो भी घर खुलो रैंवता । पण अबै तो अै बाता दादी मा रै सागै ई गई । टाबर भी घणा उदास रैवै ।

डोकरी नै चुप बैठी देख नै बनवारी पूछ्यौ माजी घर स्यू काढ्या पीछै इतरा दिन कठै काट्या ?

डाकरी बोली बेटा, लुगाई जद दु खी हुवै तद वा पीहर कानी देखै। ईं रै भाई भावज कनै गई। घणो ई खोरसो करियो। सगळा हाड दिलै लागग्या। भाभ रा मेणा सीटणा सुणता कई साल काढ्या। छेकड़ पीहर छोडणो पड्यो।'

म्हारै माथै खली वड़ी हुई मेठ हुकमचन्द री वेटी भी म्हारे तरिया दुखिया हागी। पण उणनै रोटी री रोवणी नीं हो। आच्छौ बैठण नै घर। खावन नै सेठ बींरै कैणै सू बींरै माथै ई अठै आगी। कई साल ईंया कटग्या। बींरा सेवा क देवती अर म्हानै दो टक रोटी अर गावा मिल जावता। लारलै साल वा भी मरगी। दूर रा रिस्तेदार घरधणी वणग्या। अबै मारो कोई ठार ठिकाणो कानी। लाग दूर कूड़ी वाता म्हारै साथै जोड़ै। म्हूं किणी गऊ नै ही नी मताऊ। आसमान फाटगो धरती झाली कोनी। आ कैयन डोकरी झारझार रोवण लागगी।

मा थू डाकण कोनी। अै मगळी मोता-मादग्या अर दुरघटनावा कारणै होव है। थू म्हारै कनै रेवैली। म्हारै मा नी है। मनै मा मिलज्यासी। टाबरा नै दादी थनै भी वेटा वहू, पोता पोती मिल ज्यासी। भरया पूरो कडूमो। जिकै री थनै दरकार है। ढाढ़स देवतो वनवारी बोल्यो।

नहीं रै वेटा। म्हारो दुरभाग म्हार सू पैला पूगै। थारै सारै सुखी जीवण नै भी दु खी क्यू बणाऊँ। वटी ठण्डी बासी गटी है तो ददे खायनै जाऊँ। डाकरी गहरी साम छाडती बोली।

नी मा अबै अठेई रैवणो पड़सी। भाग दुरभाग पर म्हानै भरोसा कोनी। फर भाग नाव री चीज हुवै ही है तो म्हारे सगळा री भी भाग है। म्हा सगळा रै बिचाळै दुरभाग री कीड़ी आपो आप मर ज्यासी।'

वनवारी अर सरला रै कैवणै सु डोकरी वा कन ई रैयगी। नुवी वात ना दिन खाचीताणी तैरह दिन। ई घटना री भी आ ही गत होयी। तीन च्यार म्हीना में वनवारी री बदळी भी दूजे जिले में होगी। डोकरी नै भी पुराणी वाता भूलणै री वखत मिलग्यो। वा भी परिवार मे घुळ मिलगी। वै दोनू जणा छोटी मा कैवता अर टावर दादी मा। छोटी मा झाझरकै ई उठ ज्यावती। सगळै घर मे बुहारी कर लेती। जद सरला उठ र टोकती तो पडूतर देवती– ना बेटी, थू सगळो ई घर रो काम करै अर स्कूल भी जावै। फेर म्हारा हाड गोडा चालै इतरै करू। टूटग्याला जद थू ई करैली।

सरला रै तीसरी टावर होग्यो जद तो छोटी मा सगळा ई घर साभ लियो। टावर भी दादी मा सू खासा राजी रैवता। वूढली रा दिन भी सावळ कटणै लागग्या।

अेकर वनवारी रै वुखार चढ़ी फेर भाव वणग्यो। पन्दरा दिन ताई छोटी मा सोई कोनी। रात दिन भगवान सू आ ही वीनती करती कै ठाकुर जी महाराज म्हारी

ऊभर म्हारै बेटे ने दे दै । म्हूँ जीयनै काई करस्यू ? बेटा, म्हानै सुपनो आयो झाझर कै री टेम कै थू स्कूटर मै बैठ ने दफ्तर जा रयो है । जिकै दिन बनवारी दफ्तर गयो बी दिन छोटी मा री खुशी रै पार वार नी हो । वण आखै मोहल्लै मे परसाद वाट्यौ ।

आपरी पोती सुमन रै ब्याव मे विदा री वेळा वा इतरी रोयी कै चुप कराणौ ओखौ होग्यौ हा । वी रै जी मे पोतै रै ब्याव अर पड़पातै रो मूढ़ो देखण री रैयगी । अठारा साल साथै विता छोटी मा अनन्त जात्रा रै खातर वहीर होगी । वा अेक भारतीय नारी ही । नारी जीवन रा सुख दुख भोग सदा खातर चली गई । सोचता साचता बनवारी री आख्या सू टप टप करता आसू झरण लागग्या ।

'ओ ए साब ! रोवणौ धोवणो छोड़ो । मा रा जावणे रा दिन हा । मा बाप किणरा अखी रैया है ? मा तो बड़भागण ही जिकी आपरे बेटा पोता रे हाथा मे गई है । उठो, आखरी कारज सारौ मा रा ।' बनवारी री हाथ पकड़ उठावतो वड़ो बाबू भवरीलाल बोल्यो ।

बनवारी उठ्यो । डबडबाई आख्या सू पडित रै कहै मुजब उण छोटी मा री कारज किरिया सातरी भात सारी ।



टूटती-आस्था

रामनिवास शर्मा

''वीनणी

कै है लाठी मारती सी वीनणी बोली–' खासी कै मनै ! हू मरज्यासू प
आ कोनी मरै कनै जावती बोली ।

म्हारा होठ सूखै । आ माथै थोड़ो चिकणास लगाय लै ।''

अठै तो टावर लूखी खावै । खावण नै घर माय चिकणास कोनी अर तनै
होठा माथै लगावण खातर चिकणास चाहिजै । आड़ीसी पाड़ौसी कनै सू माग नै
चिकणास लगाय देस्यू तो आखी रात कीड़्या खासी । जणा तू सगळै गाव नै भेळा
करसी अर म्हारी हेठी करासी । पाछी बावड़ती बड़बड़ायगी– मरे न माचो छोड़ै ।

डोकरी री जीभ ताळवै सू चिपगी । चिकणास धरियौ रैयग्यो । लारलै छव महीना
सू डोकरी माचौ झाल राख्यी है । उठण-बैठण री सरधा कोनी । गरमी रो महीनो हो ।
दोफारा ढळवा लागगी ही । वीनणी सासूनै थाखळ माय सुआण राखी ही । दिनूगै दू
सझ्या ताई भीत री छिया रै सागै सागै माचौ जग्या फैरतो जावै । छिया फिरै पण
डोकरी रा दिन नी फिरै । दिन माड़ै सू माड़ा आवै । आज रो दिन काल नै आछौ
दरसावै । हथणी सो डील सूख नै हाड़का रो ठाचौ हूयग्यौ । आख्या गीड सू भरी रैवै ।
बोली होठा सू मुस्कल सू ही बारै नीसरै । कान कनै तो पूगी ही नी ।

वीनणी खाथौ खाथी घर री काम सळटायनै टावरा नै रोटी खुवाय नै
पाट ,ला भेज अर रोटी खायनै पाणी माय रोटी घोळ नै डोकरी रै मून्ड माय नाखै ।
डोकरी आधी पड़ती घोळ पीवै । डोकरी नै घोळ पाय नै पाणी पावै । मून्डो पूछ नै
समान लैवण खातर बाजार जावै ।

डोकरी पड़ी पड़ी टसकती रैवै । पाड़ौस री लुगाया वगत कटावण सारू
आवै । पाणी पावै पून करै । साता पूछै । डोकरी री पसवाड़ौ फेरै । पूठ माथै
हाय फेरै । होठा माथै चिकणास लगावै । डोकरी केवै– मरियौ तो जावै नी अर
जीवणी मुस्कल है ।

वीनणी दोफारा पछै पाछी घरे आवे । लुगाया री भीड़ देखनै मन माय रीमा वळे पण हाठा सू मुळकती बोलै–"मा'सा खातर फळ ल्यावण न वाजार गइ ही । अवै आ नै रस देस्यूँ । की लेवै ही कोनी । आ री जीभ ही वेरण हुयगी । आ कैवती लुगाया कनै वैठ जावे अर हताई करवा लागै । थोड़ी ताळ पछे वेगी सी उठती केवै–"अवार चाय वणाऊ । पीव नै जाज्यौ ।"

वीनणी उठनै चाय वणावण री त्यारी करै । गैस जगावै । पाणी चढावै । कप धोवै । चाय पत्ती दूध चीनी डाल नै चाय वणावै । चाय छाणनै सगळी लुगाया नै अेक अेक कप देवै । डोकरी खातर चाय ठडी करे । अेक लुगाई वोले–वीनणी ! थे चाय पैली लेल्यौ । ठर जायसी । "ना ! भाभीमा ! पेली मासा ने देम्यू –वीनणी केवे ।

लुगाया एक दूजै कानी दखनै मुळकै । आख री मैन माय बोलै क सेवाभावी है।

वीनणी सारा देयनै डोकरी नै वैठी करनै फूक मार मार नै चाय पावे ।

मुळकती लुगाया आप आपरै घरा पाछी बावड़ जाव । घर खाली हुवता ही वीनणी नै पाछो वीर चढै । बड़बड़ाया लाग जावै "खावण खातर मरै । गोगा ऊकळै। आखै दिन खावती काढ़सी । हू कत्ताक काळा चाव्या हं । आखें दिन नरक नाखू । म्हारै हाथा री वास नी जावली । मनै चावै कित्ती ही भूडो । थारी माया । अे सेवा नी करै ।'

' वीनणी हूँ की कोनी केयौ ।

म्हू जाणू हू तनै । म्हारै सू कै छिप्याड़ी ह । तू की कोनी कव तो थारी मावा म्हारै वारै गया पछै क्यू आवे ? म्हारै सामै कोई मून्डी तो खोले । हू सगळा रा पलमा खोल देस्यू ।

डरती डोकरी रो पेसाव निसरग्यो । रिणियाती डोकरी वोली–हू थारी गाय हू । हू गीली हुयगी ।

' पैली क्यू नी वाली । अब वोली है ।' वड़वड़ावती वीनणी टूटी के पाइप लगायनै टून्टी खोली । पाइप सू डोकरी नै धोई ।

' वीनणी ! ओ कै करै !"

"गरमी है । काई मरै है कै । थोड़ी ताळ माय सूख ज्यासी । '

डोकरी आख मीच नै चुप हुयगी ।

वीनणी टून्टी वन्द कर'र आपरै काम माय लागगी ।

सिझ्या पडवा लागगी । पाठसाला सू टावरा रै आवण रा वगत हुवण लागग्यौ। वीनणी रसोई बणावण री त्यारी माय लागगी ।

गीली हुयोड़ी सूती सूती डोकरी सोचवा लागगी कै ' म्हारा भाग कित्ता माड़ा है। म्हू आ नी सोची ही कै म्हारै सागै इसी हुसी । थोड़ी स्याणप वरतती तो आज

आ दया नीं हुवती । आ वीनणी मीठी वाल नै म्हार काळज माय वड़गी । म्हार काळजा काढ लियो । म्हू की वालण जागी नी रो । म्हू स्याणप सू काम लेवता। होणहार नै निमस्कार । आज मन छोटी मोटी चीज खातर वीनणी रा मूंडा ताकणो पड़ । चीज मिल पण माजना मार न । '

सिझ्या री वेळा । वीनणी रसाई माय ही । टावरा री भाग दाड़ मू घर गूंजण लागग्यो । टावर नै चाय पाय नै खेलण खाथर वार खिनाय दिया ।

डाकरी ने रसोई माय सू सीजते साग री सुगन्ध आवा लागी । वा सिकनै दळियै री सुगन्ध भी लेवा लागगी । पण साग दळियो डोकरी नै अथा कुण परासती। सुगन्ध सू भूख वधती जावे । आता टूटवा लागगी । थोडी देर डाकरी दळियै नै अडीकती री पण हार नै हेलो पाड़ियो – 'वीनणी भूख लागगी । दळियो सीज्यो कोनी क ?

'भूखा मरती मरे कै ? खाणे रा ता ठा पड़ कानी । आखी रात गावा मरती नी आप सोसी अ र नी मनै सोवण देसी । भूखा मरती ही जनमी ही कै ।

वीनणी रा कड़वा वोला सू डोकरी री छाती म घावा घालण लागग्या । दुख घणा हुवै जणा आख्या रै मारग आसू जार आवा लाग जावे । अन्धारे माय कोर दखण आळा ता हा नी । डाकरी आपरै सगळे दुखनै अन्धार माय वैवाय दियो । राम रूठै वीरो कुण धणी । रीस माय भरनै डाकरी दळियो नी खावण री सोची । आटी पाटी लेयनै डोकरी सोयगी ।

रात री अन्धारा डाकरी रै गुमसुम वरतमान जिया वधती जावै हो ।

डाकरी रा पोता पोती गुवाड माय खेलनै घरा आया । जीमनै पढण लागग्या वीनणी खाणो खायनै चौका वरतण साफ करिया । दळियो लेयनै डाकरी कनै आ अर वाली ' ल्या वैठा हुवा । दळियो खाल्यो डोकरी वाली कोनी । थोडी ताळ पैल ता दळियो खातर मरै ही । रीस खाय नै अपूठी सूती है । कदारी मावे नीचै राखर वीनणी वोली भूख लागै जणा खाय ली ज्यो । गरज ता म्हार वाप री खल्लो ही करै । घणो रीड़ी धारकी धापिनै तो धार जायाड़ै नै वुलाय ल्या ।

दळियै सू उठती सुगन्ध सू डोकरी रो धीरज टूटता जावे हो । सागै सागै भू वधती जावै ही । कणा ही मन करै हो कै ई रिस माय काई पड़िया है ? मिले जद खाय लै पन अहम् घाट खायड़ै आग निपत पूवास मारै हो । मरणू तो एक दि जरूर है । खाय कई धावै भूखा मरू ।

पन भूख निनख री सगळा म वधनै हुवै । पगवाड़ै पैरती डाक घंनी-मारा । पेरै री जाया ! म्हा नी हुवती ।

विज्जू

जानकी नारायण श्रीमाली

काले सिझ्या टी वी माथै मझली दीदी फिलम देखी। फिलम म किसन नाव रे अनाथ छोरै री अन्तहीन कष्ट कथा अर मझली दीदी रो सरवस त्याग'र वीरै दु खा नै मिटावण रो सखरौ चितराम हा। फिलम देखता थका कित्ती बार आख्या गीली हुई अर पूछीजी, को ठा नी। फिलम रा मानवीय पख म्हारै माथै छायोड़ो हो कै इत्तेक मे छोरा छोरी, घर मे हुड़दग मचावता थका, छाती माथै आय धमक्या। चालो जीमी। म्हूँ जीमण नै टुर यइर हुयी।

पीळी केशर आमरस देख र जी हुळस्यो। म्हूँ वेगी जीमण खातर नहावण नै वड़ग्यौ। न्हार नीसर्‍यी तो घर घिरियाणी केयी– "अेक छोरो थानै आगलै कमरै मे उडीकै है। नाम है विजय।' मै नी ओळख्यो। ओ विजय भळै किसौ आयग्यो। खैर म्हूँ मिलण नैं गयो। आगी देखू तो बिज्जू। बिज्जू नै देखर जी मे घणो हरख हुयौ। पण वीरा उदास चहरौ देख हियै मे हूळ सी उठी। इसो स्याणौ सोवणौ अर पढ़ाई म सदा अव्वल रेण आळौ विज्जू आज उदास किया ? बिज्जू री आख्या री कारा में आसूड़ा चिलकै हा।

हूँ वीनै थावस दी अर वतळायौ तो वौ वोल्यौ–'गुरूजी। म्हूँ फेल हुग्यौ। आखै जगरी निजरा रा शूळ मनै वींध रैया है। हर निजर पराई होयगी अर जणै-जणै री तानेवाजी सू म्हारौ मन घणो अणमणौ है। म्हू काई करू ? मैं विज्जू रै खाधै हाय धर्‍यो अर म्हारा मानस पटल माथै फेरू अेक साची अनुभूत फिलम चालण लागगी। दसवी क्लास मे विज्जू शाला रौ प्रधानमत्री हो अर सास्कृतिक शारीरिक सू लेय र शालारी हरेक हलगळ री हीरो हा विज्जू। वीरो अधर-अधर वोलणी। वीरो वेजोड़ अनुशासन। सगळा छोरा अर मास्टरा रै हिवड़ै रौ हार हो बिज्जू। पढ़ाई रो तो कैवणो ई काई। राजरी स्कूल मे होवता थका नितरा पाठा फोरा नै झलता थका विज्जू पढ़ाइ मे घणौ हुशियार हो। मनै याद आयौ कै दसवी री वोर्ड परीक्षा मे विज्जू पैलै स्थान सू पास हुयौ अर अग्रेजी, गणित अर विज्ञान मे उणनै 'विशेष योग्यता मिली ही। म्हारै हिरदो रौ वोझ वढ़ली गयौ।

विज्ञू री मूरत रा देख्या भाल्या सैकड़ू चितराम याद आवण लाग्या । 'समाज सेवा अर समाजोपयोगी उत्पादन कार्य शिविर' म अवखा कामा नै वो सवका वणावतो । विज्ञू म्हारै मानस म हो । आज वा ही हारयो थक्यो म्हारै सामी वैठ्यो घणी कुचरती, म्हारी परतख दीठ म हो ।

जिया किया हू सभळ्यौ अर विज्ञू खानी देख्यौ तो विज्ञू नैं म्हारै मूडै सामी ताकता देख्यौ । मै की ध्यान मगन होयर वी सू वी री रामकथा पूछी । दसवीं सू लेयर वारवीं ताई रा दोय साला मे काई सू काई होयग्यी । विज्ञू आपरै सुरगवासी पिता रा डाक्टरी रा सुपना रौ विचार करता थका आकळ वाकळ हुयौ । उण री आख्या डवडवाईजगी । वी वतायी कै ग्यारवी क्लास मे विज्ञान रा मास्टरा खाना सू सकेत री लाल वत्या चेती । म्हारै सागै आळा छोरा मनैई ट्यूशन खातर घणौ समझायौ पण गरमी री छुट्टिया मे गाव गाव घूम र मलेरिया री दवा छिडक'र फीस रा पीसा रौ जुगाड़ करणियो वीज्ञू टूसन काकर करतो ? अठीनै स्कूल मे कोर्स पूरो हुयो कोयनी । वो फैल होयग्यी ।

विज्ञू रुक रुक'र वोल्यो– गुरूजी ! म्हारै फैल री खवर सुण'र वड़ा भाई मनै की कोनी कैयी । वै रोवण लागग्या । पण हू, काई करू गुरूजी । किसी कुऔ खाड़ करू । मे पूछ्यौ रै भाई थारो तो हैडमास्टर ई विज्ञान रो अधिकारी विद्वान है, वी छोरा री मदद को करीनी ? पळ भर रुक'र विज्ञू वोल्यौ–हैडमास्टर जी री पीरियड तो स्कूल मे सदाई खाली जावतो । वै राज-काज मे घणा अळूझियोड़ा रैवता पण वै आपरै घर आळी क्लास कदे खाली को छोड़ीनी । वै जिले रा चोखा अफसर गिणीजै । ऊचा अफसर उणानै ऊचौ खीचण री भरजोर कोशिस कर रह्या है । सुणा हा, वै वडोड़ै दफ्तर मे जार अवै एक स्कूल री ठौड़ आखै राजस्थान रा अफसर होय गया है । एक विदरूप हसी छोरे रै सूखै होठा माथै थोड़ी देर खातर आयर गमगी । म्हारी जी कर्‌यो कै हू म्हारी माथी भीत सू मचीड़ देय फोड़ लू ।

पण ओ तो कोई समाधान नी है । भारत री आशा अर आस्था रै परतख प्रतीक विज्ञू नै आगै री मारग वताणो पड़सी । मारग मनै सूझै नी पण विज्ञू ने ठा है। म्हनै गैरी उळझण मे देख'र वी मारग सुझायो । विज्ञू कैयौ–गुरूजी मै स्कूल वदळ लू ? मै कैयौ भोळा राजरी स्कूला तो सगळी एक सिरसी हुवै । वो वोल्यो– नई अवार हू जिकी स्कूल मे पढू वी मे दो दुख है । छोरा नै स्कूल मे वड्या पछै छुट्टी पैली वार को जाण दे नी अर स्कूल मे पढावै नी । म्हनैं इसी स्कूल री ठा है जिकै मे आवण-जावण री कोई रोक नी है । ई खातर हाजरी लगाय पाछी घरै आर तो छोरो पढ़ सकै नीं । ई मे छोरा रै वधण री वखेड़ी नी है ।

विज्ञू रै सुझाव आगै म्हारी पिंडताई अर म्हारी गुरूपणौ ढीली पड़ग्यौ । औ इयाकळा गैला मनै क्यू नी सूझ्या ? म्हारै असमजस नै प्रतिभाशाली विज्ञू लखग्यौ । फेरू आवण रो कैर विज्ञू विदा हुयो । विज्ञू री समस्या विज्ञू रो विखो म्हारै काळजे

म आडो-ऊभो हायग्यी । अेक चीत्कार, अेक चीख हियै मे उमड़ घुमड़'र वारै आय उथळ पुथळ मचावण खातर मचळण लागगी कै विज्जू फेरू नी आवैला । नी तो वो म्हारै खनै आवैला र नी वो स्कूल जावैला । वो फेरू देनगी मजूर बण नाळ्या अर सिड़योड़ा पाणी रा खाडा म मलेरिया री दवा छिड़कती धक्का खावती ठौड़ ठौड़ भवैला । विज्जू पाछी शिक्षा रै गैले नई आवैला ।

पण अडीक इसी चीज है कै वा जी नै सास नी लैण दे । अडीक-अडीक ही रैयगी । विज्जू सू भळै भेटा नी हुय सक्या । आज भळै मै, विज्जू नै भीड़ मे आख्या भालै ही । विज्जू रा बाबाजी पिडतजी आजादी रा जोधा हा । घणा बरसा विधायक रह्या । आज उणारी आदमकद मूरत उतरादै पासी सैर मे आवण वाळै मारग माथै लागणै री चहल पहल माच री ही । विज्जू रै बाबा जी अकन कुवारा हा । विज्जू ही उणारी वारिस हो । पण वो कठैई निजर नीं आयी । विज्जू रो बुआ रो बेटो भाई शिक्षा विभाग री मोटी अफसर ई समारोह री देखभाळ करै हो । वो मतरिया अर अफसरा री लाड समेटै हो । कदास ई आदर लाड री अेक कतरौ विज्जू नैं ई मिल पाती । पण विज्जू कठै ? म्हारी तिस्सी निजरा । निगोड़ै नैणा सू अेक र ओझल होयोड़ो किसो चेलौ पाछौ मिल्यौ है ? विज्जू कद मिलसी ?



मुळक

रामपालसिंह पुरोहित

उणनै आभै छिटकाई तो धरती झेलली । वा कुण ही अर गतो रात वा अठै कठासू अर कीकर आई, आ कोई नी जाण पायौ पण हजार घरा री बस्ती म आ बात जेठ री लाय ज्यू फैलगी कै फळा-चाळा खेजड़ा नीचै कोई अेक गैली-गूंगी लुगाई नै छिटकायग्यौ है । जिण खेजड़ा नीचै उणनै कोई डाळग्यौ हौ उठै मिनखा अर ट्रेक्टर रा ताजा खोज मडिया हा । पसवाड़ला सगळा गावा म मसूळिया ज्यू घर घर समाचार पूगग्या । ढोर डागर ई टाणासर खूट नी आवै तो धणी नै चैन नी पड़ै पण जाण'र जिकौ सोवै उणनै कीकर जगाइजै ? भावी पीढी री उण सिरजणहार री नी तो कोई वारू जागी अर नी जागणो हो ।

सैंपूर जवानी मे, फूटरी फर्री पण दुखा री रज सू दपटीज्योड़ी उण नार देही नै विधना जाणै निकमी बैठ र फुरसत मे घड़ी ही । तीखी आख्या जाणै साखियात मद रा प्याला, पण दयावणा । भरपूर छाती री उभार । केळ ज्यू कवळी । कमर नीचली न्नागड़ जाणै मतवाळी मकनै हाथी री ढाळ उतार सूड । भँवर केस पण जाणै राखोड़िया जोगी री भभूत लपटी उळझी-उळझी लटूरिया । टौड़-कुटौड़ डाभीयोड़ी रस्मी झरता घावा माथै माख्या गर्णाव । विधाता घड़ियै उण रमतियै नै देखणनै सगळी वस्ती उभाणा पगा उलट पड़ी जाणै उण रा दरसणासू जलम-जलम रा पाप छूट जावैला ।

घाव माथै लागा ढोम्ह माखी रा घटका साथै उणरा हाथ काची टौड़ माथै पड़ग्यौ, उण साथै उणरो नाड़ौ छूट (पेशाव) ग्यौ । रेला म रातोड़ देख र अेक लुगाई भीड़ मे मदौसीक गुणमुणाई- ' वापड़ी धरम मे आयगी । आ वात सुण र सगळा पागयधा पूठ फेर'र झूपा वाळी होटल सामा टुरग्या । या आडतणी व्हैगी । झीरझीर पापरा म वा मा-जाई ज्यू नागी दीखण लागी । झूलरा मे ऊभी अेक परणी-पानी बाई अटी-उटी लपणी दियी अर आपरो पेटीकोट उतार र उण माथ फेंकता अेक . नै पशारी- काकी ' औ इणनै पैराय दौ ।

होटल सू पाणी री डब्बी लेय'र आयै मिनख उणनै पैरणी पहरावता देख'र अपूठै ऊभै डब्बी आगै पकड़ाय दियी । मूडा-आख्या माथै पाणी रा छाटा देय'र लुगाया उणनै छछेडी अर उण धीरै-धीरै होठ-आख्या फुरकाई । डब्बी देख'र वा हळफळियोड़ी उठी अर डब्बी झइप'र डूजाडूज बूचियै पाणी पीवण लागी । उणरी कठनाळ सूखी होवण सू व्हा अैड़ी उळझी जाणै उणरा डीया छिटक जावैला । उणनै उळझी जाण'र अेक लुगाई डब्बी खाचती बोली–"हत्यारण ! अबै उळझनै क्यू मरै है ?"

"पीवण दी पीवण दी । काळजै हड़ाक उठियोड़ी है । कुण जाणै कद री तिरसी है । अर जे मर जावैला तो काई जग सूनो हुय जावैला । आप मुआ जुग पूरौ ।" दूजी लुगाई डब्बी खाचण वाळी सू बोली ।

पाणी पीर उण लावा सास सायै डील ढीलौ छोड़ दियौ अर चौफेर ऊभा मेळा माथै निजर फेंकी । आख्या सू टपकता आसूड़ा सायै घावा माथै बैठी माख्या उडावण लागी ।

उणरौ आपौ आळखावण सारू लुगाया उणनै भात भात सू कुचरी । वा कुण ही अर कठा सू आई ? उण अेकर 'सिणगारी' बोल'र जबान झेलली । उणरै कठ सू निकळियी औ छेलौ-पैलौ बोल हौ । उण गाव मे पगलिया करण सू लेय'र उणरी माटी उठी जठा ताई नी तो वा कदै'ई पाछी बोली अर नी किणई उणरो कोई सुर सुणियौ ।

"सिणगारी" गाव गळी मे जागती जोत बणगी । गाव रा टीगर तो उणनै देखता-देखता ब्यालू ई विसर जावता । या उणनै रमावती अर वै उणनै । सरीखी बाजी ही । गाव वाळा उणनै चिड़ावता तो वा मुळकती अर सीरौ-साबू जिमावता तो मुळकती । उण नी तो कदै'ई गैलाया विखैरी अर नी भाटै हाथ घाल्यी । उणरै होठा बसी थारै-मासी मुळक उणनै चौखळै चावी कर दी । असवाड़ै पसवाड़ै कथ कथीजगी 'काई सिणगारी ज्यू मुळकै है ।" पण उणरी अजाण अर ऊडी मुळक मे नी जाणै कित्ता कित्ता अणभाख्या ओलमा दटण हा, सिणगारी री मन काया ईज जाणती । उणरै काळजै सूखता-पागरता जमाना रा घावा नै पपोळणियौ मा रौ हाथ, बाप री निजर अर परण्या रौ परसेवी मिळियौ हुवतौ तो वा घर-घर गळी गळी आप री पूछ हिलावती कावडी कुत्ती ज्यू क्यू रूळती फिरती । वा दिन भर फिर भटक'र डूबतै सूरज उण सागण ई खेजड़ा रै नीचै पड रैती, जठै उणरा दुसी उणनै छोड़ग्या हा । वा जीवी जितै नी तो उणरी पोथी खुली अर नी वाचीजी इधकाई मे नुवा-नुवा आखर उणम खुदताग्या ।

सिणगारी री काया रा घाव तो उणरै चढतै लोही सू ढकीजताग्या पण उणरै अतस लाग्या घावा उणनै मुआ मुगति दी ।

उताम्ब पूरा री गाठड़ी उणरी जागीर ही । रात रा जाया ज्यू छाती आगै आ दिन रा माथै लिया व्हा घर घर अर गळी गळी अलख जगावती वस्ती रा पुन वधावती फिरती । जिण किण ई निरमल मन सू उणनै हाथ रो उत्तर दियौ उ आग इ उण आपरी अखूट मुळक वरसाई अर जिण उणरे पल्ले पत्थर पटकिया उ आग'ई वा तो मुळकी । सदा दिवाळी सत री तीसू'ई दिन तैंवार ।" कोई हाथ रा उत्तर दतौ तो कोई नटतो । वा टाणासर वस्ती जगावती अर पटिया पूर केता ई पूठी घिर जावती । कुवळा उण किणनै ई नी सतायो । मगळी वस्ती उण सू राजी ही पण लुगाया उण सारू तूठ पड़ती ।

ऊपड़ती रूआळी वाळा 'वाई फादरिया' सस्कृति वाळा छारा सिणगारा रै वहत लोही न देख र आपरी कामी नीत रा काकरा उणरे उछाळता । उणारी कामी निजरा सिणगारी रा फाटोड़ा गाभा सू वारे गळी काढना अगा नै यू ताकता जाण कुतिया टाटळ ने नाकै ।

गुळ भवती माखी पतळा आखर म पाखड़ा लपटाय र मरै विया ही उणी कुटाड़ लागा वीडिया रा डामा ने दरद देखनै मरता । पण सिणगारी रै हाठा वा बारै-मासी मुळक उणनै सूरज रा तप सू तीखी लागती ।

खेजड़ा वाळा टायौ वस्ती सू टळ र तळाव कनै दिसावरी मारग माथै हा । रात दिन कीड़िया रै रैला ज्यू मिनख फिरता । गाव री लुगाया सिणगारी नै सैन सू समझाई अर उण वस्ती रै वीचाळै आसन थरप लियौ । गाव विचाळै मुरजण रा हवेली रै अड़ैअड़ अक खाली दूढा न उण ऐकर रतवासा लियौ । पछै तो व्हा वठैई वसगी । पण खेजड़ा वाळा टाया नै वा विसार नी सकी । पखवाड़ा मे 3 4 वळा ता उणनै उठ फेरा लगावणा'ईज पड़ता । उणरा हावभाव अर आख्या सू मिनख अदाज लगावता कै वा किणी री वाट जरूर दख है । घणकर उनाळा रा दिन वा खेजड़ा नीचै ईज पूरा करती पण वी रातवासी हवेली कनला दूढा म ईज राख्यौ । विस्ती री सिणगार लुगाया नै उणसू अणूता हत हा ।

मुरजण उण गाव रा जाइन्दो नी ही । सिणगारी नै तो अठै कोई छिटकाय ग्यो हौ पण सुरजण ता रला चला नै आयौ ही । वो भुवती आया अर भाग सू पोल पाल म पगल्या पसारती गाव री सिरधाणी वण ग्यौ । अकल हुस्यारी सू गिणिया दिना में लाटी जागीर थरपली । थोड़ा ताळव चरण लाग्यी तो उण हाथ ढीलो छोड़ दियौ । दुनिया री दस्तूर है– हाथ पाला जगत गाला । भाग सू जोड़ायत लिछमी रा अवतार नीसरी । पछै तो दिन री उगाळी हाळी-वाळदा अर हाजरिया हवेली आग दण्डात भरता । सूरज री उगाळी पाच-पचीस चुगलिया रा मूडा उघड़ता । दिन पलटिया भागवाना रै भूत कमावै अर भैंसा पाणी भरै । मुरजण री हवेली पिणियारिया सानारी इजणी पाणी ढोवती । इण गाव रै जाइन्दा रै भाग म ता दो रोटी रयाळा म वैठै टयाग नै नी मिळा पण मुरजण गिणिया दिना म सात गुणा माय सू छ तो पगतळ

भोग लिया। सातवे सुख सारू तो उणरी मा विदाणा मे पग घसरती मरगी। उणरी मशा ही कै पोता रै खाधे सोना री निसरणी पग देय'र लावौ पियाणौ करू पण-'मन कहे महला चढू मोती लटकावू कान पण साइ हाथ कतरणी वो राखे उन्मान।

सुरजण री जोड़ायत जशकवर मरे माटी रा लोया सारू भाटो भाटौ देव कर लियो। कुळदीपक सारू उण सूपड़ै सूपडे वाटियो। उण तो- कर मे पहर कड़ा कर ऊची ही राख्यौ।' पण विधाता उणरौ माथो ऊचौ नी होवण दियौ। उणनै वाटती देख र सुरजण दूणौ मारतौ जद वा कैवती-' लुगाईरा दिया दान मे मिनख रो अपरतख आध हुया करै। मिनख तो धरम रा वधा रै घोदा देतौ'ईज चाल।"

सुरजण रै ज्यू ज्यू माया पसरी त्यू त्यू उण पाप रा धोरा'ईज वाधिया। उणनै तो दारू अर जिनावरा रा माथा वाढणसू'ईज फुरसत नी मिळती ही। पण जशकवर मन-अतस सू ऊजळी ही। दया तो उणरा रूं-रू सू उपजती ही। जशकवर रै पग फेरा र'ईज कारण हा कै सुरजण री माया वधती गई। जिण दिन सू सिणगारी उणरा पड़ाम मे आई उण दिन सू वा दोनू ई वेळा जशकवर रै रसोड़ै घर रा मिनख ज्यू जीमती। 'भरियै गाडे सूपड़ा री काई भार।' जशकवर सिणगारी सारू दूढा म फाटा टूटा गूदड़ा अर अेक मचली नखाय दी। आपरा पाछला दिन आवता देख र जशकवर सुरजण नै दूजो व्याव करणरी ई छूट दे राखी ही। पण लखणा रा लाडा नै पिछाण नी पड़ सकी के पावणौ गाय रै गूदरै तवू तणाय दिया है। उणरा भापणिया म चादी रा ताग चमकण लाग ग्या हा। भावी रा गर्भ सू सुरजण अजाण हा अर अजाण ई रैयग्यौ।

अेकर मझ अधरात रा जशकवर हळफळियोड़ी जागी अर पसवाड़ै हाथ फेरण लागी। पसवाड़ो खाली देख र उण कनूरा दिया पण भणकारी नी पायौ। जशकवर आज पैली यू कदै'ई नी चमकी। अणूथी वळा लागी जाण र वा ऊपर सू नीचै आयगी, कान सड़वा किया पण भीता कद बोली। उणरी डाढ़ नीचै काकरो रड़कियौ काळजै शका ऊपनी वा सीधी खिड़की जाय भिड़ी। किवाड़ औढाळियो देख र उणर पगा नीचली जमी खिसकगी। देढी लाघ र चूतरै रै खूणे आवती वा हाणफाण व्हैगी। वेसाखी पूनम री दूधवर्णी ऊजळी घट्ट रैण आगणे पड़ी सुई पळका करै तो ३ हाथ री देह क्यू नी टिप्पे। वा चपळवाई चूतरा रै खूणै पूगगी। सुरजण नै सिणगारी रा पल्ला नीचा करता देख र उणनै धड़धड़ी छूटगी। उण सोच्यौ- वस्ती जगाय दू कै जमी फाटै तो माय समा जाऊ। फेर उणरी मन हुयौ पाछी इण पढी कैड़ो चढणा कुऔ वावड़ी करणो चोखो। पण उणरी आत्मा उणनै चेतावनी दी-' गैली ! पींड़ गाय रै भैस नै क्यू डामे ? सत खिचिज्योड़ी पूटी घिरता विचार करण लागी-' सेर सूत वाधणियौ अखज र नाळ दे तो म्हारौ काई दोष ? मरनै मै क्यू जग हमाऊ।

पाछी ही ज्यू किंवाड़ ओढाळता उणरी मन गुचळका खावण लाग्यौ– ऊेध कुकर्मी रा तो पोत उघाड़णा चोखा । गणगौर रूठै तो सुहाग लै, भाग तो नीं ले सकै।'' पण शील रै अवतार पाछी ऊंडी विचारी–"घर री सायल उघाड़'र ई पाप री भागण क्यू वणू ?' करमी जिकी भरसी । लोग म्हारै जरा खातरैला– गोरी मे गुण हुवता तो ढोली पर घर क्यू जावती ?' वा गत्तागम मे कळातरा ज्यू उळझी विचार करण लागी–"नर, वाड़ म मूतती आयौ है पण मिर अखज अरोगनै जगळ रौ भोमियौ नी गिणीजै । वा-ऐ-जसूड़ी थारा भाग, दौ जीवता जीवता थारौ परणियौ कुठौड़ मू मारती फिरै ।'' सुरजण नै वैमाखिया गधा सू फोरौ तोल'र वा सागण पथारी मुआ लायड़ा ज्यू पसरगी, जाणै उणा आख्या पाटी वध्यौ हौ ।

जश रा जयलिया रै कोठी माय सुळी लाग जावै अर पाप रा पगल्या भतूळिया माय ई प्रगट जावै । घर-घर जीभा चटकारा लेवण लागी–"ऐ माइकी । कइनेंका आई धापिया धृपिया ई धूड़ मे मूडौ घालण लागग्या । खेत वाड़ खावण लागगी । रुखाळा लाज लूटण लागग्या ता किणरौ ओठी लेवणी । ' पण हराड़ा हाथी री छती कुण चढै ? गाव रा अवोध छारा छारी सुण'र पाटक हुयग्या कै वा बैठी सूता डोकरी घर म धाड़ो क्यू घालै ? लोगा जवान काठी करली– 'मादा री गाय नै चीतरै मारी अर चीतरा नै राम मारसी । '

पसवाड़ा जाड़ीजता-जाड़ीजता सिणगारी पूरै पेट आयगी । मणा समझणा मायौ धूणता तो टीगर उणनै सेन करता समझावता कै वा गींगला री मा बणण वाळी है । सगळा सारू सिणगारी कनै एक उत्तर ही 'मुळक । उणरा पेट म फळण वाळा पाप री साच उणनै उतरो नी ही जितरी उण पाप नै पोखण वाळी भूख री हो । वेटी री साध तो राडीराड मा ई पुरायदै, पण उण निरभागण अर नमायनी री साध कुण पुरावै। उणनै खाटी भावै कै मिठी । व्हा वळा-कुवळा 2 2 3 3 वेळा सागण पेड़ी चढण लागी । भारत रा गाव शहरा मे मिनख ब्यायोड़ी कुत्ती नै ई सुआवड़ दै है तो वा तो साखियात नर-नारायण री देह ही । कीड़ी नै कण हाथी नै मण दवण नै दाता हाय रै ह्जूर खड़ीखम्भ ऊभी है खोट है तो करमा री । वा ता थापड़ी दुखा सू पीड़िज्योड़ी ही ।

धरती विछाया अर सकळ आभो ओढिया सिणगारी छाती आगै पुटाखड़ी लिया काठा दात भीच र ऐक सियाळा नै लारै ठेल दियौ अर ग्त प्रवाण फागण फरुयरियौ । बसत रा वायरा मागै फूलण वाळा फूला अर फागण रा गीता साथै गाव री लुगाया नै सिणगारी री चेती आयौ । दिशा पाणी आवती-जावती लुगाया सरधा मुजब सिणगारी री टैल वदगी करण लागी । ज्यू-ज्यू दिन पूरीजता ग्या सिणगारी आलमू हुवती गई पण सार समाळ करण वाळा आगै मुळक लुटावण मे रत्ती भर आळस नी करियौ ।

अेकर कईं झाझरकै पावू भुआ लोठी ढोळ'र बळता सिणगारी री झूपड़ी मे गळौ काढियौ । पूरै दिना व्हैंता'ई सिणगारी हवेली कनलौ दूढौ छिटकाय'र सागण खेजड़ै निचलै वासै वास करण लागगी ही । आपरी चूधी आख्या माथै जोर देय'र पावू भुआ सिणगारी नै वकारी– "सिणगारी ' । पडुत्तर तो नी आयौ पण सिणगारी री टागा विचाळै गोळ-मटोळ, भूरी भट्ट भायड़ा व्है जैड़ी नाळ जुड़ियौ टावर देख'र सिसकारौ नाखता पावू भुआ गुणगुणाई–"छेवट पाप फूटौ ।" सिणगारी री आख्या फुरकी अर उण साथै दो मोती वेफ़लू मे आपरा ठसा छोड़ता दव ग्या । पावू भुआ आई ज्यू पाछी वेळी अर अेक झपाटै घरा पूगी । कोठी पड़ियै दातड़ै हाथ घालता आपरी बीनणी नै चेताई–"लाडू ! दो खुण्च्या आटौ अर दो अेक टीपरी घी नाख र रवि बणाय दै । सिणगारी गीगली जायी है ।"

बीनणी माखण री लूदी चाडा मे पधरावती सासू सामा आख्या आडा कान करता बोली– 'गैली विधना नै औ काई दाय आयो, औ लायी मनै देता ता लाज आई अर अकूरड़ी आवी निपजायी । वाह रै सावरा ! थारी कुदरत अर म्हारा भाग ।'

पावू भुआ नाळौ मोर'र आवळ धूड़ म दाव'र आपरा हाथ झटक्या अर अेक पिणियारण भरी चरी आगै करता बोली –"लौ भुआजी ! भेळ म भेळ गीगला नै सपाड़ौ कराय दौ ।"

सिणगारी रवि सबोड़ नाखी । आतरै भार पड़ताई उणनै चेतो आयौ । चौफेर सगळा नै ओळख र आपरा जाया नै निरखण लागी । उण अेक लावी सिस्कारौ ताण्यौ अर पावू भुआ गीगला नै आगै करता बोली–"ले इणनै चुघाय दै ।' व्है सिणगारी रै बोबा री बीटणी आपरै पल्ला सू पूछ'र गीगला रै मूडा मे दावण लागा अर पूठ मे ऊभी लुगाया पावू भुआ नै चेतावणी दी – अे, मा ! थै धौळा कठै लिया है, पहला धरती धार तो दौ ।" दो धार दिया पछै गीगळौ बद्चड़ बद्चड़ धावण लागौ । सिणगारी री दूजी बीटणी तिरपण लागी । पावू भुआ अगोठा सू बीटणी दावी राखी अर सिणगारी रा खोळा म गीगला नै पसवाड़ौ फोराय दीनौ । सिणगारी आपरी आख्या रा खजाना सू गीगला माथै ममता रा मोती निछरावळ करण लागी अर उणनै धड़धड़ी छूटगी ।

उठ'र घाघरौ खखैरती पावू भुआ गुणकी दियी–' ठालाभूला री आख तो जाणै उठीनै सू अठीनै चेप दी ।" भीड सू ऊथलौ आयौ–"अरस परस वापरै उणियारै हुवेला ।' आपरी मा रौ घाघरौ मुट्ठी मे काठौ पकड़िया अबोध पूनियौ माथो ऊचौ करनै आपरी मा नै पूछियौ –अे, वाई ! गीगला रा जीसा कुण है ?" भीड़ उणनै पडुत्तर दीनौ–' गीगळा नै पूछ । ' पूनिये नै सिणगारी री मुळक मे गीगला रै जीसा री पिछाण नी पड़ी पण भीड़ उणनै समझाय दियौ कै– 'वो !'

दिन दसे क सिणगारी आपरी घुरी नी छोडी । दसवै दिन कोई वार-धरतोलिया रै दिन गाव री की अबोध अर थावळी वाया सिणगारी नै नव्हायनै काजळ टीकी

अर महदी ददी । दळची न्हाया लुगाई कुदरती फूटरी लागै । अेकली हुवता ई उण पुटाखड़ै माथै अर गीगला नै खादै कर'र या गाव सामी दुरगी । आज की वेळी'ज भीड़ उणरै लारै व्हैगी ।

हवेली आगा आवता'र जाणै किण'ई सिणगारी रा पग पकड़ लिया । भीड़ मे अेक सरीखी गुणभुणाट सुणीजे 'सु सु सु' आपरी खिड़की आगै मेळी देख'र जशकवर आज पहली वेळा आपरी पेढ़ी लाघ'र वारै आयगी । सिणगारी नै देख'र वा च्यार पावडा उतावळा भरण लागी तो भीड़ उणनै मारग दै दीनी । जशकवर आपरी पल्लौ सिणगारी सामा पायर दियौ । सिणगारी अेकर गीगला नै अर अेक र जशकवर सामा देखती । दोन्यू री आख्या सू जाणै सावण भादवा री विना गाज झड़ी लागगी । सिणगारी आपरै लूक्या सू आख्या पूछ'र गीगला नै जशकवर रै पल्लै ढाळ दियौ । अेक मगती आपरै काळजा री बीट दूजी मगती नै सूप'र अमर दातार वणगी ।

अपूठी फिरता जशकवर सिणगारी नै आवकारी देता बोली–''माय आ जा ।'' जशकवर री अेक पग तो पढ़ी माय अर दूजौ वारै । जशकवर हरख्याड़ी 'बुच' करता गीगला नै व्हालो कीन्हो अर छाती चेप लीनौ । जशकवर री बुचकारी हवेली मे हावण वाळा भड़ाका नीचै दव'र रैय ग्यौ । भड़ाका माथै भीड़ दड़ी छट भाग छूय जाणै चिड़िया मे ढळ पड़ियो । उण भड़ाका रै साथै सिणगारी रै कठ सू अेक लाबी चीवळी निकळी अर उणरी पाप वाळी आगळी सुरजण री ढिगली सामा तणगी । चीवळी री गूज मिटी अर पेढ़ी वारै सिणगारी री ढिगली हुयगी ।

नीचै पड़ता ई थळगट रै कूठै सिणगारी री कपाळ क्रिया कर दी । जशकवर पाप पुन रा भवरीया म उळझी अेकर मायला चौक मे अर अेकर पेढ़ी वारै पड़ी सिणगारी री ढिगली नै ताकती थगनी हुयगी । वा उण पाप-पुन रा फळ नै हिया आगै लिया गतागम मे पजगी कै वा पैला पाप नै धरम डाड दै कै पुन नै । सिणगारी नै भोडी किचरिया काळा ज्यू लटपट-लटपट करता दख'र उणरै सिराथियै वैठ'र उणरा कपाळ सू वैवण वाळा सुहाग सिदूर नै राकण री अणूथी चेष्टा करण लागगी । उण समचै सिणगारी री आख खुली अर गीगला रै हाथ नै व्हाली दीनी । मुळकती, झरती आख्या सू जशकवर सामा देख'र सिणगारी गावड़ ढाळ दी ।

सिणगारी री मुळक पाच तत्वा री देह नै निरलेपी जोगी ज्यू त्याग'र निरवळी हुयगी । आज उण भड़ाकावाळी हवेली मे भूता अर कवूतरा री सुखवासी है पण कठै ई अणसैधी भोम मे गीगलौ जशकवर रै जश वधावतौ अळगी-नैड़ी फळै-फूलै है । सिणगारी ज्यू आई त्यू जाती रैयी ।

□

बड़ो आदमी

राम सुगम

"बापू ! ओ बापू ! भैरू काका बोत बड़ा आदमी बणग्या ! देखो उणरी फोटू अर खबर छापे माय छपी है !"दोड़तो मोहने रो बेटो मोहन कनै पूग्यो अर हरखतो बो छापो मोहन रे मूण्डे सामी मेल्यो, जिके माय भैरू रो फोटू अर खबर छप्योड़ी ही।

छापे माय भेरू रा फोटू देख'र मोहनो घणो राजी हुयो अर उणरी आख्या रै सामनै लारली जमानी याद आयग्यी । बो सोचण ढूक्यो क बै दिन कितरा सोवणा हा जद म्है दोनू सागै उठता-बैठता, गप्पाँ हाकता अर खेलणै कूद रै अलावा म्हानै की चोखो नी लागतो पण भैरू हो किताब्याँ रो कीड़ो । उण वेळा मोहनो भैरू नै यूब कैया करतो–' यार भैरूड़ा, तू बी खूब है, अे दिन तो मजा और मौज लूटण रा है । अेक तू है जको दिन रात किताब्या सू माथो लगावै।"

भैरू री छापे माय फोटू देख'र मोहनो बोत ही राजी हुयो अर सोचणो सुरू कर दियो–जै कदास भैरू म्हारी फाक्या माय आय जावतो तो बापड़ो भैरू आज इत्तो बड़ो आदमी नी बण सकतो।

आखै गाव भैरू रे बड़े आदमी बणनै री खबर फैलगी ही ! मोहनो सोचणो चालू हुयो– आज जमानी बड़े आदम्याँ री है । आज बड़ा आदमी जिके माथै हाथ राखदे जाणै उण माथे भगवान री मेहरबानी हुयग्यी हुवै । सगळी बात्याँ खुरसी लारै हुया करै । जिकै कनै खुरसी उण रै लारे क्या लखपती अर क्या किरोड़पती, सगळा लूण उतारता निजर आवे । आज हरैक छोटी मोटी सिफारसा बड़े आदमी कनै सू करावता दीसै ।

आज म्हारो भायलो जको खासम खास लगोटियो यार है वो बड़ो आदमी बणग्यो है फेर मने भी ई मौके रो फायदो तो उणावणो ही चाईजे । आ भैरू जै चावै तो म्हारै टीगरिया री जीवण सुधार सकै । ऊची सू ऊची नोकरी अर रुजगार

दिराय सकै । म्हारे टीगरिया रो जीवन सुधर जावै फैर मनै काई चाईजे ? म्हारो ई ध्येय तो टाबरियाँ नै आछौ जीवन देवणा हुवै ।

आ तवड़'र मोहनो वी पगाइज भैरू नै वधाई देवण सारू पैली मोटर सू वह' हुयग्यो ।

गाँव आळो मोहनो मैले गाभाँ माय भैरू री कोठी कनै पूग्यो । कोठी रै बारै खड़ा डोढ़ीदार उणनै देख र बड़बड़ायो अर मूण्डो फेर लियो ।

मोहना डोढ़ीदार कनै पूग्यो अर केवण लाग्यो–"वीरा ! मनै भैरू साब सू मिलणो है ।'

मोहने री वात सुण र पैली तो उणने घूरियो अर वोल्यो–"जा–जा ! कोई काम ना धधो । साव सू मिलणो है, जाणै साब इणरा काकाजी लागै । दौड़जा नीं तो लात्या सू भगाऊला ।

'अरे बीरा ! इणमे ताव खावण री काई जरूरत हुई । आ साची वात है'क भैरू म्हारो लगोटियो यार है, इण खातर म्है वी सू मिलण आयो हूँ । उणने खाली इतराई कैदे क थारो गैलसफो लगोटियो भायलो मोहनो था सू मिलणै आयो है ।" आ सुणते इज नाठतो इज ई उण आवला जाणै सुदामा कनै किसन ।" मोहना गीरबै सू डाढीदार ने कैयो ।

' थाँरे जेड़ा घणाई साव रे जाण पिछाण आळा आवे । अबार साब वोत बड़ी मीटिंग ली रैया है इण वास्तै साब ने टैम कौनी । जा तू थारो रस्तो ले ।" डोढ़ीदार कैयो ।

मोहनो आपरी वात माथै अड़ियोड़ा हो वो पूठो वोल्यो लाडी मैं भैरू साब'र गाँव सू इज आयो हू । ई खातर तु अेकर वैने कैय दे । फेर तू देख वो कसो क नाठतो आवे ?

डोढीदार रो वी मनड़ो पसीजग्यो अर वोल्या–ठैरो । म्हे पैला साव ने पूछ र आऊ ।

डाढ़ीदार भैरू रे कमरे माय घुस'र बोलियो–"साव ! आपरे ।
डोढ़ीदार री वात पूरी हुयी कोनी उण सू पैलाइज भैरू रीस खाय र वोल्या– 'जद थनै कै दियो क अबार जरूरी मीटिंग चाल रैयी है फर कैन ई मलण री जरूरत कौनी । कैय दै जाय र साव जरूरी काम माई लाग्योड़ा है ।

'साब ! आपर । डोढ़ीदार फेर भी आपरी वात केवणी चाई, पण भैरू अेकदम ताव माई आयग्यो । वाल्यो–जद थन समझाय दियो अर कैय दियो'क जरूरी मीटिंग चाल रैयी है, फेर थन कद अक्कल आवली ? जा कैदे अबार टैम कौनी ।

भुसळीजतो अर माथे हात फेरतो डोढ़ीदार पूठो मोहने पासी पूग्यो अर लूण मिरच लगायर मोहने सू बोल्यो–म्हे थारै खातर साहव कनै गयौ पण मनै मिली काई - लताड़। वे वोल्या क म्हैं किसैई-मोहने-वोहने ने नी जाणूं। जाय'र कैदे'क वोत जरूरी मीटिंग चाल रैयी है। साव ने अवार टैम कौनी। अव बता म्हारो काई कसूर ? म्हे थने पैलाइज कैयो क रस्तो नाप ले पण तू नी मान्यो। अवे वी थनै कैय रैयो हू क साव नी मिलेला, ई वास्तै टैम रैंवते घर री रस्तो नाप लै।

मोहनो जिको भैरू ने वधाई देवण सारू आपरै घरा सू हरखतो-मुळकता आयो हो वी मोहने री हालत अवार देखण जेड़ी ही डोढ़ीदार कनै सू अे वार्त्यां सुण र मोहने रै नीचे सू जाणे धरती खिमकगी हुवै।

मोहनो पूठो आपरै घरै जावण सारू वयीर हुयो हो पण इण तरिया लाग रैयो हो जाणै वो घणा वरसा सू वीमार हुवै। मोहने रै मनड़े माय जिकी हूंस ही वा कपूर री तरियाँ कठेई उडगी। भैरू रे वडै आदमी होवण रे लारै जिका सुपना मोहने सजोया हा वे सिगळा टूटग्या अर वो दुरतौ दुरतौ सोच रैयो हो'क इण सू आछो तो ओ हो क भैरू वड़ो आदमी नी वणतो तो ठीक हो, कारण उण सू 'जै रामजी' तो होवती रैवती अर जिको उणरे वास्तै वणियोड़ो भरम हो वो तो नी टूटतौ।



दिराय सके । म्हारे टींगरिया रो जीवन सुधर जावै फेर मने काई चाईजे ? माइता रो ध्येय तो टाबरियाँ न आछो जीवन देवणो हुवै ।

आ तेवड़'र मोहनो वी पगाइज भैरू नै वधाई देवण सारू पैली भोटा सू वहीर हुयग्यो ।

गाँव आळो मोहनो मैले गाभाँ माय भैरू री कोठी कनै पूग्यो । कोठी रै बा खड़ो डोढ़ीदार उणने देख र वड़वड़ायो अर मूण्डो फेर लियो ।

मोहनो डोढ़ीदार कनै पूग्यो अर केवण लाग्यो- 'वीरा ! मनैं भैरू साव सू मिलणो है ।'

मोहने री वात सुण'र पैली तो उणने घूरियो अर वोल्यो-''जा-जा । कोई काम ना धधो । साव सू मिलणो है, जाणै साव इणरा काकाजी लागै । दौड़जा नी तो लात्या सू भगाऊला ।''

अरे वीरा ! इणमे ताव खावण री काई जरूरत हुई । आ साची वात है क भैरू म्हारो लगोटियो यार है इण खातर म्हे वी सु मिलण आयो हूँ । उणने खाली इतरोई कैदे क थारो गलसफो लगोटिया भायलौ मोहनो था सू मिलणै आया है । आ सुणत इज नाठतो इज ई उण आवेला जाणै सुदामा कनै किसन ।' मोहनो गीरवै सू डोढीदार ने कैयो ।

थारे जड़ा घणाइ साव रे जाण पिछाण आळा आवे । अवार साव वोत बड़ी मीटिंग लै रैया है, इण वास्तै साव ने टैम कीनी । जा तू थारी रस्तो ले ।'' डोढ़ीदार कैयो ।

मोहनो आपरी यात माथै अड़ियोड़ो हो वा पूठो वोल्यो लाडी, मैं भैरू साव रे गाँव सू इज आयो हू । ई खातर तू अेकर वैने कय द । फेर तू देख वो कमो क नाठतो आवे ?

डाढीदार रो वी मनड़ा पमीजग्यो अर यात्या-ठैरो । म्हे पैला साव ने पूछ र आऊ ।

डोढ़ीदार भैरू रे कमरे माय घुम र वोलियो- 'साव ! आपरे ।
डाढ़ीट" री यात पूरी हुयी कोनी उण सु पैलाइज भैरू रीस खाय'र वोल्यो-' ज थने दै दियो क अवार जरूरी मीटिंग चाल रैयी है फेर कैने ई मेलण री जरूरत कोनी । कैय दे जाय र साव जरूरी काम माई लाग्योड़ा है ।'

साय ! आपर । डोढ़ीदार फेर भी आपरी यात केवणी चाई पण भैरू अेकदम ताव माई आयग्यो । यात्यो-जद थने समझाय दियो अर कैय दियो'क जरूरी मीटिंग चाल रैयी है फेर थन कद अक्ल आवेली ? जा कैदे अवार टैम कोनी ।

मुसळीजतो अर माये हात फैरतो डोढ़ीदार पूठो मोहने पासी पूग्यो अर लूण मिरच लगायर मोहने सू बोल्यो–म्हे थारै खातर साहब कनै गयौ पण मनै मिली काई लताड़ । वे बोल्या'क म्हैं किसैई-मोहने-वोहने ने नी जाणूं । जाय'र कैदे'क वोत जरूरी मीटिंग चाल रैयी है । साव ने अवार टैम कौनी । अब वता म्हारो काई कसूर ? म्हे थने पैलाइज कैयो'क रस्तो नाप ले पण तू नी मान्यो । अवे बी थनै कैय रैयो हू क साव नी मिलेला, ई वास्तै टैम रैंवतै घर री रस्तौ नाप लै ।

मोहनो जिको भैरू ने वधाई देवण सारू आपरै घरा सू हरखतो-मुळकतो आयो हो वी मोहने री हालत अवार देखण जेड़ी ही डोढ़ीदार कनै सू अे वात्याँ सुण र मोहने रे नीचे सू जाणे धरती खिमकगी हुवै ।

मोहनो पूठो आपरै घरै जावण सारू वयीर हुयो हो पण इण तरिया लाग रैयो हो जाणै वो घणा बरसा सू वीमार हुवै । मोहने रै मनड़े माय जिकी हूस ही वा कपूर री तरियाँ कठेई उड़गी । भैरू रे बड़े आदमी होवण रे लारै जिका सुपना मोहने सजोया हा वे सिगळा टूटग्या अर वो टुरतौ टुरतौ सोच रैयो हो'क इण सू आछो तो ओ हो क भैरू वड़ो आदमी नी वणतो तो ठीक हो, कारण उण सू 'जै रामजी' तो होवती रैवती अर जिका उणरे वास्तै वणियोड़ो भरम हो वो तो नी टूटतौ ।



म्हारा बै..

निशान्त

रामू री घरआळी सारी रात जाड़ री पीड़ स्यू दुख पावती रैयी । ई खातर बै दोनू जी झाझरकै ही स्हैर जाड़ कढ़ाण नै चाल पड्या । गाव स्यू धूड़ाघर री बस अड्डो ऐक कोस दूर हो । ऊचै धोरा रो ऐक कोस री पण्डौ कोई कम नी हुवै । बै ऊठ माथै बैठ नै चाल्या । सूरज री टीकी ओज्यू ताई निकळी कोनी ही । ई वास्तै वाय ओज्यू ताई तपी कोनी ही । भैत कदे होळै चाल्यो कदै ढाण । रस्तै मे आध पूण घण्टो लाग्यो । अड्डै माथै दो च्यार ढाबा हा । वा आगै पड़ी बचा पर आसलै पासलै गाव री सवारिया बैठी ही । बैठण रो सुभीतो देवण रो लिहाज मान नै सवारिया चाय पी रैयी ही । घरआळी जाडी चाय पीवण आळी, ई पतळी चायरै ऐक दो घूटा सू के होवै हो । रामू बी बेंच माथै बैठ नै ऐक चाय रो आडर दियो । बी री घरआळी रै चाय पीवण रो तो सवाल ही कोनी उठै हो । वा तो ठण्डा या गर्म की मुह मे नी न्हाख सकै ही ।

रामू रै चा पीवण तक स्हैर जावण आळी बस आई पण वा ऊपर सू नीचै ताई भरियोड़ी ही रुकी कोनी । ऐक घण्टै बाद दूजी बस आई । वा रुक तो गई पर भरियोड़ी वा भी पूरी ही । की तरा ही रामू अर बी री घरआळी दोनू चढ्या । रामू सीट माथै बैठ्या लोगा स्यू जनानी खातर सीट मागी । बूढी अर बीमार हुवण री दुहाई दी । पण कोई सीट छोड़ण नै तैयार नीं होयी । हार मान अर वा गैलै म ही बैठगी । बी औरत आपणी जिदगी मे मोटर री सवारी कम ही करी ही । पीहर ता वा सदा ऊठ माथै जावती । वा री घणकरी रिस्तेदारिया बा ऐड-नैड़ रै गावा म ही जठै मजउ ऊठ माथै जाईज जावतो । मुस्कल सू एक-दो रिश्तेदारिया ही जठै जावण वास्तै मोटर रा सायरो लैवणो पड़तो । बी रै स्हैर जावण रो तो सवाल ही पैदा कोनी हो । सारी लेण-देण अर खरीद-फरोगत मर्द रै जिम्मे ही ।

गाव सू एक कोस दूर लागणै आळै माताजी रै मेळै मे भी वा पाळा ई जाय आवती । तीर्थ जात्रा रो जोग कदै रैट्या कोनी हो । ई वास्तै बीं रो जी

बस सू डाढ़ी घवरावतो । आज तो की ज्यादा ही घवरावै हो । वा रातभर रै ओड़ीदै सू बेदमाल होयड़ी ही । मोटर ओज्यू ताई थोड़ी दूर चाली क बीनै उल्टी आवण लागी । बी रो उवाको सुणनै लोग घवराईजग्या कै लत्ता खराव करैगी कै ?

"मैरै कै वस की वात है ?"

जद अेक जणै कैयो–"अरे ! इनै खिड़की कनै बिठाओ उल्टी वारै कर लैसी। वी री वात सुण नै खिड़की कनलौ एक मिनख ऊभो होग्यो । रामू री लुगाई वी सीट माथै जा बैठी । सीसो उपर चढ़ैड़ी हो । वी मूडो वारै कर्‌यो अर गळ ग ळ गळ उल्टी कर दी ।

कण्डक्टर ने मोसौ मारण रो ओसर हाय आग्यो–अवै सारी वस भर जाती ।

कै होणै स्यू की जी हल्को होग्यो । पण जाड़ री पीड़ तो ही ही । जनानी खिड़की री टेक लगा नै जपगी । स्हैर पूचण मे कोई घण्टो भर लाग्यो । दाता रै डाक्टर री दुकान दूर कोनी ही । अड्डै कै नेड़ै ही ही । वै वठै ग्या अर जाड़ कढ़ा ली । जाड़ कढ़ता ही अराम हुग्यो ।

बी दिन वानै वाजार सू कोई ज्यादा लेवा देवी कोनी करणी ही । सारली दुकान सू वा थोड़ो कपड़ो खरीद लियो अर अड्डै माथै वा सामी पावडी ही दोनू पाछा आग्या । मोटर तैयार उभी ही । मोटर मे भीड़ ही पण दूढण पर लुगाई खातर एक सीट मिलगी । लुगाई नै सीट माथै विठा नै वो टावरा वास्तै काई चीज खरीदण नै उतरग्यी । घरा सू चालतै वखत छोटकी छोरी चीज ल्यावण री फरमैस करी ही । "टावर रो मन राखणो चाहिजै" सोचनै वो हेठै उतर्‌यो ।

वीं एक रेहड़ी आळै स्यू भाव पूछ्यो । मुहगो लाग्यो । ईं वास्तै दूजै कनै गयो। दूजो पैलै आळै स्यू सस्तो हो पण फेर भी वी रो मन कोनी धाप्यो । वो तीजै कनै ग्यो । तीजो सारा रो वाप निकळ्यो । वो पाछो दूजै माथै आग्यी वी, आधा किलो आम तुलवाया अर वस कनै आग्यो ।

वस ऊपर ताई भरीजगी ही अर सुवारिया छत माथै चढ़ै ही । वी सोच्यो– माय लोगा री भड़ास रैसी । ऊपर चढणो ही ठीक रैसी ।

जद वस चालण लागी तो माय वैठी लुगाई रोळी मचायी–"म्हारा वै कोनी आया ।"

कण्डक्टर गुस्सै सू बोल्यो–"वै कौन ?

"नाम म्हू किया ल्यू ? म्हारा टावरा रा वाप ।"

नाम नहीं लेती तो उतर नीचे । दूसरी वस मे चली आना । "

म्हारा बै..

निशान्त

रामू री घरआळी सारी रात जाड़ री पीड़ स्यू दुख पावती रैयी । ई खातर वै दोनू जी झाझरकै ही स्हैर जाड़ कढ़ाण नै चाल पड़्या । गाव स्यू धूड़ासर रो बस अड्डो अेक कोस दूर हो । ऊचै धोरा रो अेक कोस री पेण्डी कोई कम नी हुवै । वै ऊठ माथै वैठ नै चाल्या । सूरज री टीकी ओज्यू ताई निकळी कोनी ही । ई वास्तै वाय ओज्यू ताई तपी कोनी ही । भैत कदै होळै चाल्यो कदै ढाण । रस्तै में आध पूण घण्टो लाग्यो । अड्डै माथै दो-च्यार ढाबा हा । वा आगै पड़ी बेचा पर आसलै पासलै गाव री सवारिया बैठी ही । बैठण रा सुभीतो देवण री लिहाज मान नै सवारिया चाय पी रैयी ही । घरआळी जाडी चाय पीवण आळी, ई पतळी चायरै अेक दो घूटा सू के होवै हो । रामू थी वच माथै बैठ नै अेक चाय रो आडर दियो । थी री घरआळी रै चाय पीवण रो तो सवाल ही कोनी उठै हो । वा तो ठण्डो या गर्म की मुह मे नी न्हाख सकै ही ।

रामू रै चा पीवण तक स्हैर जावण आळी बस आई पण वा ऊपर सू नावै ताई भरियोड़ी ही रुकी कोनी । ‌ेक घण्टै बाद दूजी बस आई । [illegible] रुक तो गई पर भरियोड़ी वा भी पूरी ही । की तरा ही रामू अर थीं री घरआळी दोनू चढ्या । रामू सीट माथै वैठ्या लागा स्यू जनानी खातर सीट मागी । बूढी अर बीमार हुवण री दुहाई दी । पण कोई सीट छोड़ण नै तैयार नी होयी । हार मान अर या गलै म ही वैठगी । थी औरत आपणी जिदगी म मोटर री सवारी कम ही करी ही । पीहर तो वा सदा ऊठ माथै जावती । या री घणकरी रिस्तेदारिया ही अेड़-नैड़ रै गावा म ही जठै मजउ ऊठ माथै जाईज जावतो । मुस्कल सू एक-दो रिश्तदारिया ही ही जठ जावण वास्तै मोटर रो सायरो लेवणा पड़तो । थी रै स्हर जावण रो तो सवाल ही पैदा कोनी हो । सारी लेण-देण अर खरीद-फरोगत म्हारै जिम्मै ही ।

गाव सू एक कोस दूर लागणै आळै माताजी रै मठै म पी वा पाळी ई जय आवती । तीर्थ जात्रा रा जाग कदे बैठ्यो कोनी हो । ई यास्ती थी रो जी

बस सू डाढ़ी घबरावतो । आज तो की ज्यादा ही घबरावै हो । बा रातभर रै ओड़ीदै सू बेदमाल होयड़ी ही । मोटर ओज्यू ताई थोड़ी दूर चाली क बीनै उल्टी आवण लागी । बी रो उबाको सुणनै लोग घबराईजग्या कै लत्ता खराब करैगी कै ?

"मैरे कै बस की बात है ?"

जद अेक जणै कैयो–"अरे ! इनै खिड़की कनै बिठाओ उल्टी बारै कर लैसी। बी री बात सुण नै खिड़की कनली एक मिनख ऊभो होग्यो । रामू री लुगाई बी सीट मायै जा बैठी । सीसो उपर चढ़ैड़ो हो । बी मूडो बारै कर्यो अर गळ ग ळ गळ उल्टी कर दी ।

कण्डक्टर ने मोसौ मारण रो ओसर हाथ आग्या–अबै सारी बस भर जाती ।

कै होणै स्यू की जी हल्को होग्यो । पण जाड़ री पीड़ तो ही ही । जनानी खिड़की री टेक लगा नै जपगी। स्हैर पूघण मे कोई घण्टो भर लाग्यो । दाता रै डाक्टर री दुकान दूर कोनी ही । अड्डै कै नेड़ै ही ही । बै बठै ग्या अर जाड़ कढ़ा ली । जाड़ कढ़ता ही अराम हुग्यो ।

बी दिन बानै बाजार सू कोई ज्यादा लेवा-देवी कोनी करणी ही । सारली दुकान सू बा थोड़ो कपड़ो खरीद लियो अर अड्डै मायै वा सामी पावडी ही दोनू पाछा आग्या । मोटर तैयार उभी ही । मोटर मे भीड़ ही पण दूढण पर लुगाई खातर एक सीट मिलगी । लुगाई नै सीट मायै विठा नै बो टाबरा वास्तै कोई चीज खरीदण नै उतरग्यो । घरा सू चालतै वखत छोटकी छोरी चीज ल्यावण री फरमैस करी ही । "टाबर रो मन राखणो चाहिजे' सोचनै बो हेठै उतरयो ।

बो एक रेहड़ी आळै स्यू भाव पूछ्यो । मुहगो लाग्यो । ईं वास्तै दूजै कनै गयो। दूजो पैलै आळै स्यू सस्तो हो पण फेर भी बी रो मन कोनी धाप्यो । बो तीजै कनै ग्यो । तीजो सारा रो बाप निकळ्यो । बो पाछौ दूजै मायै आग्यो बी, आधा किलो आम तुलवाया अर बस कनै आग्यो ।

बस ऊपर ताई भरीजगी ही अर सुवारिया छत मायै चढ़ै ही । बो सोच्यो–माय लोगा री भड़ास रैसी । ऊपर चढणो ही ठीक रैसी ।

जद बस चालण लागी तो माय बैठी लुगाई रोळो मचायो–"म्हारा बै कोनी आया ।"

कण्डक्टर गुस्सै सू बोल्यो–"बै कौन ?'

"नाम म्हू किया ल्यू ? म्हारा टाबरा रा बाप ।'

' नाम नहीं लेती तो उतर नीचे । दूसरी बस मे घली आना ।"

वा सीदी सादी गाव री लुगाई । कण्डक्टर रे कैया कैया उतरगी ।

बीके उतरता ही कण्डक्टर सीटी दी अर बस चाल पड़ी । धूड़ासर आवता ही रामू हैठी उतर्‌यौ अर आपरी लुगाई नै आवाज लगाई । पण लुगाई तो होवती तो आती । वो ऊपर चढ्‌यो । जी सीट माथै बीनै बिठाई ही वठै जाय नै पूछ्यौ–अठै म्हारी बीनै बिठाई ही नी ? वा कठीनै मरगी ?

बी सीट माथै बैठी सवारी बोली–वह तो शहर म ही नीचे उतर गयी । कह रही थी कि 'हमारे यह नहीं आए' ।

रामू आपरौ माथो ठोक्यो । पण कै करतो ? बी कसूर बी रो भी तो हो ।



भाई री भावना

आर आर नामा

बखत बखत री बात । सुख-दुख दोनू धूप छाँव ज्यू आता-जाता रैवे । कैणगत है "मत मरजी नैनकिया रा माय र बाप" । सुजान छोटी ही पण उणनै याद है, जद उण रा माय र बाप ने बारी-बारी सू छप्पनी काळ रामजी रै घरै ले गयो ही । सुजान समझती कौनी ही कै मौत मरणौ काई होया करै । दिन दिना रै लारै ढळता गया । वड़ौ भाई बादळ विरखा रौ बादळ हो, बादळ ज्यू बड़ो होग्यौ ।

मामो मोती उण जमाने माय आपरी दुनिया माय एकलौ हीज हो । भाणजा रो इण सूनै पण मे सहारौ । मामो मोती मोकळी गाया राखती । म्है सगळा गाया रा गुवाळ टोगड़िया चरावता । पशुआ री पाळपोश माय म्हारी ऊमर वधी । समाजोग सखरी आयी । मामे रौ व्याव आयौ । म्हारी खुशी री कोई पार कौनी हो । माँ बाप रै बाद मामो ही म्हारो भगवान हो । मामी आयी । खुशियाँ लायी । म्है मामी रो लाड करता । हसता, बोलता जिंदगाणी माय रमक झमक आगी ही ।

म्है दोनो भाई वड़ा हा पर गिणीजता टाबर ही । मामो गाया रौ ग्वाळ । रात रा मोड़ो आवतौ । प्रभातै वैगो जावतौ । मामी ने आ बात पसद कौनी ही । कैवती— "थारा मामो सा म्हारै सू ज्यादा गाया नै चावे है । गवार रौ गवार है ।" मामी सा रै जोबन रो मद घढ़तो जाय रयौ हो, म्है बीच माय अड़खजो लागता । मामी सा म्हा सू नाराजगी राखती । एक दिन मामी मामै सू केवण लागी, "था आ काई हाडखी गळै बाध राखी है । अबै अै छौरा मोटा होग्या है । आनै आपरै आसरै करणा चीखा है । आप घर सू बारै रेवौ, म्हारै सू अे मसकरिया करता रेवे ।"

राजा काना रा काचा । मामे रे मन रौ विश्वास दिनो दिन म्हा पर उठतो गयो। एक दिन टोगड़िया चूग गया । मामी साची कूड़ी राम जाणे काई-काई कैई ? मामे आव देखियौ ने ताव दो दो जूत म्हारै दे मारिया । म्है रात रौता काढी । दु ख रा दिन फेर पाछा याद आवण लागा । बादळ प्रभात री पीली पौर होता ही म्हनै जगायो अर राम भरोसै मूलियोड़ो मार्ग दूढ़ता म्है चालण लागा । आपरै गाव आय

पुराणी ढाणी री जग्या जोय वैठग्या । अेकर छाती भर आई । पण सुणै तो कुण । विधना रा लेख कुण बदळ सकै । म्है दोनू भाई एक खाडी खोदियो । रात रा उण माय सावता । दिन माय गाव रा टागड़िया चराता । रावड़ी पीवता अर जीवता ।

दुख रा पडू दिन होया करै है । भाई बादळ भादवे रै बादल वणग्यो वीजळ सी वीदणी लावण री तैयारी होवण लागी । अेकर फैर म्हारी छाती धड़कण लागी । पर सुजान करतो ही काई ? खुशी आधी होवे ।

भाई रो ब्याव करियौ । भावज पूनम रौ चाद । सावण री तीजणी । बादळ री बीजळी । दोनू री जोड़ी गवर ईसर नै लारे राखती । हसी खुशी री रुत चाल री ही। थौड़ा साल मे भतीज अर थाड़ा आतरा सू भतीजी जामी । म्है तीन सू अबै पाच होयग्या । हा तुळमी नैनकिये मूडै सू काको कवती जद म्हानै घणौ आणद आवती । भाई रैयाणा करतौ । भावज घर री लिछमी । पण नारी री नाड़ नी जाणे कद बदळ जावै ।

बरखा रा दिन हा । खैत म्है ही ज खडती हो । भावज भातौ लावती । पण आजै भातौ कोनी लायी । साझै भावज ने भातो नी लावण रो ओळमो दियौ। भावज बाली 'म्हे काई थारी वीदणी हू जो म्हारे पर हुक्म चलावी।। जावौ थारी जोड़ायत आवे जद हुक्म हलाइजो ।'' म्हारौ शरीर दिन भर रो थाकौ मादो भूखो प्यासौ, ऊपर सू भावज रो औ वैवार । मन माय मीठो अणैसौ आयो।

भाई रात रा मौड़ो आयो । भावज रौ मन मोळौ देख पूछण लागौ 'बिना ही बान हो कई ग्यो भागवान ?''

भावज आपरै बचाव सारू, रोग री जड़ काटण सारू केवण लागी ''ओ थारी भाई है या दुसमण' ?

भाई बोल्यो–वात कई है साची साची कैयो नी ?

''साची कैयू तो अनरथ हौसी । ओ थागै भाई सुजान चौखो कोनी । इण रा आचार विचार खराब हो गया है । जै था घर री शान्ति चावो तौ सुजान नै या मनै अेक जणैने राखणौ पड़सी'' ।

भाई भावज री वाता पर घाल म्हनै चार कामड़ी मारनै न्यारी कर दीनी । म्है रामजी नै केवतो–जलमता ही दुख लिखियोड़ा जीवता सुख किंया होसी । म्है किण रा काळा तिल चोरिया जो पग पग ठोकरा रौ भागी हौय रयौ हू ।

जमानो चौखो हौ । म्हैने रात री नींद कौनी आवती । भाई पच हो । पचायती करतौ । म्है साचतो– इण बरस इण रै बाजरी कम हौसी । म्हू रात रा धान री पोटळौ भाई रै खळै माय न्हाख आवतौ । वादळ सोचतो– सुजान छोटो है, उण री ब्याव करणी है । जो दाणा घणा होवे तो सोरौ काम रैसी । वादळ दो पोटळा खळै

माय आप रै न्हाख जावती । भाई भाई ने मन माय चावतो हो । मूंडे भला ही नी बोलती पण मायड़-जाया सुपनै ही न्यारा नी होय सकै ।

सियालै रा दिन हा । मैं भाई री भावना री कूत लैवण री विचार कियो । भाई भाई री है या भावज री । झोपड़े माय धूड़ री मोटी ढिगली बणायी । दरवाजौ जोर सू बद कर दीनौ । उण ढिगली माथै म्है जोर सू थपेड़ा मारती अर जोर सू कूक मचाई – मारे मारे । लगातार कूक होवती देख बादळ आय धमकियौ । किवाड़ बद हो । खोलण री कोशिश कीनी । पण नी खुलियो । इण पर भाई किवाड़ सू दूर जाय जोर सू माथौ दे मारियौ । दरवाजो टूटग्यौ, बादळ माय आयौ तो माथै सू खून टपक रियौ हो । म्हनै सरम आयगी । पण भाई म्हनै राजी खुशी देख गळै सू लगाय लीनो । कैवण लागो– कुण मारे म्हारे जामण जाये नै ? उण री काळजो खायनै खून नी पी जाऊ ?

म्हा दौनू री आख्या गगा जमना बरसण लागी । म्है पाछा सागै रेवण लागा । भावज नै अबै अकल आयगी ही । जामण– जाया जीवता न्यारा नी हौय सकै, कितरा ही जुग क्यू नी बीत जावै ।

भावज री नुवी मिनखपणी वणग्यौ हो । सूनी घर-बाड़ी पाछी फूला माय फूटरी लागण लागी । म्हारा दुख रा दिन दूर दूर जाता रिया ।



उजास री उडीक

माधव नागदा

आज दीवाळी है। च्यारूमेर झिलमिल झिलमिल – दीवा ई दीवा तेल रा, मैणवत्ती रा बिजळी रा। नैना नैना टाबरिया फुलझड़िया छोड़ै। वाँरै मूडा सू मोतीड़ा झरै। पण मधु रे हिवड़े मे तो इण घानणै रै विचाळे आज ई काळी घोर अमावस री रात है। 'कोई मनख रै जीवण मे अमावस री अधारी पांच बरस जितरी लबी होय सकै ?' मधु रै मन मे घड़ी घड़ी आ बात उठै अर अधारो ओजू गेहरो हो जावै। उजास री उडीक कठैई जीवण भर री तपस्या नी बण जावै। ना रे ना। यू नी होय सकै। जे बीरी प्रेम साचो है तो जरूर जीवण मे पाछी उजास आसी पाछी फूलझड़िया छूटसी। बी री आख्या मे ई एक दिन दीवाळी रा दीवा जगमग करसी।

मधु री गळती ई काई ही ? फगत इतरी कै उण आपरै हियै री बोझो उतार नै धणी सुमीत रै चरणा मे धर दियौ। कदास जीवण भर रै वास्तै कोरी होय सकै। वा चावती तो चालाकी कर सकै ही। बोझै ने मन रै अेक खूणै मे सदीव रै वास्ते गाड सकै ही। पण मधु रे भोळै मन नै आ चालाकी जची कोनी। घरधणी सू भला काई छानी राखणो ? भेद राख्या पछे प्रेम किस्यो ? पछै वो तो एक प्रकार रौ ढोग है, अर मधु नै ढोग कतई पसद कोनी। वा मन री निरमळ अर प्रेम री पाकी ही।

उण पति रै सामी आपरी जिदगाणी री पोथी रा सगळा पाना खोल दीधा। भोळी मधु ने काई ठा हो कै जीवण पोथी रा अनेकू रग रगीला पाना ने छोड'र बी रौ धणी लाली माली एक दागळ पानै नै ही महताऊ मानसी। आ जाणती तो वा दागळ पानो उथेलती ई क्यूं ? तिण उपरात वौ पानो मधु री जिदगाणी म अणचायौ आयौ हौ। मधु वापड़ी वी नै कोनी लिख्यौ। वो तो विधाता री क्रूर कलम सू मतैई मड्ग्यौ।

मधु कॉलेज मे पढ़ती जद री बात ही। उण दिना मधु रै कोई अळगै रिश्तै मे भुआ री बेटी निर्मल वा रै घरा आवण-जावण लाग्यौ हो। सकल सूरत सू तो फूटरौ

पण सुभाव री खोटी । मधु कानी देख'र आख्या टमकायबौ करती अर होठ सिकोड़'र तुरियौ मूडो वणावती । मधु नै निर्मल री ओ हरकता घणी अणखावणी लागती । वा आपणी मा नै कैया करती, "मम्मी, थू इणनै इसरी मूँडै क्यू लगावै ? निकमी छोरो है । विना अकल रौ !" पण मम्मी उल्टी वी नै डाट'र चुप कर देवती।

निर्मल रै घर मे आवणौ-जावणौ जारी रह्यौ । दिन दिन उण री गैलाया वढ़ती गई । मधु नै उणरी वैवार कई वेळा इतरौ भूडो लागतो कै उणनै चप्पला सू कूटण रौ मन होवतो । कदे ई आखे डील मे झुरझुरी दौड़ जावती । कदेई आखी रात ऊघ नी आवती । वा एक कानी निर्मल सू जूझती तौ दूजा कानीं खुद सूं । छेवट कठातांई दोवड़ी लड़ाई लड़ती ! वा ई मिनखा शरीर ही कोई देव प्रतिमा तो ही कोनी ।

अेकर मम्मी पापा नै भीलवाड़े जावणौ हो । उणा निर्मल ने कह्यौ, "निर्मल बेटा ! मधु घरा अैकली है । थू अठैई सूय जाइजै । म्है परसू ताई पाछा आय जासा।'

निर्मल रै होठा माथै कपट-मुळक विखरगी । आंधी काई चावै ? दो आख्या । उण रै तो मनचीती हुई । मधु बोली, "ना पापा म्है अेकली रैय जासू । निर्मल ने अठै सुवावण री कोई जरूरत कोनी ।"

पण उण री वात मानीजी कोनी अर उणारा मम्मी पापा भीलवाड़े रवानै होयग्या । लारै रैयग्या मधु अर निर्मल । निर्मल अर मधु । मधु रो काळजौ धवक धवक करै । अेकर तो इछा हुई कै वा आपरी सहेली मीना रै अठै नाठ जावै।

पण निर्मल पापा आगै ना जाणै काई काई साची झूठी भिड़ासी - आ सोच र वा ढवगी । पछै रात म वोई हुयी जिणरी अदेसी हो । वा नी तौ निर्मल नै जीत सकी अर नी खुद नै । जिण भात नशै री गोळिया खुवाय खुवाय र कोई किणी नै कियाई कमजोर कर नाखै उणी'ज भात निर्मल घाघ शिकारी री दाई पैली तो उणरौ निजू भरोसौ डिगायौ अर पछै वी री कमजोरी री फायदौ उठायौ । रात वीत्या सूरज उगौ तो कमरै मे दिन री उजास कोनी । छळ, फरेव, आत्मग्लानि अर पीड़ा रौ अधारौ सौ हो । निर्मल गायब हो । नुवी नकोर अर कोरीकट जिदगाणी री किताब रौ अेक पानौ दागल वणग्यौ हौ ।

पछै जिदगी मे आयौ सुमीत । जाणै हजारी गल रौ फूल । मधु रै च्यारूमेर जाणै सौरम रा मेळा मडग्या । जाणै कणाई खुशवू री अलेखू शीशिया च्यारूमेर ऊधाय दीवी । वा रातदिन भगवान सू आ ई अरदास करती कै पति मिळै तो सात जनम इस्यौ ई । सुमीत वी नै घणै हेत प्रेम सू राखतौ । वा ई आपरा पति रै चरणा मे न्यौछावर ही । सुमीत वी सू की छानै नी राख्यौ । नैनी सू नैनी वात लेय र आपरी जिंदगाणी रा गहरा सू गहरा रहस सगळा वी नै बताय दिया अर एक दिन वी

आपरी कुवारी जिंदगाणी रौ अेक खास भेद जिकौ घणकरा मरद आपरी लुगाई सू ई छिपाय नै राखे, मधु रै सामी खोलनै मेल दीधौ।

'मधु डार्लिंग, आज मै म्हारी लाईफ रौ अेक जोरदार किस्सौ थनै सुणावूला। पैली थू दिल थाम लीजै।'' सुमीत मधु रै रेशमी बाळा मे आगळिया री कघी करतौ बोल्यौ। मधु बी रै धड़कतै हिवड़ै माथै आपरी कवळी हाथ राख दियौ।

'अरे! म्हारौ दिल नी गैली, थारौ दिल थाम।''

'वाहजी! घटना तो आपरै जीवण री अर दिल म्हारौ क्यू थामू?''

मधु नै लखायौ के सुमीत रौ दिल जोर-जोर सू धड़क रह्यौ है। ''आछौ बाबा सुण! म्है एम एससी मे पढ़तौ उण वखत री बात है। प्रभा म्हारै कनै परीक्षा री त्यारी रै सिलसिलै मे आयबौ करती।'

कुण प्रभा? इण दुनिया मे तो सैंकड़ू प्रभा फ्रभा है।' मधु बोली।

बताय दसू कोई दिन। उणरो ब्याव जोधपुर मे ई हुयौ है। जिण मकान मे किरायेदार बण'र रैवतौ, उणरी पैली मजिल माथै वा रैवती अर तीजी मजिल माथै मै। म्है दोनू सागैई पढ़ता। सार टीपता। बहस करता। आधी-आधी रात ताईं वा म्हारै कनै पढ़बौ करती। अेक दूजै सू आगै बढ़ण री होड ही। युनिवर्सिटी मे टॉप करण री तमन्ना ही। कठैई की दूजी बात कोनी ही। नी तो बी रै मन मे, नी म्हारै मन मे।'

मधु सतोष री सास लेवती बोली 'तो पछै इण मे सुणावणजोग काई है?''

'सुण तो सरी। अेक दिन री बात। म्है म्हारै भायला सागै अेक फालतू सिनेमा देखनै आयौ। आखरी दरसाव। प्रभा म्हारै कमरै मे ई बैठी पढ़ै ही ..।''

मधु री नूर पाछौ उतर्‌यौ। बी री सवालिया निजर सुमीत रै चेहरै माथै टिकगी।

उण रात मधु काई कैवू थनै, म्हारै माथै जाणै किसौ भूत सवार हुयौ कै म्हनै की ठा कानी पड़ी। भूत उतरिया आत्मग्लानि रै समदर मे डूबण-उतरण लाग्यौ। प्रभा सू म्है माफी मागता कह्यौ, 'आई एम वेरी सॉरी वेरी सॉरी प्रभा! प्लीज फोरगिव मी।''

प्रभा थोड़ी ताळ तो सूनी सूनी आख्या सू म्हनै दखती रही। पछै काई जवाब दीधौ जाणै मधु? प्रभा बोली, डाट वरी, इट इज वट नेचुरल। डू योर प्रिपेरेशन्।

पछै वा कदैई म्हारै कमरै मे नी आई। बीं मकान ईंज छोड़ दियौ। पण आज ई वा घटना म्हारै हिवड़ै मे काटै ज्यू चुभ री है।

मधु रै मन नै भूकप री झटकौ सो लाग्यौ। बी रौ मूडौ उतरग्यौ। काई सुमीत जिसौ देवता मिनख ई इसी हरकत कर सकै? मधु री आख्या रै सामी निर्मल रौ उणियारौ आयग्यौ। हसतौ ठहाका लगावतौ थकौ। निर्मल अर सुमीत। सुमीत अर

निर्मल । दोनू चेहरा अेक दूजै मे मिळता निगै आया । कुण निर्मल है अर कुण सुमीत ? ओळखणी अवखी होयग्यी । धरती धूजती अर् कमरौ घूमतौ सो लखायौ । जद होश आयौ तो देख्यौ सुमीत वी नै लाड करै हो, "मधु, थू नाराज मत होईजै, वा तो अबै गयै जमानै री बात होयगी है । एक सुपनौ । गधा पचीसी री आ उमर ईसी । थोड़ी सो ताप लागै कै मन पिघळ जावै । मन अेक'र पिघळ्यो कै गयौ हाथ सू । पण भरौसौ राखजै अबै म्हारै मनरूपी सिंघासण माथै थारै सिवाय कोई विराजमान नी है ।"

मधु रै मन मे महाभारत मचग्यौ । वा सोचण लागी वा ई आपरै मन री बोझौ पति रै चरणा मे अर्पित करनै हळकी करै कै नी करै ? उणरी काई नतीजौ निकळसी ? यू मिनख रै हिवड़ै मे कृष्ण अर कस दोनू मौजूद है । चेतना री दीवौ सजोवै तो कृष्ण अर बुझायदी तो कस त्यार है । पछै अधारै खाड़ै मे जाय पड़ी धड़ाम करता । मधु मन मे तय कर लियौ कै मौको आया वा आपरै मन री भेद सुमीत आगळ उजागर कर देसी । नतीजौ भलाई की निकळी । उणरी मन तौ हळकौ फूल होय जासी ।

अेक दिन सुमीत पूछ ई लियौ, "मधु म्है तो म्हारै जीवण रा सगळा भेद थारै सामी चौड़ै कर दिया । पण थू तो कदेई मूडो ई नी खोलै । थारै जीवण मे ई कदेई कोई न कोई तो आयौ होसी ?"

वा घड़ी आय पूगी । मधु नै आपरा रोम ऊभा होवता लखाया । वा आपरै मूडै सू आ बात किया कैवै । पण नी कैवे तो उणरै जिसी कपटण औरू कुण होसी ? जद वीरै धणी उणमाथै पतियारौ करनै आपरै मन री भेद बतायौ है तो वी री ई फरज है के वा ई कोई बात छिपाय नै नी राखे । मन रा मैल नै पतियारै रै गगाजळ मे धोवण री इसौ मौकौ फेरू कद आसी ? सुमीत बोल्यौ, 'मधु मून किया धार ली ? म्हारै सू काई छानै राखै बावळी ? आपा तो दो तन अर अेक मन हा।'

"आप नाराज तो नी होवौला ?" मधु लाजा मरती सुमीत री छाती म मूडौ छिपावती बोली । वी री आवाज कापै ही ।

"नारे ना ! मधु जिसी घरवाळी सू नाराज होवै वो मिनख नी जिनावर है ।"

मधु चकमे मे आयगी । वी बापड़ी ने काई ठा ही के आदमी रै दो चेहरा हुया करै ? वो चेहरा बदळण में घणौ हुसियार होवै ।

'यू समझौ के मधु रै रूप मे म्है ई प्रभा हू ।' मधु होळे होळै शकीजती थकी बोली ।

"अर सुमीत कुण ? प्रभा नै वी रै मारग सू चुकावणियौ ?"

"निर्मल !" मधु अटकती-अटकती अर कापती आवाज मे निर्मल आळी सगळी दुरघटना बयान कर दी । की नी छिपायौ ।

सुणता सुणता ई सुमीत रै चेहरै री रग वदळग्यौ । उणरी आख्या रातीचुट्ट होयगी । मधु नै अेक झटकै सागै अळगी करती बोल्यी, "दुष्ट, इसी है थू ? म्है तो थनै आज ताई सती सावित्री मानती आयी । कळकणी निकळजा म्हारै घर सू ।"

मधु लाख समझावण री चेष्टा करी कै इण मे म्हारी दोस कोनी । सगळी निर्मल री नीचता ही । पण की गरज नी सर्जी । छेवट वी ने आपरा गाभा घी'धरा लेयनै घर छाड़णी पड़्यौ । उणनै रैय रैय ने अचूभौ आवण लाग्यौ । मिनख री सुभाव कजर री कुत्ती दाई, न जाणै किसै खेत म जायनै व्यावै । पैली तो कितरै हेत प्रेम सू उणनै भरोसे मे लीवी । 'मधु जिसी घरवाळी मायै नाराज होवै वो मिनख नी पण जिनावर है ।' तो फेरू काई हुयी ? किरकाटिया रै ज्यू रग क्यू वदळ दियौ ?

आज फड़ीकट पाच वरस होयग्या है उण वात नै । हर दीवाळी री रात मधु नै काळै साप री दाई डसै । घर मे अेक दीवौ ई नी । वस, मधु है, विस्तर है अर आख्या सू झर झरता मोतीड़ा है ।

वरस भर ता मधु एक प्राइवेट स्कूल म नौकरी करी । पण आ नौकरी वी नै रास कानी आई । मधु रौ स्वाभिमानी सुभाव अर सोचण विचारण रौ मौलिक तरीकौ सस्था प्रधान नै दाय नी आयौ । मधु मन म तेवड़ली कै वा खुद अेक शिक्षण सस्था सरू करसी ।

टावरा सू मन ई लागसी अर वखत ई सोरी निकळसी । सै सू मोटी वात टावरिया नै सस्कारित करण री है । जे वा की टावरा नै ई आछा सस्कार देय सकी तो मैणत सफल होय जासी । पण साधन ? जठै सकळप उठै साधन । अेक दो सहेल्या सू वात हुई अर योजना वणी कै आपरी सस्था म टावरा नै शिक्षा मायड़ भाषा राजस्थानी रै माध्यम सू दिरीजसी । हिंदी-अग्रेजी सहायक भाषावा रैसी । इणसू राजस्थानी नै वळ मिळसी अर शिक्षण ई असरकारी वणसी । जनता इणनै जरूर पसद करसी ।

मधु तन-मन सू काम मे जुटगी । रात दिन ओई विचार, ओ ई सोच अर ओ ई काम । पैलड़े वरस तो कोई खास सफलता नी मिळी । पण होळै होळै खुशबू फैलण लागी । सस्था रौ नाम ठावौ होवण लाग्यो । नाम राख्यौ — सुमीत वाळ विद्या मदिर ।

दीवाळी री छुट्टिया पछै स्कूल खुल्या अर मधु आपरै काम मे लागगी । उणरै च्यारूमेर रग रग,रा सुहावणा फूल खिल्योड़ा हा । मीठी-मीठी तोतळी वाणी भवरा री गुझार ज्यू कानां मे गूजण लागी । मधु रौ अेकलपणो मिटग्यौ ।

वा कक्षावा म फेरी लेय र आपरै कमरै मे आयनै वैठी ज ही कै किणी दरवाजै री चिक उठाई अर केयो, 'मे आई कम इन मेडम ? '

यस, कम इन ।

मधु अभ्यागत रै मूडै कानी देख्यौ तो देखती ई रैयगी। अरे, ओ तो सुमीत है। इण पाच बरसा मे कितरो थाकग्यौ है। सागै अेक टावर है, च्यारेक बरस रौ। तो काई सुमीत दूजौ ब्याव कर लियौ ? वाह रे आदमी ! अर वाह थारी इनसानियत! मधु री माथौ चकरीजण लाग्यौ। भूकप रौ दूजौ झटकौ – सात रेक्टर स्केल रौ। वा किया समाळै इण काया री नगरी नै ? पण समाळणी पड़सी। मधु यू इण सस्था री प्रधान है। थावस राख। साम्ही ऊभौ आदमी थारौ की नी लागै। यो इण टावर रौ अभिभावक है बस।

"विराजौ।" मधु आपौ समाळता केयो।

"धन्यवाद।' सुमीत बैठ्यौ अर मधु नै अचूभै सू देखण लाग्यौ। आ भोळी डावड़ी इतरै ऊचै पगोथियै किया चढगी ? 'सुमीत बाळ विद्या मदिर' जिसी प्रतिष्ठित सस्था री प्राचार्य ?

"फरमावौ, किया तकलीफ करी ?' मधु रौ हिवड़ौ हबोळा खावै हो। पण आपरी तकलीफ नै जबरदस्ती दबाय'र वौ सुमीत री तकलीफ पूछी। सुमीत अर्थात् एक अभिभावक।

"इण टावर नै भरती करावणी है।"

'अबै तो सभव कोनी। सैशन रै विचाळै भरती करण रौ नेम कोनी।" मधु रुखाई सू बोली।

"म्हनै इण बात री जाण है, तो ई अठै आयौ हूँ। इणरा पापा बीकानर सू ट्रासफर माथै अबार ई अठै आया है। स्पेशल केस जाण'र इणनै भरती करणौ पड़सी।" सुमीत जोर देय नै कयो।

मधु रै डील मे फूलझड़िया-सी छूटण लागी। तो औ टावर सुमीत रौ कोनी। सुमीत दूजौ ब्याव कोनी कियौ ? तो पछै ओ टावर किणरो है ?

"इण रा पापा ? वै नी आय सकै काई ?" मधु होळैसीक पूछ्यौ।

'वै म्हारा बॉस है। आवताई वानै अेक काम सू बारै जावणौ पड्यौ। दसेक दिन रौ टूर है। टावर नै स्कूल मे भरती करण री जिम्मेवारी म्हारै माथै नाख नै गया है। अेक तो सस्था री पैठ अर दूजौ म्हारै नाम सू इण रो मेळ। बस चाल्यौ आयो अठै। पण अबै देखू के सही मजिल पूग्यौ हू।" इतरौ कैय र सुमीत जोर सू हस्यौ। आ हसी मधु री ओळखी सी, आछी तरिया जाणी पैचाणी ही। मधु रै काना मे मीठी-मीठी घटिया सी वाजण लागी जाणै प्रभात रै पीर मदिर मे आरती होय री है।



बदजात

सत्यनारायण सोनी

"भोमलै री मा, सुणै है काई, कबरकी गाय आज दिनूगै सू भूखी है। नीरा घारी करी क नी।" बदळू आपरी जोड़ायत तीजा नैं हेलो मारियौ। बदळू री आवाज सुण'र बा नेड़ै आ र बोली– "कबरकी रौ तो पतौ ई नी आज काई होयग्यो, चरणै रौ नाव इज नी लेवै। उदास-उदास सी खड़ी है अर जुगाळी ई नी करै।" सुण'र बदळू रै चेरै रो पाणी उतरग्यो। लारलै दिना ई रामेसर महाजन सू दो हजार रुपिया रौ करजौ लेर आ कबरकी खरीद र लायौ हो। घर माय जद कबरकी आई तो टाबरा री खुशी रौ ठिकाणो इज नी रैयौ। दोनू बखत मिलार दस किलो दूध देवण आळी कबरकी रो डील हाथी ज्यू लखावतौ।

बदळू घणी ई दवा दारू करी। उणरी जोड़ायत तीजा ई इणसू पीछै नी ही। मावड़ियाजी री मनोती मनाई। पित्तरजी रै थान माय घी रो दीवो घसायौ। भोमियाजी रौ भोग बोल्यौ। पण ओ काई! दोपहर ढळता-ढळता कबरकी पड़ाछ खार जमी पर पड़गी। देख र तीजा रौ तो जाणै जीव ई नीसरग्यौ। बदळू भाज र आयौ पण अब भाज र आवणै सू काई असर होवै। कबरकी री देह माटी ज्यू जमी पर पसरी पड़ी ही। सास आवणौ बन्द हौ। तीजा माथौ कूट-कूट रोवण लागी। हाकौ सुण'र बास गळी री लुगाया भेळी होयगी। तीजा जोर-जोर सू बाको फाड़ै ही, 'पतौ नी किण निरभागी री निजर लागगी। काल तक तो सागोपाग ही। आज झाझरकै ई पाँच सेर दूध काढ्यो हो, हे म्हारी कबरकी! थू म्हारै सू किण जळम रो बदळौ चूकियौ!'

'बावळी होयगी कै बीनणी। रोवणै-कूकणै सू कबरकी माय ज्यान बापरण सू तो रही! फालतू रै रोळै सू काई असर होवै है। भगवान माड़ा दिन दिखाया है तो आनै छाती ठोक र झेलणा पड़सी। धीरज छोड्या पार नी पड़ै। मूळियै री दादी समझावण दी। पतौरी भुआ ई लाम्बा सिसकारी मार र बोली भाभी थू मैरै कानी देख। जीवण माय अबखाया रै सिवाय और की नी मिळ्यां पण जीवण री आस अवार ई बाकी है। जूण तो पूरी करणी ई पड़ै। कोई हस खेल र बिताय देवे तो

कोई चिंता माय डूब'र, अबखाया रौ मुकावलौ करण री हिम्मत राखणी चाइजै । पतौरी भुआ री वात तीजा रै काळजै ढूकगी सो रोवणौ-कूकणौ बन्द कर दियौ ।

राम-राम करता पंडित प्रेमसुखजी आयग्या । "वदलू भाई, किया हाकौ मचाय राख्यौ है ?" पिंडतजी पूछ्यौ ।

"काई वताऊँ दादा ! कवरकी गाय दिनूगै चोखी भली ही, अबार देखौ विचारी खूटै बन्धी-बन्धी अचाणचकै ज्यान दे दी ।"

"काई केयौ ! खूटै बन्धी बन्धी ज्यान दे दी ?'

"हाँ पिण्डतजी ।"

"राम राम ! ओ तो घौत माड़ौ होयग्यौ । काई थनै पतौ नी गाय खूटै बन्धी मरज्या तो कितरौ पाप लागै ? बेटी रा बाप, कम सू कम मरती-मरती रै गळै सू जेवड़ी तो काढ़ देवतौ । देख अबार ई गळै माय जेवड़ी बन्धी पड़ी है ! नरक भोगणौ पड़सी नरक !" पिंडतजी री बाता वदलू रै काळजै माय गहरौ घाव करै ही। वदलू नै लखायौ जाणै पिण्डतजी उणरै वळोड़ै डील पर लूण छिड़कणै रो काम कर रैया है ।

नरक रो नाव सुण र तीजा थर थर कापण लागगी । डरती डरती वण पूछ्यौ "पिंडतजी, इण पाप सू वचण री कोई उपाव तो हुसी ? म्हे तो भोळा भाळा मिनख हा, आपरै ई वतायोड़ै मारग पर चालस्या ।"

पिंडतजी री आँख्या लाल होयगी । तीजा नै डर लाग्यौ, पिण्डतजी कोई शराप न दे नाखै । पिंडतजी राम - राम रौ उच्चार करता बोल्या 'शास्त्र माय लिख्यौ है कै गऊ जे खूटै वन्धी मरज्या तो वीरौ पाप गऊ हत्या सू ई घणो होवै । इण वास्तै आपनै वारह दिना तक सात बामणा नै भोजन कराणौ पड़सी । वदलू नै गाय री जेवडी ले'र गगा जी जावणा पडसी जद जार ओ पाप ‿तर सकै है ।' आ वात कैवता थका पिंडतजी आपरै घर कानी चाल पड्या । तीजा हाकी बाकी सी पिंडतजी नै जावता देख री ही ।

वदलू रै जीवड़ै जक नी हो । सामनै गाय री निरजीव शरीर पड़्यौ हो । वदलू मन मे आपरै वीत्या दिना रै बावत सोचण लाग्यौ । आपणी समाज माय अधविश्वास री कमी नीं है । भात भात रा अफड वणा र पिंडत ठगी मचावै । वापूजी रामसरण हाया जद ई आ लोगा कित्तौ हाकौ मचायौ । घर माय उदरा इग्यारस करै हा अर आ लोगा नै देसी घी री हलवो जिमावणौ पड्यौ । सेवट तीन वीघा धरती अडाणै छोड़'र वापूजी रौ औसर कर्‌यौ । व्याज पर ब्याज चढ़तौ गयौ । सात बीघा धरती सू गिरस्थी री गाडी ई नी चाली । करजौ उतारणौ तो दूर री वात ही । लारली साल तीन वीघा धरती रामेश्वर महाजन रै नाव कर र करजै सू निज़ात पाई । दूध दही री कमी दीखी जद दो हजार रो अणचावौ करजो करणौ पड़्यौ पण जीवड़ै नै जक मळै ई कोनी । अेक नुवी आफत और आ खड़ी होयी ।

"गाय अठै ई पड़ी रैवैली कै मेहतर नै बुलावौ भेज'र उठवाओगा।" तीजा रो बोल सुण र वदलू ऊभौ होयौ। उमर घणी कोनी ही, पण गरीवी सू दव्यौड़ै वदलू रा गोडा जवाव देवण लागग्या। कवरकी रै गळै री जेवड़ी काढ'र वो मेहतर कानी जावण ई लाग्यौ हौ तदै ई मामणै सू आवता पिण्डतजी साथै पाँच छ मिनखा नै देख र वीरा माथौ ठणक्यौ, पण वठै ई थमग्या। पिंडत आखै गाम मे ढिंढोरो पीट दियौ हा।

'काई होयौ रै वदलू ? मनमै काकै पूछ्यौ।

होवणी काई हो काको सा कवरकी गाय जिकी म्हैं लारली साल दो हजार रिपिया म ल्यायो हा वा आज मरगी।

'मरी जिकी तो कोई वात नी ही, इण अधरमी मरणै सू पैली वींरै गळै री जेवड़ी ई नी काढ़ी। पिडतजी आपरी वात कैयी।

"तो वीरा किरिया करम तो करणा ई पड़सी।" रामधन वोल पड़्या। वदलू वारी वात सुण र सोच्यो– अे मिनख पार तो नी पड़ण देवे। कोई ढग सू जीवणौ चावै वीनै वखत नी टिपावण दरे।

अर जे किरिया-करम नी करे तो ?" वण पूछ्यो।

"किया नी करसी थू किरिया करम ? समाज म रेवणो है तो समाज रै ढग सू चालणो पड़सी। गऊ आपणी माता है, आ अधरम नी हावण देसू।' पिण्डतजी जास म आयग्या।

म्ह आ अधविश्वासा म नी पड़ूला।" वदलू वोल्यौ।

'तो थनै नरक माय जावणौ पड़सी।" पिण्डतजी कैया।

इण किस्या सुरग भोग रैया हा।" वदलू ऊथळौ दियो। वदलू री वात सुण र वूढ़ा-वडरा रीसाणा हायग्या। भात भात रा छीटा कसीजण लाग्या।

'नालायक समाज रो विरोध करै।

ओ अधरमी है पापी है कीड़ा री कूड मे पड़सी।"

"ओ वदजात है।

ई ने समाज माय नी वेठण दूया।

आज सू गाम म इण रा होको पाणी वन्द। कैवता लोग -वाग आप-आपरै घरा कानी वहीर होया। आखे गाम म आ खवर हवा ज्यू फैलगी।

वदलू कैई ताळ गोडा माय दिया वेठ्यौ रेयौ। हिम्मत कर र वो कालू मेहतर कानी टुरियो। कालू देखता ई टको सो दवाव दे दियौ "थू वदजात है, आज सू थारै घर माय म्हारौ काम-काज वन्द। सुण र वदलू मे चैरौ सफाचट्ट होयग्यौ।

सवट वदलू आप ई गाय नै घीस'र हाडा राड़ी माय नाखी।

चौवीसू घण्टो दूध दही माय रम्यै रैवण आळै वदळू रै परिवार माय चाय रो इज टोटो पड़ग्यौ । दूध खात'र विलविलावता टावरा रा मूडा अर खूटै वध्योड़ी कवरकी रौ वाछड़ौ देख'र वदळू री आँख्या गीली होयगी । सोच्यौ – करजै सू आगै ई दव्यौड़ो हो अर अवार कगाली माय आटौ गीलो भळै होयग्यौ । लूण मिरच रै चरकै पाणी सागै लूखी रोटी सरकणै रो नाव इज नी लेवै । वदळू तो दोरौ-सोरौ धाको धिकाय देवै, पण टावरा कानी देख्या मन मे दुख री अेक टीस सी उठै । भगवान इस्यै जीवण सू तो मरणो ई चोखो, पण भळै सोचै– कै मरणो तो कायरता है। अवखाया सू जूझतो रेवणो ई जीवण है ।

दिन गुजरता रैया । वरखा री रुत आई । अवकाळै सागीपाग पाणी वरस्यौ । गाँव रौ तळाव पाणी सू हळाडोल होयग्यौ । तळाव रै किनारै टाबर-टीकरा री टोळी कागज री नाव तिराणै रो आणद लेवै ही । पत्तो नी कैया पिण्डतजी रै छोरै रो पग आतळ्यौ वो तळाव माय डूवण लाग्यो । दख'र छोरा हाको कर्‌यौ । रोळौ सुण'र वदळू तळाव कानी भाग्यौ । कैई और लोग इज आयग्या । वदळू अव्वल दरजै रो तैराक हो । वी आव देख्यौ न ताव सीधौ पाणी माय उतरग्यौ । थोड़ी ताळ मे पिण्डतजी रै छोरै नै काढ लियौ । सगळा रा चेरा कमल रै फूल दाई खिलग्या । पिण्डतजी आगै आर वदळू रै वाथ घाल ली । वदळू वोल्यो 'पिडतजी काई कर रैया हो ? म्है वदजात हूँ, म्हनै छूवणै सू आप अपवित्र हो जावोला ।

'अव मनै और शर्मिन्दा ना कर वदळू । म्हनै माफ कर दै ।'' पिडतजी री आँख्या गीली हायगी ।

वादळा री ओट सू निकळतो सूरज मुळकतो सो दीसै हो ।



नुंवौ जमारौ

बालूदास वैष्णव

शहरा री भीड़ भाड़ सू छेटी अेक गाँव । गाँव जठै आजादी रै उजास री अहसास आछी तरै सु होवणी बाकी है । अज्ञान री अन्धारौ गळिया मे पसरयिड़ो रैवै । झूपड़िया हवेलियाँ, चौक चौपाल मे जूनी बाता जूनी गीता । खम्मा घणी रा हुकारा प देवरा रा ठपकारा । तीज तिवार ढोल बाकी नीगाड़ा री पोल ।

धीरे धीरे वखत वदळण रो अहसास । गाँव रै मझ मन्दिर । मन्दिर मे पुजारी । वा दिन म खती रा काम करतो हो । भगवान रै सामै हाथ जोड़'र माथौ नवातो अर अरदास करतो कै 'ईण दीपक री तीन जोता ने उजाळौ बाटण री खिमता देवतो रीजै म्हारा नाथ !

कबीर पथी पुजारी किसनदास अक भलौ माणस हो । गैलै आवतो गैलै जावतो । उण रै किणी सू भी तियो पाची नी हो । नी तो आदू गे देणी नी लादू री लेणी । आपण काम सू काम करतो । ठाकुर जी री सेवा करतो । खेती खड़णी अर राम राम करता आपणी घर गिरस्ती चलावणी ।

पण

खता मे गोवर री खाद रै लारै-लारै रासायनिक खाद भी काम आवण लागी । नुवा-नुवा बीजा नै काम लेवणी । हळ सू खती करणो, खेती रो जूनो तरीकौ कैवावण लागग्यो । कूड़ा रै फेर मे चारौ ऊगण लाग्यो । अजन सू पिलाई हावण लागी । रामजी री किरपा सूँ करमाँण रै घरे लिछमी पावणी होवण लागी ।

आछी निपजवारी सू आमद होवती देख र मुंडै-मुण्डै मति'र भिन्ना वाळी बाता होवण लागी । रावळो तेल बळै पण भण्डारी पट कूटै । आछी मैणत करणियाँ कमावणिया अर खावणिया दिन लोगा ने पचिया कानी । अेक दो खुरापाती खुसर फुसर कर दी दी ।

कैवत है नी क–गाँव लारे लाद्या रैवे ।

फोड़े नी तो झोझरा ता फरा करे ।

बस–

चक्र चलायौ अर बड़ा बेटा रामकिशन ने भरमायो। भरमाया थका तो भाटा भी भिड़ सकै। काल परसू री परणियो रामकिशन आपणी लाडी नै लेर बोजा बोजा बोजा अेक दो बड़ा बुजुर्ग समझावण री कोसिस करी कै दूजा भाई छोटा है। उतावळ मत कर मानजा, पण सब बाता विरथा होयगी।

अबै ?

किसनदास जी नै गहरी सदमौ लाग्यौ। उण टैम बिचलौ बेटौ दसवी भणती हो। सब समझती पण करै तो कई ? कीनै कैवै ? कुण सुणै ? खैर बीती ताई बिसार दे आगे री सुध लेय। पुजारी री मैणत मजदूरी बढगी। मोट्यार बेटा रौ भड़ौ, भड़ो नी रयौ। घड़ौ फूट र ठीकरी हुयग्यौ। बिचलो बेटौ बालू दसवी पास हुयौ तो किसनदास जी री आख्यौं मे आसूँ उमड़्या। वे सोचवा ला

दु ख रा आँसू, सुख रा आसूँ, भाँत भाँत रो आकार कोनी

दु ख री सुपनो, सुख रौ सुपनो दोन्यू ही साकार कोनी

किसनदास जी सोचता– बड़ो तो हाथ सूँ गयो पण बालू तो पढ लिख'र हाकम बणसी। छोटू नै भी आपणी छाती रै लगा'र राखसी नाम कमावैला, मान बढावैला।

पण–

विधाता रा आँकड़ा तो न्यारा री हुवै। रामजी करै सो खरी। छोटू री आख्यौं दू खी। छण पड़्यौ। जोत जाती रेयी। नीम हकीम खतरै जान वाळी बात होयगी। भाठी भाठी देव पूज्या। देवरा धोक्या। पण आख्यौं री रोशनी नी बावड़ी।

बिचली बेटौ बालू उणा दिना कॉलेज मे भणती हो उण ने ठा पड़ी जितरै तो घणी देर हुयगी। चिड़िया चुगगी खेत वाळी बात रेयगी। पुजारीजी ओ दूजौ सदमो सैण कोनी कर सक्या अर परलोक सिधारग्या।

अबै ?

जा कुछ करणा-काजणो तो बालू ही जाण। बालू रायो पछतायो अज्ञान अन्धकार मे भटकता गावाँ री हालाता पर उणनै घणौ तरस आयो पण केवण सूँ काई हुवै। जिण मे बीतै वो ही जाणै।

बालू आपणी भणाई करतो। 'तमसो मा ज्योतिर्गमय री प्रार्थना ने याद करतौ। आपणा भाई री आख्या री जोत नै वापस लावण रा सपना देखतौ। जठै-जठै भी आख्या रा शिविर लागता आपणै भाई ने लैर रोशनी री तलाश सारू पूग जातो अर लेण मे लाग जातौ।

अेक दिन डॉक्टर रामप्रसाद कैयौ– 'इन आखो मे ज्योति वापस नही आ सकती। आपरेशन नही होगा। केवल एक मात्र उपाय है– नेत्रदान द्वारा दूसरी आँख का प्रत्यारोपण।'

'सर मैं अपनी एक आँख देने को तैयार हूँ पर मैं चाहता हूँ कि जिस प्रकार मै देख सकता हूँ, मेरा भाई भी इस दुनिया को देख सके।'

बालू री इण बात ने सुण'र डॉक्टर कैयौ–

'ऐसा है आप नेत्रदान का सकल्प करते है तो फार्म भर देव। जब भी कोई आँख दान करेगा। आपके भाई को प्राथमिकता दी जायेगी।

'आई केन अण्डरस्टेण्ड यूवर इमोशनल फिलिंग्स।''

आप नेत्रदान विभाग मे जाकर आवश्यक खाना पूर्तियाँ करा लेवे। ठीक सर! मै तैयार हूँ। मै आपका यह अहसान उम्र भर नही भूलूँगा, साहब।

नो-नो ऐसी कोई बात नहीं है।

भगवान रै घरै देर है पण अन्धेर कोनी।'

अेक दिन किणी भलै माणस आपरै नैत्रा रौ दान कर्यौ। छोटू री आँख रौ प्रत्यारापण होयग्यौ। बालू री आख्यॉं मे आँसू आयग्या। उण री खुसी रौ ठिकाणौ नी रैयौ। अन्धारै मे भटकतै छोटू री जीवण अबै रोसणी रा दरसण कर सकै। उणनै नुवौ जमारौ मिलियौ।

अबै, जद भी उण नै टैम मिलै बालू इण जुगत मे रैवे के जरूरतमन्द लोगा नै रोसणी रा दरसण करा सकै। अज्ञान रा अन्धकार मे भटकता ने सही गैलौ बता सकै क्यूँकै वो जाणै है– नेत्रदान ही महादान है।



अधूरा सुपना

नृसिह राजपुरोहित

बाबू शिवलाल री उमर साठ वरस री हुयगी। दो वरस पै'लीज वे सरकारी नौकरी सू रिटायर हुया। टाबरपण वारौ आपरै गाव मे ई बीतो पण थोड़ा मोटा हुया पछै गाव छूटौ तो छूट ई गयौ। पै'ली पढ़ाई वास्तै वारै जावणौ पड़यौ अर पछै नौकरी रै चक्कर मे। आज अठी तो काल उठी गूदड़ा घीसता आखी उमर बीतगी। छोरा छाबरा ई मोटा हुया। वानै पढ़ाया लिखाया काम धधै लगाया अर परणाया पाताया, जित्तै तो दिन आथमण आयग्यौ। की ठा ई कोनी पड़ी। फूकारो मारण नै ई वेळा कोनी मिळी। नावा दौड़ म ई जमारौ बीतग्यौ।

बाबू शिवलाल नै घर मे अर बारै सगळा बाबूजी रै नाम सू बतळावता। सरुपात मे वे सरकारी दफ्तर मे बाबू बण्या हा सो बाबूजी आळी छाप जिदगी भर रै वास्ते वारै सागै चिपगी। भगवान वानै दीसती सरूप दियौ हो। दोवड़ी हाड गेहूँ वरणो रग मजबूत कद काठी डीगी पूजती शरीर अर मोटी मोटी आख्या। देखतौ जिकोई प्रभावित होय जावतौ। विद्यार्थी जीवण सू ई वानै कसरत अर कुश्ती रौ शौक रह्यो। वै नियमित रूप सू अखाड़े जावता। इण कारण शरीर ठेट सू निरोगी रहयौ। याद ई नी आवै के वानै कदैई ताव-तप ई आयौ होसी। वडौ नियमित अर सयमित जीवण हो वारौ। जवानी रै दिना मे आर्य समाज रै सपर्क मे आयग्या। इणसू वारी विचारधारा ई सुधारवादी होयगी। कोई प्रकार रा अध विश्वास के पाखड नै वे स्वीकार कोनी करता। कठैई कोई अन्याव के अत्याचार होवतौ देखता तो वा सू सहन कोनी होवतौ। वै उणरौ यथाशक्ति विरोध करता। इण कारण वा नै कई बार फोड़ा ई भुगतणा पड़ता। पण वे कदैई परवाह कोनी करता। आ वारी प्रकृति ही।

रिटायरमेट पछै ठेट सू वारौ विचार गाव मे जायनै रैवण रौ हो। वे अेक आदर्श सुधारवादी अर धारमिक विचारा रा आदमी हा। इण कारण भारतीय सस्कृति रै प्रति वारै मन मे अथाग श्रद्धा ही। वारी आ पकी धारणा ही के शहर तो अबै आयूणी सभ्यता रै प्रभाव मे आयनै की कार रा कोनी रह्या। अठैरा लोग अर

खासकर भाट्यार छोरा छोरिया उण ओठवाड़ी अर अधकचरी सस्कृति रा अध भगत वणनै सफा विगड़ता जाय रह्या । असली भारतीय सस्कृति हाल गावड़ा मे कायम है। अशिक्षा अर अज्ञान रै कारण उण मे थोड़ी विकार जरूर आयी है, पण सस्कृति रा मूळ सस्कार हाल उठै मौजूद है । लोगा मे मिनखपणी सफा परवारियौ कानी । वे सीधा, सरल अर सज्जन है । वईमानी लुचाई, लफगाई के रुळियारगी हाल उठै इतरी कोनी पूगी । मिनख री आख मे शरम है, सफा मरी कोनी । थोड़ी घणी जिकी कमिया खामिया जमाना रै मुजब आयगी है वे कोशिश किया सुधारी जाय सकै ।

वे खाधी पीधी रा धणी अर भावुक मन रा खरीका आदमी हा । छोरा छावरा सगळा आप आपरै पगा माथै ऊभा है । नौकरी सू निवृत हुया उणी'ज भात वे आपरी घर गिरस्थी कानी सू ई निवृत हा । लारली कोई प्रकार री चिंता वानै ही आय कोनी। नाकरी मे रैवता थकाई उणा आपरी मानस वणायलियो ही के सवा निवृति रै पछै वानै गाँव मे जायनै की रचनात्मक काम करणौ है । पीड़ित मानवता री सवा करणी है अर भारतीय सस्कृति रै उत्थान म योगदान देवणो है । सासारिकता रा तो मोकळा काम पार पड़ग्या । अवै तो लारला दिना मे की शुभ काम करता थका हरि भजन मे दिन विनावणा हा । जिण माटी मे जनम लियो उणरौ फरज उतारणौ हो ।

पचास साठ बरसा पै ल री आपरी टावरपण वानै आज ई आछी तरिया याद हो । वारै उण दो-तीन सौ घर री बस्ती आळे नैनैसीक गाव मे आपसरी मे कितरौ मप हो ? सगळी कौमा रा लोग आपसरी मे भाईया ज्यू कितरा हिळ मिळ नै रैवता ? यू तो खैर मिदर होवै उठै उखरड़ा ई होवै । कोई उगणीस-बीस निकळ जावती तो लोग उणनै धुरकार नै ठायै लावता । गाव म वूढा वडेरा री काण पाळीजती, वारौ आकस मानीजती । वानै याद नी आवै के गाव आळा कदेई आपसरी मे लड़ झगड़ नै कोरट-कचैड़ी चढ़या होवै । यू भेळा पड़या ठाम ई खड़वड़ै सो कदेई कोई इसी मौका आय जावती तो च्यार सेणा-समझणा मिळ नै आपसरी मे ई निवेड़ लेवता । आपसी मेळ मिळाप रौ ओ हाल हो के जाणै ओ कोई गाव नी होयनै ओक कुटुव होवै ।

वानै आपरै टावरपण री ओक घटना याद आवै – गाव मे उण वखत हरिजना रा काई तीन च्यारेक घर हा । सगळा री माली हालत माड़ी ही । वा म सू ओक घर मे नैनम पड़गी । माइत चालता रहया अर लारै नैना-नैना टावर रैयग्या । टावरा मे ई मै सू मोटी छोरी वारेक वरस री ही । गाव आळा मिळनै इण घर री पूरी मदद राखी। च्यार छ वरसा म मोटोड़ी छोरी व्याव जोगी हुई तो गाव आळा मिळ'र उणनै फेरा देवण री विचार कियौ । वावूजी नै याद है कै उण वखत वारा दादीसा मौजूद हा । उणा गाव नै भेळो करनै कह्यौ – म्हारै कुटुव मे तीन पीढी सू कोई कन्या कोनी । जे सगळा राजी होय नै रजा देवौ तो म्हैं इण व्याव री सगळी खरची ओकला उठाय नै कन्यादान करणी चावू ।'

कोई जिण भांत आपरी सगी पोती री ब्याव रचावै दादोसा उणी ज उमंग अर उछाव सूं उण हरिजन कन्या री ब्याव रचायौ, बारातियां री आछी मनवार कीनी अर घोड़ा दान-दायजो ई दिरीज्यौ । ओड़ दरसण वखत गांव री कई भावुक आत्मा आंसी रोयगी । दान पुन नै ई यूं लाग्यौ रा जाणै वारी आतमा गंगा मा न्हाई वैन मायर जाय री हौ ।

गांव म धाड़-लाणा अर गरीब-गुरबा रै वास्तै जठै लागा रै मन म इतरी ममता अर अपणायत ही उठै दुष्ट अर दुर्जना रै वास्तै उणरी ई कड़ाई अर आकस पण ही।

बापूजी नै याद आवै के उण वखत राजपूता रै वास मे अेक डोकरी रैवती । उणरै अेका-अेक मोट्यार बेटौ हो । बरसा पैली वा बापड़ी बालविधवा होयगी ही। पण कठै च्यार हळवा जमीन अर धांणी धापी होवण सूं उणरी धाकी चिकग्या । डोकरी रौ घर धणी रामचरण हुयौ तद बेटौ फगत अेक बरस रौ हौ । उर्ण घणा फोड़ा भुगत नै टाबर नै मोटो कियौ । वा सुभाव री साफ हिंगी, सीधी अर गरीबड़ी ही । अड़ोसै पड़ोसै हरेक भाई सैण रै काम आवती । इण वास्तै दूजा ई उणरी मदद राखता । छोरा मोटा नी हुयौ जितै बरसा लग धोमासौ आया भाई सैण वखतसर उणरा खेत जोत देवता अर पूरी ऊपर सापर राखता ।

बेटौ मोट्यार हुया उर्ण काम-काज सम्भाळियौ तो डोकरी रै जीव नै नेहचौ हुयौ। लाग बाग ई सोचण लाग्या कै अबै उणरै सुख रा दिन आया । अबै वा च्यार पात आराम सूं जिंदगी बितासी । पण कोई री करम किणै उघाड़ नै देख्यौ है । डोकरी रै भाग म शायद दुख ई पाती आयौ हो । उणरै बेटा म घणा लूण लक्खण नी हा । इणरै अलावा ब्याव हुया उणरै लारै जिकी बहू आई, वाई मरा ओटाळ ही। सोदा घर साखली आळी बात होयगी । थोड़ाक दिना मे बेटौ तो अगाई बहू रै घाघरै री जूं बणग्यौ । वा डोकरी रै खिलाफ आपरै धणी रा कान भरण लागी अर वो हौळै हाळै आपरी मा री उपेक्षा करण लाग्या । उणरी सेवा चाकरी तो आगड़ी गई पण राटा रा ई जादा पड़ण लाग्या । डोकरी छेवट भूखा मरती माची झाल लियौ । अेक दिन बहू सूय आगा पाछी करी-"डोकरी री तो डैळी चूकगी है वा मिनखा रै उठै जायनै टुकड़ा खावै अर आपानै भाडती फिरै ।' पूत तो परवारियौड़ा ई हा । उर्ण लुगाई री बाता मे आय र डोकरी नै सागैड़ी जतरायदी ।

गांव म बात छानी रही कोनी । सुणी जिणनै ई घणौ दुख हुयौ । सिंझ्या रा गांव आळा सगळा मिंदर री चौकी भेळा हुया अर डोकरी रा सपूत नै उठै बुलायौ । सगळा उणनै सागीड़ी ऊंची नीची लियौ अर उणरी गाजनी अेक टका री कियौ जाजम माथै उणरी भाईपा ई मौजूद हो । उणा सगळा अेक सुर मे कह्यौ- 'जे इण नादार सूं डोकरी री सेवा चाकरी नी होवै तो म्हे करणनै त्यार हा । आ इण कपूत री मा है तो म्हारी पण मा है । म्हे इणरी सेवा चाकरी री प्रबंध मती ई कर देसा अर

आ जीवै जितरै ई सगळौ खरचौ इण नालायक कनै सू जूता मार नै वसूल करता रैसा।" बावूजी नैं आपरै टावर पण रै वखत री इसी कई घटनावा याद ही। आ वारी मजबूरी रही के नौकरी करती वखत वे वरसा लग गाव सागै इतरौ सपर्क नीं राख सक्या पण गाव कदैई वारै अतस सू अळगौ नी हुयौ। वो सदीव वारै मन मे वस्योड़ो रह्यौ।

गाव मे बावूजी री पुश्तैनी मकान अेक मामूली काचौ टापरौ हो। वरसा लग सार सभाळ नी होवण सू वो सफा खळविखळ होयग्यौ हो। रिटायरमेंट पछै उणा उणरी मरम्मत करायनै की रैवण जोग बणायौ। की खेती री जमीन ही, या उणारा कुटुबी भाई खड़ता अर खावता। सरकारी कागदा म बावूजी री नाम जरूर घालेतौ, पण वरसा सू कब्जौ भाईड़ा री हो। बावूजी गाव मे आय नैं रैवण री विचार कियौ तो सै सू पैली तो वारा भाईड़ा नैं अटपटौ लागौ। व तो आ धार नैं बैठा हा क पावै पनरै आ जमीन वारै कब्जै ई रैवणी है। वानै आ सुपनै मे ई उम्मीद नी ही के बावूजी बुढापै मे पाछा आय'र गाव मे रैवास करसी। जिणा सगळी उमर शहरा मे आराम सू काढ़दी वे अबै इण काळा केरा मे काई लेवण नैं आसी? पछै लारली पीढी तो आवण री सवाल ई नी हो। पण बावूजी जद गाव मे आयनैं मकान री मरम्मत करावणी शुरू करी तो वानै खतरो पैठग्यौ।

दूजौ खतरो पैठौ गाव रा सरपच रै मन मे। वो लारला बीस साल सू पचायत माथ कब्जौ जमाया बैठो हो। गाव मे नेठम दो धड़ा बण्योड़ा हा, जिणानैं वो आपसरी मे लड़ायबौ करतौ अर आपरी पापड़ सेकवौ करतौ। जमानो देख्योड़ो पुराणौ पापी अर घाघ आदमी हो। पाच म सू तीन उठावतौ अर दोय मे पाती न्यारी राखतौ। उणै गाव म बावूजी रा पगल्या होवता देख्या तो उणरै मन मे ई खतरो पैदा हुयौ। आ नुवी गिरै फेर गाव मे कठै सू आयगी? पाधरा शहर मे पड़्या हा, अठै अबै काई कादा काढ़ण नैं पधारया है? छता पण वो उपरी मन सू बावूजी नैं घणै हेत प्रेम सू मिळयौ- अे तो वस्ती रा भाग समझो के आप जिसै अनुभवी अर मोटै आदमी गाव म रैवण री विचार कियौ। आ ई तो गाधीजी री सीख ही। जे पढ़्याकरा बुद्धिजीवी यू करण लाग जावै तो मैं कैवू के गावड़ा री तो काई पण पूरै देस री कल्याण होय जावै।

बावूजी सरपच री मीठा पाखियो सू घणा राजी हुया। वानै आ ठा कोनी ही के सूरजी रै रोवण म ई राग होवै। वे तो भलमना आदमी हा अर धवळी जितरौ दूध समझता। वारै दिमाग में गाव री आज सू पचास साठ बरस पैली री नकसो जम्योड़ो हो। वानै ओ ध्यान कोनी हो के पचास बरसा में तो सूनी नदी मे मावळो पाणी वैयनै जावतौ रह्यौ। देस में आजादी आई अर आजादी आपरै सागै कई नुवीं बाता ई लेयनै आई ही। गावा में सत्ता री राजनीति री [illegible] होयग्यौ। जिणसू आदमी [illegible] दुस्मण अर [illegible] [illegible] री बात [illegible] रैवती। [illegible] अर घर-घर

म फूट फजीती अर धड़ाबदी पैठगी । सार्वजनिक जीवण म भ्रष्टाचार अेक आम बात हुयगी । उणरै प्रति कोई रै मन मे सूग ई नी रही । ऊपर सू लगाय नैं नीचै ताई सै ठौड़ जाणै सुळी लागग्यी । जिणरी जितरी हैसियत अर गुजाइश ही, वो उतरौ ई वाकौ फाड़ण लाग्यी । पुराणा ठाकर ठेठर अर सामत खतम हुया तो वारी ठौड़ नुवा सामत पैदा होयग्या । फरक फगत इतरौ ई पड़यौ के नाम बदळग्या पण काम तो वे उणा सू ई नपावट करण लाग्या । पै'ली गाव मे अेक ठाकर होवण सू उणरी'ज दैण रैवती । पण अबै ता कइ ठाकर पैदा होयग्या जिणसू दैण मोकळी बढ़गी । मूळ बात मिनख रा जीवण मूल्य खतम होवण लाग्या । बदमाशी, लुचाई, लफगाई, बेईमानी अर कळयारगी गावडा मे ई आडेकट चालण लागी । नी मैना-मोटा री कोई काण कायदा रहयौ अर नी आख री लाज शरम । पुराना मिनख तो जाणै जूनी आरया नुवो जुग दखण लाग्या ।

बाबू शिवलाल जाणै इण हालात सू सफा अजाण होवै इसी बात तो नी ही । पण वारी धारणा आ ही के इसी सगळी बुराईया नगरीय जीवण म ई आई है । गावड़ा हाल या सू अछूता है । पण असलियत तो वानैं होळै होळै अठै आयनैं रहया सू ठा पड़ी । दूध मे पाणी अर घी मे भेळ सेळ तो अठै आम बात ही । शहर मे मोल मुताबिक माल तो मिळ जावै । पण अठै तो धूड़ नै धान सै अेक भाव हा, गरज होवै तो मोलावौ ।

बाबूजी रौ काकाई भाई रामलाल जिकौ वारै वट री जमीन खड़तौ अर खावतौ सरपच री मूछ रौ बाल बण्योड़ौ हो । वो ही महा ओटाळ अर घोई आळ आदमी हो । इण लोगा मिळ'र गाव मे आपरै माजनै रा दस-बीस लोगा री गुटबदी बणाय राखी ही । इणा मे सू कईक तो वार्ड पच बण्यौड़ा हा अर बाकी वारा चमचा नैं चेला चाटी । आ चडाळ चौकड़ी गाव मे बरसा सू अेक छत्र राज जमायौड़ी बैठी ही । अे लोग इण बन रा आकल साड [redacted] । वे आपरौ मन धारियौ करता अर निशाक छुटा चरता । कोई वानैं कैवण के चालण आळौ नी हो। कई नस्ली साड बण्यौड़ा ताडूकै हा तो कई रोड़ा खोदका बण्या फूफाड़ा करता फिरै हा । वख बैठतौ उठै वे भीगड़ा भिड़ाय देवता अर कोई माथा ऊपरली सौटा आळौ मिळ जावती तो थच-थच पाछा करता गऊ रा जाया ई बण जावता ।

सरकारी अमला रै नाम माथे इण गाव मे कुल मिळायनै च्यार आदमी हा-पटवारी मास्टर ग्रामसेवक अर वैद्य । अे सगळा इण चडाळ चौकड़ी रा चोटी बढ़िया गुलाम हा । इण मे ई उणारौ हित हौ । पटवारी अर ग्राम सेवक तो सरपच रा खास कारिंदा हा । वारी सहायता सू ई ओ सगळौ तत्र चालतौ । बाकी वैद्य अर मास्टर तो बापड़ा जी हजूरिया अर लारै-लारै पूछड़ी हिलावणिया प्राणी हा । घू वैद्य छकै पजै सावधान हो अर नोट भळा करण मे लाग्योड़ौ हो । दूजी उणनै कोई बात सू मतलब नी हो । अठीरा इण गावड़ा म इलाज रौ दूजौ कोई साधन नी होवण सू

उणरी धधौ जवरी चालतौ । नाम आयुर्वेद री पण काम सगळौ अेलोपैथी री गोळीया अर इन्जेक्शना माथै चालतौ । सरकार री तरफ सू आयुर्वेद री दवाईया की आवती आय कोनी । थोड़ी घणी जिकी बजट बच्योड़ी हो वो ऊपर दफ्तरा मे बैठा तिलकधारी पडा अरोग जावता । अेलोपैथी री उल्टी सीधी दवाईया सू पाच दस मरीज आई साल सुरग सिधार जावता तो हरि री मरजी । भारत री जनसख्या यू निरन्तर वृद्धि माथै ही सो पाच दस मरिया सू काई फरक पड़ती ? मौत आई उणनै तो जावणौ ई हो । दस बरसा पै'ली जद ओ वैद्य इण इलाकै मे आयौ तो लोग कैवे के इणरै पेट रै लारै कारिया लाग्योड़ी ही पण अबै सुणी के वो अेक जीप राखण री मतौ करै हो । रही बात मास्टर री सो वो सरपच रै घरा सुवै-साझ हाजरी देयनै अठी उठी री आगा पाछी किया पछै फगत दो बाता री ध्यान राखतौ - अेक तनखा री अर दूजी छुट्टिया री । बाकी बळती-बळती जाईजी डूमा रै घरा । डेढा रा रामदेवजी आधै खोपरै ई राजी हा ।

रामलाल अमल बेचण रौ धधौ ई करतौ । यू गाव मे दो च्यार नैना-मोटा अमल रा फुटकर वैपारी औरू हा, पण रामलाल री तो थोक वैपार चालतौ । हीराराम विश्नोई हर महीनै दूध लेयनै इणरै कनै आय जावतौ । औ उणसू अमल बणाय नै आगै फुटकर वैपारिया अर अमलदारा नै बेच देवतौ । लारला दस पनै बरसा उणै टना बद अमल बेच दियौ होसी । गाव रा टेराया अर मुफतिया अमलदार रामलाल रै अमल रा बखाण करता–' रामलालजी रै अमल री क्यू बात करौ । मतीज रै लियोड़ौ काकै नै उगै ।'

अमल रा थोक बध वैपार रै अलावा ओ गाव दारू उत्पादन रै वास्तै ई मशहूर हो । यू समझौ के दारू उत्पादन तो अठारौ प्रमुख कुटीर उद्योग हो । घर-घर ऊखरड़ा अर खेता री वाड़ा मे दारू रा मटका भरिया लाधता । आप भलाई मणा बद खरीदौ अर ऊभा होयनै अरोगौ । सरपच री भतीज अर दो तीनेक दूजा घर तो इणरा प्रमुख उत्पादक हा । बाकी कुटीर उद्योग रै रूप मे नैना मोटा सयत्र तो कई घरा मे लाग्योड़ा हा ।

इण दोनू उद्योगा रै पाण अठीरा गावटा म अमलदारा अर दारूड़िया री सख्या मोकळी हुयगी ही अर दिन दिन न्यात वधिया जावै ही । गई साल सू तो गाव मे दारू री अेक ठेकौई खुलग्यौ हो । जिणसू देशी अर विदेशी सगळी तरै री माल जरूरत मुजब आरामा सू मिल जावतौ ।

अछेवा री बस्ती मे अमल करता दारू री वैपार बत्तौ हो अे
सगळा अछेव आप आपरै परपरागत धधा मे लाग्योड़ा हा ।
दूजोड़ा की औरू धधौ करता । आगै चाल'र की मोट्यार
अर कारीगर बणनै पक्का मकान बणावण ला म
इण कारण लारली पूरी पीढ़ी तो इण

बाबूजी गाव मे पूगा उण वखत भाठै री काम करणिया कारीगरा री दैनगी साठ सू लगाय नै अस्सी रुपिया रोज ही अर साधारण मजूर री वीस-तीस रुपिया रोज। इणसू कारीगर अर गजधर तो घर-घर त्यार होयग्या पण मजूर कम रैयग्या। हालत आ होयगी के काम पड़या गजधर तो आसानी सू मिळ जावता अर मजूर दोरा मिळता। अेक गजधर जठै ई काम माथै जावतौ, घर रा सगळा लुगाई टाबरा नैं मजूरी माथै लगाय देवतौ। इण भात आवक वढ़ण लागी तो खरचै रा मारग ई खुलण लाग्या। कैवत है के बकरी रै मूंडै मे काचरी माय जावै पण मतीरौ कानी खटै। इण कारण इण वस्ती मे सुरापान अेक साधारण बात होयगी। अधारौ पड़ता ई भटा भट्ट करती बोतला खुलण लागती अर ठायै-ठायै मेहफला जम जावती। इणरै सागै अेक बात औरू देखण मे आई के इण लोगा मे टी बी री बिमारी खूब फैलण लागगी। वैद्यजी री कैवणी हो के ओ रोग भाठै री रजी सू पैदा होवै। पण मूळ कारण भलाई की हुवौ, सुरापान इण रोग नै बढावण मे सहायक जरूर हो।

बाबूजी ओ सगळी रासौ आपरी निजरा देख्यौ तो देखनै हैरान होयग्या। उणारौ तो अगाई मोहभग होयग्यौ। गावड़ा री जिदगी रै प्रति वारै मन मे जिकी धारणा ही, अठै तो हालत उण सू सफा उल्टी निकळी। आज सू आधी सदी पै'ल रा गाव अवै ओळखणाई नी आवै हा। गाव रा कई वूढा-वडेरा अर मौजीज मिनख वानै याद आवण लाग्या - कितरा सरल मना अर सही मारग चालणिया लोग हा। भलाई आज झूपड़ा री ठौड़ पक्की हवेलिया वणगी है, थाका लागा बळदा री ठौड़ घर-घर ट्रेक्टर आयग्या है। पण वो मिनख पणौ अर अपणायत तो जाणै सफा लोप ई होयग्यौ अवै तो खोओ खावणा अर नाठ जावणा। सैणा, सरल अर ईमानदार मिनख तो अवै 'वापड़ा' गिणीजै नै लुच्चा, लफगा अर वेईमान हुस्यार नै वड़ा आदमी मानी जै। छतापण उणा हिम्मत नी हारी। वारै मायलै आर्यसमाजी सस्कारा जोर कियौ अर मन मे उल्टी आ भावना पैदा हुई के गावा मे आय'र काम करण री अवै उल्टी ज्यादा जरूरत है। अठै भलाई लाख बुराईया आयगी पण वे हाल थोड़ा लोगा मैं ई आई है। गावा री आम जनता हाल अज्ञानी, निरक्षर, धरम भीरू नै डरपोक है। आगळिया माथै गिणै जितरा अे चालाक लोग वारी कमजोरी री फायदौ उठायनै आपरी पापड़ सेकण मे लाग्योड़ा है। प्रजातत्र मे कितरी ई कमिया -खमिया होवता थकाई इणमे आ खूबी तो जरूर है के सत्ता री असली चावी वहुमत रै हाथ मे है। आज गावा रौ वहुमत अनपढ, शोषित अर डरपोक जरूर है पण इण वर्ग नै जे सगठित कियौ जावै अर हिम्मत वधाई जावै तो दूजौं भलाई ओ की मत करौ पण इण भ्रष्ट सत्ता रै नाथ तो घाल ई सकै। उथैल नै ऊधी तो नाख ई सकै। आज गाव रौ आम आदमी दब्योड़ौ इण वास्तै है के उणनै सही नेतृत्व कोनी मिळै। विना सवळ सहारै रै वो चावता थकाई इण भ्रष्ट व्यवस्था री मुकावलौ कोनी कर सकै। इण वास्तै पै'ली इणा मे जागृति लायनैं विश्वास पैदा करण री जरूरत है।

बावूजी नैं लाग्यौ के इण काम मे धारमिक भावना रै माध्यम सू आछौ काम करीज सकै । लोगा नैं सरूपात मे धरम रै मारफत सगठित करनैं वा मे जागृति पैदा करी जाय सकै । इण सू वा मे चारित्रिक सुधार आसी, जिणरी अबार सख्त जरूरत है । चारित्रिक सुधार पैदा हुया राजनैतिक चेतना अर दूजी बाता मतैई सरल होय जासी । खास बात आ के औरू कोई माध्यम सू जागृति लावण ताई सीधी कोशिश किया विरोध अर टकराव री खतरौ बेसी हो जासी, पण धरम अेक इसौ माध्यम हो जिणरौ विरोध होवण री गुजाइश कम ही ।

गाव रै बारली कानी शिवजी रौ मिदर आयोड़ौ हो अर मिदर रै कनैं ई अेक पुराणौ मठ हो । मठ रा साधु शिवमिंदर मे सेवा-पूजा करता । कोई जमानै मे इण मठ री पूरै इलाकै मे घणी ख्याति रही । ओ मठ चोखळै धावौ हो । रियासती जमानैं मे मठ नैं मोकळी खेती जोग जमीन मिळयोड़ी । इणसू मठ रौ खरची ठाठ-बाट सू चालतौ । मठ रा गादी पति महतजी बाजता अर समाज मे वारी आछी मानता ही । इण गादी माथै कई त्यागी-तपसी अर जोगा सत रहया, जिणरै कारण इण गादी री घणी नामवरी रही । लोग कैवे के छपनिया दुकाळ मे इण मठ मे भूखी जनता ताई नित रोज च्यार-पाच मण धान रौ खीचड़ौ रधीजतौ अर बाटीजतौ । जमानैं मुजब अबै तो मठ री ठरकौ वो नी रह्यौ छता पण लोगा रै मन मे श्रद्धा ही । गुरू पूनम माथै साल मे अेक बार अठै जबरौ मेळौ भरीजतौ जिणमे कनलै गावा रा मोकळा लोग अठै भेळा होवता ।

बावूजी मठ नै धारमिक भावना सू जन जागृति रौ आछौ केन्द्र समझनैं चौमासै रै दिना मे अठै रामायण पाठ शुरू करायौ । सरुपात मे श्रोता कम ई आवता पण होळै होळै लोगा नैं रस आवण लागौ अर मोकळा लोग आवण लाग्या । बीच-बीच मे बाबूजी ई श्रोतावा नै धरम रा दो बोल सुणाय बी करता । वाँरै प्रवचन रौ मूल विषय औ रैवतौ के 'भगवान राम रौ अवतार ससार मे अन्याव अर अत्याचार रौ मुकाबलौ करनै उणनैं मेटण ताई हुयौ हो । इण काम मे वानै कई फोड़ा भुगतणा पड़्या पण उणा आपरौ धरम जीवण लग निभायौ । दुष्टा रौ दमन करनैं भगता री रक्षा करी । इणी'ज भात हरेक मिनख नैं भगवान राम रै बतायोड़ै मारग चाल'र अन्याव अर बुराई रौ तो विरोध करणौ ई चाइजै ।'

मठ रै सपर्क मे आवण सू बाबूजी नै कड़वा अर मीठा दोनू तरै रा अनुभव हुया । इणसू वारी आम जनता साथै सपर्क बढ्यौ अर कई इसा मोट्यार निजरा चढ्या जिकौ भविष्य मे गाव नैं आछौ नेतृत्व दे सकै हा । कड़वौ अर माड़ौ अनुभव ओ हुयौ के जिण मठ री व्यवस्था नैं वे खरी सोनौ समझता वा सफा कथीर निकळी। इसौ जूनौ अर जाणीतौ धारमिक स्थळ होवता थकाई उठै सगळा काम अधारमिक होवता । मौजूदा वखत मे मठ री गादी माथै महत रै रूप मे जिकौ साधु हो वो भैरव रै नाम माथै अेक कळक हो । इणरै गुरू रा तीन चेला हा । गुरू आपरै

हाय सू कोई नैं चादर कोनी ओढ़ाई । तीना मे ओ सै सू चालाक अर ओटाळ हो । गुरू रै रामचरण हुया गाव री टीकमी कमेड़िया सू साठ गाठ करनै इणैं दूजीड़ा दोनू गुरू भाईया नैं कूट मार नै काढ दिया अर खुद महत बणनै बैठग्यो । आज मठ री आ हालत ही के वो गुडा अर अपराधिया री खास अड्डौ बण्यौड़ौ हो । दारू खोरी मास भक्षण सू लगाय नैं रुळियारगी तकात सगळा सत्कर्म अठै बेखटकै चालता । सरपच अर उणरा सगळा चमचा बावै रा पक्का पक्षधर हा । बाकी तो सगळी धरम भीरू जनता गाडरा री दाईं ही, जिणनै हाकौ उठीनैं ई माथी नीचौ करनै वुई जावै ही । इण भात इण भ्रष्ट राजनीति नैं, विकृत धरम री ई सहारौ मिळयोड़ो हो ।

महत रा चालाक भगता आम जनता मे आ बात फैलाय राखी ही के बाबौजी तो अेक पूगौड़ा सिद्ध पुरुष है । अे जाण करता गैलाया करै नी तो दुनिया वारै लारै पड़ जावै । वारै वचन सिध्दि रा कई किस्सा घड़नै त्यार कर लिया हा जिणानै वै मौकौ आया सुणायबौ करता । इण भात भोळी जनता भरमीज जावती अर महतजी नैं अेक पूगौड़ा अर वचनसिद्ध महात्मा मानती ।

हर सोमवार नैं दिनूगै मठ मे अमल गळीजतौ । उण वखत सरपच समेत पूरी घडाळ चौकड़ी उठै भेळी होवती । महतजी महाराज गादी माथै बिराज जावता अर दूजा सगळा जाजम माथै बैठता । इण कानफ्रेस मे गाव री सप्ताह भर री रपट पेश होवती अर कई जरूरी फैसला ई लिरीजता । जद सू बाबूजी अठै आयनै रैवण लाग्या, इण लोगा रै चरचा री मूळ विषय वै बण्यौड़ा हा । कोई पण प्रसग मे वारौ आडौ डोडौ नाम जरूर आवतौ । सरुपात मे तौ इण कानफ्रेस मे हर सोमवार नै वानै खुद नै बुलावण री कोशिश रही । पण अेकाधवार जायनै जद उणा खुद जावणौ बद कर दियौ तो वारौ लारौ छूटग्यौ । पण वानै उठै री सगळी गतिविधिया री पुख्ता रपट घरै बैठा मतैई मिळ जावती ।

बाबूजी रै प्रयत्ना सू गाव मे 'श्रीराम मडळ' रै नाम सू अेक सगठण थापित हुयौ। इणरा सदस्य घणकरा वै मोट्यार हा जिकौ सरपच रै सामलै धड़ै रा हा । बाबूजी रै कारण गाव रै पीड़ित वर्ग नै अेक लूठौ नैतिक सहारौ मिळग्यौ, जिणरौ गाव रै मानस माथै गेरहौ असर पड़यौ । अबै वानै ओ विश्वास बाधग्यौ के वे सगठित होयनै गाव री आसुरी शक्ति रौ मुकाबलौ कर सकै । घडाळ चौकड़ी हर सोमवार नै सुबै मठ मे अमल गाळती तो श्रीराम मडळ कानी सू सिझ्या रा सत्सग रौ आयोजन रैवतौ । मडळ रा वरिष्ठ सदस्य बीजौ पड़िहार, करनौ चौधरी नेमौ खाती कानौ माळी अर रामौ भावी इत्याद मोट्यार उणमे विशेष रूप सू हाजर रैवता । श्रीराम मडळ सामलै धड़ै मे 'हरामी मडळ' रै नाम सू विख्यात हो । पण आ खिलाफत दबी ढकी अर छानै चुरकै ई होवती मूडै तो सै मीठा ई रैवता । कोई री विरोध करण री हिम्मत नी ही । इणरौ मूळ कारण बाबूजी हा । वे सरकारी नौकरी मे ऊचै ओहदै माथै रहयोड़ा दबग प्रकृति रा आदमी हा । इण कारण राज तेज मे वारौ पायौ जम्योड़ौ हो । गाव आळा वांरै सामी की वखत

नी राखता । सरपच अर उणरा चमचा इण बात नै मन मे आछी तरिया जाणता के इण आदमी री विरोध करनै आपा पार नी पड़ सका। इण कारण वे गतागम मे पज्यौड़ा हा । वानै तो ओई समझ मे नी आवै हो के ओ डोकरी हर तरै सू सुखी होवता थकाई अबै गाव मे आयी काई लेवण नै है ? अर सै सू मोटी बात आ क औ अठै आयनै करणी काई चावै है ? कई लोगा री धारणा आ ही के वे आगला चुणाव मे अेम अेल अ बणवा रा सुपना देखै, तो कई आ कैवता के खर दिमाग हावणा सू बेटा सागै यारी बणै कोनी । उणा घर बारै काढ़ दिया है । अबै बैठौ सामी काई करै ? मढ़ी पाड़नै फैरू करै । इण वास्तै गाव मे आयनै फालतू माथी लड़ाय रहया है ।

खैर अे लोग मन मे भलाई की जाणौ पण इणा मे बावूजी री खुली विरोध करण री हिम्मत नी हा । बारी ठौड़ कोई दूजौ होवती तो अे कदैई मार-कूट नै भगाय दवता । पण ओ तो डाढ हेठली काकरी हो जिकौ नी तो गिटणी हाय हो अर नी थूकणी । इणरै अलावा बावूजी आज ताई वानै विराध री कोई मौका इ तो नी दियौ । वे लोग याँ श्रीराम मडळ नै हरामी मडळ तो कैय सके हा पण आ किया कैवता के थै इण छारा नै सगठित करनै म्हारी जड़ा मत खोदौ इणारी नैतिक साहस बढायनै म्हारी जमी-जमाई दुकानदारी मत बिगाड़ी म्हारै अमल दारू रा वैपार मे भज मत पाड़ौ क म्हारै अनैतिक कामा मे आडा मत आवौ ।

इण भात इण गावड़ा मे सत अर असत री लड़ाई चेतगी । पण हाल काई हळगी नी हुयी हो । धुवा भाय रो भाय गोटीजै हो । झाळी झाळ लागण वास्तै पवन रै अेक झपीड़ा री जरूरत ही । पछै तो अगनी चेतण मे कोई देर नी ही ।

अर छेवट वो झपीड़ी लाग इ ग्यौ । आग धपळ धपळ करती बळवा लागी । उन्हाळै री मौसम हो अर दिनूगै री वखत । गाव माथै आलस री वातावरण छायौड़ौ हो । घ्यारू मेर आटौ पीसती चाकिया री मधुर गरगरहाट अर विलोवणा री गहरी धमक सुणीजै ही । घरा म सू धुवौ निकळ नै आभै मे जमण लाग्यी हो । की लोग लोठा-लोटिया भरनै वन मे जावण री त्यारी करै हा तो घण करा प्रभात रै शीतळ पवन री गेहरी खुमारी म आख्या मीच्या आराम सू पड़्या हा ।

इतराक मे अेकण सागै पाच छ जीपा अरडाट करती मठ रै आगै आयनै थमी । अेकाध जीप तो खैर गाव मे आवती-जावती इ रैवती पण अकण सागै इतरी जीपा आवणी खतरै री घटी ही । वाई पच गावरियौ स्वारी वन म जावता पाछी वळिपी अर गाव म की गारियी पड़यी री खबर दवण नै दोड़ र सरपच रै घर कानी गयी । पण सरपच ता घरै कोनी हा । जीपा अेक्साइज अर पुलिस विभाग री ही । दारू री भट्टिया अर अमल री जखीरी पकड़ण नै आयाड़ी ही । ऊपर सू काई सख्त ऑर्डर आयो हा अर इण पार्टी कनै पुख्ता प्रमाण हा । अटा ताई क जठ जठै भट्टिया घालू ही के स्टाक भेळी कियोड़ौ हो उण बाड़ा अर खेता रा नक्शा त्यार किर्योड़ा हा । अेक्साइज पार्टी मारग बैवता दो घ्यार जणा नै ठाया बतावण ताई

पकड़या अर जीपा फटाफट ठिकाणा माथै पूगगी । ठौड़ ठौड़ इण कुटीर उद्योग रा सयत्र अर मटका वद माल त्यार हो । रामलाल रै घरा वीस किलो अमल अर दो किलो दूध मिळयौ । वे लोग पचनामो करनै सगळी जखीरौ सागे लेयग्या अर इण सिलसिले मे आठ-दस गिरफ्तारिया हुई । अखवारा मे खवरा छपी अर गाव रौ नाम सै ठौड़ चावौ होयग्यौ । इण अचाणचक पड़ी धाड़ सू गाव म तो काई पण आखे चोखलै मे खलवली मचगी । गाव गाव अमल अर दारू रा वैपारी मौजूद हा । इण इलाकै मे वरसा सू ओ धधो आराम सू चालै हो । पुलिस अर अेक्साइज रा अफसरा रै चौथ वधी बधाई ही, टैमसर पूग जावती । इणसू वारी छत्रछाया मे वरसा सू ओ वैपार शाति सू चालै हो । पण अवकाळै तो इण अफसरा नै ई ठा कोनी पड़ी । न जाणै किणै वरावर पुख्ता प्रमाणा सागै ठेट ऊपर शिकायत करी ही । इण कारण ऊपर सू दवाव पड़या आ जोरदार कारवाई स्पेशल पार्टी रै जरिये अचाणचक ई हुई। मामलो इतरो सगीन वण्यौ के पकड़ीज्या उणारी जमानत ई नी हुय सकी ।

इण लोगा री तो आ आम धारणा वण्योड़ी ही के हाथ पोला तो जगत गोला। इसा मामला मे हाथ थाड़ी ढीली राख्यो के मामलो रफा दफा । इण धधा मे पैसा कोई पसीनी करनै तो कमाईजै कोनी । पछै देवण मे हरज काई है ? वरसा सू ओ धधो चालै हो । अमल री दूध तो ठेट माळवा-मेवाड़ सू आवतो । पण कदेई कोई हाला हीचो नी हुयो । कोई रै पेट री पाणी ई नी हिल्यौ । पण अवकाळै तो राम जाणै काई हुयी के कठैई काई थाग ई नी लागौ । सरपच लूठी रकम लेयनै ठेट जिलास्तर रा अफसरा अर नेतावा कनै जाय आयो पण कठैई थाग नी लागौ । पकड़ीज्या जितरा सगळा नै ई सजा हुयगी अर डड मूळ हुयो सो न्यारौ ।

गाव रा अेक दो वार्ड पच अर चौकड़ी रा खास खाम मेवर तो जेळ मे हा पण सरपच अर रामलाल हाल वारै हा । हीराराम विश्नोई फरार हो । उणा विचार कियो के अवै यू चुपचाप वैठा काम पार नी पड़ै । इण नेतावा अर अफसरिया रै भरासे तो की होणा जाणा नी है । हरामिया कनै आखी उमर घर चूयाया पण अेन वखत माथै कोई काम नी आयो । वानै आ पक्की तसल्ली होयगी के अे सगळा कवाड़ा वावूजी अर वारे हरामी मण्डल रा है । इण वास्ते शाति सू जीवणो है तो काटो गाव सू वारै काढ़णो ही पड़सी । नी तो दिन दिन इण लोगा रो हौसलो वढ़सी अर पछै अे हरामी जीवणौ ई ओखौ कर देसी । रामलाल री राय आ ही कै डोकरै रौ नाक वाढ़ दियौ जावै । औ चमत्कार हुया डोकरो अठै सू ठैका देय जासी अर सगळी दैण इज मिटज्यासी । इण वास्तै कोई नै त्यार करनै ओ कवाड़ा कराय दियो जावै । इण काम सारू खरचौ जितरौ ई लागै उणरी जिम्मेदारी रामलाल ओढली अर गुडा त्यार करण री जिम्मेदारी सरपच री रही । कैवत है के गोइडे री मौत आवे तद भीला रै झूपे चढै । घडाळ चौकड़ी रै विनाश रौ जीग आयग्यौ हो । सरपच कोशिश करनै दो इसा गुडा खोज ई लिया जिकौ लोभ रै वशीभूत होयनै वावूजी रौ नाख वाढ़ण नै त्यार होयग्या ।

सियाळै री मौसम हो अर रात री वखत । ठड ई उण साल अणूती ज पड़ै ही। लोग बाग आप-आपरै धरा मे ऊंडा वळनैं गूदड़ा ओढ'र सूता हा । चोथ रौ चद्रमा आथमण माथै हो । गाव मे सोपौ पड़ग्यौ हो । पण बाबूजी रै पाडोस मे नेमा खाती री खातरौड़ म हाल जाग ही । उणरै अठै मेहमान आयौड़ा हा सो बैठा तापता रह्या अर वाता करता रहया । बाबूजी ई आपरै बैठक आळै कमरै मे दरवाजौ वद करनै अेकलाई सूता हा ।

धाड़ आळौ किस्सौ वण्या पछै गाव रै वातावरण मे मोकळौ तणाव आयग्यौ हो । गाव रा दोनू धड़ा मनौमन आछी तरिया तणीज्यौड़ा हा । मडळ आळा मोट्यारा बाबूजी नै सावचेत रैवण री कह्यौ । अेक दो जणा तो वारै कनै रात रा सूवण री पेशकश ई करी । पण उणा आपरी आदत मुजब बात नैं हस'र टाळ दी । डोकरा नैं आपरी हिम्मत रै पाण डर भी लागती आथ कोनी ।

आज ई वे निशक होयनै सूता घोर खावै हा । खूणै मे लालटेन मद मद बळै ही । पाड़ोस मे नेमी खाती अर उणरा मेहमान ई शायद सूयग्या हा । इतराक मे किणैई आयनै वारै दरवाजै री कूटी खड़खड़ायौ । वे अेकदम जाग्या अर सूता सूता ई पूछयौ – कुण है भाई ? '

' अे तो म्हे इज हा सा । थोड़ौ दरवाजौ खोलजौ ।' बाबूजी कनै गाव रा लोग रात विरात आयवौ ई करता । उणा सोच्यौ कोई मुसीवत मे फस्यौड़ौ आयौ होसी । वाकी इण हाड धुजावणी ठड मे इण वखत आधी रात नै घर वारै कुण निकळै ? वे श्रीराम ! श्रीराम ! करता उठ्या लालटेन री रोशनी थोड़ी तेज करी मफलर माथै पै लपेटयौ लट्ठ हाथ मे लियौ अर दरवाजौ खोल दियौ सामी देखे तो दो आदमी मूडा माथै अगोछा लपेट्या ऊभा । अेक रै हाथ म छुरै जिसी की चमकीली धारदार चीज निजर आवै ही । वारै आवता ई वे दोनू हिड़किया कुत्ता री गळाई वारै कानी ताचकिया । बाबूजी चेत्यौड़ा हा, वे अेक कानी दौड़ग्या अर नेमा खाती नैं जोर-जोर सू हाकौ कियौ । पाडोसी नेमौ मेहमाना सागै गप्पा मारतौ सूतौ ई हो के बाबूजी री हाकौ सुणनै अचाणचक उणरी आख खुलगी । मेहमान ई जागग्या। उठीनै दोनू गुडा वाथ्या होयनै डोकरा नैं जमी माथै पटक दिया अर नाक वाढण ताई मथवा लाग्या । इतराक मे नेमी खाती अर उणरा मोट्यार मेहमान बीचली भी त कूद नैं तुरत आय पूगा । आवताई उणा दोनू गुडा नै दाव लिया । बाबूजी आळौ सोट कनै ई पड्यौ हो सो मार मार ने वारा हाड जोजरा कर दिया । पछै नेमा रै घर सू मजवूत रस्सी लाय र वाध नैं गुड़ाय दिया ।

वाथौड़ा मे बाबूजी रै तो खासी लागी ज ही पण नेमा रै हाथ मे ई छुरी रा अेक दो सातरा घाव लागग्या । रातौरात पुलिस थाणै मे खवर कराईजी अर दिन उगौ जितरै तो पुलिस री जीप ई आयनै गाव रै चावटै त्यार हुई । गुडा नै थाणै मे लिजाय र सागैड़ा मचकाया तो सगळी वात चवड़ै आयगी । बाबूजी री अेक बेटौ

पुलिस रै महकमै मे ई मुलाजिम हो, फोन सू खबर मिळता ई वो तूटै काळजै दौड़नै आयौ। बाबूजी अर नेमा नैं लिजाय'र अस्पताळ मे भरती कराया। सगीन पुलिस केस बण्यौ अर सरपच नै रामलाल दोनू लपेटा मे आयग्या। पुलिस वानै ई पकड़'र लेयगी।

अेकर फेरू इण गाव री नाम अखबारा रै पै'लै पानै माथै आयौ। पत्रकारा इण केस नै पूरी विगत सागै छाप्यौ। प्रदेश री विधानसभा मे इण बाबत तारांकित प्रश्न पूछीज्या अर मामलै पूरी रग पकड़ लियौ।

बाबूजी साजा सातरा होयनैं पाछा गाव जावण नै त्यार हुया तो घर आळा सगळा वारै भात भात सू बरजण लाग्या पण वे मान्या कोनी। बोल्या–"इण वखत गाव नैं म्हारी खास जरूरत है। इसी अबखी वेळा मे म्हे मूडौ लुकायनैं नी बैठ सकू। जठा ताई गाव बाबत म्हारा अधूरा सुपना पूरा नी होय जावै, म्हे गाव नी छोड सकू। डर नै बैठणौ तो कायरता है। उण पात तो मौत चोखी। इण वास्तै होसी जिकौ देखी जासी, पण म्हनै गाव तो जाणौ ई पड़सी।" घर आळा सगळा वारी आदत अर प्रकृति नै आछी तरिया जाणता। इण कारण की कैवणी-कावणौ बेकार ही। कोर्ट मे वो केस च्यार-पाच मही'ना ताई चाल्यौ। गवाह सबूत पेश हुया। गुडा सागै सरपच अर रामलाल नै तीन-तीन बरस री सजा होयगी।

इण नैनै सीक गाव मे ऊपरा-ऊपरी अे दो सगीन केस बण जावण सू लोग तो हाक-बाक होयग्या। पूरै चोखळै मे तहलकी मचग्यौ। लोगा सुपनै मे ई आ बात नी सोची ही कै यू ई होय सकै। आ तो इसी बात हुई जाणै किणैई भरियै तळाव मे भाठौ नाख दियौ अर पाणी हिलोळै चढग्यौ। गाव री आसुरी शक्ति अगाई दबगी। दारू आळौ कुटीर उद्योग सफा ठप्प होयग्यौ अर अमल रो गृह उद्योग ई खासौ मोळौ पड़ग्यौ। छूटा चरणिया साड सरकारी फाटका मे बद होयग्या अर लारला रोड खोदका थच थच पोठा करता गऊ रा जाया बणनै ढोळै बैठग्या।

यू करता सालेक भर मे पचायता रा चुणाव आयग्या। गाव मे इणरी चरचा होवण लागी। सरपच बणावण ताई सगळा री निजर बाबूजी माथै टिक्योड़ी ही। पण वे सफा नटग्या। उणा गाव रा कोई ढग रा अर जोगा भाट्यार नैं सरपच बणावण री सलाह दीवी। वे बोल्या– 'म्हे अठै सरपच बणवा नै कोनी आयौ। इण उमर मे म्हनै सत्ता री भूख अगाई कोनी। गाव म्हारी जनम भोम है अर इणरै प्रति म्हनैं लगाव है। म्हैं आयौ तो अठै शाति री खोज मे हो पण भावैई अशाति मे पजग्यौ। छतापण कोई बात नी। आज ई गावड़ा रै वास्तै म्हारै मन म की सुपना है। म्हे उण अधूरा सुपना नैं था सगळा भाईया री मदद सू पूरा करणी चावू। ईश्वर री मरजी होसी जितरा पूरा होय जासी। म्हनैं तो म्हारौ फरज निभावणी है। वारी वाता सुण'र लोग घणा प्रभावित होवता। वे उणानैं देवता रै उनमान गिणता। पण की लोगा नैं वारी वाता समझ मे नी आवती। वे मन मे कैवता– डोकरा री माथौ

भमग्यी लागी । घर मे सै वाता री जोगवाई आखी उमर साहवी भोगवी अर अबै अठै आयनैं इण मूरखा सू क्यू माथी लड़ावै अर हाडका भगावै ? की समझ मे नी आवै ।' वास्तव मे वारै समझ मे आवै जिसी आ वात ई कोनी ही ।

गाव मे चुणाव री चलवळ चालै ही । सगळा री आ मसा होयगी के अवकाळै ग्राम पचायत री चुणाव निर्विरोध होवणी चाइजै । सरपच वणवा वास्तै जे वावूजी काई कीधाई त्यार नी होवै तो वे कैवै जिणनैंई सरपच, उपसरपच अर वार्ड पच मुकर करदो । इण वातावरण रै विचाळै गाव मे अेक औरू किस्सी वणग्यी । आ कोई जोगरी ज वात ही के अठै अेक वात जूनी नी पड़ती जितरै दूजी नूवी पैदा होय जावती ।

मठ रा महत जी कनलै गावरी अेक रुळेट राड रै सागी फस्योड़ा हा । वा भगतण वणी टीला टवका करनै वावाजी रै दरसणा ताई मठ मे आयवौ करती । कई वार वावौजी ई उणरै घरा रसोई जीमण नै जायवौ करता । लुगाई रौ घर धणी अेक गरीव अर थाकल आदमी हो । वो वापड़ौ मनीमन घणौई दुखी रैवती पण की जोर कोनी चालती । तग आयौड़ी कई वार लुगाई नै मारती कूटती ई खरा पण वा मानती कोनी । रोजरी इण राड़ मे छेवट होवता होवता आ हुई कै लुगाई आपरा धणी नै जेहर देयनै मार नाख्यौ । पण शिकायत हुयगी जिणसू पोस्टमार्टम हुयौ अर मैळी खुल्यौ । जेहर उणा इज लायनै दियौ हो । घर म जेहर री खाली शीशी मिळगी अर मठ री तलाशी लिरीजी तो सागण विसीज अेक औरू शीशी उठै ई मिळगी । इण मायै भगतण अर वावाजी दोनू नै जनमटीप री सजा हुयगी ।

चुणाव पचायत री निर्विरोध निवड़ग्यौ । वीजौ पड़िहार सरपच वण्यौ अर नेमौ खाती उप सरपच । वाकी रा वार्ड पच ई ढग रा मोट्यार वण्या । निर्विरोध चुणाव हुया ग्राम पचायत नै सरकार कानी सू इक्कीस हजार री इनाम मिळयौ । इनाम देवण नै पचायत राजमत्री आया । मठ मे जवरी जळसी हुयौ । वावूजी रै अधूरा सुपना मे सू अेक अर पै लौ सुपनौ पूरौ हुयौ ।



राजू कबाड़ी

भगवतीलाल व्यास

"कागद, कॉपी, अखबार की रद्दी, लोहा लक्कड़, टूटी चप्पल, जूता, सैण्डल, खाली बोतल, डिब्बा ।"

एक आवाज मोहल्लै रै इण छोर सू उण छोर ताई गूज जाती । कितरा ई हाथ अै चीजा घरा मे हेरवा लागता तो कितरा ई मूडा सू अचाणचूक निकळतो–"राजू कबाड़ी आ गयो ।"

राजू कबाड़ी कोई मोटी सखसियत नी ही पण उण री बोली, उण रो नेमसर अर टेमसर आवणो-जावणो, उण रो विणज बोपार रो रग-ढग इतरो मन मोवणो हो क जन-मन मे रम गयो हो राजू कबाड़ी । राजू कबाड़ी रो फोटू कदेई अखबार मे नी छप्यो पण उण री बोली साभळता ई उण रो उणियारो हरेक री पुतळ्या सामी नाच उठतो । उणरी बोली री केसेटा नी भरीजी ही पण उण री बोली जण-जण रै हियै मे इतरी ऊडी ओळखाण बणा चुकी ही क दूरा सू ही उण रो हेलो सुण'र लोग जाण जाता'क राजू कबाड़ी आ गयो है ।

'राजू किसी चीज लेवेला अर किसी पाछी फेरेला ?'–यो सवाल पूछणो निरर्थक है । राजू किणी भी चीज नै आज ताई पाछी नी फेरी । दातण री खाली ट्यूबा, शीशिया रा ढकणा, काच रा टुकड़ा, अटिया, जग लागोड़ी ग्रील्यों, साव खज्योड़ा कनस्तर, चपला री टूटी वादिया, जो भी चीज राजू सामी गई राजू उणनै आदरी । उणरो दाम चुकायो हाथो हाथ पाच पाई सू ले'र पाच सौ रूपया ताई । राजू री जेब जाणे बैंक ही । उण मे छोटे सू छोटो सिक्को अर बड़े सू बड़ो नोट त्यार रेवतो । मोल भाव री झिकझिक मे राजू नी पड़तो । जो मोल उणरै मूडै सू कढ़ गयो सोई लोहे री लकीर । पेला-पेल तो राजू री इण आदत सू लोगा नै एतराज हुयो । मोलभाव करणिया लोग राजू री इण बात रो विरोध करता, केवता–"ओ ठग है । रूपये री चीज रा पचास पईसा कह देवे अर ये ले लेओ। आ तो सरासर लूट है ।"

धीरे-धीरे लोग जाण गया'क राजू बात रो पक्को अर तोल रो साचो है। अखबार री रद्दी रो भाव, लोह लक्कड़ रा भाव, रबड़ प्लास्टिक री चीजा रो भाव उण रो औरं कबाड़िया सू न्यारो रेवतो। दूजा कवाड़िया सू कमती भाव मे राजू लेवतो अर लोग राजी राजी दवता। दूजा कवाड़ी गिराका नै तोल मे मारता।

राजू रा तोल एक दम खरो। घर मे तराजू सू ताल'र राजू रै तराजू तुलवा लो। फरक नी पड़ सके। लोगा नै इण बात रो पतियारो हो जदेई तो वे राजू चीज-वस्त रा जितरा दाम हथेली माथे रखता, ले'र आपरै घरा आ जावता।

राजू रै मिठबाले बवार सू टाबर टींगर, लुगाया, मिनख, बूढा-मोट्यार इतरा हिल गया क जिण दिन राजू री आवाज सुणाई नी पड़ती, उण रो ठेलो मोहल्ला मे निजर नी आवतो लोग बचैन व्हे जावता। पूछता 'आज राजू कवाडी नी आयो ?' आवतो हुवैला। इतरा मे राजू रो हेला सुणाई पड़तो अर लोगा मे एक सन्तोष री ले र बापर जाती। टाबरा री टाळी हरख सू राजू रै आवण रो एलान करती दौड़ पड़ती-' राजू आ गयो राजू आ गयो ।'

म्है सोचतो-बड़े गजब री चीज है या राजू कवाड़ी। मोहल्लै री जिंदगी मे आपरी किसी ठौड़ बणा ली है'क एक दिन नी आवे तो लोग परशान व्हे जावे। या मामूली सो आदमी लागा रै हियै मे इतरो ऊडो किण भात थरपीज गयो है ? राजू रै कनै शिक्षा-दीक्षा नी, पद-इधकार नी, धन दौलत नी, जमी-जायदाद नी फेर भी वो सबरो मानीतो। म्है सोचतो आखिर वा कुण सी चीज है जो राजू जिस्या साधारण आदमी नै असाधारण बणावे है ?

पूरो दिन निकळ गयो। राजू नी आयो। दो-तीन चार दिन निकळ गया। राजू नी आयो। लोग तरै-तरै री बाता करवा लागा। कोई केवता-मादो पड़ग्यो हावेला कोई कवतो-धधो छोड़ दिया हावेला कोई केवतो-घणा कमा लियो अबै कठेई बैठो ऐश कर रयो हुवैला।

म्हारै गळै औ बाता नी उतरती। पण राजू री पतो कठै लगाऊ आ भी एक जबरी समस्या ही। उण रो ठिकाणो तो किणनै भी मालूम नी हो। बिया भी कवाड़िया रो काई ठिकाणो ? अर फेर राजू जिस्या मस्तमौले कवाड़ी रो ठिकाणो ढूढणो तो और भी दोरो पण म्है धार लियो क पतो लगाया रेवूला।

एक दिन पतो लगा ही लियो साच ही राजू धधा छोड़ दियो हो या यू कहणो ठीक होवेला'क उण धन्धो बदल दियो हो। अब वो उणहीज ठेले माथै चाय री दुकान करै है। दूजी ठौड़ा एक रुपये म मिलण वाळी चाय सू राजू री पिचौतर पिसा री चाय म्हनै घणी चोखी लागी। म्है राजू ने कह्यो- राजू इण चाय रो तो तू सवा रुपियो भी ले तो भी लाग राजी हो'र दे देयेला।

म्हारै इण कथन माथै राजू री तळाया भरीजगी अर वो बोल्यो–"जाणू हू बाबूजी, पण म्हैं बारह आने री चाय रो सवा रुपियो नी ले सकू ।"

"दूजा दूकानदार धड़ल्ले सू ले रया है अर तू धरमराज रो औतार बण्यो बैठ्यो है । इण तरै तो तनै यो धन्धो भी बदळणो पड़ जासी ।"

राजू बोल्यो–"तो बदल लेस्यू ।" उण रै इण छोटे से वाक्य मे उणरी नधीताई, उण रो दृढ़ विस्वास अर गलत परिस्थितिया सू समझौतो नी करवा रो सकल्प प्रकट हुय रयो हो । म्है सुण र दग रह गयो । पण म्हारै मन मे राजू रै सम्बन्ध मे जाणणे री इच्छा जाग गई । राजू भी शायद म्हारै मन री उथल पुथल नै भाप गयो ।

म्हारै कनै ही एक मुड्डी माथै बैठतो बोल्यो–"बाबूजी, कबाड़ी रो धधो म्है म्हारी मरजी सू नी छोड़्यो । कबाड़ी रो धधो करणिया केई जणा म्हनै कह्यो–"राजू, तू म्हा लोगा रो धधो चौपट कर रयो है । सेग माल तो तू समेट लावे, म्हे अब काई करा ? थारी ईमानदारी सू म्हा लोगा रे पेट माथै लात पड़ रही है । जे तू ईमानदारी नी छोड़सी तो म्हानै धधो बदळणो पड़सी ।"

अर म्हैं धधो बदळ दियो बाबू जी ! म्हारा बापू म्हनै अतीम टैम मे दो ई बाता कही ही –' बेटा ईमानदारी मत छोड़ज्ये अर भाई-बन्दा रै पेट माथै लात मत मारीजै ।" जद म्हैं देखियो'क कबाड़ी रै धधे मे बापू नै दिया वचन नी निभ रया है तो म्हैं वो धधो ई छोड़ दियो ।

"अब इण धधा मे भी पेला वाळी बात ईज होसी तो ?" म्है पूछ लियो । राजू बोल्यो– "धन्धा री कमी नी है बाबूजी शहर मे । ओ भी छोड़ देस्यू । कोई नुवो धधो खोजस्यू ।" -

"पण इण तरै तो तनै घाटो ई घाटो उठाणो पड़सी ।" म्है राजू रै सामी म्हारै मन री सका प्रकट करदी ।

"घाटै अर नफे री फिकर म्हैं आज ताई नी कीदी बाबूजी । बापू नै दियोड़ा बचना सू टलणा अर मरणो म्हारै ताई एक जिस्यो ही है ।" राजू दृढ़ स्वर मे उथली दियो ।

अब म्हैं काई केवतो ? मन ही मन कलजुग रै इण राम ने प्रणाम करतो घर रो मारग लियो ।



देवतो, कदैही मनै झिझोड़तौ, वैन जी री ओलखाण बतायण लाग्यौ । मैं काका नै बतायी कै वैन जी म्हारा वास रा रेवण वाळा है । मैं याकी तीन पीढ़ी नै जाणू ।

म्हारी गळी मे हीज थोड़ाक धकै ल काऊ दिसा मे चालता ही आरो घर है । घर काई पैली एक नोहरी, जिण नै वैन जी आपरी मैणत री कमाई लगाय ओपमान घर रो दरजो दिलाय दियौ । वैन जी सू म्हारा परिवार रौ हेत है क्यू कै एक ही वास गुवाड़ी रा, दूजा वैन जी री दो वड़ी वैणा, म्हारी दो वड़ी वैणा री पक्की साथणिया ही अर वैनजी री दूजै नम्बर रौ भाई अर मैं एकै साथै मिन्दर रा नीमड़ा नीचे गुलाम डाली अर चाँदणी राता मे टीलो रमता हा । इण सू घरै आवणी जावणी रैती ही ।

वैनजी रो नाम - दुरगा । नाम जिस्या ही गुण । दुरगा भवानी, सगती, अम्बा री रूप । वैन जी काई नारी रूप मे देवी री अवतार । आपरौ त्यौहार घणौ आछौ । मदद सारू आठू पौर तैयार । वास गुवाड़ी रा आड़ौसी पाड़ौसी वैनजी नै कोई काम औढाय दियौ तो उणा नै रात दिन एक कर, मन लगाय पूरौ करै नी उतै ताई जीव म जीव नी आवै । छाती माथै काम चढ़ियोड़ी उणा नै नी सुहावै । घरा जावण वाळा नै खावण पीवण, मान मनवार मे राई जितरीक भी कसर नी छोड़ै । मुळकता ही वात करता । वोलण मे हाव भाव । भुवारा रा उतार-चढाव । मूडा री मरोड़ । हाथा रा लटका आद इस्या गुण है क आप उणा री वाता सुणता सुणता थाकोहीज नी । वरफ री ज्यान आप उठै ही जम जास्यो । चावै आपरै कितरौ ही जरूरी काम क्यूनी हुवै ।

आप री रग गौरो, सुहावणो मूडो । वाळपणा मे डावा गालड़ा माथै माटा री घोट । निसाणी आज ताई तीन कोस सू सगळा नै निजर आवै । हसण री टैम दोन्यू गालड़ा मे नाना-नानाक खाडा पड़ै । ओपती कद-काठी । नी ऊठ जिस्या लाम्बा, नी वावण भगवान जिस्या टेचरिया । आपनै सैंग भात रा गामा घणा ओपै । सेवा-भाव अर काम करण मे आछा-आछा नै पाछै राखै । स्कूल मे कोई जळसो हुवौ, खेलकूद री होडा होड हुवौ, चावै नाच गाणौ सगळा वैनजी रै विना फीका लागै । टावर-टूवरिया री इसी तैयारी करावता कै पूछौ मत । रात नै रात अर दिन नै दिन नी गिणता । नी रोटी रौ पतो अर नी पाणी री । आप इस्या वेजा झूझै कै लोग-लुगाया दाँता आगळी दवाव लेवै । उणा रै समझ मे नी आवै'क इतरी टैम आ वैन जी किया दे देवै ? आ वैन जी इतरी मैणत क्यू करै ? काम चोर, फोगट्या भाई तो वैन जी री इतरी लगन, मैणत नै देख'र आ कैवण लाग जावता-"अरे वैनजी इतरी दुख क्यू देखो हो ? थाने काई सिरकार इण मैणत री नियारी तिनखा देसी ? सोना रूपा सू जड़ेड़ी साड़ी पहरासी ? फेर थे क्यू इण मिनखा सरीर नै फोगट मे विगाड़ौ हो ? हीरा नै भाटा सू मत फोडौ ।"

त्याग मूरती

ओमदत्त जोशी

ओ जग अजूबा री खजानो है । इण ससार मे मिनखा री केई भात री बानगी देखण मे आवै । एक सू एक वढ़ता चढ़ता मिनख है । कोई मैणत-मजदूरी मे धकै है तो कोई आपरी जिनगाणी सू लड़ण मे कोई कसर नी छोड़ै । कोई माथै ऊपर आवण वाळा दुख-दरद नै हसता हसता झेल लै । केई इसा जिका आपरी मारग माथै चालता रैवै । उणा री केणी है–"मन रै हार्‌या हार है मन रै जीत्या जीत मन ही वैरी आपणी, मन ही अपणो मीत ।" मिनख नै आपरै मन नै करड़ो राखणो चाहिजे । उणा नै कदै ही पोचापणी नी आवण देणी चाहिजै । म्हें आपनै एक इस बजर छाती वाळी मरदानी लुगाई री जाण कराऊँ । लुगाई सबद उणा रै खातिर लेणी वाजिब नी है पण लाचारी सू ओ ही सवद मूडा माथै आवै । मै आ वेमाता री गलती मानू कै लुगाई जात मे इणा नै जनम दियो । एकर सी मै पान खावण ताई गणपत री दुकान माथै उभी हो । उणीज टेम वा मरदाना लुगाई स्कूल सू घरा जायरी ही । एक सिंधी काकै री निजर उण माथै पड़ी तो वो बोल्यौ –'माद्साव । आ टाबरी कुणरी है ?"

म्हारा मूडा सू छूटतै ही बोल निकळ्यो–'तू नी जाणै ! ये तो वैनजी है नी अठा री इस्कूल रा ! दाई सू काई पेट छानी है ! ठेकेदार जी री वेटी ।" मै सगळी ओळखाण बताय दी ।

मोटामल काकौ फटसू आख्या नै चढार बोल्यौ–'मै समझग्यो ।

उणा रै पाग री वैठै करसी नै काको केवण लाग्यो– ठेकादार जी घणों दिलदार हो ! दिलदार !! तुम देखता रह जावौ वात करण री एक नियारो ढग हो वारी । वै घणा नेठाव सू वात करता ।"

सिन्धी काकै आपरी काचरा जिसी मोटी मोटी लाल-लाल आख्या रा काळा काळा हीरा नै वारै काढ़ती कदैही मायनै धसावतो, कदैही आख्या रा भुवारा नै ऊपर चढाय लेतो तो कदैही आपरी धोली मूछा माथै जीवणै हाथ सू ताव

देवतो, कदैही मनै झिझोड़ती, बैन जी री ओलखाण बतावण लाग्यौ । मै काका नै बतायो कै बैन जी म्हारा वास रा रेवण वाळा है । मैं याकी तीन पीढ़ी नै जाणू ।

म्हारी गळी मे हीज थोड़ाक धकै ल काऊ दिसा मे चालता ही आरो घर है । घर काई पैली एक नोहरी, जिण नै बैन जी आपरी मैणत री कमाई लगाय ओपमान घर रो दरजो दिलाय दियो । बैन जी सू म्हारा परिवार री हेत है क्यू कै एक ही वास-गुवाड़ी रा, दूजा बैन जी री दो वड़ी बैणा, म्हारी दो वड़ी बैणा री पक्की साथणिया ही अर बैनजी रौ दूजै नम्बर रौ भाई अर मैं एकै साथै मिन्दर रा नीमड़ा नीचे गुलाम डाली अर चाँदणी राता मे टीलो रमता हा । इण सू घरै आवणी जावणी रेती हो ।

वैनजी रो नाम - दुरगा । नाम जिस्या ही गुण । दुरगा भवानी, सगती, अम्बा रौ रूप । *बैन जी काई नारी रूप मे देवी रौ अवतार । आपरौ त्यौहार घणौ आछौ ।* मदद सारू आठू पौर तैयार । वास गुवाड़ी रा आड़ौसी पाड़ौसी बैनजी नै कोई काम ओंढाय दियो तो उणा नै रात दिन एक कर, मन लगाय पूरौ करै नी उतै ताई जीव मे जीव नी आवै । छाती माथै काम चढ़ियोड़ौ उणा नै नी सुहावै । घरा जावण वाळा नै खावण-पीवण मान मनवार मे राई जितरीक भी कसर नी छोड़ै । मुळकता ही वात करता । बोलण मे हाव भाव । भुवारा रा उतार चढाव । मूडा री मरोड़ । हाथा रा लटका आद इस्या गुण है क आप उणा री बाता सुणता सुणता थाकोहीज नी । बरफ री ज्यान आप उठै ही जम जास्यो । चावै आपरै कितरौ ही जरूरी काम क्यूनी हुवै ।

आप री रग गौरो, सुहावणो मूडो । बाळपणा मे डावा गालड़ा माथै भाटा री चोट । निसाणी आज ताई तीन कोस सू सगळा नै निजर आवै । हसण री टेम दोन्यू गालड़ा मे नाना-नानाक खाडा पड़ै । ओपती कद-काठी । नी ऊठ जिस्या लाम्बा, नी बावण भगवान जिस्या टेचरिया । आपनै सैग भात रा गाभा घणा ओपे । सेवा भाव अर काम करण मे आछा-आछा नै पाछै राखै । स्कूल मे कोई जळसौ हुवौ खेलकूद *री होडा होड हुवौ, चावै नाच गाणौ सगळा वैनजी रै विना फीका लागै ।* टावर-टूवरिया री इसी तैयारी करावता कै पूछौ मत । रात नै रात अर दिन नै दिन नी गिणता । नी रोटी रौ पतो अर नी पाणी रो । आप इस्या बेजा झूझै कै लोग-लुगाया दाँता आगळी दबाव लेवै । उणा रै समझ मे नी आवै क इतरौ टेम आ वैन जी किया दे देवै ? आ वैन जी इतरी मैणत क्यू करै ? काम चोर, फोगट्या भाई तो वैन जी री इतरी लगन मैणत नै देख'र आ कैवण लाग जावता–"अरे वैनजी इतरौ दुख क्यू देखो हो ? थाने काई सिरकार इण मैणत री नियारी तिनखा देसी। सोना रूपा सू जड़ेड़ी साड़ी पहरासी ? फेर थे क्यू इण मिनखा सरीर नै फोगट मे विगाड़ो हो ? हीरा नै भाटा सू मत फोडौ ।"

इसी वाता सू बैन जी वेराजी नी होती । वा हेतहिमळास, धीरज, नैठाव सू जुवाव देती– ''देखो रे भाया ! ओ काम अणूती नी है । ओ काम आपा ने मिलै उण तिनखा री हीज है । मिनख मिनख मे सोचण री फरक । कोई इणनै आपरी काम समझ'र सोचै तो कोई सुवारथी मिनख इण नै परायी समझ'र टाल देवै । ओ टावरा री हीज काम है अर टावर आपणा है फेर ओ काम नियारौ किया हुयो ? म्हारी समझ मे नी आवै । कामचोर, सुवारथी, मतलवी, मीठा-मसकरा मिनखा रै मगज मे ही इसी वाता ऊपजै ।''

इस्यौ उथलौ सुण सगळा नीची नाड़ कर पगरखी सू जमी कुचरण लाग जावता। उणा सू पाछौ कोई उथलो नी वणती, वे भीज्योड़ी मिनकी ज्यू हो जावता। गाँव री कोई मिनख होवै उण री दुख नै आप री दुख ज्याण उणा री जी जान सू सेवा करण मे वैनजी लाग जावता चावै दुनिया उणा नै काई भी केवौ । उणा नै दुनिया री वाता सुणन री फुरसत कठै ही ? वै गाँधी जी रा बाँदरा री ज्यान काना मे आगळी घाल लेता । आपरा हाल मे मस्त । दुनिया तो चढ़्या नै ही हँसै अर पाळा नै हीज हसै ।

दुरगा वैनजी आपरा परिवार मे वैणा मे चौथे नम्वर माथै अर सगळा भाई-वैणा मे छठै नम्वर । कुल नौ भाई-वैण मौजूद है । जिण मे छ वैणा अर तीन भाई । सरगवासी होवण वाळा म्हारा ध्यान मे नी है । उण टेम परिवार नियोजन री इस्यौ जोर नी हो । क्यू कै भगवान री दया सू इतरी महगाई नी ही । दस पन्द्रह रुपिया मे आराम सू एक जणा रै महीनै भर री गुजारी हो जावती । उण टैम कोई आ नी समझती कै वैसी टावर दूवर दुख री कारण हुया करै । इतरी जरूरता नी ही। मिनख आपरी तान मान सू गिरस्थी री गाड़ी नै साव सोरी खेच लेतौ । जिणा रै ज्यासती वेटा होता उणारी समाज मे, गाँव, जाती, विरादरी मे घणौ आदर-सतकार हो तो । पच-पचायती मे उणा री वात मानी जाती । उण परिवार सू राड़-दगो भी करता लोग शकता । पुराणै जमानै मे आ कैणगत ही कै 'जिण रै घर मे पाँच लाठी वौ पच मानै नी पचायती' । वैनजी इस्कूल मे दसवी ताई भणिया । फेर आपरी मैणत लगन, अर धकै वढ़ण री चेस्टा सू मीठा तेल रा दीया अर घासलेट री चिमनी रा धूँआ सू आख्या लाल कर एम ए पास करी । पढ़ण मे ही हुसियारनी, दूजा काम भी जाणै सीवणी-टूपणी, कसीदौ काढ़णी, सूटर जरसी वणणी, गीत गाळ गावणी आ मे आप आछी-आछी ठाठीगर लुगाया नै पाछे राखै । गीता मे वना वनी, व्याई जी री गाळ्या, भजन भाव व्याव रा अर मौका मौका रा सगळा गीत गावण मे उणा री होड जठाताई म्हारी निजर जावै कोई नी कर सकै । सुर काई निकळै जाणै कोयलड़ी कूकी हुवै । कोई भी काम हुवौ उणा मे पारगत होवण री चाव एक हरख उणा मे उठै । सीखण मे कैई वाधावा, अवखाया, मुस्किला आती पण धन है इण माईरी लाली नै कै उण मे पारगत हुया पछै ही छोड़ती ।

वैनजी खाण पाण वणावण मे भी आपरी नियारी पिछाण राखै । दाल-ढोकळा, खीचड़ी खाटौ, कूलर-धाटी जिस्या खाण सू लेर मैसूर पाक, गुलाब जामुण, घेवर जिस्या तिवण वणावण मे घणा हुसियार है । सेवा भुजिया खीचिया, पापड़, राव रायती वणावण मे आपरी होड़ आगती पागती री लुगाया नी कर सकै । रसोई रसाण इस्यौ सुवाद वर्णावै कै खावण वालौ आपरी आगळिया रा टोया रै हीज बटका भरण लाग जावै । साफ-सुथराई री पूरी चतरायी राखै । खावण-पीवण री चीजा, बरतन-बासण, हाँडा-कूडा नै आछी तरै सू ढकियोड़ा राखै ।

आपरी जितरी बाता बताऊँ उतरी ही थोड़ी है । आपरै परिवार रै टूटण रै सदमै सू भी आप नी हार्या । भाई केवण रा, नाम रा तीन है, पण सगळा आप-आपरी दुनियादारी रा गोरख धधा मे लागग्या । बापू सुरग सिधारग्या । पाछै पाटवी वेटै रौ फरज निभावण वाली आहीज एक वैनजी ही । बापू रौ काज किर्यावर । छोटी वैणा री पढ़ाई लिखाई, वियाव सादी, जापा धापा, मायरा मुकळावा रौ खरचौ, ब्याई सगा, गिनायती, जवाई-भाई री मान मनवार, सीख-बाड़ी काई-काई गिणाऊँ म्हारी आगळिया मे इतरा पैरवा हीज कोनी । दिल-दरियाव री ज्यान खरचौ करै । आपरी मौज-मस्ती । ऐस-आराम, राग-रग, पतिपरमेसर रौ सुख । बेटा-बेटी रौ सुख । घर गिरस्थी रौ सुख । सगळा ने होम दियौ परिवार री सुख री आहुति मे । जनम भर माथा मे सिन्दूर नी भरणै अर करम माथे हिंगलू री टीकी नी लगावण रौ मजदाठीक फैसलो आप घणा पेली ही कर लियौ । चढ़ती जवानी में इस्यौ उदाहरण आगती-पागती मे विजळी रौ हजार सू भी जियादा पावर रौ लट्टू जो'र सम्भाळू तो नी मिलै । धन है इसी नारी रूप मे देवी नै, जो आप रौ तन-मन धन हसता हसता समरपण करता नाका सळ नी घाल्यौ अर नी मूडा सू सिसकारौ काढ्यौ ।



चांदा भुवा

ओम प्रकाश तँवर

चांदा भुवा रै मरणै री खबर सुणता ई आखै गाव मे शोक छा'ग्यौ । सगळा रा मूढा लटकग्या अर आख्या गीली हुगी । भुवा रै घर री बाखळ अर गळी मिनखा स्यू भरगी । आगणै मे लुगाया री भीड़ लागगी ।

अतिम सस्कार वास्तै बाजार स्यू घी, चन्नण, नारेळ, खोपरा अर ढेर सारी दूजी सामग्री ल्याई गई । फटाफट वैकुठी त्यार करी । नान्हा-मोटा सगळा भदर होया। गाजै-बाजै स्यू भुवा री शव यात्रा निकाळी । घर स्यू मसाण ताई पूरै गेलै टाबर अर मोट्यारा मे दण्डोत करणै री होड़ लागी रै'यी । तीसरै दिन फूल चुग्गा र गगाजी घाल्या । बारै दिना ताई रोज दिन मे लुगाया हरजस गावती । रात नै मोड़ै ताई सतसग होवतो अर इग्यारमे दिन पूरी रात सागोपाग जागण लाग्यो । बारवे नै गगा प्रसादी वटी । सिंझया गाव रा खास-खास आदमी भेळा होयनै तै करी क भुवा आपरी पूरी उमर गाव री निस्वारथ सेवा म लगाई ई वास्तै इस्यो काम कर्‌यो जावै क भुवा रो नाम अमर हो ज्यावै । सुझाव तो कई आया पण आखिर सरब सम्मति स्यू तै हुई क भुवा रै नाम स्यू एक कन्या पाठशाळा बणाई जावै । मकान री तो कोई समस्या नी ही, क्यू क भुवा आपरो मकान मरणै रै थोड़ा दिन पैली गाव री पचायत रै नाम कर दियो अर दूजै खरचै रो भार पचायत आपरै ऊपर ले लियो ।

पूरो गाव भुवा रो रिणी हो । भुवा निस्वारथ भाव स्यू लगातार साठ स्यू ई बत्ती बरसा तक पूरै गाव री भाग भाग'र सेवा करी । भुवा बाळ विधवा ही । सासरो कोई दूजै गाव मे हो पण विधवा हुया पछै भुवा कदैई सासरै नी गई अर न ई कोई सासरै रो कोई आदमी भुवा स्यू मिलणै आयो । भुवा आपरै मा-बाप री अेकली औलाद ही अर मा-बाप भी आपरी जवानी मे ई आगै चल्या गया । ई वास्तै इया तो ई ससार म भुवा रो कुण ई नी हो पण भुवा रै स्वभाव अर निस्वारथ भाव सेवा रै कारण स्यू समूचो गाव भुवा नै आपरी समझतो अर भुवा रै ई आ बात कदैई

मन मे नी आई क बी'रो ई संसार म कोई नी है । भुवा गाव रै हर आदमी नै आपरो भाई, भतीजो अर टाबर समझती अर हर लुगाई नै बैन, बेटी या भाभी-काकी री नजर स्यू देखती ।

गाव रा सगळा लोग बी'नै भुवा कह नै बतळावता । भुवा कितैक बरसा री ही आ तो मै नी बता सकू पण जद स्यू मैं समझ पकड़ी ही जद स्यू लेर भुवा रै मरणै ताई मै तो बी'नै इस्यी ई देख्यी ही । भुवा री चाल मे, काम करणै री फुरती मे अर बोली मे मनै तो की फरक नी लाग्यो । पूरी साढ़े पाच फुट लाम्बी, भर्योड़ै डील री, थोड़ै सावळै रग री भुवा धोळी धोती, धोळो कब्जो, धोळो लहगो अर दोनू हाथा मे चादी री धोळी दो-दो चूड़या पैरती । पगा मे कपड़ै री गोरखपुरी जूत्या राखती । दो तीन बरसा सू मोटै काच रो अर भूरै फ्रेम रो चस्मो लगावती ।

भुवा रो घर म्हारलै घर रै एकदम सामै हुणै स्यू भुवा नै नजीक स्यू देखणै रो मनै मौको मिल्यो । भुवा रोज झाझरकै उठती । पूरै घर म झाडू देवती । स्नान कर'र मिन्दर जावती । चाय पी'र घर स्यू निकळती जिकी कोई ग्यारा-बारा बजी पाछी बावड़ती । आपरै हाथ स्यू रोट्या बणावती अर खाय'र पाछी बारै चली जावती । गरमी मे कदेई सी दोपारी मे थोड़ी देर आराम करती नी तो सारै दिन काम म लागी रैवती । साझै रोज खिचड़ी कढी या दळियो बणा'र खा'र बारै चूतरी पर बैठ ज्यावती । चूतरी पर गळी री दूजी लुगाया भी आ'र बैठ ज्यावती अर मोड़ै ताई हथाई चालती । भुवा या तो कोई रामायण-महाभारत रै किस्सो सुणावती या राजा हरिश्चन्द्र, भगत पेळाद, सती सावित्री री कहाणी सुणावती । भुवा स्यू कहाणी सुण'न रै वास्तै गळी रा छोटा छोटा टाबर भी मोड़ै ताई बैठ्या रैवता । भुवा न तो खुद की री चुगली करती अर न ई सुणती ।

गाव मे कीरै ई सगाई, ब्याह, जापो हारी-बीमारी अर मरणै रो काम पड़तो धादा भुवा आगै त्यार मिलती । जद ताई भुवा नी आ ज्यावती लुगाया सगाई-ब्याव अर राती जोगै रा गीत शुरू नी करती ।

भुवा री गाव मे पूरो दबदबो हो । सासू-बहू री झगड़ो देराणी-जेठाणी रै मनमुटाव अर भाया भाया रै बटवारै रो सलटाव भुवा चट कर देवती । कीरी भी आ हिम्मत नी ही क भुवा रै फैसलै नै पाछो फेर दै । भुवा पेटै पाप नी राखती अर दोषी रै मूढै पर खरी-खरी सुणाणै मे सकोच नी करती । ई वास्तै भुवा रो सगळा कायदो राखता ।

भुवा म काम री इती फुरती ही कै पचास आदम्या री पक्की रसोई अेकली बणा देती । छोटै मोटै काम मे सीरै, दाळ, चावल अर पूड़या रै वास्तै दूजै नै बुलाणै री जरूरत नी पड़ती ।

भुवा नै नाड़ी रो ग्यान इस्यो गैरो हो कै बीमार री नाड़ पर हाथ रखता ई बताय देती कै बुखार सी-सरदी रौ है कै टाइफाइड या निमोनियो। भुवा रै घूटी अर घाटै रा कई देसी नुस्खा इस्या काम करता कै टावरा रै वास्तै तो गाव वाळा नै डाक्टर खनै जाणै री जरूरत ई कोनी पड़ती। ई गुण रै कारण भुवा रै घरै मिलणिया रो तातो लाग्योड़ो रैवतो।

निस्वारथ भाव स्यू सगळा री सेवा करणै रै कारण स्यू ई पूरो गाव भुवा नै आपरी समझतो अर भुवा रै भी मन मै कदेई आ बात नी आई कि बी रै कोई सगो भाई या बेटो कोनी। ओ ही कारण है कै भुवा रै मरणै पर पूरो गाव आसू बहाया नी तो आज सागी बेटा कोनी रोवै।



लघु कथा

सपनौ

मीठालाल खत्री

मै नौकरी री फारम भर रह्यौ हू । सगळी खाना फूर्ति कर्‌या पछै फारम रै लारली बाजू एक छपी छपाई शर्त माथै म्हारी आख्या अटक जावै ।

'म्हैं घोषणा करू कै ऊपर लिख्योड़ी सैंग बाता सही है । लिख्योड़ी म्हारै टाबरा री सख्या वर्तमान मे सही हैं । ऊपरवाळा टाबरा री सख्या मिळाय नै तीन सू वत्ता टाबर म्हारै नी हुवैला । तीन टाबरा पछै मै आपो-आप घर रा खर्चा सू नसबदी करावूळा । टाबर चाहे छोरा व्है कै छोरिया । तोई म्हारै तीन सू वत्ता टाबर होग्या तो नौकरी देवणिया नै मनै नौकरी सू काढ़ण री पूरी हक होसी । कोई कोर्ट-कचैरी री कारी पण लागसी नही ।'

इण शर्त रै नीचै म्हनै दस्तखत करणा है । आ शर्त पढ़ता ई म्हारी माथौ भन्नाट करण लागौ । पेन पकड्योड़ो हाथ टेबल माथै अठी-उठी आपो-आप सरकण लागौ । हाथ रै सरकता ई शर्त माथै चाय ढुल जावै । कप ऊँधौ हुय जावै । शायद म्हारी लुगाई फारम भरती वेळा टेबल माथै चुपचाप चाय धर नै गयी परी हुवैला । पण मनै कैय नै तो जावती । कर दियो फारम रो सत्यानास ! घणी आफळ कर्‌या पछै तो फारम हाथ लागो हो । परसू ई आखरी तारीख है । लुगाई माथै रीस आवण लागी । मै जोर सू लुगाई नै हेलौ पाड्यौ कल्पना री मा

हेलो पाड़ता ई म्हारी आख्या खुलगी । कठै चाय नै कठै फारम ! फकत एक सपना रै सिवा की ऩी हो !



जीवण-दान

छाजूलाल जाँगिड़

एक किसान पटवार-घर जायनै पटवारी सूँ रामा स्यामा करकै बोल्यौ- "पटवारी जी ! आप तो मनै कबर मायै पूगा 'र' दफणा दियौ । पण मै जीवतो होग्यो आप सूँ मिलवा आयौ हूँ ।"

'म्हू आपरौ मतलब नी समज्यौ ।'

किसान उथली दियौ -"लारला दौरै मे आप दारू रा नशा मे मेरी मौत दिखा'र' मेरो इन्तकाल भर दियौ । मेरी खेत पलटी कर दियो । मेरी ऊमर सूँ भी वड़ा मेरा बेटा बणा दिया । आपरी महरबानी सूँ वै मेरै खेत रा हकदार हुवैला । पण आपरी शिकायत म्हू वडौड़ा अफसरा नै करस्यू । आप सैं पूरी पूछताछ हुवैली । आपनै पूरो ब्यानो देणो पड़ेली ।"

अफसर बापड़ा म्हारौ काई विगाड़ सकैला ! वै तो दसखत री मशीन है । पटवारी मनै एक बात पूछी, "आप म्हासू इयै गाँव रै माय आया पाछै किती बार मिलवा आया ?" आप सू म्हू तो अेक वेर भी मिलवा नी आयौ ।

' आपरै नाम रो दूसरो मिनख मरग्यो । वी नाम री भोळ मे आपरा खेत रा नम्बर पलटी होग्या । आप रै नाम अर वी रै नाम मे एक हरफ रो भी फरक नी हो। ' पटवारी बोल्यौ ।

'पटवारीजी ! यो तो विश्वास है आपरी नौकरी वचाणै सारू आप काई न काई गळी काढ लौगा । पण आप रै रिकाड मे मनै जीवतो किंया करौला ?"

"आप मनसा माता री मनौती करो । बीरी भोग चढाऔ । बीरी सीरणी छोटा वड़ा सैनै वँटौ । म्है अफसरा री मानस पलटा देसू । आपनै जीवण दान मिल ज्यासी।"

"पटवारीजी ! आपरी अकळ रौ थाह कुण ले सकै है ? इण धरती पर आप भी दूसरा भगवान हो । आप जीवतै मिनख नै मारद्यौ हो अर मरौड़ा मीनख नै पूठौ जींवतौ करद्यौ । धन है आपरी बुद्धि रा चमत्कार नै ।" पटवारी मन म तळसू मळसू होग्यौ ।



लिछमा रौ अरथ बतावां

जगराम यादव

बिना सीटी दिया ही लोकल गाड़ी चाल पड़ी । मैं भी जल्दी सी म्हारी थैली लेर सामलै डिब्बे मे चढ़ग्यो । डिब्बो छोटो हो और भीड़ घणी ही । लारली सीट पर एक जग्या खाली ही । मै भी थैली मेलर बैठग्यो । सामनै एक बाई बैठी ही । कान मे खोटा सुल्या, गळा मे चीदूया को सोवणो सो काठळी, मूडा पर गेहरा माता रा वण, रग काळो, आख मे मोटो सो फूळो, नाक मे सेडा री लूम लटकती, गळा मे पसीने रा सीवाल देखर विचार आयो, आजादी रा पैतालीस वरस गुजर ग्या, म्हांकै टाबरा रो ओ हाल किता क दिन और इया रैसी । गाड़ी धीमै धीमै चाल री ही पण म्हारै मन री भावना इसू ही तेज भाग री ही । म्हारी मन डट्यो कोनी, मै बाई नै पूछ ही बैठ्यो, बाई थारो नाव काई है ? बाई आपरा पीळा दात दिखावती, तड़ाक सू जवाब दियो, 'लिछमा रामूड़ा की ।' मन मै सोच्यो ओ रूप अर ओ नाव । मन मे विचार आयौ, आ गळती वी ब्राह्मण री है जकौ ईंरी नाम लिछमा राख्यौ या वी भगवान की जको इण नै ओ रूप दियो । पाछौ सोचकर म्हारी मन बोल्यौ – न तो आ गळती भगवान की है, न ब्राह्मण की । आ गळती तो रामूड़ा की है जको, लिछमा को अर्थ ही कोनी जाणै । आओ सगळा लिछमा न लिछमा बणावा । ईनै भणावा अर देश मे नवो सूरज उगावा । रामूड़ा नै लिछमा को अर्थ बतावा । आपा सगळा जागाला, जद ही लिछमा लिछमा बणैली । आजादी रो सपनो साचो हुवैला । देश मे नवो हुलास छावैलो ।



बखत रौ मोल

भरतसिह ओळा

मुखबिर नै आ'र थाणेदार सू कह्यो -"साब बैंक लुटीज रैयी है । चार मिनख है ।"

थाणेदार सिपाया नैं वी बखत ई हुकम दियौ– "वर्दी लगा'र सैंग तैयार हो जाओ ।"

थोड़ी ताळ माय सिपाही तैयार होयग्या ।

"सा'ब सैंग तैयार है ।" सिपाही आ'र बोल्यो ।

"काई खाक तैयार हौ । ओ टोपी लगाण रो तरीको है ? जार पैली टोपी ठीक कर'र आओ ।"

दूसरै सिपाही कानी देख'र - 'ऊभा-ऊभा म्हारी मूंडी काई देख रैया हो ? आप रै जूता कानी देखौ । बुरश मार र झटाझट आओ ।"

' अर थे काई रोणी सूरत बणा राखी है । मूंडी धो र आओ ।"

इतणै माय दूजो मुखबिर आ र कैयो ' सा ब उग्रवादी बैंक लूट र भाजगा ।"

थाणेदार जीप रवाना कर'र थाको फाड्यौ– 'तुरत जीप माय बैठो । बखत रौ मोल पिछाणौ । '

जीप सिपाहियाँ सू भर्योड़ी बैंक रै कानी भाजी जाय रैयी ही ।



एक हीज बिरादरी रा...

पृथ्वीराज गुप्ता

"घरा हो कै फूला भाई ?" मास्टरजी आवाज दीवी।

"आ जाऔ, माय आ जाओ नी मास्टर जी !" फूलो धोवी बोल्यौ अर घणै मान सू मास्टर जी री आव भगत करी।

"काईं पीवोला गुरु जी ? आज तो म्हारी पोळ पवित्तर हुगी आपरै चरणा सू।"

"आज काईं हुई'ज लादग्यो आपनै ठट्ठा करण सारू ? काईं शिक्षक दिवस पर इतरो मान कर रया हो ?" मास्टर जी बोल्या।

"आप सू ठट्ठा कर सका हा काई माई-बाप, आप तो टाबरा रा गुरु हो पूजीता हो सगळा रा। म्हारी बिरादरी रा हो।" फूलो बोल्यो।

"म्हारी बिरादरी रा हो" सुण र मास्टर जी चौक पड़िया अर बूझयौ–

"फूला ! ओ काईं कैवी, थारी म्हारी बिरादरी एकै किया हुई ?"

"हू निपट इग्यानी हूँ गुरूजी, पण आप तो ग्यानी हो। सुणी है केवट राम जी सू सरयू पार करवाण रा पइसा नी लिया हा अर कैयो हो – काईं केवट, केवट सू पइसा लेवै है ?"

"पण कठै राम जी अर कठै हूँ। कठै केवट अर कठै आपारी बिरादरी एकै कैया हुवी ? आ बात खुलास करनै समझा।"

"हू इग्यानी सू ठट्ठा नी करो गुरुजी। इतरी बात जदै म्हारी समझ माय आ जावै अर आपरी समझ मे नी आवै हूँ, आ नी मान सकू।" फूलो बोल्यो।

मास्टर जी चाय पीवता रैया अर सोचता रैया। "अच्छा भाई फूला, अबै बता कपड़ै रा कतरा पईसा देऊँ।" वे बोल्या।

"हू आपनै हणा ई ज अरज करी है मास्टरजी एक धोवी सू काई पईसा लेवै ?" फूलो आपरी बात पर अडिग हो। मास्टरजी नै घणो गभीर देख'र फूलो बोल्यो– 'गुरु जी आपा दोनू मैल धोवा। फरक फगत इतरी ई ज है हू तन रो मैल धोऊँ अर आप मन रौ।" फूलै री बात सुण र मास्टर जी हासण लाग्या अर कपड़ा लेयनै चल्या गया।



माँ

अरुणा पटेल

हांसली री चोट स्यू बाजती थाळी री टकोर सगळै गाम मैं सुणीजी "अमरी रै गीगली हुयी है", गुड़'र बाकळी सगळै घरा मैं बांटीजी । डूमण्या गीत गाया । बिरादरी मैं मनवारा चाली । दादी युयको नाख्यो । माथै काळो टीको लगायो ।

अमरी गीगलै नै थोवो प्यावता इसी मुळकै जाणे इन्दरासण ईनैइ मिलग्यो हुवै । कान र, आख्या गीगलै कानी चौबीसू घन्टा । थोड़ो सो अणमणी देख'र देवी देवता मनावै ।

गीगलै नै अमरी काण्या गीत, बाता सैं सुणावै, सगळा सू मोटी देखण सारू बरत करै - नजरिया घालै । खुद गीलै सीलै मैं ई सही पण गीगलो चैन री सौवै ।

घरआळा स्यू गीगलै री बात्या करती कोनी थाकै । एक एक बात नै सुणावै - कदी पा पा चलावै कदी गोदू मे राखै, दूधो प्यावै, गीगलो चालै, रागोळ्या करै, नाचै, अमरी ताळ्या बजावै । गीगलो, गाया बकर्‌या घेरै, मा सागै भातो ले र खेत जावै पूठो आवै । पोसाळ जावै - "अ" "आ" बाचै । मा फूली कोनी समावै ।

गीगलो खैले । घर रो काम कोनी करै । किन्ना उडावै, घरै बाप हाका करै, पोसाळ मे गुरुजी कूटै । कठै जावै, दो-दो च्यार-च्यार दिन बारै रैवै । मा फिकर करै । पण आता इ खाण पीण नै धोखो दे देवै । बाप जे की कैवै तो गीगळै री पख लेवै ।

बाप देखै बेटो हाथा स्यू निसरग्यो मा सोचै टाबर है - खेलणै खाणै रा दिन है । पण ओ के - अैइ धीरज कोनी राखै आजकाल का टाबर छिनेक मे ई सागै मड ज्यावै ।

पी न की तो करा । काल रो गीगलो आज ब्याईजग्यो बीनणी आयगी । दो दिन उच्छब रह्यो । देखता देखता घर मैं कळै माचण लागगी । बटवारो हूग्यो । मा फे र ई बेटै री भीड़ लैवै ।

बूढियो बीतग्यो । मा पोता पोतिया री सेवा टैल मे रैवै । घर बुहारै । कपड़ा धौवै । बहू रा मैणा सुणै । एकलै मे रोवै पोता नै असीसा देवै ।



व्यंग

मांचै रा मजनूं

त्रिलोक गोयल

हर आतमा मे परमातमा रा दरसण करणहाळा अर जीवौ जीवादूयौ हाळी 'थ्योरी' ने मानण हाळा आपा तत्त्व ज्ञानी लोग खटमलारै सारू जकी सै सू सोवणी सरूप कॉलोनी वणा मेली है उणरो नाँव है 'खाट'। 'क' तो खाट मे रैवा री वजै सू औंरो नाँव खटमल पड्यौ है कै खटमला रो रैवास होवा सू इणरो नाव खाट है। जीया आप आप री सामरथ गैल मजूरा री झूपड़ी आम आदमी सारू घर-मकान, मन्त्र्या-अफसरा रा बगला-कोठी, सेठ-साहुकारी की हेल्या अर जमीदारा रा गढ़ हुवै है बीयाई खटमल ही भाँत भाँतरा हुवै है। राजनीतिक खटमल सामाजिक खटमल, धार्मिक खटमल, शैक्षिक खटमल औंर ताई खिड़क्या किवाड़, भीता मे कोचरा, ससद सू सिनेमा हाल री कुरस्या रै माजना सारू रैवास है। आप आपरो धरम है अर आप आपरो करम। खटमला रो परम धरम है लोगा री खून चूसणी। आपणी परम करतव है आपारी रगत वा नै चूसाणी। तो रामजी भला दिन दै, हूँ जिकर करवी चावै हो खाट री, अर सीमा रो अतिक्रमण कर र वीच मे ही वडगी खटमल। अै राममार्‌या आपरी वाण सू वाज थोड़ी ही आवै है। ठीड़ कुठीड कठेई जा बैठे। तो माया! म्हारै वाळपणै मे आ चौपाई चैपाटी अर खाट पनरा वीस रिपट्टी मे मजा सू आ जाती ही, जो ऊमर को राछ होती ही। आज वाही खाट 'ब्यूटी पार्लर' मे जार आपरी रूप सजा-सवार, कविया ज्यू उपनाव 'पलग' राख र, वढ़तीड़ी मुहगाई मुजब आपरी मोल वढार पाँच-सात हजार विना अड़वा ही नी देवै। वाई रे व्याव म चावै और क्यू दूयो र ना दूयौ पण तन-मन रै मिलाप खातर (मन तो चावै मिलो र मत मिलो पण तन तो आपै आप ही मिल जावै है) कै जीया आच रै नेड़ै होण सू घी पिघळै चुम्बक सू लोहौ खिचै ईं ने कहूवे है गळै पड्यौ ढोल वजाणो। पलग देणो तो सास्कृतिक, सामाजिक, धार्मिक सगळी ही दीठ सू कम्पलसरी है, 'ऑपसनल' कोनी। ईं नै देता वेटी रै वाप नै ईया पसीनो आवै जाणै पब्लिक स्कूल मे टावर नै भर्ती कराता।

आजकाल एक नुवादी बात औरू सरू हुई है कै लोगा ने डवल-वैड देवो-लेवो ही दाय आवै है। म्हारै मूढ मगज मे आज ताई आ समझ मे नी वैठी है कै जणा व्याव री मतलब ही दो जणा नै एक करणै री सामाजिक मानता है तो पछै अै दो पलग देर वानै अळगा-अळगा क्यू राखवौ चावे है ? शायद दिन दूणी वढतोड़ी जनसख्या सू डरपरा र ओ पडयत्र, ओ आविस्कार जरूर ही परिवार कल्याण हाळा करूयी है। कहीजै है नी कै "आवश्यकता ही आविस्कार री जननी है।' जे म्हारा सुसरा जी ही दायजा मे डवल-वैड देणै री भूल कर वैठता तो रामजी री किरपा सू अै जिका नीठ पाँच टावर आख्या दीख्या है, वै कीकर दीखता ? डवल-वैड रै चलण रौ एक और भी कारण दीखे है वो ओ है कै- पैला एक वार धणी लुगाई हुया पछै सात भौ ही आ गुळगाठ नी खुलती। पण आजकाल तो जीया मैला गाभा र फाटी पगरखी वदळै है ज्यू तलाक दे-लेर परौ पिण्ड छुडावै। नवादे पण रो सवाद ही न्यारौ हुवै है। न्यारा होती वखत आप आपरौ एक एक पलग ले पधारौ, मिनख नै सोवा रौ सतूनो तो चायजै ही।

आखा मुलक मे ई महताळू चीज 'खाट रौ चलण होणै सू खटिया, खाटला, खटोला ईं रा कैई रूपान्तर है। वीया खाट पै मरवो चोखौ नी मान्यौ जावै है पण जीआ नेता आखरी सास ताई कुरसी नी छोड़णौ चावै वीया ही कैई मरवा वाळा मरतै दम ताई खाट नी छोड़े। इव नी छोडै तो नी छोडै आगला री मरजी मरवाळा रौ कोई विगाड़ै भी काई। जीते जी जीनै खाट सू नी उतार सक्या उण री आखरी इच्छा रौ ध्यान नै राखता थका आखिर घर हाळा उणनै खाट सू उतार'र ही मानै।

सरम री बात है क खाट री महिमा वखाण मे हाल हिन्दी साहित्य घणो पाछै है, पण उर्दू सायर वाळ री खाल काढ़ी है-

कल खवर आयी थी वो, खटिया से उठ सकते नही।
आज दुनिया से चले जाने की ताकत आ गयी।

खाट देखै सुणै तो है ही पण राता री सुन्याड़ मे बोलै भी है। एक राजस्थानी लोकगीत मे ही ईं रौ सरस वखाण याद आगो

ढोल्यो म्हारा वाप रो, लाँबी चौड़ी ईस।
आगा सरको वालमा, थाँपै आवे रीस॥

फलाणो खाटला मे पड्यो पड्यो सिड़े है। म्हारे सू ची चप्पड़ करी तो हाथ पग तोड़ नै खाटले मे पटक देस्यू। रात रे दावण खीचणे सू छोरया जलमणै रौ खतरौ है। ऊपर पगाथै अर नीचे सिराथै करर खाट ऊभी करणो अपसगुण है। छोड़ो ईस र वैठो वीस। इसी पचासू वाता है ज्याने जाणनो वीत जरूरी है।

हाल तो लाई भगवान रै खुद रै ही रैवास रा साँसा पड़रया है। म्हारी छोटी सो कमरौ खाणै सोणै पढ़णै लिखणै, मिलणै-जुलणै रै सगले ही काम आवै है मकाना रा

तोड़ा, बढ़तीड़ी भीड़ अर आकास भीटता भाड़ा सू बहुसख्यका री म्हारै जेड़ी हीज दसा है। कैया नै तो मैं ही नजीक सू जाणू हूँ, पण कोई रा पड़दा उघाड़णे सू आपा नै कै मतलब। दिल्ली, मुबई, कलकता मे तो मिनख माखी माछर ज्यू भर्‌या पड़्या है। वाँनै तो चाळ, सराय जस्या मकान माथौ लुकावा नै मिळ जावै, आही वौत है। वापड़ा नै बगला कोठी कठै पड़्या है। तो म्हारै उण दड़वे मे एक खाट है। खाट काँई है मोटै मिनखा ज्यू अकड़र अमचूर हुयौड़ी है। अठीने जोर देर नीची करौ तो वठी नै ऊपर पग करलै, वठीनै बैठो तो अठीनै ऊचा हाथ करलै। जदा ती म्हू उणरै माथै पसर्‌यो रैवू उत्ते तक तो ठीक, पण ऊठता ही पाछी वा की वा तीर कमाण, टावरा री डोलर हीडौ। आजकाल सहरा मे तो "काम खाती को' गळी गळी आवाज देवणिया आवै नी। सगळा 'फर्नीचर हाउस' खोल खोलर छोडा छोलै। जे लाँवौ काम हुवै तो भलाई घरै आवै। वै भी साठ सत्तर रिप्या नितका। ऐडवान्स, चा पाणी, लच ऊपर से न्यारा। तो इस्या अै खाती भला एक खाट सुधारणै रै छोटै से काम सारू कद आवै ? पण वास्को डी गामा रै जिया म्हारौ छोरो एकर हेर साध र एक जाण पिछाण रा खाती नै पकड़ ल्यायौ। वो की काट पीट, ठोका पीटी करी र आपकी कारीगरी लगाई। पनरा रिप्या लेर गवाड़ी रै वारै ही नी पूग्यौ कै कूतरा री पूछ ज्यू पाछी ज्यू की त्यू। खाट ओछी हुगी जो बत्ताई मे। इस्या नकटा निसरड़ा लोगा नै सूध राखणै री तो बस एक ही उपाय है क वा नैं काठा दाव नै राखौ।

तो म्है ठौड़ का ठाकर माचारा मजनू खाट विराज्या थका ही आखी दुनिया भर री पचायत्या कर्‌या करा। म्हा की रात ही नी, घणकरो दिन ही माचा मे पड़्या पड़्या कटै। बासी मूडै चाय री भोग लागै माचा मे। गुटका - तमाखू फाकर प्रेशर वणावा माचा मे। अखबार वाँचा माँचा मे। बसा रे अड्डे पै जिया खाट माथै पटियौ लगार डिराइवर कण्डक्टर जीमै विंयाई म्है भी भोजन करा माचै मे। जे कोई करमारौ मार्‌यो वारी, बारणा सू चालतो फिरती दीख जावै तो कूकड़े री ज्यू उकडू मुकडू हुया बठै सु ही हेलो मारा "आओ जैन साव। आओ विराजो तो सरी, अैड़ी कै जल्दी हो री है ? अै तो जीवणा जदा ती सीवणा ईया ही चालसी।'

ईया पीडी नी छूटै तो सभ्यता रा नाँव पै लाई जैन साव ने विना मन कै ही हँसता मुळकता आर टूटै मूडै पै बैठणौ ही पड़े।

अबै म्हाँ भूत भविस रा जाणकार माचारा मजनुआ री फ्रण्टीयर मेल स्पीड पकड़ लै। साँच तो आ है जैन साव क आजादी पछै ईं रै पछै जगत भर री वाता चालवा लागती।

अतरा मे अग्रवाल साव भी अखवार माँगवा नै आ फँस्या। ईयान की केई फालतू चीजा वै माँग ताँग र ही काम चलाता हा। आँधो काँई चावे दो आँख्या। हूँ वा नै भी माचै रै एकै कानी विठा लियौ। आँनै थोड़ो समाज सुधारक वणनै रो चसकौ हो। वोल्यौ "जैन साव जितै तैंई समाज नी सुधरै तद ताई देस कीकर सुधरै ? न्यारा न्यारा समाज मिलर ही तो देस वणै है। आज ही ईं बापखाणा दहेज

राकस रा चक्कर मे दस-पाच बहू बेटया रोज बळै है । ब्याव शादया मे जुवान जुवान छोरा-छोरी दारू पीपीर सड़का पै भूडा नाच नाचै । लाख, डोढ लाख तो डेकोरेसन मे पूरा होवा लागग्या । होटला मे बराता ठहरवा लागगी । काजू किसमिस, मलाई-पनीर रा साग वणवा लागग्या । बापड़ै गरीब को तो पूरी तरिया मरणहीज है । कोई आँनै बूझणें हाळो नी है क था कनै नोट छापणै री मसीन है कई ?"

मनै हँसी आयगी । अबार आखा तीज पै ही तो अग्रवाल साब रै लाडेसर रौ ब्याव व्हियौ हो । पिचेत्तर हजार रोकड़ । पूरी पाच तोळो सोनो टीका मे ही लियौ हौ । वैस-बागा, मीठी चूठी, देणी-लेणी न्यारौ । मों जाजम पै थाळी मे खाली इग्यारा सौ रिप्या ही दिखाया गया हा । बापड़ो कबीर वार घालतो घालतो ही मरगो क

कथनी थोथी जगत मे, करणी उत्तम सार ।
कहै कबीर करणी करै, उतरै भव जल पार ।।

मै बोल्यौ– अग्रवाल साब जे पगत्या पगत्या ही चढ़ा तो समाज सू पैला मिनखा नै सुधरणै री जरूरत है । मिनखा ही सू तो समाज बणै है । मिनखा रौ 'मोरल' तो आज इत्यौ गिर्‌यौ है के हाय हाय नै खा रियौ है । डाकू साधुआरा भेष मे धूणा तपै है ।

माथुर साब बोल्या– गरीबी रौ राग अलापबौ तो बिरथा है । भाई साब, मनै तो गरीबी कठैई दीखै ही नी । डीजल पैट्रोल रै लाय लागगी तो ही पैला सू चौगणा मोटर स्कूटर फर-फर उड़ै है । घर-घर मे टी वी होता सता भी सिनैमा घरा पै ब्लैक चालै । माथा फूटै । दारूआरी दुकाना पै दसगुणी बिक्री बढ़गी है । रेला-बसा रा भाड़ा बढ्‌या । पण बाकी वा पिग्घी पड़री है । होटल सस्कति पनपरी है । 'फॉरेन रा गाभा, तेल-साबण काम मे लिया जारिया है । पीसी तो जाणै पानी ज्यू बहरयी है, फेर ही आप कहो क गरीबी है ?

तो माया ! रामजी री माया, कठै ही धूप कठैई छाया । ईया म्हारै जेड़ा लाखा निकरमा अैदीराम टोळ खाटलै मे पड्‌या पड्‌या सगळी समस्यावा सुलझावौ करे है । कह्यो है-

मला जण्या ये पद्‌मणी नदी मेरा टोळ ।
हाल्योड़ा हाले नही बैठा करे किलोळ ।।

आँसू भरी माखी तो ऊडै नी । माचा मे मचका करै र बाता रा घसड़का मारै । म्हारी एक मुनी कविता है "मास्टर सू मिनिस्टर ताइ, कण्डेक्टर सू कलेक्टर ताई, अै जतरा भी टर' है अै लारला चालीस वरसा सू खाटलै मे पड्या-पड्या टर्र-टर्र कर रिया है । जे अै कर' कर को पाठ पढ लेता तो जाणै आज मुलक कठै को कठैई पूग जातो । जे कदैई क्रान्ति आई की बदळाव आयौ तो नुवी पीढी रा अै घटाऊ गरीब बेसहारा लागरीया जावी ।

खीर रौ सबड़कौ

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

आ वात तो सगळाई जाणै कै भात भात री चीजा ई दुनिया म्हे खावण सारू बणाय राखी है । न्यारी न्यारी चीजा रा न्यारा-न्यारा सवाद नै खावण रा तरीका ई जुदा जुदा हुवै नी तो चीज रै खावण री आणद ई नी आवै । दाळ-रोटा, खीच-खाटौ, मालपुआ-खीर-घेवर, रायती नै एड़ा घणकरा जोड़ा है जिका जीमण रौ आणद सवायौ वधावै । उणा मे एक भोग- खीर । अवै यू तो खीर खाजा रौ मेळ ठावकौ बणै । पण एकली खीर ई की कम कोयनी ।

भात भात री खीरा बणिया करै । चावळा री खीर, केळा री खीर, मींजिया री खीर, कोळा री खीर, खाखरा री खीर, दाखा री खीर, मेवा री खीर नै आटा री खीर आद कठा ताई गिणाऊ ! लोग दूध ऊवाल नै खीर बणाया करै । पण उण म्हे ई न्यारी-न्यारी खीरा । खूणिया खीर, पूणछिया खीर, पोरवा खीर, टीकीया खीर नै डूबकिया खीर ई हुया करै । फेरू खीर खावण रा तरीका ई जुदा जुदा । पण असली आणद खीर खावण रौ सबड़कै विना आवै ई कोनी । आ बात इतिहास चावी है । आप ई सुणी ।

एकर जोधाणो रै मेहराणगढ किलै माय दरवार जसवतसिंह जी सगळा अमीर उमराव, ठाकरा नै रजवाड़ा रा सगला मोटा मिनखा नै नूत नै फरमायौ कै आज म्है सगला नै खीर खवावणी चावू । सगळा ई राजी व्हीया । नामी टाळवा रसोईदार तेवडीज्या । गिरदीकोट सू भात भात रा मेवा मगाइज्या ।

आछी नै टाळवी भैस्या रौ दूध मगायौ गयौ । दरबार रै घरै किण वात री कमी ? हुकम देवता चीज हाजर । असली बढ़िया जूना चावळ आयग्या । कड़ाव चढ़ियौ नै खीर बणन लागी । अैड़ी कै तो राजा भोज आपरी राणी लीलावती रा प्राण बचावण सारू बणायी ही, कै भगवान शकर री बारात सारू पारवती रै पिता हेमालै मे बणी ही । अवै ज्यू ज्यू खीर मे मेवा नै दूजी चीजा न्हाकण लागी खीर री सौरम किलै सू बारै आवण लागी । ठेठ फतै पोळ तक खीर री सौरम आय पूगी ।

राकस रा चक्कर मे दस-पाच वहू वेटया रोज वळै है । ब्याव शादया मे जुवान जुवान छोरा छोरी दारू पीपीर सड़का पै भूडा नाव नाचै । लाख, डोढ लाख तो डेकोरेसन म' पूरा होवा लागगा । होटला मे बराता ठहरवा लागगी । काजू किसमिस, मलाई-पनीर रा साग बणवा लागगा । वापड़ै गरीव को तो पूरी तरिया मरणहीज है । कोई ऑनै बूझणै हालो नीं है क था कनै नोट छापणै री मसीन है कई ?"

मनै हाँसी आयगी । अबार आखा तीज पै ही तो अग्रवाल साव रै लाडेसर रौ ब्याव व्हियौ हो । पिचेत्तर हजार रोकड़ । पूरो पाच तोळो सोनो टीका मे ही लियौ हो । वैस-वागा, मीठी चूठी, देणी-लेणी न्यारी । हाँ जाजम पै थाळी मे खाली इग्यारा सौ रिप्या ही दिखाया गया हा । वापड़ौ कबीर वार घालतो घालतो ही मरगो क-

कथनी थोथी जगत मे, करणी उत्तम सार ।
कहै कबीर करणी करै उतरै भव जल पार ।।

मै वोल्यौ– अग्रवाल साव जे पगत्या पगत्या ही चढ़ा तो समाज सू पैला मिनखा नै सुधरणै री जरूरत है । मिनखा ही सू तो समाज वणै है । मिनखा रौ मोरल' तो आज इत्यौ गिर्‌यौ है कै हाथ हाथ नै खा रियौ है । डाकू साधुआरा भेष म धूणा तपै है ।

माथुर साव वाल्या– गरीवी रौ राग अलापवौ तो विरथा है । भाई साव, मनै तो गरीवी कठैई दीखै ही नी । डीजल पैट्रोल रै लाय लागगी तो ही पैला सू चौगणा मोटर स्कूटर फर-फर उड़ै है । घर घर मे टी वी होता सता भी सिनैमा घरा पै ब्लैक चालै । माया फूटै । दारूआरी दुकाना पै दसगुणी विक्री वढ़गी है । रेला-बसा रा भाड़ा वढ्या । पण वाकी वा पिछी पड़री है । होटल सस्कति पनपरी है । फॉरिन' रा गाभा, तेल-सावण काम मे लिया जारिया है । पीसी ता जाणै पानी ज्यू बहरयौ है, फेर ही आप कहौ क गरीवी है ?

तो भाया । रामजी री माया, कठै ही धूप कठैई छाया । इया म्हारै जैड़ा लाखा निकरमा अैदीराम टोळ खाटलै मे पड्या पड्या सगळी समस्यावा सुलझावौ करै है । कह्यो है-

भला जण्या ये पद्मणी नदी मेरा टोळ ।
हाल्योड़ा हाल नही वैठा करे किलोळ ।।

ऑसू मरी माखी तो ऊडै नी । माचा म मचका करै र वाता रा घसड़का मारै । म्हारी एक मुत्री कविता है "मास्टर सू मिनिस्टर ताइ, कण्डेक्टर सू कलेक्टर ताई, अ जतरा भी टर है, अै लारला चालीस वरसा सू खाटलै मे पड्या-पड्या टर्र-टर्र कर रिया है । जे अै कर कर' को पाठ पढ लेता तो जाणै आज मुलक कठै को कठैई पूग जातो ।" जे कर्दई क्रान्ति आई की वदळाव आयौ तो नुवी पीढी रा अै खटाऊ गरीव वेसहारा लोगहीज ला पी ।

खीर रौ सबड़कौ

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

आ बात तो सगळाई जाणै कै भात भात री चीजा ई दुनिया म्हे खावण सारू बणाय राखी है । न्यारी न्यारी चीजा रा न्यारा-न्यारा सवाद नै खावण रा तरीका ई जुदा जुदा हुवै नी तो चीज रै खावण रौ आणद ई नी आवै । दाळ-रोटा, खीच-खाटी, मालपुआ-खीर-घेवर, रायतौ नै एड़ा घणकरा जोड़ा है जिका जीमण री आणद सवायौ बधावै । उणा मे एक भोग- खीर । अबै यू तो खीर खाजा री मेळ ठावकौ बणै । पण एकली खीर ई की कम कोयनी ।

भात भात री खीरा बणिया करै । चावळा री खीर, केळा री खीर, भींजिया री खीर, कोळा री खीर, खाखरा री खीर, दाखा री खीर, मेवा री खीर नै आटा री खीर आद कठा ताई गिणाऊ । लोग दूध ऊवाल नै खीर बणाया करै । पण उण म्हे ई न्यारी-न्यारी खीरा । खूणिया खीर, पूणछिया खीर, पोरवा खीर, टीकीया खीर नै डूबकिया खीर ई हुया करै । फेरू खीर खावण रा तरीका ई जुदा जुदा । पण असली आणद खीर खावण री सबड़कै बिना आवै ई कोनी । आ बात इतिहास चावी है । आप ई सुणौ ।

एकर जोधाणो रै मेहराणगढ किलै माय दरबार जसवतसिह जी सगळा अमीर उमराव, ठाकरा नै रजवाड़ा रा सगला मोटा मिनखा नै नूत नै फरमायौ कै आज म्है सगला नै खीर खवावणी चावू । सगळा ई राजी व्हीया । नामी टाळवा रसोईदार तेवडीज्या । गिरदीकोट सू भात भात रा मेवा मगाइज्या ।

आछी नै टाळवी भैस्या री दूध मगायौ गयौ । दरबार रै घरै किण बात री कमी ? हुकम देवता चीज हाजर । असली बढ़िया जूना चावळ आयग्या । कड़ाव चढ़ियौ नै खीर बणन लागी । अैड़ी कै तो राजा भोज आपरी राणी लीलावती रा प्राण बचावण सारू बणायी ही, कै भगवान शकर री बारात सारू पारवती रै पिता हेमालै मे बणी ही । अबै ज्यू ज्यू खीर मे मेवा नै दूजी चीजा न्हाकण लागी खीर री सौरम किळै सू बारै आवण लागी । ठेठ फतै पोळ तक खीर री सौरम आय पूगी ।

राज रा व्यास जी, पिरोहित जी, वेदिया जी, पुजारी जी, नै भळै कैई जणा वठै नूतिया थका पूगण लागा।

चानणी रात री वेळा ही। किलै रै म्हैला री छात माथै बैठक राखीजी। सोना रूपा रै जडाऊ प्याला माय खीर पुरसीजणी सुरू हुई। बिदाम, पिस्ता, केसर, कस्तूरी री तो पार ई नी। इतर, फुलैल, केवड़ा नै गुलाव जल रौ छिड़काव चारू कानी होयौ। खीर रा जीमाकिया धौलाघट जामा, सेरवाणी नै ऊजला गाभा पैहरियौड़ा वठै आप आप री ठौड़ विराजग्या। कैइया रै राठौड़ी पेच रा साफा नै कैइया रै पेचा पचरगा बी चादणी मे पळा पळ करै हा। महाराज पधारिया नै सगळा जै जैकार करियो जाणै अबै खीर खावण री आग्या मिलण वाळी है।

राजाजी म्यान सू तलवार बारै काढ़ली। एक पळकी हुयी नै पळपळाट करती नागी तलवार सोने री मूठ वाळी वै आपरै हाय सू हिलावण लागा। सगळा जीमणिया रा काळजा आप आप री जगै छोड़ दी। आ काई रचना खीर रै विचाळै ओ काई कौतक हुयौ। दरबार फरमायौ आप आणद सू खीर अरोग सकौ। किणी भात री कोई कमी रैयगी हुवै तो विना डर भी आप मनै कैय सकौ हो। पण एक वात रौ ध्यान राखजो जे खीर खावतै थकै सबड़को ले लियौ तो म्हूँ वी री घाटकी बाढ़ देस्यू।

कैई चाखण लागा। कैई चाटण लागा। कैई डरता देखण ई लागा। की ठावका चमचा री माग कर न्हाखी। पण एक जणौ तो बाटकौ लेय थोड़ो अळगो वैठ नै खीर सबोड़णी सरू करी। अन्नदाता फरमायौ 'थे सुणियो कोयनी हू कै कैयौ हो ?' वो पडूतर देवतौ थकौ खीर सबोड़तौ वोल्यौ, "बावजी गुना माफ हुवै, सुण तौ सगळी ई लियौ मू कोई गूगो नै बोळौ कोयणी पण औड़ी खीर री मजौ तो फटाफट सबड़का लेवण मे ईज है। आप मनै आ खीर घाटी नीचै सबोड़-सबोड़ नै उतारण दौ पछै आप भलै ई गाटी बाढ़ न्हाखजो।"

राजाजी उण नै सवासी दीवी। पछै फरमायौ असली खीर रौ पारखी नै खावणियौ तो एक ओईज है लारला तो सगला चाखणिया नै चाटणिया ईज है। वो मरद मुछाळौ खीर रा सबड़का लेवण वाळौ हो राज जोसी।

इण खीर री इत्ती मैमा लारै ईज भगवान विष्णु इण खीर सागर माय लिछमी जी रै सागै विराजमान है। खीर नै खीर रा सबड़का तो भाग्यसालिया नै ईज मिलया करै।



किम् आश्चर्यम्

श्यामसुन्दर भारती

ढम ढमा ढम ढम । सुणौ, सुणौ, सुणौ । नगर वासियो सुणौ, सुणौ, सुणौ । आप रै नगर मे विदेशी जादूगर । इण धरती माथै पैली वळा इण दुनिया री सब सू टणकैल, सब सू लूठी जादूगर । अजब रा करतब गजब रा कारनामा पेश करसी । अेक अेक सू बत्ता । अेक अेक सू आलीशान । अचरज करे जैड़ा आइटम, अर खास बात आ के- 'आ आइटमा नै देख नै जिका नै अचरज नी होसी या नै टिकट रा पइसा पाछा देवण री गारटी ।' तो भाया, नै लोग लुगाया ! इण न्यारै निरवाळै विदेशी जादूगर री अनोखी जादू देखण नै अवस आवौ । अड़ौसिया पड़ौसिया नै, टाबर-टीगरा नै साथै लावौ । विदेशी जादूगर रा करतब देखण रौ ओ मौको मत चुकावौ । वगत बीतिया पछतावौला । भाया नै लोग लुगाया सुणौ, सुणौ, सुणौ । ढम ढमा ढम ढम ।

अर आज पैली दिन । पैली शो । सगळा टिकट अेडवास मे ई विकग्या । भाई रे भाई जनता उलटी पण उलटी । पूरौ हाल खचाखच भरियौ । पग धरण री जगा नी । लोग अड़वड़ै तौ थमै नी । भीड़ पण भीड़ । लोग आखता पड़ै पण पड़ै पण जादूगर हालताई आयौ नी है । सगळा री निजरा स्टेज माथै टिकी थकी । सगळा मे अचरज देखण री अजव गजब चावना । नवादी वात देखण री जवरी हूस । सगळा ठौड़ माथै वैठा वैठा उचक रैया । जादूगर स्टेज माथै आयौ । आवता पाण पैली तौतक दिखायौ घड़िया री । जादूगर अेक घटे जेज सू आयौ अर आवता पाण बोल्यौ--"साहवान, महरवान, कदरदान, आप लोग आप आप री घड़िया सामी जोवौ। मत सोचौ के म्हैं घटै भर जेज सू आयौ हू । आप आप री घड़िया देखौ टाइम देखौ।" अर जादूगर आप री वात पूरी करै उण सू पैला इ भीड़ माय सू कोई ऊचे सुर मे बोल्यौ- ' अवै देखियोड़ा ई है टाइम-वाइम । थू तौ थारी, वो कैवं जिकौ वो जादू-वादू सरू कर । की नुवौ अचरज करा जैड़ी आइटम बता ।' जादूगर बोल्यौ-- आ किसी कम अचरज री वात है साहवान के इण हाल मे जितरा दर्शक वैठा है, वा सगळा री घड़िया रा सूया अेक अेक घटा लारै खिसक्ग्या है ।

आ किसी कम अचरज री बात है । आप लोग देखो तौ सरी ।" जादूगर री बात सुण नै दर्शका माय सू अेक भळै बोल्यौ –"अरे बावळा, अठै सगळा रा हाथा रै किसी घड़िया बधी थकी है । अर जिका रै है, वे ई चाय पीवण वाळी घड़िया है, जिकौ अेक दो घटा आगै-लारै ई चालै । ओ इण्डियन टाइम है अठै घड़ी दो घड़ी रौ अयेळौ हुवै जितरै तौ म्हा नै की ठा ई नी पड़ै । आ तौ म्हाणी राष्ट्रीय आदत है । म्हाणा नेता तौ आज री बगत देवै अर कठै ई जावता काल ताई आवै । अर आवै तौ आवै नी तौ नी ई आवै । थू अठै आ नै आ किसी नवादी बात बताई । बतावणा ई है तौ की नुवा आइटम बता । चाल, फुरती कर ।"

"अच्छा तौ कदरदाना, म्हे म्हारौ नुवौ आइटम पेश करू । आप लोग ध्यान सू देखौ । ओ करतब देख्या आप नै अचरज अवस होसी । आप पूतळी री गळाई देखता ई रैय जासौ ।" कैय नै जादूगर आप रौ नुवौ आइटम पेश करियौ । अर सगळा री निजरा देखता-देखता वो जादूगर लोहे रा मोटा-मोटा इक्यावन गोळा शक्कर री मीठी गोळिया री गळाई गटागट गिटग्यौ । सगळा रै देखता सगळा री आख्या सामी । अर गोळा गिट नै पछै वो दर्शका सामी इण उमीद सू जोयौ के जाणै उण नै शाबासी मिळैला, के लोग वार-वाह करैला के तालिया बजा-बजा नै पूरी हाल गुजा देवैला । आ सोच वो दर्शका सामी जोयौ । पण वो काई देखै के सगळा सुट्ट । कोई चू ई नी करै । जादूगर गतागम मे पड़ग्यौ । वो बोल्यौ–"साहबान, कदरदान, महरबान, म्हैं आप लोगा रै देखता-देखता, आप सगळा री निजरा सामी लोहे रा अे मोटा-मोटा इक्यावन गोळा गिटग्यौ । वा नै पेट मे उतार नै हजम कर लिया । अर औ देखनै ई आप नै की अजरज नी होयौ, हद है ।"

'इण मे अचरज री किसी बात है ।" लोग बोल्या–"इण मे अजरज री भळै किसी बात है ? इणगत रा कारनामा तौ म्हाणी अठै रा छोटा-मोटा अेलकार ई करता रैवै ।' जादूगर बोल्यौ –"है ?" लोग बोल्या–"हा, थू तौ डोफा इक्यावन गोळा गिटण री बात करै, थोड़ा दिना पैला थू अखबार मे पढियौ कोनी के म्हाणै भारत री अेक शख्स पूरी ट्रक खा रैयौ है । वो कैवै के म्हे ट्रक खाया पछै इजन खावण री विचार करस्यू ।" जादूगर अचरज सू बोल्यौ–"अच्छा ।" लोग बोल्या–"और नी तो काई । अठै तौ अेक अेक सू टणका खाऊ पीर हो गया है । खायकी तौ म्हा नै विरासत मे मिली है । सुण भगवान महादेव जी री बरात मे शुक्र शनीचर नाव रा दो बाळक ई गया हा । वा नै आकरी भूख लागी तौ माडिया सार्थी वा नै बरात सू पैली जीमावण नै भेज दिया । होई आ के शुक्र शनीचर नाव रा वे दोनू बाळक ब्याव रौ बणियोड़ौ सगळौ जीमण अर जिनावरा घरावा री दाणौ खायौ सो खायौ भडार री तीन तीन हाथ जमीन तक कुचर नै खायग्या ।" इतै मे दूजै कानी सू कोई बोल्यौ– "वा तौ सतजुग री बात ही अठै आज ई किसी कमी आयगी है । अरे आ तौ सभवामि युगे युगे वाळी धरती है । अठै तौ भूत मरै नै

पळीत जागै। नै सब अेक दूजै सू आगै। थू डोफा गोळा गिटण री बात करै। अठै तौ लोग सड़का री सड़का खा जावै। मोटा-मोटा बाध गिट जावै। पेट माथै हाथ फैर नै ओम हजम। पाछी डकार ई नी लेवै तू है किण होश मे गैल सफ्फी टाट। बतावणा ई है तौ की धासू आइटम बता। अर नी तौ ।" बात पूरी होवण सू पैली बिजळी गई परी। हाल मे अंधार गुप्प होयग्यौ। चौफेर खळबळी मचगी। की लोग इणी मौकै री ताक मे हा। वे स्टेज माथै चढग्या नै विदेशी जादूगर अर उण री पारटी सू भिड़ग्या। जादूगर घबरायग्यौ। वो कूकियौ –"पुलिस, पुलिस पुलिस।" उण रा मूडा सू पुलिस री नाव सुण नै लोग भळै बत्ता भीभरग्या। बोल्या–"घसड़ीरी पुलिस, पुलिस कूकै है। अठै कठै पुलिस। पुलिस नै आज रिपोट लिखावौ तौ कठै ई जावती काल तक आवै, नै अठै पैली रिपोट करणियौ माय जावै।"

अर देखता देखता हाल हळदीघाटी वणग्यौ। मारौ, भागौ, पकड़ौ रै अलावा की नी सुणीजै हौ। जिण रै हाथ जकी चीज लागी, वो वा ई ले नै छू होयौ। लफगा नै मजौ आयग्यौ। गुडा रै गोठ होयगी।

दूजै दिन विदेशी जादूगर सफाखाने मे पड़ियौ पड़ियौ आपरौ स्टेटमेट दियौ–"भारत मे जित्ता अचरज है, उत्ता दुनिया मे भळै कठैई नी है।'



जद होळी री चरचा चालै

गोपाल कृष्ण निर्झर

आज भी जद होळी रौ त्यौहार आवै तो मैं और म्हारी घरवाळी आज सू दो बरस पैला री बात याद आताइ अणी जोर सू हसवा लागा कै म्हाकें पेट मे बळ पड़ जावै ।

बात अणी तरू है कि मैं चित्तौड़ कॉलेज मे एम ए के पैलै साल मे हो और चित्तौड़ मे ही जयपुर सू बदली वैई ने आया एक सरकारी अफसर री इकलड़ी बेटी रेणुका सू म्हारी सगाई वै चुकी ही । होळी सू पैला वणारी बुलावौ आयौ कै मैं होळी रै दन वणा रै घरै म्हारी तशरीफ रौ टोकरी लेर जाऊ और वणा नै धिन धिन करू। मै जाणतो हो कै म्हारी हौवावारी घरवाळी चित्रकला मे स्नातक वेवा वारी ही (पण वै नी सकी) । पतौ नी म्हनै कार्टून कोना ढब्बूजी री कसो कार्टून बणा नै छोड़ेला । पण "हारियै न हिम्मत बिसारियै न राम नाम' रटतौ थकौ मू होळी रौ इन्तजार अणी तरू करवा लाग्यौ जाणै कोई नेता परदश जावा री बखत करै ।

ज्यू-ज्यू होळी रो दन कनै आतौ जाइर्‌यौ हो म्हारै हिवड़ा म न जाणै कसी-कसी हलचल बढ़ती जाइ री ही । कदी-कदी ता यू मालूम पड़तौ जाणै कै पोकरण मे परमाणु बम रै विस्फोट सू पैदा वी धरती रै गरभ री हलचल म्हारे हिवड़ा मे उतरगी है ।

इन्तजार री लम्बी वेळा रे बाद होळी रो दन भी आयो । बाजार सू तीन चार तरै रो गेरो पक्कौ रग मगा नै आपणै घर सू निकर्‌यौ । गेला मे शिव शकर भाग भण्डार री सेवा लेणी भी नी भूल्यौ । रेणुका रै घर तक जाता जाता रगा री बोछारा सू मै म्हारै पूरवजा री शकल धारण कर चुक्यौ हो । वठै जाईनै मैं किवाड़ रा छेकला मे सू देख्यौ तो घर रे माईनै लोग घणी जोर सू होळी खेलरिया हा । म्हारौ मन घबरावा लाग्यौ । मन नै गाढौ करनै मै घण्टी बजाई तो वण री आवाज सू मै उछल पड्‌यौ । किवाड़ खुल्या तो रगा सू पुती थकी म्हारी सासूजी एव वणा री सत्यापित प्रति रै रूप मे रेणुका नजर आई । भारतीय सस्कृति रो हेमायती नैवा रै

नातै मैं सासूजी रा पगा माई धोक दी । आसीरवाद री जगा वणारी हसी रा फव्वारा छुटीग्या । सीधी वैताई मैं आव देख्यौ न ताव वणा रे पा ऊवी रेणुका के पैलाऊ पुत्यै मूडा पै हरौ रग लगा दीयौ । म्हारै सू छूटता ही दोनू जण्या घर मे भागगी । म्हारा ससुरा जी मनै वैठक मे बैठा कर अन्तर्ध्यान वैईग्या ।

थोड़ी देर वाद रेणुका हाथा मे गिलास लेर आई । मनै नी मालूम सुसराल मे पेली वखत ऐकलौ जावा सू या भाग रा नशा सू म्हारो गळो सुखवा लाग्यो हो । मे पाणी पीवा ने ज्यू ही गिलास रै आगै हाथ कीधा कै रेणुका रै पाणी री जगा रग सू भरी दोई गिलासा म्हारे उपर ऊधी करदी । रेणुका हसती थकी वोली, कै वणा दोई रो मूडौ रग मे वैवा सू भूल करिग्यी अर सासूजी री जगा रेणुका रै धोग देई दी और रेणुका रै भरम मे सासूजी रा गाल लाल कर दीया । वठीनै घर रे माईने सू हसवा री आवाज आई री ही और अठै म्हारे शकर भगवान रै प्रसाद रौ नशो गधेड़ा रै माथा रा सीग सू छूमन्तर वेईग्यी ।

म्हारी जो गत बणी वणपै दया खाई नै रेणुका वोली, आप हाथ-पग धोई ने कुल्ला करिलौ मू आपरै बळै रसोई लगा दू । वठै तो वा रोट्या लावा रसोई घर मे गी और मैं मोको देखताई वठा सू नी दो ग्यारह वैइग्यौ ।

आज भी जद होळी री चरचा वै तो मे अर म्हारी घरवाली रेणुका हसता हसता लोटपोट वैई जावा हा ।



यात्रा संस्मरण

सफरनामौ चंडीगढ़ रौ

रामकुमार ओझा

दो प्रदेसा री राजधानी राज पण दिल्ली री। छोरिया पैन्ट पैरै गळै मे पण दुप्पटी डाळणी नी भूलै। रात नै विलायत अर दिन मै हिन्दुस्तानी सहर चडीगढ़। चडीगढ़ रै मुशायरा री रौनक। शायर बशीर बद्र इयै सहर रौ मिजाज बतावै है–

''कोई हाथ भी न मिलायेगा जो गले मिलोगे तपाक से।
ये नये मिजाज का शहर है यहा फासले से मिला करो।'

थोड़े-थोड़े फासले माथै चौखूटा सैक्टर अर इण सैक्टरा माय सगळी हिन्दुस्तान भेळौ। अेक फ्लेट मे पजाबी दूजै मे केरलवासी। केरल री लुगाई तदूरी पराठा तळै अर पजाबी तिमी (लुगाई) डोसा, इडली बणावै। अेकै कानी पजाबी गिद्दे री नाच तौ दूजै कानी बगाली रवीन्द्रनाथ रा गीत।'

चडीगढ़ न पजाबी न हरियाणवी। सतरह नम्बर सैक्टर माय अेक इज इमारत रै अेक कमरे म पजाब सरकार रो दफ्तर अर दूजै मे हरियाणा री साहित-अकादमी, तौ तीजै मे केन्द्र रो कोई आई सी एस अफसर बिराज रैयौ।

शिवालिक पहाड़िया री छीया मे आबाद चडीगढ़ नाव सू चडी देयी री मुकाम चालचलण सू पण पेरिस री डुप्लीकेट भारत री धरती माथै पण उपज्यो पिच्छमी साच लैयनै। लाम्बी चौवड़ी सड़का कचनार, अमलतास, गुलमोहर री पाता। इमारता जाणै नवै चलण री छौरिया गै सिणगार-केश।

फ्रास रै वास्तुकार ल कार्बूजीए री कल्पना रौ चौचड़ै ऊभो सरूप। नेकचन्द रौ रॉक-गार्डन। पाखाण रा फूल खिला दिया। कपड़ा रा लीरा रा पौधा उगा दिया। पजाब विश्वविद्यालय रै कैम्पस मे ऊभी कमल-आकरती भवन। इण सहर री खरी पहचान आही। आई समझ म। मिनख नी अठै रा। पाखाण रा फूल। देखण रा कमल पाखाण ज्यू गूगा चैहरा। पजाबी रै किन्ही कवि ठीक कैयौ है–

"मै तुम्हे क्या वताऊ, तुम क्या समझोगे ।
इस शहर के पत्थरो मे कुछ ऐसा जादू है
कि जो यहा आता है
अपने इर्द-गिर्द एक कैद सहेजता है ।"

मिनख इण सैक्टरा माय फसनै अेक अेड़ी तहजीव रौ कैदी वण जावै है, जिकी कै खुद कोई तहजीव नी वण पाई । लखनऊ री अेक तहजीव । बीकानेर री अेक सस्कृति । पटियाला रो इतिहास । चडीगढ़ री पण कैड़ी तवारीख । कैयी जूनै गावा नै उजाड़ परी अेक नगरी खड़ी करी गई अर नाव थरपीज्यौ चडीगढ़। जठै कै गढ़ रो नाव कोय-नी । निरा नवी शिल्प रा ओडाळै उणमान दूढ़ाड़ ऊभा।

म्हैं चडीगढ़ नै वणतै वखत इज देख्यौ, वणगूयौ जद इज ओलख्यौ । वणते वखत जावण री मकसद हौ, जै कोई भलेरौ प्लाट मिल जावै तौ म्हा लोग इज मोलाय ला । सागै म्हारा मोटा भाई सा । पूजी उणा रै पल्लै । म्है सागै सलाहकार । पण स्यात सैक्टर नम्बर 24 थैजवाड़े रौ इलाको । पाणी री ठैर माय दोयेक प्लाट खाली । माट्टी भरावतै रकम धूड़ मे दव जावै । खरीद [illegible] काई करता । पण आया तौ की देख'र जावणौ । चौड़ी चौड़ी सड़का काटीजगी ही । हायीडूव दरड़, ड्रैनेज सारू खणीज्या हा । पजाव री राजधानी रो निर्माण । कोई मामूली वात ? नवीं हीर राझै री नीपज करणी ही । सोहणी-महीवाल री याद ताजा वणावणी ही । वालेशा रा गीत भरणा हा । सैगाऊ वत्ती वात आ कै ल कार्वूजीए री कल्पना री मिनख आकरती अेक सहर रै रूप मैं परतख ऊभी करणी ही । मूढै वोलती मिनख री आकरती रौ सहर वणगूयौ । पण काळजी री जगूया भाठो मेलीजगूयौ । दिलजळा अर दिलचल्या तो चडीगढ़ मे घणा पण दिल कोयनी । आकाशी हूरा गी ग्मझोळ पण हाय सू छुवै तो धवर रै फूल ज्यू कळी कळी खिड़ दिखर जावै । हा, पण मिनख मूडै लागता । दिल री वात दिल जाणै ।

पाच वीघे मे पसरियो टपके आम री पेड़ । वारामासी फल दै । हाटी पावै फल पाकै अर मिसरी री डळी वण जावै । चडीगढ़ री नींव वटवारै-पटियारी गूं घायल धरती माथै धरीजी । भारत री वटवारौ हुयौ तो पैली पजाव री [illegible] वाटीज्यौ ।

चडीगढ़ अैड़ौ सहर जिकौ मैं मैं मू पैली [illegible] विश्वविद्यालय, हाई कोर्ट अर जैलखानो तैयार [illegible] । [illegible], [illegible] ।

तद अठै [illegible] मूं [illegible] नगरी गैता मैं पैली कालका रै रस्तै शिमली अर [illegible] 'ह ।" मैं दव परी [illegible] "डेम मू तो [illegible] राजस्थान री तिरसी धरती । सरसाइजगी ।

डेम रै दरसना सारू लारले साल औरू जावणी पड़ियी । इणमे म्हने कोयी भी कष्ट नही हुयो । हा आपसी भाईचारे रे भाय की कमी जरूर अखरी । मिनख मिनख रो नातो जरूर की कम होवतो निगे आयो ।

मिनख पण क्यू लड़ै ? आम आदमी आप मतै तो लड़ै नीं, मारै नीं । सवारथ लागूया की मिनख उण रै माथै भूत चढ़ावै । धरम नै आप री रोट्या नीपजायण सारू फरेवी लड़ावै अर कागद कोरा दिलहाळा भौला भाई लड़, मर जावै । मरणिया मर जावैला । पण कदै तौ साव चौवड़ै आवैला । फसाद मुक जावैला । दिल मिल जावैला । पण अैड़ी जगूया फेरू इज काजळ रा कोट बण रैय जावैला ।

दिनूगै चडीगढ़ सारू व्हीर हौवते वखत म्हारी बेटी सरोज री भायली प्रेमी सरोज नै अेक कागद मांड दीधी 'हरियाणा साहित-अकादमी रा सचिव मदहोश सा है । म्हारै परवार रा नजीकी है, कोई काम होवै तौ उण सू मदद लैवण मे सकोच नी करोला । '

10 30 वजी रो इन्टरव्यू हौ । नव वजी चडीगढ़ पूग परा नाश्तो-पाणी कियो अर हरियाणा सीविल सर्विस बोर्ड रै भवन सामी जा ऊभा । साक्षात्कारिया री भीड़ अधिकारी छोड़ चपरासी तकात साढ़ी दस वजी तक आया कोनी । पूणी ग्यारै वजी चपरासी आयौ । ग्यारै वजी बाबू लोग ।

बीजळी बोर्ड सू आगली सड़क माये हरियाणा साहित-अकादमी री दफ्तर । मदहौश सा सू मिलण मे काई हरज ? अेक साहित्यकार रै नाते अकादमी में जावणो इज चाहिजे । मदहोश सा,व मिटिग लैय रैया हा । थोड़ी ताळ म मदहौश सा आया। अेक टाग सू खोड़ा । काळा थै । मूडै कायै चैचक चिरचिया माडणा। पैन्ट ढीली । कुल मिलायने मिनख री अेक ढाचौ । आवते पाण हड़वड़ीजता सीक पूछण लागूया । 'कुण प्रेमी जी ' ? म्है उण रै धणी रौ नाव वतायौ ।

अयार म्है म्हारो आप री अेक लेखक रै नातै परिचय दियौ ।

आया तो क्यू इज देखते जावण री तैवड़ी । नवी जगूया देखणी उण बावत विश्लेषण करणौ म्हारी आदत माय सुमार । जाट धरमशाळा माय अेक कमरौ लियौ। अर सहर देखण सारू निसर्‌या । फेडिड ब्लू जीस पैर्‌या घूमता, पजावी, हरियाणवी छोरा । गावा सू मक्की री रोटी खावतै आयनै चडीगढ़ मे चायनीज नूडलस कैक' खावण लागूया । चडीगढ़ मे कविता कोय नी कवि पण गह चालता मिल जावै । राहगीर नै रौक ठैरावै अर पेशकश राखै । अेक कविता सुणो अर अेक रुपियो लेयता जावौ । कविता सुणावै । दाद पावै अर रूपया उधार मे राख व्हीर होय जावै । सचिवालय रौ हरेक तीसरो अफसर आप नै कवि बतळावै । पोथी छपवावै अर विमोचन कराय लैवै ।

चडीगढ़ मे चलता फिरता मिनख देखी । नखरी टपकावती छौरिया री सुभाव परखी । चडीगढ़ रो चाळो देख र म्हानै लाहौर री अनारकली सड़क माथै देखी फैशनपरस्ती री याद आई । ओ कोई जूनो सहर कोनी कै कोई इतिहासिकता अठै मिलै । अठै री तौ मौज मस्ती अर फैशनपरस्ती इज अठै री इतिहासिकता । घणखरी आबादी पजाबिया री । पजाबिया नै पिच्छमी तहजीब सू परहैज कोनी । बाजार मे "नीलायन" बतिया, घूमती परिया ।'

सड़क माय सू सड़क निकलतो सहर । गळी सू सड़क सड़क सू चौराहो, चौराहे सू सैक्टर अर सैक्टर सू स्कायर सर्किल । सर्किल रै चौफेरू हरियळ लान । च्यारू कानी सू आवती च्यार च्यार सड़का पण सहर री पैहचाण सड़का सू नी मिनखा सू होवै । मिनखणी रो पण चडीगढ़ मे तोटो कोय-नी । देसी, पण मुडै माथै ओपरीपण जरूर लखावसी ।

तौ मिनख मौकळा देख्या । दूजै दिन देखण ढाळ चीज्या देखण रौ कार्य-कर्म बणायौ । रॉक गार्डन रौ जिकरी तौ ऊपर कियो, अबार गुलाब बाग, म्यूजियम अर आर्टगैलरी रा नाव गिणतो जावू । फकत नावा री गिणत रौ कारण कै दूजी जगृया देखी अैड़ी चीज्या सू नुवै चडीगढ़ री स्तर काफी नीचौ । पण पी जी आई हास्पिटल री थौड़ो जिकरी जरूर करतौ जाऊ । सुणी, पढ़ी ही कै इण अस्पताल मे अनुसधान रै नाव जानवरा माथै क्रूरता बरती जावै । अस्पत न मे म्हारी अेक रिस्तेदार डाक्टर । उण सू मिलियौ अर प्रयोगशाळा देखण री तलब प्रकट करी ।

उण री दूजा डाक्टरा साथै गहरी रसूक ही । माइक्रो बायौलाजी बायौफिजिक्स, फारमौकौलाजी आदि विभागा मे उण री जाणकारी, आप हार्ट स्पैसियलिस्ट । बादर खरगोश चूसा, गिनीपिग इत्याद माथै प्रयोग किया जाय रैया हा । कठै ई टीका लगाया जाय रैया हा तौ कठै इज चीर फाड़ रो प्रशिक्षण दियौ जा रैयौ हौ । म्हा सू घणौ देख्यो नी गयो । रिस्तेदार सू पूछी– 'अठै कै साचाणी जिनावरा रै टी बी, इत्याद बीमार्‌या पैदा करणिया टीका लगाया जावै है । काई आ क्रूरता नी है ?'

डाक्टर साब गम्भीरता सू पडुत्तर दियौ– 'प्रयोगधरमी औषध विज्ञान री इतरौ विकास हौ चुक्यौ कै अबार अस्सी प्रतिशत क्रूरता कमती हौ चुकी है पण मानवीय भलाई रै वास्तै प्रयोग तौ चालता इज रैवैला ।'

मानवीय भलाई री औट माय नै जाणै काई काई नी हुय रैयौ ? आ सोचते म्है अस्पताल सू विदा ली । डाक्टरा री सवेदनहीनता खुमार बण र म्हारै माथै भरीजगी ही । अठै आय नै तौ भलो चगौ मिनख इज आपनै बीमार महसूस करवा लागै । उण दिन और की नी देख्यौ गियो । आगले दिन पिजौर गयौ । जठै चडीगढ़ नवौ नकोर ओडाळौ वठै इज इण तथाकथित 'गढ़ सू 22 कि मी औळातरौ

पिंजीर आप रा मुगलकालीन बगीचा घावा-ठावा । नवाब फिदाई खा सन् 17 म अे बगीचा लगवाया । पचास अेकड़ रौ फैलाव । दूर दूर ताई इस्या बगीचा री जोड़ नी। केई बगीचा विशेषज्ञा री तौ मत है के उत्तर भारत रा अे सै सू खुशगवार बगीचा है । आज भी आ बगीचा री ताजगी मन माय हुळस पैदा करै है । मन हुयौ पत्ती पत्ती नै ओळखती रैवू ।

बगीचा मै विगतवार कतार मे शीशमहल, रग महल, गुलिस्ता महल अर जगमहल । इण इमारता री शिल्प मुगलकालीन राजस्थानी वास्तु शैली री है । बगीचा मे फलदार दरखता री बैतायत । इण री भीत विपती चिड़िया घर । आ बगीचा मे वैशाखी रौ मैळौ भरीजे । अबार बगीचा रै बरोबर कळ-कारखाना इज बणीजण लागृया है ।

सूरजपुर अर मोरनी पहाड़िया री नैसर्गिक छटा मन मे स्फूर्ति री सचार कियौ ।

तीजै दिन म्है उचाना पूगा । उचाना नै अबार पर्यटक-स्थल रै रूप मै विकसित कियौ जाय रैयौ है । अमृतसर, शिमला चडीगढ़ रै तिराहै पड़तै इण रै विकास री खासी सम्भावना है । अठै री वीरेन्द्रनारायण झील री लीली जळ देख'र तौ मन सीतळ हुयगृयौ । रूखा विचाळै रूपा फाटती झील कैवै मेरे जळ माय आप री पड़छाया देख । खौटाई छौड़ अर साची मिनख बण । मन मे पवित्र भावना लिये झील री काठी छोड़ियो पण अठै ठैरण री कोई आच्छी ठौड़ नी मिळी । तो सिनझ्या पड़ी पिजोर लौट आया अर आगलै दिन मरू भौम री राह ली ।

पण राही नै कदै छोड़ी मजिल इज याद आवै । शायर ठीक ही तौ कैयौ है–

"कभी छोड़ी हुई मन्जिल भी याद आती है राही को ।
खटक सी है जो सीनै मे, गमै मन्जिल न बन जाये ॥ '

पण गम गलत करण सारू इज तौ मिनख सफर करै । म्है तौ दुहरौ करम करू । पैली फिरू अर पछै सफरनामो लिख'र सफर री चितारणी ताजी राखू । फेरू किण बात रो गम ?



जीवनी

अमर शहीद श्री रामप्रसाद 'बिस्मिल'

चन्द्रदान चारण

क्या ही लज्जत है कि रग रग से यह आती सदा,
दम न ले तलवार जब तक जान विस्मिल मे रहे।

श्री रामप्रसाद विस्मिल रै आत्म चरित रै सरू मे लिख्योड़ी इया पक्तिया सू मालम पड़ै कै आपरी जलमभोम भारत रै वास्तै उणा आपरी ज्यान हथेळी मे राख र काम करयो अर बड़े सू बड़ै अत्याचार रै सामै भी हार नी मानी। उणा नै पूरो भरोसो हो कै भारत माता री आजादी खातर क्रान्तिकारिया री बलिदान आपरौ रग ल्यासी अर अगरेजा री गुलामी अर अत्याचार मिटावण खातर सैंकड़ू दूजा क्रान्तिकारी त्यार होसी -

मरते 'विस्मिल 'रोशन 'लहरी' 'अशफाक अत्याचार से,
होगे पैदा सैकड़ो इनके रुधिर की धार से।

ग्वालियर राज मे तोमरधार मे चम्बल नदी रै किनारै एक गाव मे विस्मिल रै बडेरा रो वासो हो। उणा रा दादा श्री नारायण लाल अठै ही जलम्या। पण हालात विगड़नै सू श्री नारायण लाल ओ गाँव छोड़ दियो अर आपरी बहू अर दो बेटा-मुरलीधर अर कल्याणमल नै साथै ले'र यू पी रै शाहजहापुर मे बसग्या। श्री मुरलीधर श्री बिस्मिल रा पिता हा। अै पैली म्युनिसिपैल्टी मे नौकरी करी। पछै नौकरी छोड़'र कचहरी मे सरकारी स्टाम्प वेचण रो काम करण लाग्या।

श्री बिस्मिल रो जलम जेठ सुदी 11 सवत् 1954 विक्रमी नै हुयौ। उणा रै वाद पाँच वैना अर तीन भाया रो जलम होयो। विस्मिल रा पिताजी बाळपणै सू ही उणा रै पढ़ाई रो भोत ध्यान राखता। छोटै थका ही विस्मिल भोत उदण्ड हा। पिताजी खूब मारता। सायद इयै कारण सू ही विस्मिल रो सरीर भोत कठोर अर सहणसीळ बणग्यो।

बिस्मिल पैली उर्दू पढ़ी । पछै अगरेजी स्कूल गया । उपन्यास पढ़णै रो उणा नै खास चस्को हो । इयै उमर मे ही उणा नै सिगरेट अर भाग पीणै री कुटेव पड़ी पण अै बुरी आदता जल्दी ही छूटगी अर वै मन्दर जाण लाग्या । पूजा पाठ भी सीख्यो । जद बिस्मिल सत्यार्थ प्रकाश पढ्यौ तो उणा रो जीवण ही बदळग्यो । वै कट्टर आर्य समाजी वणग्या । की नौजवाना नै साथै ले'र वै 'आर्यकुमार सभा' खोली। अठै ही वै भाषण देणै रो चोखो अभ्यास कर्यो । वाद मे आर्य-समाजिया रै विरोध रै कारण 'आर्यकुमार सभा' टूटगी ।

जद लखनऊ मे अखिल भारतवर्षीय काग्रेस रो जलसौ होयौ तो लोकमान्य तिलक भी पधार्या । उणा रो जोरदार स्वागत होयौ । उण मौके बिस्मिल भी बठै हा । लखनऊ मे बिस्मिल नै मालूम होयो कै एक गुपत समिति है जकी रो खास मनसूबो क्रान्तिकारी आन्दोलण मे काम करणो है । बिस्मिल भी उण मे सामल होग्या। थोड़ा दिना पछै उणा नै कार्यकारिणी रा मेम्बर बणा लिया ।

अब बिस्मिल नै देस री हालत रो की अदाज होणै लाग्यो अर वै सोच्यो कै भारत रै लोगा रै दु ख अर दुरदसा री जिम्मेदार अगरेज सरकार है । इयै वास्तै सरकार नै बदळनै री कोसीस करणी चाइजै । गुपत समिति कनै हथियार खरीदण खातर धन कोनी हो । बिस्मिल 'अमेरिका को स्वाधीनता कैसे मिली' नाव री पोथी छपा'र बेची । पण खास बचत कोनी होयी । पछै आ पोथी अर 'देशवासियो के नाम सदेश' नाव रो परचो अै दोन्यू यू पी सरकार जबत कर लिया ।

बिस्मिल पर हथियारबन्द क्रान्ति री धुन सवार होगी । वा थोड़ा घणा हथियार खरीद्या । पुलिस नै शक होयो । पकड़ सू बचण खातर वै कैई जाग्या लुकता फिर्या । उणा रा कुछ साथी उणा नै धोखै सू मारणै री कोसीस करी पण सफळ कोनी होया । बिस्मिल रो मन फाटग्यो । एक बार तो सन्यास लेणै री सोची पण जळमभोम रै सकट नै याद कर फेरू क्रान्तिकारी आन्दोलण मे आग्या । मैनपुरी षड्यन्त्र केस मे लोगा रो छल-कपट अर दगाबाजी देख र वै फेरू आपरो काम करण लाग्या ।

बिस्मिल अब फेरू लिखणो सरू कर्यो । 'कैथेराइन' अर 'स्वदेशीरग छपी । भायला बड़ा राजी होया । बड़ी मेहनत कर बिस्मिल क्रान्तिकारी जीवन' नाव री पोथी लिखी पण कोई भी प्रकासक इयै नै छापण वास्तै त्यार कोनी होयो । अरविन्द घोष री पुस्तक 'योगिक साधन' रो बिस्मिल बगला सू हिन्दी में अनुवाद कर्यो बड़ी मुश्किल सू बनारस रो एक प्रकासक इयै अनुवाद नै छापण री हामी भरी पण थोड़ा दिना पछै ही वो आपरै साहित्य मन्दिर रै ताळो मार र कठैई चल्यो गयो । बीं पोथी रो भी खुड़ खोज कोनी लाध्यौ । बिस्मिल आपरी छप्योड़ी पोथ्या बेचण खातर कलकतै रै एक व्यापारी नै दी । वो भी पुस्तका हड़पग्यो अर गायब होग्यौ । लोगा

रै इस्यै व्यवहार सू बिस्मिल नै भोत दु:ख होयौ । बै आपरो व्यवसाय समेट्यो अर एक वार फेरू क्रान्तिकारी आन्दोलण में कूदग्या ।

बिस्मिल क्रान्तिकारी कार्यकर्तावा री दुरदसा देखी । नी खाण नै पूरो भोजन, नी पैरण नै पूरा कपड़ा । इयै हालत मे क्रान्ति खातर हथियारा री खरीद तो एक सपनो हो । पण बिस्मिल हिम्मत कोनी हारी । बै योजना बणायी । बै रेल्वे रो खजानो लूट्यौ । ओ काकोरी 'रेल डकैती' नाव सू जाणी जै । पुलिस सचेत होयी । बिस्मिल अर उणा रा केई साथी पकड्या गया । जिला कलक्टर बिस्मिल नै कैयो-'फाँसी हो ज्यासी । बचणो चावो तो बयान देद्यो ।' बिस्मिल कोई जबाब कोनी दियो । खुफिया पुलिस रो कप्तान जेळ मे आयो । घणी बाता करी । आपरी इच्छा बतायी-बगाल रो सम्बन्ध बता'र बोलसेविक सम्बन्ध रै विषय मे बयान देद्यो तो सजा कम, पन्द्रह हजार रूपिया रो सरकारी इनाम अर पछै इग्लैड भेज देस्या । पण बिस्मिल आपरी जेळ कोटड़ी सू बारै ही कोनी आया ।

काकोरी रेल डकैती रो मुकदमो चाल्यो बिस्मिल रा एक दो साथी डरग्या अर पुलिस नै सारो भेद बता दियो पण बिस्मिल रो तो जीवण भर ओ ही सिद्धान्त रैयो -

सताये तुझको जो कोई बेवफा 'बिस्मिल' ।
तो मुँह से कुछ न कहना आह ! कर लेना ॥

हम शहीदाने वफा का दीनो ईमा और है ।
सिजदे करते हैं हमेशा पाँव पर जल्लाद के ॥

बिस्मिल नै फाँसी री सजा सुणायी गयी । पण वै जरा भी घबराया कोनी । उणा रो जलम सन् 1897 मै होयो अर सन् 1927 मे वै शहीद होग्या । कुळ तीस बरस री उमर मिली जकै मै सू ग्यारह बरस क्रान्तिकारी जीवण मे विताया ।

बिस्मिल रै जीवण रा न्यारा न्यारा दरसाव एक सू एक बढ'र रोमाचकारी है अर काळजै पर आपरी अमिट छाप छोड़ै । उणा री निडरता, दृढ़ता, लगन अर मिनखपणो सरावण जोग है । उणा मौत रै सामै भी सदा आगीवाण रैया अर कदैई हिम्मत कोनी हारी । वै आपरा साथिया सू, आन्दोलण सू अर देस सू कदैई विश्वासघात कोनी कर्‌यो ।

आपरी माँ रै विषय मे लिखता तो बिस्मिल री कलम कमाल ही कर दियो-"माँ मनै भरोसो है कै तू आ समझ'र धीरज राखसी कै तेरो बेटो मातावा री माँ - भारत माँ - री सेवा मे आपरै जीवण रो बलिदान कर दियो अर वो थारै दूध नै कोनी लजायो । आपरै प्रण मे पक्को रैयो । जद आजाद भारत रो इतिहास लिख्यो ज्यासी तो उणरै किणी पानै माथै ऊजळा आखरा मे थारो भी नाम लिख्यो जासी ।" बिस्मिल आगै लिख्यो-"हे जलम री देवाळ ! वरदान दे कै आखरी वकत भी मेरो

काळजो कोई तरै सू कमजोर नीं पड़ै अर थारै चरण-कमला नै प्रणाम करतो मैं भगवान रो ध्यान कर शरीर छोडूं।'

उगणीस दिसम्बर सन् 1927 नै दिनुगै उणा नै गोरखपुर जेळ में फाँसी पर लटकाया गया। 'वन्देमातरम्' अर 'भारत माता की जय' बोलता वै फाँसी रै तख्तै कनै गया। चालता-चालता वै कह रया हा–

मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे,
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरजू रहे।
जब तक कि तन में जान, रगों में लहू रहे,
तेरा ही जिक्र या तेरी ही जुस्तजू रहे।

फेर वै बोल्या–

I wish the downfall of the British Empire

[मैं अंगरेजी राज रो नास चावू हूं]

फर वै तख्तै पर चढ्या अर 'विश्वानिदेव सवितुर्दुरितानि' मंतर जपता फाँसी रै फन्दै सू झूलग्या। इसी शानदार मौत सायद लाखा में दो च्यार नै ही मिळ सकै है। जलममोम खातर रामप्रसाद बिस्मिल जिसै शहीदां रै बलिदान सू ही आज आपां आजादी री सास ले रया हाँ।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जकी बात एक बोत बड़ै साहित्यकार री मौत रै टेम कैई बा बिस्मिल खातर भी कैई जा सकै है–

"जाहार अमर स्थान प्रेमेर आसने
क्षति तार क्षति नय मृत्यु'र शासने
देशेर माटिर थेके निलो जारे हरि
देशेर हृदय तारे राखिया छे वरि।'

प्रेम रै आसण पर जका रो अमर स्थान है, मौत रै राज मै उणा नै खोणा कोई खोणो कोनी। जका नै देस री माटी सू उठा लिया, देस रा काळजा उणा नै आपरै भाय आदर सू बैठा राख्या है।



काव्य

हिवड़े रा देवळ

बुलाकी दास बावरा

ओ म्हारै हिवड़े रा देवळ !
तू ही झाको घाल तू ही कई कै ?
आपस रा जाणै कोनी
जाणै तो पिछाणै कोनी
भाया मे भेद चालै
रिंध रोई मे रेत चालै
निवळाई करड़ी हुइगी
मेहगाई ऊंची चढ़गी
दणैरा रा भाव खोटा
लेवण नै थाली-लोटा
लगोटी खुलणै लागी
सचाई कीनै भागी ?
हकीकता नै कै बखाणा
ऊन्दर स्यू बिल्ली डरपै
सावण स्यू बादळिया कापै
पूजी री पूजा होवै
देव सै भूखा सोवै
जीवण री कै मतलब है
अबखी जद घुम्मर घालै
रसोई मे मकड़ी चालै
खाव खाव हल्ला होवै
लोठोड़ा गजब ढावै

काळ्जो कोई तरह सू कमजोर नी
भगवान रो ध्यान कर शरीर छोड़ू।"

उगणीस दिसम्बर सन् 1927
लटकाया गया। 'वन्देमातरम्' अर
कनै गया। चालता चालता वै कह र

मालिक तेरी रजा रहे और सू
बाकी न मैं रहूँ, न मेरी आरज

जब तक कि तन मे जान, र
तेरी ही जिक्र या तेरी ही जुर

फेर वै बोल्या–

I wish the downfall of

[मै अगरेजी राज रो नास चा

फेर वै तख्तै पर चढ्या अर
रै फन्दै सू झूलग्या। इसी शानदार
है। जलमभोम खातर रामप्रसाद बि
आजादी री सास ले रया हाँ।

रवीन्द्र नाथ टैगोर जकी बात
बा बिस्मिल खातर भी कैई जा सकै

"जाहार अमर स्थान प्रेमेर आ
क्षति तार क्षति नय मृत्यु'र शा
देशेर माटिर थेके मिलो जारे ह
देशेर हृदय तारे राखिया छे वरि

प्रेम रै आसण पर जका रो अमर
खोणो कोनी। जका नै देस री माटी सू
माय आदर सू बैठा राख्या है।



उळझवेड़

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

म्हारै काई होयग्यौ है, मा !
कै काई होयग्यौ है
इण आरसी रै
क्यू उळझ जावा हा म्है
आपसरी मे इण भात
एक इज ठौड़ ।

काई ठा कित्तरी कित्तरी ताळ
उळझ्योड़ा ऊभा रैया हा म्है
अर वखत
किणी अजाण पखी ज्यू
उड़ जावै
चुपचाप ।

खुद री आख्या
खुद सू ई क्यू उळझ जावे है मा
अर दरपण
क्यू गावण लागै कोई अजाण्यी गीत
बोला री की ठा ई को पड़ै नीं
पण धुन किसी सोवणी लागै
जाणैं सावण री झड़ी ।

दरपण मे ई झळमळै सरवर-पाळ
दरपण मे ई ऊगै वेल अजाण
इतरा इतरा फूला सू लद फद

वीच मे ऊकारया मारै
सीधा ने ऊधा कर देवै
नीचा ने ऊचा कर देवै
ओ म्हारै हिवड़ै रा देवळ,
तू ही झाको घाल तू ही कई कै ?

नदिया मे पाणी नी
कूआ मे आणी नी
जमी पथराइज्योड़ी
हवाआ वीधीज्योड़ी
नीव री घास बळगी
दरखतड़ा ठूठ लागै
आदमी अखबार हुइग्या
ऐ चमन खार हुइग्या
सूरता पीळी पड़गी
घरा मे न्यार धुसग्या
पोखरा मे रेत भरगी
खेता ने गोधा चरग्या
गिडकड़ा घूरी करग्या
सूरज परदूषित लागै
चाद री हीर बळग्यो
सन्नाटो आख्या फाड़ै
दोगळी छाह लागै
पचायती हाडी कड़कै
निवळा री अटको होवै
मिनखाई फूस हुइगी
उगरड़ी छाती चढ़गी
रोज री मौता सुण'र
काळी-पीळी भीता सुण र
मनै तो इया लागै
राज नै दीवळ चाटै ।



उळझवेड़

रामेश्वर दयाल श्रीमाली

म्हारै काई होयग्यौ है, मा !
कै काई होयग्यौ है
इण आरसी रै
क्यू उळझ जावा हा म्है
आपसरी मे इण भात
एक इज ठौड़ ।

काई ठा कितरी-कितरी ताळ
उळझ्योड़ा ऊभा रैवा हा म्है
अर वखत
किणी अजाण पखी ज्यू
उड़ जावै
चुपचाप ।

खुद री आख्या
खुद सू ई क्यू उळझ जावै है मा
अर दरपण
क्यू गावण लागै कोई अजाण्यी गीत
बोला री की ठा ई को पड़ै नी
पण धुन किसी सोवणी लागै
जाणै सावण री झड़ी ।

दरपण मे ई झळमळै सरवर-पाळ
दरपण मे ई ऊगै वेल अजाण
इतरा इतरा फूला सू लद फद

थै'तै वायरै लैराती
दरपण सू ई फूटै नेह सुवास ।

इणी फागण मे
गाला माथै मसळ दीनी है
किण इतरी गुलाल
कै मसळ मसळ हारी
पण रग है
कै चै'रा सू ऊतरै ई कोनी ।

म्हारै काई व्हैग्यो है मा ।
कै काई होयग्यो है इण फूला रै
जको इण भात हसै
- इण दूव रै जकौ इसी लीली छम है
- इण अचपळी हवा रै
जको उड़ा नाखै ओढ़णी
- इण पाणी रै, कै जिणमे
मनै घड़ी घड़ी दीसै
म्हारै पोता री चेहरी
- इण नासपीटी अलका रै
जकी घड़ी घड़ी यू उड़ै
- अर इण पलका रै
ज्कौ बिना काजळ घाल्या ई
होयगी है इतरी काळी ।
अर एक बार ऊठै
तो पड़ै ई कोनी ।

काई होयग्यो है, मा !
इण गैली सहेल्या रै
जकी म्हनै इण भात देखै
कै म्हू लाज सू लाल-लाल पड़ जावू ।

म्हारै काई होयग्यो है मा
कठैई म्हू काळी तो नी व्हैगी ।



मिनख सूं ऊँचौ कुण

शिशुपाल सिह

कुण जाणै उगैलो काले सूरज किसोक ?

आओ ! बाधा आपणी पाळ
जीवन नै वणावा आपा
सूरज सो सैचनण ।

आओ ! भाग्य वणावा आपा आपणी
भगावा अज्ञान रो अधेरो
हाथा मे आपणै भगवान
फेरू क्यो आपा हताश ।

आओ ! भगावा निराशा नै
थरपा मिनख का राज
साचो मिनख वो ही होवै
वणावै जको आपको भाग्य आप ।

आदमी ही होवै भगवान
पीछाणौ मिनख री जात नै
आकाश मे फैल्यो च्यानणी

आओ, मनावा
आत्मज्ञान री पर्व
सीखी जीवन री मर्म
वो ही साचो धर्म
मिनख सू ऊँची कुण ?



जग्यां खाली है

ओम पुरोहित कागद

म्हारी नथियौ
जवरौ होस्यार है
बोलणौ सीखतां'ई
हाथ आगै करण लागग्यौ
म्हनै लखायौ
म्हैं उण री बात समझण लागग्यौ
इणी खातर
म्हू उण रै हाथां माय
म्हारी बोदकी पाटी अर बरतनौ धर
स्कूल टोर दियौ ।

पै लै ई दिन नथियै
"र" अर "ट"
माड र दिखा दिया
म्हैं कै'ई रै
कक्कै कोडकै स्यू
क्यू नी करी सरू
बो बोल्यौ- बापू !
अजकाळै
आ दो आखरा ऊपर ई
सारी दुनिया तळीज रै'यी है
मैं काई करू ?

म्हैं उण रौ भोळपणौ समझ र
बात आई

पण दूजै ई दिन वी
"ओ" अर "ई" री
लगमाता झला दी
म्हनै फेरू अचरज होयौ
म्है कै'ई रै वावळा-
बारखड़ी नै सरू स्यू सीख
अधकचरौ ज्ञान ठीक नी हुवै ।

वो योल्यौ
बापू, काल रा आखर
अर आज री लगमाता भेळी करौ
था नै पूरी चौपड़ी दीख सी
अर इणी माय
आखी दुनिया री
दीन
ईमान अर ज्ञान दीख सी

म्हारी आख्या थमगी
अर अचाणचकी ई हाथ
पेट माथै गयौ
म्हनै लखायौ
कै म्हारै पेट माय
इण सबद सारू
जग्या खाली है ।



जग्यां खाली है

ओम पुरोहित कागद

म्हारी नयियौ
जवरौ होस्यार है
बोलणौ सीखता ई
हाय आगी करण लागग्यौ
म्हनै लखायौ
म्है उण री वात समझण लागग्यौ
इणी खातर
म्हू उण रै हाथा माय
म्हारी बोदकी पाटी अर वरतन्नी धर
स्कूल टोर दियौ।

पै लै ई दिन नयियै
"र' अर 'ट"
माड र दिखा दिया
म्है कै'ई रै
कक्कै कोडकै स्यू
क्यू नी करी सरू
वो बोल्यौ बापू!
अजकाळै
आ दो आखरा ऊपर ई
सारी दुनिया तळीज रै यी है
मै काई करू?

म्है उण री भोळपणी समझ र
बात आई गई कर दी

पण दूजै ई दिन बी
"ओ" अर "ई" री
लगमाता झला दी
म्हनै फेरू अचरज होयौ
म्है कै'ई रै बावळा-
बारखड़ी नै सरू स्यू सीख
अधकचरौ ज्ञान ठीक नी हुवै।

वो बोल्यौ
बापू, काल रा आखर
अर आज री लगमाता भेळी करी
था नै पूरी चौपड़ी दीख सी
अर इणी माय
आखी दुनिया रौ
दीन
ईमान अर ज्ञान दीख सी

म्हारी आख्या थमगी
अर अचाणचकी ई हाथ
पेट माथै गयौ
म्हनै लखायौ
कै म्हारै पेट माय
इण सबद सारू
जग्या खाली है।



बात, बगत अर सबद

सुशील व्यास

म्है, म्हारी बात की औऱ्यू भात ई केय सकू,
सुण सकू थारी बात औऱ्यू तरीक सू,
पण थे, बदळ दी म्हारी बात री मतलब,
बणाय दी बात री बतगड़ बात नै उड़ाय दी बतूळ ज्यू,
पण म्हारी बात मे अणघड़ सबद नी है,
अर नी ई है कूड़ी सबद जाळ,
पण थे ऐड़ी चाल चालौ क बात री ओळखाण ई बदळ जा,
जग आ जाणै क सबदा री हाट लगाय
कौण राखण री थारी आदत थानै फायदौ देवै,
सबदा सू मसकरी करण री मिळै मोकळौ मोल,
अर, साचा सबदा सू खेलण मे मिळै कूड़ी मान ।
बगत मुजब सबदा नै ढाळ'र थे पायली एड़ी रूतबो'क-
जद चावी ज्या चावी सबदा ने ढाळल्यी चादी मे,
ठाकुर भाती कैय र ज्यू चावौ जितरा चावी पसारलौ पग,
सबदा री ओट, थै थारी गोट जिया चावी जमावौ
बण जावौ कदै'ई किरकाटिया तौ कदै ई घमचेड़ ।
बगत देखता थारी बगतमुजब बदळणी बेजानी,
पण भायला
सबद कोरा सबद नी, साधना है,
कोरा सबदा सू खेल र ऊची उडाण री उमाव कद फळियौ ?
जे, फळती ई है थारी निजरा मे तौ ओ छळ
थे ई पाळौ थे ई रूखाळौ ।

म्हैं ओ वैम नी पाळू, इण छळ नै नी रूखाळू,
म्हैं, म्हारी बात रौ अरथ बगत मे नी, सबदा मे देखू,
पण ये - सबदा नै बगत पोंण नुवा अरथ देय'र-
अरथ बणाय रया हो ।
सबदा री सेवा रै नाम, खुद री नाव खैयरया हो ।
कसूर थारौ नी, बगत रौ है,
बगत बदळ्या बदळजा-सबदा रा अरथ,
बात रौ मतलब अर बणजावे बात रौ बतगड़ ।



औजारां री बात

रमेश मयक

अेक दिन
गैती - सव्वळ
फावड़ा - तगारी
कुदाळी - कुल्हाडी
सगळा औजार मिलग्या
अर वात करण लाग्या
वाता ही वाता मे
आपणी-आपणी ढपली
आपणी-आपणी राग पै आग्या ।

गैती वोली–
मै नुँवा तीरथ धाम कारखाना री
सुरूआत करू
जिण पै निरमाण सू
नक्शी साकार हुवै
विकास री आधार वणै
खुसहाळी री रोसणी री सनेसी
घर-घर पूग जावै ।

उण पळ - वोल उठी सव्वळ
जद - गैती री चाल रूक जावै
तो सगळा नै सव्वळ याद आवै
मै विकास री राह रा रोड़ा नै हटावू हू
काम री धीमी चाल नै तेज वणावू हू ।
अचाचूक फावड़ी केवण लाग्यौ–

ठीक है । ठीक है ।
तुम छोटी नहीं हो
परन्तु मैं भी तो बड़ा हू
यदि तुम मटकिया हो तो मैं घड़ा हूँ
जद गैंती अर सब्बळ ढेर लगावै है
तो उण ढेर नै फावड़ी इज हटावै है
नहरा री पाणी धोरा धोरा मे पुगावै है ।

जद आयी तगारी री वारी तो या बोली–
तगारी ने भी आपणी भूमिका पे नाज है
श्रम देवता रा हाथा रा गहणा हो सके
गैंती अर सब्बळ
तो तगारी भी सिर रो ताज है
मैं रेती - सीमेंट रै मिलण री साक्षी हूँ
पत्थर ने भी आपणी मजिल पै पुगावू हू
नींव सू ले'र शिखर तक साथ निभावू हू
खेत तक खाद लै जावू
उपज रै सागै - सागै
हाट - बाजार- मंडी री सैर कर आवू ।

तगारी री बात सुण्या पछै बोली कुदाळी–
खेत खोदणी म्हारी काम है
वैसी उपज म्हारै करतब री
परिणाम है ।

हाँ तो कुल्हाड़ी थनै कई कैवणी है ?
तू तो आपणा ही पगा नै जख्मी बणावै है
हरिया भरिया रूखा पै तलक चाल जावै है
निरमाण री उम्मीद करणी तो
थारा सू बेकार है
तू तो बस
टुकड़ा - टुकड़ा करण नै सदीव त्यार है ।

औजारा ने बात करता देख र
आय ग्यो हथोड़ी
अर केवण लाग्यो–
सूत सावळ करणी म्हारा साथी है

म मदीच मैणत री खाऊ हू
श्रमव जयत रा गीत गाऊ हू
इण खातर
आप सगळा औजारा ने अेक इज बात कैवणो चावू हू-
आप सगळा ही आदर जोग
पण
मत पाळा मे ' "मै ' री राग
सगळा मिळ'र चाला ला
ता आपाग मान वधेला,
खुसहाली निजरे आवैला
मैणत रग लावैला ।



परछाई

दीपचन्द सुथार

लकड़िया फाड़णौ
उण री खास धधौ है
इण वास्तै दिन ऊगताई
कांधै माथै कुवाड़ी मेल र
भूखौ - तिरसौ घर सू निकळ ज्यावै
गळी - कूचै माय घूमतै रैणै सू
कठी न कठी काम - धधौ मिल ज्यावै ।
हैं हो, है हो, हैं हो री -
आवाजा लगावतौ
बिना आराम कीया
लूठा लकड़ा नै फाड़तौ -
सिझ्याताई ढिगली लगाय देवै
कमजोर तनड़ै सू पसीनौ
कौरै मटके री भात टपकती रेवै ।
उणी माय टावरा रौ भविस
लुगाई री इछावा
घर- गिरस्थी री समस्यावा
अर आपरै सपना री परछाई
रात माय उठतौ - बैठतौ
करवटा बदळतौ
बीड़िया फूकतौ देखतौ रेवै ।
अेक अेक दिन
आगळ्या रै पैरवा माथै निकळती रेवै ।



मै भली भांत जाणूं

जयसिंह चौहान

थे अणजाणी सूझ-बूझ सूँ जीवण ने धूड़धाणी करद्‌यो
यूँ लाग्यौ जाणै जोजरा घड़ा म जळ भरद्‌यो
आख्या ने देख र काजळ आँज्यौ जावै, इणी तरै थारा चित्राम नै देख'र,
थारी चरित्तर आक्यो जावे।

हँसबा रोवा री थनै गत नी चलवा फिरवा री थने हूँस नी।
मैं भलीभात जाणू, मारी सीख नै यूँ लीड़ी अर नान्ही बाता समझ'र
टाल देला। हठीली जिनावर ठोकर लाग्या पछै समळै, अचेत्यौ,
ठाण मे ठोकर खाई जावे।

डूब्योड़ी धरती पै लोग पाळ पाळ चाले, काँटा अर भाटा नै सगळाई टाळै
पण इण भरमीली मति ने किण तरै मोड़ी जावै जिण सूँ
या भटकण री वेळा, यो अँधारा री अपजस यासू दूर हो जासी
साँच्याड़ी सरम पाळवा खातर लोग तीखा तावड़ा नै भी सै लेवै
पर-पीड़ा मिटावण री हरख राज्यौड़ा मिनख
आपरा लाखीणा जीवण री हाण कर देवै
पण इस्यो अचेत्यो जीवण
किण काम रो जो उग्योड़ा-आँथ्योड़ा री फरक भूलग्यी
विगत रा विवेक सूँ आगत री उजळास पिछाण्यी जावै
आपरी डेळी ढाब र आजूणा आलोक मे चिंतण करणी चाहिजै
जाण्या री अरय हुया करै अणजाण्या नै कई अरथावणी
सावचेत रा धोळा झाग सूँ हीज हाय धोया जावै
अचेती काळख सूँ न्ही।



एक सवाल

जगदीशचन्द्र शर्मा

जमाखोरी रा बादळा जद उमड़ै
तो सब जगा अमावा री बरसात हुवै
महगाई री पाणी वैवण लागै,
समस्यावा रा नदी-नाळा माय
सकटा री बाढा ऊफणै
अर
आपाधापी मचावण वाळौ
देसद्रोह
जणजीवण नै निगळवा लागै।
कुण है ?
जो ई खराब मनसा रा जहरीला सापा गू
टक्कर लै नै
राष्ट्र नै बचावै
अर
राष्ट्र रा जमारा माय नवौ हरख जगावै।



जाग सकै तो जाग

मो सदीक

थारे सिर पर पैणा नाग,
मिनख रै मूण्डै आया झाग,
पळकतै माथै पर क्यू दाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग।

कुण से मिनख थारी जीभ डाम दी,
कुण सै मिनख थारा कुतर्‌या कान।
कुण से मिनख थारै पचिया नै पीच्या,
कुण सै मिनख थारी मार्‌यी मान ॥
कुण सै मिनख थारी लाज लूटली,
कुण सै मिनख थारी राखी काण,
कुण सै मिनख थारै यचिया नै वेच्या,
कुण सै मिनख थारी खायी धान ॥

अब सोच समझ कर चाल,
वद कर रोज वजाणा गाल,
चटोरा चाट रया है माल,
लाडला पाल सकै तो पाल।

थारै सिर पर बैठ्या काग,
हसला गावै रोणी राग,
दरद री लेणी पड़सी थाग,
जलम सू थारै लागी लाग,
लगादी घर घर मे कुण आग

चमकतै चैरा पर क्यू दाग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ।।

कुण सी लगावै थारै घर मे चूचकी,
कुण सी उजाड़ै थारा हाट बजार,
कुण सी उछाळै थारै सिर री पागड़ी,
कुण सी उगावै थारै पीड़ हजार,
कुण सी लगावै थारै लार कूकरा,
कुण सी भगावै थानै बीच बजार,
कुण सी नचावै थारै मनरा मोरिया,
कुण सी बणावै थारी बात हजार ।

आ, बैठ, बता कर बात,
अणूती लोगा कर ली घात,
खेलणी पड़सी देवण मात,
ऊगसी सोनलियी परभात,

थारै घर मे लागी आग,
बुझाणी पड़सी बैगो भाग,
लोग तो खेल रया है फाग,
पटकसी थारै सिर की पाग,
मुळकतै मूडै पर क्यू दाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ।



जाग सकै तो जाग

मो सदीक

थारे सिर पर पैणा नाग,
मिनख रै मूण्डै आया झाग,
पळकतै माथै पर क्यू दाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग।

कुण से मिनख थारी जीभ डाम दी,
कुण सै मिनख थारा कुतर्‌या कान।
कुण से मिनख थारै पचिया नै पीच्या,
कुण सै मिनख थारी मार्‌यौ मान ॥
कुण सै मिनख थारी लाज लूटली,
कुण सै मिनख थारी राखी काण,
कुण सै मिनख थारै पचिया नै बेच्या,
कुण सै मिनख थारी खायी धान ॥

अब सोच समझ कर चाल
बद कर रोज बजाणा गाल,
चटोरा चाट रया है माल,
लाडला, पाल सकै तो पाल।

थारै सिर पर बैठ्या काग,
हसला गावै रोणी राग
दरद री लेणी पड़सी थाग,
जलम सू थारै लागी लाग,
लगादी घर घर मे कुण आग

घमकतै चैरा पर क्यू दाग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ॥

कुण सी लगावै थारै घर मे चूचकी,
कुण सी उजाड़ै थारा हाट वजार,
कुण सी उछाळै थारै सिर री पागड़ी,
कुण सी उगावै थारै पीड़ हजार,
कुण सी लगावै थारै लार कूकरा,
कुण सी भगावै थानै वीच वजार,
कुण सी नचावै थारै मनरा मोरिया,
कुण सी वणावै थारी वात हजार ।

आ, वैठ, वता कर वात,
अणूती लोगा कर ली घात,
खेलणी पड़सी देवण मात,
ऊगसी सोनलियी परभात,

थारै घर मे लागी आग,
बुझाणी पड़सी वैगो भाग,
लोग तो खेल रया है फाग,
पटकसी थारै सिर की पाग,
मुळकतै मूडै पर क्यू दाग,
लगादी घर घर मे कुण आग,
लाडला, जाग सकै तो जाग ।



ओळूँ

अखिलेश्वर

ठेला ठेल मची सड़कों पर, सुस्तावण नै कठै न ठाँव ।
इण माया नगरी मे आई, ओळूँ थारी म्हारा गाँव ।।
मिनखपणे रो काळ अठै है
पड्यो प्रीत रौ टोटो ।
ऊपर सूँ है घणो फूटरो
मन रो माणस खोटो ।।

अठै तीख रो तपै तावड़ो, अठै कठै वा बड़ री छाँव ।
इण मायानगरी मे आई ओळूँ थारी म्हारा गाँव ।।
अब झूरा वा धरकोटा पर
झिरमिर पड़तो पाणी ।
लारै रहगी सुख री घड़ियाँ
करती गाणी-माणी ।।

अठै बजारा सुपना विकग्या, भरी भीड़ मे हार्‌या दाँव ।
इण मायानगरी मे आई, ओळूँ थारी म्हारा गाँव ।।
अठै भीड़ मे फिरै भटकता
वण्या लोग विणज्यारा ।
अठै कठै 'कासम' री का णी
'हुणतै' रा हुकारा ।।

अठै है गीत कठै पिणघट रा, अठै सुणी कागा री काव ।
इण माया नगरी मे आई ओळू थारी म्हारा गाँव ।।



बोवण वाळा बावळा

शिव मृदुल

रूँख लगाया राख्या कोनी ।
मीठा फळ भी चाख्या कोनी ।।
स्वारथ री ले हाथ कुराड़ी, काटण हुया उतावळा ।
बोवण वाळा बावळा आवा करग्या रावळा ।।

ज्यूँ-ज्यूँ रूँख कट्या मँगरा सूँ,
मिनखपणा की जड़ कटगी ।
पैली मन मे बणी दीवारा,
धरती टुकड़ाँ मे बँटगी ।।
हेत रेत रै पींदे दवग्यो
खेत बदळग्या बस्ती मे ।
बन री ठोड मिला री चिमन्या,
धुँओं उगळ री मस्ती मे ।।

कट्या नीम, बड़, पीपळ, चदण, केर टीमरू आँवळा ।
बावण वाळा बावळा, आबा करग्या रावळा ।।

चौफेरा है हवा धुँवाड़ी,
जहर घुळ्यो जिनगाणी मे ।
गजब गदगी घुळबा लागी,
पाँच नद्या का पाणी मे ।।
सुख कौ सागर सूखौ निकळ्यौ,
सपना बिक्या उधारी मे ।
खुशबू री आशा मे ऊगी
बदबू केसर-क्यारी मे ।।

मानसरोवर पूग्या बुगला, तन उजळा मन साँवळा ।
बोवणा वाळा बावळा आबा करग्या रावळा ।।

वगुला री एकठ है तगड़ी,
हस गिणत मे थोड़ा है ।
मानसरोवर गुदळ्यो होग्यो,
यों हसा मे फोड़ा है ।।
जळकुभी की जोर घणी है,
जळ मे कमल खिळे कोनी ।
चुगवा खातर यों हसा नै,
मोती आज मिलै कोनी ।।
बुगला कै घर माडा मोंई, रेवै हस कन्यावळा ।
बोवण वाळा बावळा, आवा करग्या रावळा ।।

डोर धनुष की टूटी टूटी,
तीर पड्या सब तरकस म ।
पड़ी गुफाया सगळी सूनी,
शेर घुस्या सब सरकस मे ।।
पिजरा मे वनराज पीठ पै,
चाबूका नत झेलै है ।
जगल मांही, चीड़ै धाड़ै,
हरण कबड्डी खेलै है ।।
लोमड़िया रा जमघट मांही, गोठ करै है कौंवळा ।
बोवण वाळा बावळा आवा करग्या रावळा ।।



हेत

रामजीवन सारस्वत

हेत केवै हू हुय जाऊ दुगणौ
इतिहास दूढलौ म्हारौ
राम-रहीम री राख राड़
क्यू हेत रौ नाव बिगाड़ौ ।
हेत कैवै हू घणो हेतूळौ
जोड़ू हेत री तान घणी
बै मूरख जो हेत नी जाणै
अैड़ो नी जीणो अेक घड़ी ।
हेत नै हेत घणी जोड़ै
क्यू प्रीत री टूट रैई लड़ी ?
हेत रै क्यू अबै भेत आयोड़ी
हेज री कठै गई झड़ी ।
हेत कैवै म्हारो मोल नी कोई
हेत राख तो कोई देखै
मिळै हेत नी हाट-बाजारा
हेत हेज हिवड़ै खेलै ।
हेत चावै माठै सू राखौ
हेत राखौ चावै मूरत सू
हेत हेत तो हेत हुवै
हुणो हेत चाईजै जीवण सू ।
हेत
म्हारो
राम रहीम री
ना बिगाड़ौ ।



दारू रा दोष

महेश कुमार शर्मा

आ कुण कहसी या क्यू कहसी, साच्योड़ी बात छिपा लेसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

मद पीगे राता नैण कर्या मन म तू माटा हो ज्यासी
अपणा माड़ा आ धन्धा स्यू, लोगा री निजरा गिर ज्यासी ।
पागल बण होश गमा देसी, कुत्ता जद मुह चाट्या करसी
गळी-मोहल्ला मे तेरी नित, हसी खूब उड्या करसी ।
नशौ उतरता ही मूरख, तू मन ही मन पछता लेसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लैसी ॥

मा-बाप, भाई अर भैणा नै गाळा स्यू गन्दा कर देसी
मिनख कोई समझावै तौ, बी रै ही सामी हो लेसी ।
बीजा तोड़ै, घड़िया फोड़ै, तू घरवाळी स्यू राड़ करै ।
ई राखस स्यू कद गैल छुटै, दुखस्यू नारी रा नैण झरै ॥
दिन उगता री टाबर-टोळी, रोटी री राग सुणा देसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

घर नरक तेरौ ओ बण ज्यासी, अक्कल सारी खो देवलौ
दर दर नित ठोकर खाकै लोगा रै सामी रोवेलौ ।
उधार मागती फिरसी तू, अपणै सिर करज करावैलौ
टूम-टेकरी, खेत कमाई मद रै प्याले मे खोवेलौ ।
कई रोग लगैला तेरै तन, आ सास नळी भी बळ ज्यासी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे अपणा ही हाथ तपा लेसी ॥

पणघट पणिहारी हासैली गण्डक गाव गळ्या मे झगड़ै ।
घरवाळी जद शबद सुणै, छाती मे सेला सा उपड़ै ॥

नैण झरै घूंघट भीतर, टाबर म्हारा अब दुख पासी ।
नेफै मे दाबै दस रिपिया, कदै फीस छोरा री पी ज्यासी ।।
चोरी, जूआ, माड़ा धन्धा, आखिर तू अपणा लेसी ।
घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ।।

बड़ै भाग स्यू मिनख बण्यो तू राखस क्यू कहलावै है ?
मा-बाप री जायदाद क्यू, माटी माय मिलावै है ?
पी दारूड़ी, गा मारूड़ी तू, माड़ौ क्यू कहलावै है ?
ई खारै पाणी रै खातर, क्यू घर मे आग लगावै है ?
मद पीणौ तू छाड़ मिनख, नी तौ आ थानै पी ज्यासी ।
घरियौ बाळ सियाळै म, अपणा ही हाथ तपा लसी ।।

सुण स्याणा री सीख फेर, आत्मविश्वास जगालै तू
गई जकी नै छोड़ और, आगै स्यू नेम निभाले तू
ई विषधर काळी नाग फणी स्यू, मुड़ ना हेत लगाई तू
ई जहर भर्‌याड़ी बोतल नै, घर स्यू ही दूर भगाई तू
ठोकर खाकै चेतै, बो ही मिनख देवता कहलासी ।

घरियौ बाळ सियाळै मे, अपणा ही हाथ तपा लेसी ।
आ कुण कहसी बा क्यू कहसी साखोड़ी बात छिपा लेसी ।।



ट्यूशन रासौ

ओमप्रकाश व्यास

शिक्षक शिक्षा भक्षक बणनै ट्यूशन कर रिया है।
टाबरिया ने डरपा-डरपा जेवा भर रिया है।

शाळा मे कक्षा नी लेवै,
'घरै भणी' यू चौड़ै केवै।
'प्रिंसीपल' रो कयौ न मानै।
घर मे ट्यूशन खुल्ली लेवै॥
चतर कागला हर शाळा नै मेली कर रिया है।

घरै दुकाना सुबह लगावै,
शाम लगावै, रात लगावै।
जो टाबर भणबा नी आवै,
हाका कर-कर रोज बुलावै॥
धरम करम नै छोड़ पाप का माडा भर रिया है।

अंग्रेजी मे कोचिंग घाले,
प्रेक्टिकल की डरपणी घाले।
साइंस गणित-नै कोमर्स वाळा,
घर वाळा की छाती बाळै॥
हाकम हुकम मेल खूटी पै लिछमी चाकर वण रिया है।

मोटी-मोटी डींगा हांकै,
ट्यूशन मे कोई पाछ न राखै।
मरी आत्मा, मनड़ो मरग्यौ
सगळा नै धाखा मे राखे॥
पास फेल का चक्कर दे दे साग झूठरा कर रिया है।

कीनै केवे कूण बतावै,
कुण सुणै अर कुण सुणावै ।
ई छेड़ै सू उण छेड़ै तक,
सगळा मिलनै मजा उडावै ।।
गाव गळी-नुक्कड़ मे सगळा स्वार्थ पूरो कर रिया है ।

डाइरेक्टर सू लैटर आवै,
शाळा मे सब भर्णै भणावै ।
करै घोषणा ट्यूशन कोनी,
अणगिणती रा घरा बुलावै
झूठा साचा भरै आकड़ा, सतवादी सब बण रिया है ।

टाबरिया नै राजी राखे
माल मिठाया लारै चाखे ।
भलो बुरो अफसर रौं सुण ले,
सगळा नै भेळा अे राखै ।।
बाट घूट नै खावै सारा माल तरातर घर रिया है ।

अफसर 'फ्लाइज' रोज लगावै,
पण कीनै ही पकड़ न पावै ।
छोरा-छोर्‌या का मूडा सू,
ट्यूशन सारू आप नटावै ।।
हथकडा कर खोटा खोटा बरबाद भणाई कर रिया है ।

लाज शरम यानै नीं आवै,
नैतिकता सू दूरा जावै ।
होशियारा नै फेल करे अै,
ठोठ्‌या नै 'मेरिट' मे लावै ।।
शिक्षक री छवि मेट, बजारा भवता फिर रिया है ।

गणती म दो चार जणा अे,
गावै खोटा, राग भुडावै ।
सगला नै बदनाम कर दिया,
विद्‌या नै व्यापार बणावै ।।
ट्यूशण रासी 'ओम' बखाणे, धरा भार अे बण रिया है ।
टाबरिया ने डरपा डरपा जेबा भर रिया है ।

❑

तीन रुबायां

अरविन्द चूरूवी

गुण असुदर न भी सुदर वणावै छै,
दुरगुण सुदर ने असुदर वणावै छै
पाचू आगळ्या वा री घी मे आजकाल–
घी रौ तड़को दे र माल तर वणावै छै।

खूणै माय वेठ र रोऊ छू कोई देख ना ले,
खराड़ विछा र साऊ छू कोई दख ना ल
वीनणी आपरै पीयर व्याव म गई छे–
रोटी वळी जळी पोऊ छू कोई देख ना ले।

छान कै छै, म्हने छाकर देखो
थेटी के छे म्हन व्याकर देखो,
ओर भी जे की देखणी चावे अरविद
तो चेजो कैछे म्हने चलाकर दखो।



पंचामृत

अमृतसिह पँवार

थासू मिल'र दुखड़ो, थोड़ो हल्को ह्वै जावे है
घड़ी दो घड़ी ही सही मन सावण थण जावे है,
पण हिरदे मे छिप्योड़ो दरद गैरीजै जदै,
काळ री पीड़ा सू मन फेरू घवरा जावै है ।

वरखा आवै रिमझिम री वात करी थै,
रूठ भी जावौ तो की वात कोनी, सरगम री वात करो थै
कुण जाणै काल कई अ'र कैड़ी वात होसी
घड़ी दो घड़ी प्रीत री वात करो थै ।

सास री पिंजरो किणी दिन टूट जासी,
हर एक मुसाफिर मारग मे छूट जासी,
हर किन्नेई प्यार कर, प्यार ले सगळा रो,
कुण जाणै किण वगत, प्रेम रो घट फूट जासी ।

आज फेरू वा घड़ी मनै याद आई है,
वा झूमती सावण री झड़ी याद आई है
वैठ'र गुणगुणाया हा, जका गीत था अर म्हा
आज उण गीत री भूलियोड़ी कड़ी याद आई है ।

जितरी भुलायी है थनै, उतरी ही याद आई है,
जितरी जळायी है खुद नै, उतरी ही आग पाई है,
कुण जाणै कुण वणाई है आ रीत न्यारी,
कै हिवड़ो तो खुद रो है, पण प्रीत पराई है ।



चौखट

ओउम् प्रकाश सारस्वत

दिसावर रह्या करती, म्हारी दीपी काकी,
टाबरा नै कूद्या करती, ठोली उण री हो पाकी।
रेवतियै रै लारै भाज्यो
पण वो आगी नै नाठ्यो
ठोकर खा'र पड्यो'र फोड़ाय लियो बाकी ॥

वेगी उठणौ चोखौ हुवै, केया करै है काकी,
एक दिन म्हूँ वेगी उठ'र मिटायी बारी हाकौ।
लोटौ लेर भाज्यौ
ना'ययै री हुयी सागी
गडकड़ी सू टाँग फड़ा'र, पकड़ लियी माची ॥

दो ही विनणक्या, हुयो एक रे जापी,
एक ईसी ठाली - भूली, छोड़ैइ कोनी माची।
केयी तीजोड़ै नै परनावण री
नूई विनणी लावण री
माँ बोली तीजोड़ी नै लार कोंई घालणी है स्यापी ॥

छोटो'ड़ी भतीजी म्हारी घणै लाड री लचकी,
फाक्या, विस्कुटा री कमी नही, नी किणी वात री मचकौ।
अेक दिन बाखळ मे
म्है देख्यौ उतावळ मे
वा को खोल र देख्यौ तो मरोड़ो हो उणम रेतौ ॥



म्हारलो गॉव

महावीर जोशी

च्यारू ओड़ा छान थी, नीमड़िया री छाव ।
कोसा लैरा छूटगी, आज म्हारलो गॉव ॥

एकौ था जित जोरको, भाई को सो भाव ।
कदै न कोई राखती, आपस माय दुराव ॥

सुख दुख लेकर नीकळा, आता दिन अर रात ।
मौसम बुगचो खोलती, सी, गरमी, बरसात ॥

इत तो छान'र झूपड़ा, उत ठाकर को कोट ।
सूरज उगतो रोज ही लेकर वैं की ओट ॥

शहर जाण की हीवड़ै, रैंती गैरी चाव ।
सेरा ल्याता रामरस, तेल मिरच बस पाव ॥

सावण झूला झूलता, फागण रचता फाग ।
गॉव गळी की गोरड़ी, गाती जीवण राग ॥

साझी इज्जत राखता, साझौ सै को मान ।
साझा सुख दुख झेलता, साझा छापर छान ॥

भरज्याणू मजूर थो, राखण खातर बात ।
बिन भाई की भाण के, धाड़ी भरता भात ॥

वचन दियोड़ो पाळता देकर अपणू माथ ।
जुध मे जाता छोड़कर, हथळेवै को हाथ ॥

गाढ़ी गाढ़ी रावड़ी, पतळी पतळी छाछ ।
पी कर सोता लोगड़ा, लेता सुख री सास ॥

तीज तिवारा हीवड़ै, चढतो गैरो घाव ।
कठै गया वै लोगड़ा कठै गया वै भाव ॥

नी पणघट नी देवरा, नी पीपल की छाँव ।
लोग वच्या नी पैलड़ा, रह्यो न सागी गाँव ॥

फागण मे चग वाजतौ मन मे भरतौ घाव ।
गैरो आवै याद वो, आज म्हारलो गाँव ॥

भूरी भूरी टीवड़ी खेजड़िया रा खेत ।
दिन तो बीत्या मो कळा, गयौ न मनसू हेत ॥

के माडू के छोड़दयू, वाता तो अणवार ।
सुरगथळी सै गाव नै, झुक झुक करू जुहार ॥



अब हँसां रा दिन गया

कुन्दन सिंघ सजल

भाईचारा, दोसती, चुक्या प्रेम रा भाव ।
पचायत रा गाव मे, जद सूँ हुया चुणाव ॥
चार्यां फेरा री टलै लगन महूरत जोग ।
बाराता म नाचता दारू पीकर लोग ॥
महला तेली गागलो, म्हारी राज भोज ।
अह हँसा रा दिन गया, काग उड़ावै मौज ॥
अध आस्था, कुरीतिया, जात पात री छाव ।
कुँडली मार्या साप सो, बैठ्यो म्हारी गाँव ॥
बैठ पिलग पर बाप नैं, रोज करै उपदेस ।
पढ़कर आयो शहर सूँ, सेडू री सरवेस ॥
कम्मो क्वारी रै गई, पाछी फिरी बरात ।
फिर दहेज रा दाव पर, गई गाव री बात ॥
बीमारी सूँ तग व्है कुऐ पड़्यो खुरसीद ।
थाणै, आला के हुई, विना ईद कै ईद ॥
नही चैक री हैसियत, नही जैक री मार ।
शिक्षक चुन्नीलाल रो, पुत्र फिरै बेकार ॥
डोरा डडा बेचकर, करै विघन री नास ।
भूत भगावै गाव मे, मतर पढ़ रैदास ॥
नुवी सदी रै, चाव सूँ, पूँच्यो देस करीब ।
शहरा रै ढिग आज भी, फेरूँ गाव गरीब ॥



महरिया रा सोरठा

दयाराम महरिया

अंतस घोर अँधार, आखर औखद एकला
भणिया उतरै भार, मातभोम री महरिया ।

रगत पियोड़ी रेत, पाणी ज नी पताइजै
मात मुलक रै हेत, माथौ माँगै महरिया ।

परहित तजै पिराण, दुजा रै दुख दूबळा
मिनख अहरा महान माय नवाऊ महरिया ।

सागरिया री साग फोगलियै री रायतो
भैस दही यड़ भाग, भाडै साथै महरिया ।

जगती लीना जोय, गरजी फरजी घुण घणा
दाय आइया होय, मजूर करसा महरिया ।

चपळ घणी चित्त चोर, नदी नीर चँचल सदा
लूमै सावण लोर, माया छाया महरिया ।

भली बुरी ग्या भूल, माया लारै मानवी
फकत याद फळ फूल, मूळ भूलग्या महरिया ।

दादू, नानकदेव, कबीर, तुलसी काय का
सूरो सुरसत सेव, माणिक माड्या महरिया ।

जद औसर मिल जाय, चुगल खोर कोनी चुकै
सूत्या भूत सदाय, मटका पटका महरिया ।



मै डरतोड़ै हां भर दी

चमेली मिश्र

जाट बोल्यो–सेठ तेरी सेठाणी तो काणी,
तू तो धन्नी सेठ है, ल्यातौ कोई राणी ।
सेठ बोल्यौ–अरे मै नट्यो थो,
काणी नै देखता ही पीछे हट्यो थो ।
मा नै कह दियो–क्या कोनी करूँ
दादा स्यू, बाप स्यू, किया ना डरूँ ।
मा मानगी, बाप नै माननी पड़ी,
मैं सोच्यो–टळगी सकट की घड़ी ।
पर, पासी पलटता देर कोनी लागै
बाप की कोनी चाली, दादा के आगे ।
दादी बोल्यौ– क्या करणो पड़सी,
नही तो मेरी नाक कटसी ।
मै छोरी के बाप ने जुबान दे बैठ्यो,
मेरी नाक कट सी, जे तू पाछो हट्यो ।
नाक कटण की बात पै बाप घबरायौ,
हाफतो हाफतो मेरी मा कनै आयौ ।
मा मनै बुलायी, फेर मनै समझायी
नाक कटण की बात को, किस्सो बतायी ।
मा बोली–आपणी खेल है पीसा को,
पीसा स्यू, पीसा आवै ।
काणी है तो के है ? दायजो घणो ल्यावै
बीस लाख तो नकद मिलैगा
सागै मोटरकार ।

एक हवेली वणी वणाई,
चोखी चालेगौ व्यापार ।
काणी है, आई तो खोट है ।
जे तू नाट ग्यो तो
तो लाखा की चोट है ।
काणी नै कोई ताकै ना,
घार का ना घर का ।
मागै पीमा वचैगा–
काजल, क्रीम और पौडर का ।
ताकण हाली वात पै,
मै गौर कर्‌यौ
तो भोत डर्‌यो
मै 'डरतो ई' हाँ भर दी ।



मतलब रा माचा

शारदा शर्मा

ए, माचा मतलब रा
वे मतलब भारी हुग्या
डोकरी सिराणे, डोकरी पगाणे
पगाणे पूरी दावण कोनी
वाटकै मे चाय पीवै
ऊचौ सुणीजै दीखै पूरौ कोनी
आवणिया जावणिया नै टीके
नसल री रुखाळी करै विना एड्या री पगरखी
फाट्योड़ी लुकारी
डोवटी रा गाभा
डील स्यू लुक मीचणी रमै
मौसम री कुचरणी
दम घोटै, खासी अर, खखार छोडै
डोकरी माची छोड़गी - सदी खातर
डोकरी - हेला मारै
'माची छिया करो रे'
सुणर रमता पोता पोती आवै -
जोर लगावै–'हैस्या
ए मतलब रा माचा–टहलै कोनी
सिड़या, आप भतैई छिया आवै सासा री मूज - जगा जगा सूँ टूटै
देह री दावण कसीजै कोनी
हाडा री चूला हालै
मतलब रा माचा ज्यू भारी हुग्या
मा बाप।



रूंख संवारौ

सुशीला भंडारी

पेड़ा नै काटौ मत भाई
पेड़ करै है घणी उगाई ।

मीठा-मीठा फळ निपजावै
ठंडी-ठंडी देवै बायरियौ ।

तपती लू सू झुलस्योड़ा नै
ठंडक औ देवे है खुलनै ।

गैणा है धरती माता रा
रंग रंगीला पुस्प निराळा ।

उण नै ओढ़ावै चून्दड़ी
खेत दूब नै रूखड़ा ।

धरम बणियो है पिणियारिया रौ
पैड़ा नै पाणी देवण रौ ।

रिसि मुनी इण नै पणपाया
ज्ञान्या ध्यान्या रा औ प्यारा ।

वैदिक मन्तर मी आकौ
घणौ वखाण करियौ तरूवाको ।

भूकम्प, बाढ़ अकाळ ने थामै
धरती रा सगळा दुख मेटै ।

पछी इण पर गीत सुणावे
सगळा रा साथी है तरवर ।

ऊँच नीच री भेद नसावै
समता रा औ पाठ पढ़ावै ।

भूखा री औ भूख भगावै
तिरसा री औ तिरस मिटावै ।

सखरा चौखा कारज आका
बड़ा भाग साचा मिनखा का ।

मत सहारी रूख सवारी
धरती मा री करज उतारी ।



अलख जगाओ !

कमला जैन

सूख्या थारा सगळा अंग
उड़यो उड़यो मुखडा रौ रंग,
हिंगळू में पड़िया है जाळा
धूळ पड्या है काजळ काळा,
भूल्या सै सौळा सिणगार
टूट्या रे मोतीड़ा हार
जीव जीव में है अवखाई
झूरै मिनखा ! जामण जाई !

टावर जाम्या कैई करोड़,
दीधी तन नै साव झझोड़
वधती जावै कुटम कवीली
सूझै कोनी कोई गेली
अन-पाणी तो होग्या मूगा
मिनखा जाया जावक सूगा
हिवड़ै ऊँडी पीड़ समाई
झूरै मिनखा

चीर चीर सै लीला चीर
नद निरझर रा सूख्या नीर,
उजड्या जावै अपणा गाव
रूखा औटी अपणी छाव
कौम कोम, म मच्यी कळैस
सिसकारी नाखै है देस
भाई सरखौ कुण सौ भाई ?

सब मिल हिल मिल अलख जगाऔ
हरिया हरिया रूख लगाऔ
खेत सभाळौ विणज वधाऔ
उजड्या आखा गाव बसाऔ
राखौनी सीमित परिवार
जे चावौ सुखमय ससार
नीतर होसी लोग हसाई
झूरै मिनखा ।



यादां का पंछी

कृष्णा कुमारी

बीता दिना का बखरया तिनका सू बुणकर,
मन का बागा मे घोसली बणायो प्यारो ।
यादा का पछी न धीरा सू आण,
हौळे हौळे सू इण दुलरायौ ॥

दूर रहो हरदम ता मासे तो काई,
जळता हिरदया ई इण न धीरज बधायौ ।
रो रो कर रात रात मूँ जागी,
लौरी गा-गा'र ईनै मयि सुलायौ ॥

विरह आगण म तण-तण जल छ
सावण भी सदा अगारा बरसावै ।
यो पछी तण को ताप हरण कर
जीवा-मरवा को रहस्य समझावै ॥

तातो जाणी कमी दुणियाँ म खोग्या
अब तो यादा ही म्हारी छ साथी ।
या ही पौछै छ म्हारा बहता आसूँ,
जब न आव ताकी कोई पाती ॥



थारी कलम रै पाण

लालाराम जे प्रजापत

ओ साहितकार !
तू एकता री
भागीरथी वेगवान कर
थारी कलम रै पाण
कै जिण सू,
मिनख री आशकावा
भरम अर भेद–
मन्दिर मसीत, गिरजाघर रा
अखी रेवै तो–
मानखै रो देवरी !
रू रू मिनख री हरखै
सगळा री–
आतमावा मिल ज्यावै–
दुइ जावै
भापा/धरम/जात/रग भेद री भींता



मनै-लागै है

छीतरलाल साखला

पाणी जीवन है
पाणी
इज्जत है
अर
पाणी
मिनख पणा रौ नाम है
मिल जावै है पाणी
पाणी मॉय
हो जावै है एकमेक
नही है मनखपणौ
जिण मॉय कोनी मिल सकै वो
कोनी गा सकै गीत जिंदादिली री
क्यूँकि नही है पाणी
उण मॉय
मनै लागै है कोरो
घासलेट है वो
कोनी घुळ सकै पाणी मॉय
हाँ, मिनख जमारा रै माथै
लगा सकै है लाय।



गुरूजी री चोट

गोगराज जोशी

गुरूजी जद् थे बोली हो–थारी बोली कविता सी लागी
डण्डो जद थे सिर पर मारी हो
मायड़ सुरसती अगै जागी।
"अब तो आई चेला तनै अकल ?
मत पुचाया कर तू मेरी हर बात माय दखल'

सुणी बात जद् गुरूजी री–चेलै !
यो खेलण लाग्यौ गुली डण्डी
गुरूजी आपकै हाथ हाली डण्डो चेलै कानी फैंक्यो।

गुरूजी री चोट, विद्या री पोट स्यू चेलै नै
उपज्यो ग्यान
निहाल होग्यो मै गुरूजी ! धर लीनी थारली बात री
पूरी पूरी ध्यान।

कफन री मांग

चंचल कोठारी

बापू म्हनै परणावौ तो–
दायजै रै लारै
कफन भी बांध, दिराजौ
क्यूंकै
जे घर मिल्यौ
पइसा रौ लोभी
तो यो आपरौ दियोड़ौ
कफन रौ कपड़ो
घणौ काम आवैला
नीतर औ आततायी
म्हनै विना कफन जळावैला ।



बसंत पाँ'च

वी मोहन

रूँखड़ों का माया'न प ताळया बागी,
तावड़ो घणो हास-हास अर सरग सूँ झाँक्यो
जदी कोइ न खुसी को झण्डो ले'अर
खसबू को फूल फाँक्यो, तो लोग घण्याँ न खी,
क' बसत पाँ चू को थ्वार आग्यो–

फूलाँ की डील अर बाळ की असवारी
काँकड़ सूँ ही वरवूल्यो, आग'-आग' भाग्यो,
माळ म ऊभी पौध, खड़खड़ाती असी हाँसी,
क हाँसता हाँसता, लोटपोट होगी
जदी हाळी न हाँको पाड्यो क' बसत पाँ'चू को थ्वार आग्यो–

बागाँ म आँबा न गीत गाबा न
कोयळाँ क कोको दे द्यो
फूलाँ स सदा सज सजा अर
समझोतो, करल्यो
मोगरा-मोगरी न महकाँ बखेर दी
गुलाब न फिर की सावळी ओढ ली
ब'ण बेट्याँ न आँगणा म फूँदी दे'र
अळसी अर तुळसी का माया प वासण मँगाल्या,
तो खाँखरा जी न, टेसती धजा बँधा उस हूँडी पटा दी,
आवो सधग्यो, बसत पाँ चू को थ्वार आग्यो–



आ जिनगाणी

मुरलीधर शर्मा

खाडै मे खळकंता
जीवण मूल्यां नै
आये दिन होवंता
अपहरणां नै
ठड पीवता
लूठा कदमा नै
सूनी निजरा सू निरखती

आ जिन्दगाणी
संकळपां रा झांसा झेलती
नागाई नै नमन करती
सुरक्षा री वैम पाळती
अहिल्या दाई
पथराईजगी है
किणी राम नै उडीकती ।

जगियो मास्टर लागग्यौ

दीनदयाल शर्मा

जगियै री मा बोली
सुणो के स्याणी
जगियो मनै लागै घणौ अणखाणी
दसवीं माय बडगर
रै'ग्यो च्यार बार
थे कद ताई खींचोगा
अेक गाडी परवार
के ठा इनै कद अकल आ'सी
मनै तो लागै छोरो हाथा स्यू जा'सी
या तो इणं रै नाक मांय
नकेल घाल देवो चटकै
फेर आपणी भलाई
चावै ठोड़-ठोड़ भटकै
अर दसुवै ई दिन
बीनणी
घर मांय आ गी
उठता-जागता जगियै रा
बा कान खींचण लागगी
मी'नी ई नीं होयो घर री मांग जागग्यी
अेक प्राईवेट इस्कूल मांय
जगियौ मास्टर लागग्यौ।



किण दिस टुरग्यौ

सुरेशचंद्र उदय

अघमोचण सगती सू बुद्धि लेय,
मायड़ री कोख सू जळम्यौ ।
जग री वाय लागता ही
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

छापा टीला-टोटका मे त्यार
मिन्दर सेवट नी सेवै ।
टोळा री टोळी मे
जळमट जमरी वण किया झलकग्यो ?
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

भेप वणावा सदा सावठो
कद काई अर कद काई-?
देस प्रेम री वाता सू मन थारौ किया विचळ ग्यो
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?

चाहै जिण री माळा फेरो
चाहै जिणनै-कर सुमरण ।
साच नाम मरजादा सू
यू किया उचटग्यौ ?
थारौ मिनख मायलौ किणदिस टुरग्यो ?

मिन्दर थारौ ओ है सरीर,
मसजिद मीनारा दोय हाथ
मन सगती नै विसर थारणै किया उळजग्यौ ?
थारौ मिनख मायलौ किण दिस टुरग्यौ ?



लिछमी दीसी

लिछमी दीसी नी गळ हार जवर गाठा नी वेसुमार ।
गावा हा उणरा तार तार, मुड़ा पे झुर्री वेसुमार ॥

उल्लू दिस्यो हा ऊभो निसक, लिछमी आभे काळो मयक ।
नेताया सो हो निष्कळक पगल्या मे दीम्यो अेक डक ॥

पूछ्यो म्हारी लिछमी मात, क्यू दमा वणी वाडा है हाथ ।
बोली भोळा ह 'उदय' तात, मल विदेस सूको है गात ॥

धोळै हाथी रे वाथा हूं, कोरे कागज री खाता हूं ।
परिस्थितिया रे हाथा हूं, हूं वणी भिखारण दाता हूं ॥

उड़ी नीद म्हूं घवरायो, इस्यो काई सुपनो आयो ।
आवे पग्वात्ति र्के साचा, साचो होवे पण क्यू आयो ?



म्हारी अरदास

मगरचन्द्र दवे

पीस पीस अ'र
ठोंकणी मे उंवारण मे,
कॉंई बताई .. ?
थे ई' ज केवी ??
मै मानूं हूं, थे म्हारा शुभ चिन्तक हो
हेतालु हो
थे मनें खून वढ़ावण री नुस्खौ बताओ
पण कॉंई करणी,
खून वढा'र
खून वढ़ैला तो
घारूंमैर रा खटमल अ'र
मॉंछरॉं रै, जास्ती मजो होसी
दावत भई दावत ! पॉंचू ऑंगळियॉं घी मे
इण वास्ते आपनै म्हारी अरदास है-
थे मनै खून वढ़ावण री,
सला सूं पैला,
आ सला देवौ, बतावौ, कै
इण मॉंछरॉं खटमलॉं री वढ़ती फौज सूं,
किण भॉंत, निजात पा सकॉं ।

□

अेकलौ ही सही

राधेश्याम अटल

जद चेत ज्या वै, है
मिनख रो मायलो मिनख ।
मतै'ई सरक ज्यावै, हैं डूगर
औंधी यम ज्यावै है
माखी रै डक स्यू डरपणिया
कदे'ई नी चाख सकैला
सै'द रो सुवाद ।

सुतुरमुर्ग रै गर्दन लुकायां
अर कबूतरा रै आँख्यां मूंद्यां
बदळ नीं ज्यावै
विलाव रो मनसूबौ

इण वास्तै
मै अैकलो ई सही
पण मिनखां रै मायी
उतरतो अधारी, करळोती मायत
अर धरती नै धूजती अवै
और ज्यांदा सहन नीं करूंला ।
नी सही, मैं सागै मायला री भीड़
ऐकली ई सही
मै जळती रैऊंला-माटी रै दीया दाई
पण सूत्योड़ा मिनखां नै ऐक वार
ओज्यू जगा कै रैऊंला ।



आम आदमी कनै की नही

किशोर करूण

म्हे जाण्यी कै अबै
दळगी हुवैला मावस री काळी रातां
गिगन मे खिल्योड़ै विणजारै चाद
हिवड़ै रा सूना म्हैला
काजळिया नैणा अर
काची-काची कूपळा माय
भरी हुवैला प्रीत री किरण्या।
वोया हुवैला हेत रा
हरिया हरिया रूख
मुळकी हुवैला रातड़ली
झर-झर झर्‌यी हुवैला चाद
तरूणा री तरूणाई अर
गजवण रो मनड़ो हरख्यी हुवैला।
पण कल्पनाया कित्ती थोथी निकळी
हिवड़ै रो हेत, मुळकती रातां
विणजारो चाद
कठै गया सगळा सुपना ?
कोठिया अर बंगला माय कैद
अे सपना। अे सुखसाज
आम आदमी कनै कई नी।
बुझती चूलौ भूखी पेट
कल्पनाया रा गीत
और की ना। और की ना



धुंध

घनश्याम राकावत

आज, घोर अधारी
डाफर सू टूटीजियोड़ी
आगळिया
रगा मे ठरती-जमती लोही
पण, इण हाय री निवास
जाणे रूई रो फोयो है
लिलाड़ रे पसवाड़ै
धुंध'र कोहरी निरमै सोयी है
अठे ही क्यू आखा देस मे फैल्यो है
मिनख नै मिनख कद गिणै
गहरी नींदा लोग सोय रिया है
(कोई जाण बूझ सुलाय रियो है !)
तो कोई जलमभोम माथै
अमर होय रिया है
किणी चिमक जाग सू
अेक आध चेत्या है
अलख जगाय जगा रिया है
कदै मायड़ री मोह
मोभा पूता मे वावड़ जाय।
विखरेड़ी दिसावा
सायद मिळ जुलनै
कदास अेक हुय जाय।



हवा रौ प्रताप

आर एस व्यास

आकाश में सूरज तपती
भरी दोपहरी मे
धरती री हियड़ी जळती
मानखी तड़फती-तरसती
पाणी ने

पूरब दिशा सूं
झोकी आयौ हवा री तेज
धूप मे मिळणे री सोच
अर तेज उठैर भगवान री
मंशा सूं

हवा आपरी बदळर रुख
पाणी सूं भरीयोड़ा बादळ
सूरज नै दियो ढक
ज्यूं गौरी कादयी हुवै घूंघटी
धरती री प्यास बुझावण नै
आयड़ै बादळ

हवा रो रुख बदळयौ
पाणी बरस्यौ घटाटोप
छीलरिया, तळाव भर गया
आछौ प्रताप हवा रौ
हुयौ है
सकळ जियाजूण एकूकार ।

◻

अणजाणी

वासुदेव चतुर्वेदी

अणजाणी
थू सबदा तीर चला अर,
समय री सिला पै
नुवा आलेख लिख्या करै है ।
मन पराण
घायल कर अर
गैरा घाव किया करै है ।
राता सबदा री आकृति
प्रतीक रक्तिम आभा री
लावण्यमयी
सरीर गठियोड़ी
मान करावै
दान रै बदलै
प्रतिदान री ज्ञान करावै ।
चाँद जस्यो मुखड़ो
गोरी रूप
सुनैण
लागै नवयौवना
यो मभको
स्यो रूप री अनुमान
मनड़ा नै झकझोरै
याद आख्यां सै तैरै
एक सुनहरी सपनी
मोती ज्यूं दमकै



थारी दंतावळी
थांळ थारा काळा काळा
नागण ज्यू लेरावै
भृकुटियाँ नचावै,
ख्याला मे आवै
थारो हौळे हौळे मुस्कराणौ
रूप सरूपी
कस्योक व्हैवे
इनै पड़्यो समझाणौ ।
थारो मुखड़ौ
मौन - मूक आमंत्रण देवै
मनड़ौ म्हारौ
वार वार उयाळौ देवे,
सबद, अरथ भाव
देवै एक सनेसौ
यू लागै जाणै
जिनगाणी ठेरगी व्हैवे
अणजाणी
सबदा सू खेलवा री,
सबदा ने भेदवा आळा
बाण चळावा रो
ओ खेल वन्द कर,
अस्यो नी व्हैवे कै,
ओ सबदा रौ वैपार
थनै जळा न दै
आपणै निसचय से डिगा न दे
विस्वास जद टूट जावै
आपणै आप सू
उळझती सुळझती
हार जाओळी
उण बगत फेर थू
आपणी मजळ पै
पौंच जावेळी

❐